सन् बयालीस
का विद्रोह

सन् बयालीस
का
विद्रोह

लेखक
श्री गोविन्दसहाय, एम. एल. ए
पार्लामेंटरी सेक्रेटरी, संयुक्त प्रांतीय सरकार

भूमिका-लेखक
श्री जयप्रकाश नारायण

१९४६
नवयुग साहित्य सदन
इन्दौर

प्रकाशक
गोकुलदास धूत
नवयुग साहित्य सदन, इन्दौर।

प्रथम बार १९४६
मूल्य
साढ़े छ. रुपये

मुद्रक
अमरचन्द्र
राजहंस प्रेस, दिल्ली।

लेखक की ओर से

मेरी ओर प्रकाशक का यह हार्दिक अभिलाषा थी कि यह पुस्तक मेरठ-अधिवेशन से पहले तैयार हो जाय। पर प्रकाशक ओर प्रेस के अपार परिश्रम के बाद भी हम उसमें सफल न हो पाए। देहली में यकायक साम्प्रदायिक तनातनी बढने व दगे के फैलने आदि के कारणो से तथा दूसरी कठिनाइयो के कारण प्रेस अपनी शक्तिभर काम न कर सका और पुस्तक ठीक समय पर तैयार न हो सकी। आशा है इस बेबसी के लिए पाठक क्षमा करेंगे।

अन्त मे मै श्री शोभालालजी गुप्त (सहायक सम्पादक 'हिन्दुस्तान') और श्री कृष्णचन्द्र (गीता प्रेस) को धन्यवाद दिये विना नही रह सकता। श्री शोभालालजी ने जिस कार्य-क्षमता तथा लगन से इसकी भाषा इत्यादि को ठीक करने में मेरी मदद दी उसके लिए मै उनका हृदय से आभारी हू।

कौसिल हाउस,
लखनऊ। गोविन्दसहाय

प्रकाशक की ओर से

इस पुस्तक मे टाइप की खराबी के कारण कई स्थानो पर बहुत-सी भूलें प्रतीत होगी। खासकर ए ई ऊ और अनुस्वार तथा कई अन्य मात्राए छपते समय टूट गई है, इसके कारण पाठको को होने वाली असुविधा के लिए हम क्षमा-प्रार्थी है।

भूमिका

सन् बयालीस की क्रांति इस देश के इतिहास में इस समय तक वही स्थान रखती है जो फ्रास या रूस की क्रांतियो का अपने-अपने देश मे है। जिस पैमाने पर ४२ की क्रांति हुई थी वह इतिहास मे अपना सानी नही रखता। इतने बडे जन समुदाय ने दूसरी किसी क्रांति में भाग नही लिया था। लेकिन केवल विस्तार और विशालता ही इस क्रांति की विशेषताएँ न थी। सन् ४२ ने देश की काया-पलट कर दी, एक नए भारत का निर्माण किया, उसकी राजनीति को एक नई दिशा प्रदान की। स्वतन्त्रता की लडाई ने पहले वैयक्तिक हिंसा का पथ ग्रहण किया, फिर असहयोग का। बयालीस मे लडाई ने जन-क्रांति का रूप लिया। असहयोग के अमोघ अस्त्र के लिए पर्याप्त नैतिक बल की कमी देखकर आजादी के सिपाही जब हतोत्साह हो रहे थे तो '४२ ने अकस्मात् उनके लिए एक नई राह प्रशस्त कर दी। अब तक हम जेलो को भरा करते थे। अब देखा गया कि नेतृत्व-हीन, शस्त्र-हीन जनता ने विद्युत् गति से जगह-जगह पर विदेशी राज के अड्डो का नाश कर उन पर सहज ही अपना प्रभुत्व कायम कर लिया। अंग्रेजी राज का किला, जो अब तक इतना सुदृढ और दुर्भेद्य दीख रहा था, अकस्मात् टूटने लगा। कही दीवार टूटी तो कही कगूरा, कही कुछ पाये तो कही मेहराब। जनता ने समझ लिया कि यह बालू की भीतो का बना हुआ किला है, और उसने सीख लिया उन भीतो को ढाह देने का एक नया तरीका। अब भारत मे कभी भी क्रांति होगी, जनता की राह यही होने वाली है, चाहे थोडे से चुने हुए देवत्व के साधक कोई और ही राह पकडे। सन् बयालीस मेरे लिए तो यही अर्थ रखता है।

लेखक ने अपने "विषय-प्रवेश" मे लिखा है कि "मै मानता हू कि हर लेखक का अपना एक दृष्टि कोण और ध्येय होता है।" उनका भी अपना एक दृष्टिकोण है, और वह एक खास नुक्ते से विस्फोट को निहारते है। उनके दृष्टि-कोण से मै हर जगह सहमत तो नही हू, लेकिन मुझे यह कहते हुए खुशी होती है कि उन्होने अपने इस मुश्किल काम मे मानसिक सच्चाई बरती है जो एक क्रांति का इतिहास लिखने से अधिक मुश्किल है।

'४२ का क्रांति इस विशाल देश के कोने-कोने मे फैली हुई थी। इतनी बडी घटना का इतिहास इतने थोडे अर्से में एक व्यक्ति के लिए लिख डालना असम्भव है। प्रान्तीय कांग्रेस कमेटियो ने जो रिपोर्टें तैयार कराई है उनमें अधिकतर अग्रेज़ो के दुष्कर्मो का ही रोना रोया गया है। क्राति का इतिहास उनमे कम मिलता है। वह इतिहास तो भोग्य रूप से बरसो में ही तैयार हो सकता है और वह भी भिन्न-भिन्न लेखको के श्रम से। इस समय तो उस इतिहास की सब बाते प्रकाशित भी नही की जा सकती। मैने अपने एक मित्र से सितारा, मिदनापुर और बलिया जिलो की क्रातियो का इतिहास एक खास दृष्टिकोण और मतलब से तैयार कराया है। उस प्रयास से मुझे पता चला कि '४२ जैसी एक ऐतिहासिक घटना कितनी बहुरगी और बहुमुखी होती है, और यह भी, कि जब हम उस घटना के इतने समीप होते है तो उसकी कथा रचना और कहना कितना कठिन होता है।

ऐसी हालत मे प्रस्तुत पुस्तक को देखने से पता चलता है कि बाबू गोविन्द-सहाय ने अथक परिश्रम किया है। जो लोग सन् बयालीस को आजादी का पथ प्रदर्शक मानते है वह इस पुस्तक का ध्यान से अध्ययन करेंगे और भविष्य का मार्ग ढूढने मे उससे सहायता लेगे।

विषय-सूची

"भारत छोड़ो"

चित्रकार—हिन्दुस्तान के सुप्रसिद्ध कार्टूनिस्ट श्री शंकर

सन् बयालीस
का
विद्रोह

: १ :

विषय-प्रवेश

'हवा का झोका जो चलना होता है, चलता ही है, घटनाए जो होनी होती है, होकर ही रहती है । पर हम केवल उनके कारणो का विवेचन मात्र करते है ।'

—विक्टर ह्यूगो

हो सकता है मेरा यह प्रयास भी ऐसा ही हो । पर इच्छा हुई कि क्यो न इस महान् आन्दोलन पर, जिसके वेग में लाखो नर और नारी, बूढे और जवान आशा, जोश एव तडप से यकायक उठे, आगे बढे और अन्त में कुछ पीछे हटते से भी दीख पडे, कुछ लिखूं, क्यो न इस अखिल भारतवर्षीय क्राति के, जिसके उन्माद मे होनी वाली अनेक मुल्य घटनाओ की खबर हर प्रकार से दुनिया से छिपाई गई और जिसके नेताओ को तथा उनके उद्देश्य एव ध्येय को हर तरह के बुरे व भद्दे अर्थ पहनाकर दुनिया की आखो में धूल झोकने के यहा, और बाहर, अनेक असफल प्रयत्न किये गये, ध्येय, नीति, उत्पत्ति-काल, विकास, गतिविधि, व्यूह-रचना नारो आदि के सम्बन्ध में निष्पक्ष दृष्टि से और वैज्ञानिक ढग पर प्रकाश डालने का प्रयत्न करूं ?

मेरा विश्वास है कि दुनिया के इतिहास में दबे-पिसे व पद-दलित लोगो के अनेक सफल व असफल प्रयत्न हुए है, पर सन् १६४२ का 'खुला विद्रोह' पुराने सब प्रयत्नो से ध्येय, नीति-निपुणता, सगठन, बलिदान, विस्तार और जनोत्साह आदि सभी बातो मे कही बढा-चढा है । सन् १८५७ का गदर-फ़ासीसी राज्यक्राति, सन् १६१७ की रूसी लाल क्राति सभी कितनी ही बातो में उसके सामने फीके जान पडते है । यह वह महान् प्रयत्न था जिसमे प्राय सभी भारतीय नवयुवको ने, जिनके हृदय में जरा भी आज़ादी की कसक व तडप बाकी थी, किसी-न-किसी रूप में हिस्सा लिया । यह वह सामूहिक प्रयत्न था, जिसकी चिनगारी गाव-गाव मे फैल गई । ऐसा लगता था कि सारा राष्ट्र गहरी नीद से

जागकर यकायक उठ रहा है। भारत में अंग्रजो के दिन इने-गिने दिखाई देते थे।

वास्तव में यह काल इतिहास का एक रोचक काल बन गया है। एक निहत्थे राष्ट्र ने यकायक जागृत होकर अपने पैदाइशी हक के लिए प्राणो की बाजी लगा दी, जिससे मालूम पडता था कि स्व० लोकमान्य तिलक का मत्र 'स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है' हरेक के कानो मे गूंज गया है और उस पर सेवाग्राम के सन्त की मुहर लग गई, जो उन्हे 'करो या मरो' का आदेश दे रहा था। इस प्रकार क्रान्ति के अन्य सभी कारणो की मौजूदगी और गान्धीजी के नेतृत्व ने मिलकर देश मे एक अजीब बेचैनी पैदा कर दी थी, जिससे जनता मे कुछ करने की तीव्र इच्छा पैदा हो गई थी। ये सब बातें इतनी तेज़ी से हो रही थी कि आश्चर्य होता था कौन जादू क्रान्ति की यह सब सामग्री जुटा रहा है। आदमी, औरते, मर्द, बूढे, जवान सब अनुभव करते थे कि उन्हे आग के साथ खेलना होगा, वे अनुभव करते थे कि क्रान्ति का कोई प्रयत्न करना एक चट्टान से सर तोडने के समान होगा। वे यह भी जानते थे कि उन्हे उस ब्रिटिश-राज्य से लडाई लडनी होगी, जिसके पास आज तबाही व बरबादी मचाने के सभी वैज्ञानिक साधन मौजूद है। उन्हे इस बात का भी ज्ञान था कि साम्राज्यशाही एक हृदयहीन शासन-व्यवस्था है जिसमें न न्याय होता है, और न नियम। जनता तथा गान्धीजी यह भी अच्छी तरह जानते थे कि वे अंग्रेज़ी साम्राज्य से उस समय लडने की घोषणा कर रहे है जब कि अंग्रेजो मे यूरोप तथा दूर पूर्व की निरन्तर हारो के कारण एक तीव्र झुझलाहट पैदा हो गई है और ऐसी स्थिति में, जब कि उनका विरोधी स्वय कठिनाइयो व परेशानियो मे है, किसी प्रकार का आन्दोलन करना जलते हुए घावो पर नमक छिडकना और उसके गुस्से को और भी अधिक भडकाना होगा। पर ० सब जानते हुए भी भारतवर्ष के हर मर्द-औरत ने अपने कर्तव्य को सर्वोपरि समझा। उनके हृदय मे यह प्रश्न उठा कि जब दुनिया भर के लोग अपनी-अपनी आजादी के लिए जीवन-मरण का खेल खेल रहे है, आहुतिया दे रहे है, बलिदान कर रहे है और तरह-तरह के कष्ट और यातनायें सह रहे है तो क्या हम अपने देश की आज़ादी के लिए केवल हाथ पर हाथ धरे बैठे रहे? जनता की इस मनोवृत्ति का पता गान्धीजी के अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी के अधिवेशन में दिए गए ८ अगस्त सन् १९४२ वाले भाषण से चलता है। उन्होने कहा—"ईश्वर मुझसे पूछेगा कि जब दुनिया में चारो ओर अग्नि धधक रही थी, क्रान्ति की लपटें प्रचण्ड होकर उठ रही थी, हिंसा का साम्राज्य था, तो क्यो न तूने मेरे उस महामन्त्र अर्थात् शान्ति के पाठ को

दुनिया के सामने रखा, क्यो न अधेरे में उजाले का सन्देश दिया, असत्य के वातावरण में सत्य का नाम लिया ?" यही कारण है कि यद्यपि उपरोक्त लडाई प्रारम्भ करने का श्रेय ब्रिटिश नौकरशाही को है जिसने यकायक बिजली की भाति भारतीय आशाओ व आकाक्षाओ पर ९ अगस्त के सवेरे से एक भयकर प्रहार किया, पर उसका नतीजा यह निकला कि भारतवर्ष की दबी हुई आकाक्षाओ का विस्फोट सारे देश मे हुआ और उसने अपनी लपटे कोने-कोने मे फैला दी। जनता की आशा, उत्साह, तडप और कसक के साथ उठी। ब्रिटिश नौकरशाही के आक्रमणो से ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह सब मोर्चो पर होने वाली अपनी हारो की पूर्ति निहत्थी भारतीय जनता का आकाक्षाओ को कुचलकर करना चाहती है और इस प्रकार खोए हुए सम्मान को पुन प्राप्त करना चाहते है।

आन्दोलन के पश्चात् आन्दोलन के विकास, गतिविधि तथा साधनो के बारे में तरह-तरह की चेमेंगोइया हुई। कुछ लोगो ने अन्दाज लगाए कि यदि काग्रेसी नेता गिरफ्तार न किए जाते तो क्या होता ? कोई कहता था कि गान्धीजी वायसराय से प्रार्थना करते। दूसरो का कहना था कि तब इन बातो का समय निकल चुका था, केवल शिष्टाचार के नाते गान्धीजी ऐसा प्रयत्न करते। पर इस विषय पर बहस करना केवल दिमागी कसरत ही है। वास्तविक बात तो यह है कि देश में क्रान्ति के सारे कारण अपनी परिपक्व स्थिति को पहुँच चुके थे। एक दूरदर्शी नेता की भाति गान्धीजी ने उपयुक्त मनोवैज्ञानिक वातावरण तैयार कर दिया था। वह सगठन को सुदृढ बनाने की बातें सोच रहे थे। जनता को 'करो या मरो' का नारा दे चुके थे। 'खुले विद्रोह' की बाते भी जनता के कानो में गूंज रही थी। इस प्रकार देश में ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध एक मनोवैज्ञानिक मोर्चा बन चुका था। जनता को विश्वास हो चला था कि वह अपनी शान्ति व रक्षा के लिए अग्रेजो के हथियारो पर निर्भर नही रह सकती। जनता यह भी जानती थी कि बावजूद अनेक सुनहरी बातो के ब्रिटिश साम्राज्यशाही भारत को अपने आधीन रखने की कल्पना कर रही है। इस प्रकार हर हिन्दुस्तानी के हृदय मे घाव था, असन्तोष था। ऐसा मालूम पडता था मानो हर हिन्दुस्तानी एक जिन्दा बम (live bomb) बन गया है जिसमें केवल चिनगारी लगने की देर है। ठीक उसी समय जब उसके नेता उससे छीन लिए गए तो उसके लिए युद्ध प्रारम्भ हो गया और यह युद्ध पीडित और अत्याचारी, शासक और शासित, लुटेरे और लुटे हुए के बीच प्रारम्भ हुआ।

सच तो यह है कि यह जनता का सचा युद्ध था। यद्यपि हमने अपने

सैकड़ो साथियो को सदा के लिए खोया, हमारी माताओ और वहनो का अपमानित व लज्जित किया गया, उन्हे मारा-पीटा गया, और कही-कही तो उन्हें सैनिको तथा नौकरशाही के कल-पुर्जो की पाशविक वृत्ति का शिकार भी होना पडा, गाँव के गाँव लुटे, वीरान हुए, आग की प्रचड लपटो से करोडो रुपये की क्षति हुई, पर यह सब वलिदान उस ध्येय के सामने क्या है जिसे हम प्राप्त करना चाहते थे।

हम जानते है कि ब्रिटिश नौकरशाही ने करोडो रुपया खर्च किया और झूठी आजादी का दिखावा खड़ा करके हमारी न्यायोचित व सच्ची आवाज का गला घोटना चाहा और दूसरे देशो में हम पर तरह-तरह के झूठे आरोप लगाए गए। हम विश्वासघाती कहे गए। हमे धुरी-राष्ट्रो का मित्र वताया गया। पाचवे दस्ते का खिताव दिया गया। पीछे से वार करने वाले देशद्रोही वताने के भी प्रयत्न किये गये। पर अन्त में दुनिया ने देखा कि सत्य की जीत हुई। प्रारम्भ में मित्र राष्ट्रो के जनमत ने हमारे इस कदम पर रोष प्रकट किया। पर ज्यो-ज्यो उसे हमारी सच्चाई का पता चलता गया, वैसे ही वैसे जनमत हमारी ओर वदलने लगा और उसी का आज यह नतीजा है कि कितने ही पीड़ित, दवे व शोषित देश भारत के नेतृत्व से प्रोत्साहन लेकर अपना मार्ग निश्चित कर रहे है। इस आन्दोलन से हमको अनेक प्रकार के लाभ हुए जिन्हें विस्तार से दूसरी जगह वताऊँगा। यहा तो केवल सकेत रूप में यह वताने की चेष्टा कर रहा हू कि इस आन्दोलन ने हमें अग्रेजी साम्राज्यशाही के गिरते, लड़खड़ाते व विखरते ढाँचे का वास्तविक रूप दिखाया है और यह भी दिखाया है कि किस प्रकार हम संगठित हिंसा के विरुद्ध सगठित अहिंसा से सफल हो सकते है, अंधेरे में उजाले की टिमटिमाती हुई रोशनी लेकर आगे वढ सकते है। इस प्रकार कितने ही लोगो का अहिंसा की शिक्षा, शक्ति व साधनो पर पहले से कही अधिक विश्वास वढ गया है। आज अहिंसा वहुतो के लिए जीवन का एक तत्त्वज्ञान वन गया है। हिन्दू, मुस्लिम, सिख, पारसी सभी ने यह अनुभव किया है कि उनके दुख मिटने का एक ही मार्ग है और वह यह कि ब्रिटिश शासन यहा से उठ जाय। यही कारण है कि इस आन्दोलन में सैकडो मुसलमानो ने, वावजूद जिन्ना साहव के, अपने अन्य भाइयो के साथ भाग लिया।

मैं भी उन करोड़ो आदमियो मे से एक हू जिन्होने किसी-न-किसी रूप मे इस आन्दोलन में क्रियात्मक भाग लिया है। वचपन से ही मुझे इन सव वातो के जानने की उत्सुकता रही है और सन् १९३० से तो मैंने अपने को आजादी की लडाई के सैनिको की टुकड़ी में शामिल कर दिया है। पर इन १२ सालो मे मुझमें कभी इतना उत्साह, इतनी शक्ति व स्फूर्ति न थी जितनी सन् १९४२

के इन दिनो मे रही।

मैंने सन् १९४२ के अगस्त मास के इन दिनो मे जनता मे जो स्फूर्ति, उत्साह, जाश, क्रोध, झुझलाहट देखी उतनी पहले कभी नही देखी। मालूम पडता था कि सारा राष्ट्र गोली से घायल तथा क्रोध से पागल होकर किसी चीज को मिटाने के लिए उठ रहा है, जिसने निरन्तर उसे पीसा है अब वह उसका अन्त करना चाहता है। उस समय युक्त प्रान्त के पूर्वी जिले तथा बिहार की कुछ जगहो के जोश तथा तडप से उभरी हुई जनता को देखने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। उन दिनो के अभूतपूर्व हृदय-विदारक तथा उत्साह पैदा करने वाले दृश्यो ने मेरे हृदय मे एक तडप पैदा कर दी थी कि मैं इस महान् आन्दोलन पर अवश्य कुछ लिखूं। मैंने अनुभव किया कि यद्यपि हिन्दुस्तान मे कई सामूहिक व व्यक्तिगत आन्दोलन हुए है, पर उन सब पर सूबेवार व जिलेवार आबद्ध रूप मे बहुत कम साहित्य लिखा गया है। अखिल भारतीय पैमाने पर तो कोई भी ऐसा प्रयत्न नही दीख पडा। मेरी तीव्र इच्छा हुई कि क्यो न विशाल जन-समूह के इस महान प्रयत्न पर एक वैज्ञानिक दृष्टि से चर्चा की जाय और सारे प्रान्तो तथा रियासतो में होने वाले इस व्यापक तथा सामूहिक प्रयत्न पर प्रकाश डाला जाय। मैंने सोचा कि घटनाओ के मुख्य-मुख्य स्थानो मे जाकर लोगो से मिला जाय और उनके प्रयत्नो की जानकारी प्राप्त की जाय। किन्तु मैं बीच मे ही जेल मे बन्द कर दिया गया। पर इस काल मे भी मैंने अपनी इस तीव्र इच्छा को बनाए रखा और जेल से छूटने के एक दो माह पश्चात् ही हिन्दुस्तान के सारे सूबो का दौरा किया और यथासम्भव आन्दोलन सम्बन्धी आकडे प्राप्त करने का प्रयत्न किया। निस्सन्देह मुझे इस कार्य में बहुत सी दिक्कतो का सामना करना पडा। एक ओर सेंसर की कठोरता, दमन की उग्रता तथा लोगो का इस ओर अधिक ध्यान न होने के कारण तथा दूसरी ओर भ्रमण की असुविधा, प्रमुख कार्यकर्त्ताओ की अनुपस्थिति, कांग्रेस के गैर-कानूनी होने आदि के कारण मेरे लिए यह कहना ठीक न होगा कि मैंने इस आन्दोलन सम्बन्धी सभी प्रकार के आकडे इकट्ठे कर लिए है। पर मैंने इस दिशा मे प्रयत्न अवश्य किया और उस प्रयत्न के पीछे एक लगन थी जिसने निरन्तर दिक्कतो के बावजूद भी मुझे इसमें जुटाए रखा।

मै मानता हू कि हर लेखक का अपना एक दृष्टिकोण और ध्येय होता है और उसी से प्रोत्साहित होकर वह पुरानी घटनाओ को अपने तरीके से रखने का सफल अथवा असफल प्रयत्न करता है। कोई इस बात को स्वीकार करे या न करे, पर यह एक नग्न सत्य है। मेरा भी इस पुस्तक के लिखने का अपना

एक ध्येय और दृष्टिकाण है और उसी ने मुझे इस कार्य को करने के लिए प्रेरित किया है। फिर भी मैंने इस बात की पूरी कोशिश की है कि अपने निजी विचारो, रुझान व लगाव को घटनाओ के आकने तथा उनकी तह मे उतरने के काम पर हावी न होने दू। मैंने इस आन्दोलन की सारी घटनाओ को पक्षपात रहित होकर आकने और उन पर प्रकाश डालने का यथाशक्ति प्रयत्न किया है।

जैसा ऊपर कहा जा चुका है, मैंने इस काल अर्थात् १९४२–४४ मे होने वाली घटनाओ के सम्बन्ध मे स्वय जानकारी प्राप्त करने का प्रयत्न किया है और कितनी जगह अपने कुछ साथियो को भेजा है। स्वय जाकर लोगो से वातचीत की है। सरकार ने घटनाओ के सम्बन्ध मे जो वक्तव्य प्रकाशित किए है उन्हे पढा है और अखवारो के पन्नो को भी पलटा है। फिर भी मेरा विश्वास है कि जो आकडे घटनाओ के वर्णन मे दिये गये है वे वास्तविकता से कुछ कम ही हैं। मुझे यह जानकर कुछ सतोष होता है कि मैंने इस काम को ऐसे समय मे किया है जब कि हमारे पास उन विभिन्न आन्दोलनो के वारे मे वहुत कम साहित्य है जो भारत में समय-समय पर हुए है। मै अपने परिश्रम को सफल समझूँगा यदि पाठकगण इस पुस्तक से स्वतत्रता के इस महान् आन्दोलन के वारे मे सगठित रूप में सूबे, जिले तथा मुख्य रियासतवार कुछ जानकारी प्राप्त कर सके और उन्हे यह तसल्ली हो जाए कि वास्तव मे इस दिशा मे किया गया प्रयत्न एक आवश्यक प्रयत्न था और इस प्रकार सग्रहीत आकडे तथा घटनाओ के वर्णन इस आन्दोलन के समझने में मददगार सावित होगे। हो सकता है यह पुस्तक पाठको के हृदय मे अनेक प्रकार की अच्छी कल्पनाएँ तथा अपनी मातृभूमि के प्रति सर्वस्व वलिदान करने के भावो को जागृत कर सके। अन्त मे मै उन सब साथियो को, जिन्होने मुझे इस कार्य मे अनेक प्रकार से मदद दी है, धन्यवाद दिए विना नही रह सकता और साथ ही उन साथियो को भी, जिन्होने इस आन्दोलन में अपने वलिदान देकर तथा अनेक प्रकार के कष्ट सहकर मेरे हृदय में हमेशा स्फूर्ति को बनाए रखा है और उस ज्योति को जलाए रखा है जिसके कारण मैंने अनेक कठिनाइयो के होते हुए भी अपने इस प्रयत्न को जारी रखा। साथ ही काग्रेस के उन नेताओ तथा काग्रेस-कार्य-समिति के उन सदस्यो के प्रति भी मै कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जिनके निरतर कारावास ने सारे देश मे आन्दोलन की अग्नि को एक कसक व तडप के रूप मे मेरे तथा अनेक देशवासियो के हृदयो मे प्रज्वलित रखा है।

अन्त मे मै अपने मित्र मिस्टर एन० ए० भडारी को, जिन्होने मुझे इस किताव को पूरा करने मे काफी मदद दी है, धन्यवाद देता हूँ।

: २ :

वैज्ञानिक विश्लेषण

क्रान्ति-विज्ञान

विद्रोह यकायक फूट नही पडते । क्रान्ति फौरन विजली की तरह साफ व नीले आसमान से टूट नही पडती । न कोई आन्दोलन जादू की लकडी द्वारा खडा ही किया जा सकता है और न किसी आन्दोलन को स्थायी रूप से दमन द्वारा दवाया ही जा सकता है । वास्तव मे आन्दोलन, क्रान्ति, विद्रोह रौंदी हुई जनता की दवी आकाक्षाओ के वाह्य रूप होते है ।

जिन कारणो से क्रान्ति अथवा आन्दोलन का जन्म होता है, उनमे से कुछ मुख्य कारण इस प्रकार है —

१ जनता में वढा हुआ आर्थिक व राजनैतिक असतोप ।

२ राजनैतिक आकाक्षाओ और अभिलापाओ की वृद्धि, राष्ट्रीय सम्मान के भावो की प्रगति तथा मान-अपमान की तडप ।

३ सरकार की सत्ता व शक्ति से विश्वास का हटना ।

४ जनता मे परिवर्तन की तीव्र इच्छा और भविष्य मे सघर्ष करने की उत्कठा ।

५. देश के विभिन्न वर्गो, पार्टियो व दलो मे सरकार की उपेक्षापूर्ण नीति के प्रति वढता हुआ असन्तोष और उनमे किसी एक माग पर मिलकर जोर लगाने की इच्छा ।

६ हाकिमो की उपेक्षापूर्ण, हृदयहीन और दमनकारी नीति तथा जनता की उचित न्यायपूर्ण मागो के प्रति सरत, क्रूर व अन्यायकारी रुख इत्यादि ।

ये सव ऐसे कारण होते है जो प्राय सतह के नीचे अन्दर-ही-अन्दर विरोधाग्नि सुलगाते रहते है और समय पाकर जनता मे स्फुरित हो उठते है । मनोवैज्ञानिक दृष्टि से वातावरण सघर्षमय वनता रहता है । ठीक ऐसी ही

स्थिति मे नेता जनता को उठाता है, कारणो को ठीक रूप से तरतीब देता है और बेचैनी को आशा मे, परेशानी को हरकत मे बदलकर सघर्ष के लिए वातावरण पैदा कर देता है । क्षणिक कारण नीचे बिछी हुई बारूद मे सुलगती हुई चिनगारी की तरह प्रचण्ड रूप धारण कर आन्दोलन,क्रान्ति अथवा विद्रोह को उग्र रूप दे देते है । आन्दोलन, सगठित भी हो सकता है और असगठित भी, हिंसात्मक और अहिंसात्मक भी, सफल और असफल भी । ये सब बाते देश की स्थिति, सस्कार, नेता के विचार व सगठन-शक्ति, सस्था के प्रभाव व सगठन, नारे की उपयोगिता तथा शक्ति इत्यादि अनेक बातो पर निर्भर होती है । फिर भी जनता की ओर से उठा हुआ कोई भी आन्दोलन अपने प्रभाव व ध्येय मे सर्वथा विफल नही होता । हरेक आन्दोलन से दबी हुई जनता कुछ-न-कुछ सीखती ही है । हरेक आन्दोलन जोश, आशा, विश्वास, साहस, सगठन, सघर्ष करने की प्रवृत्ति आदि अनेक बहुमुखी शक्तियो की वृद्धि करता हुआ सघर्ष करने तथा सामूहिक रूप से सोचने के लिए बल प्रदान करता है । इस प्रकार एक आन्दोलन की विफलता ही आगामी आन्दोलन की सफलता की सीढी बन जाती है ।

सघर्ष, जद्दोजहद व खीचातानी के वातावरण मे किसी एक पक्ष का दूसरे पर प्रहार कर देना तथा यकायक किसी भयकर घटना का हो जाना, जैसे सरकार का अकारण जनता पर प्रहार कर देना, दोनो पक्षो मे से किसी एक का धैर्य खो बैठना और उतावले होकर कोई कार्य कर बैठना, दोनो पक्षो का निरन्तर कठोर रवैया रखना और इस प्रकार झूठी शान की भावना पैदा कर लेना इत्यादि ऐसी अनेक बाते हो सकती है, जो चारो तरफ फैली हुई बारूद मे चिनगारी बनकर भयकर विस्फोट का कारण बन जाती है । ऐसे वातावरण मे कोई छोटी-सी घटना भी कभी उग्र रूप धारण कर लेती है और विद्रोह, क्रान्ति अथवा बगावत के रूप मे बदल जाती है । पर यह सब कुछ तभी होता है जब क्रान्ति के स्थायी कारण अपनी परिपक्व स्थिति को पहुँच चुकते है । हर आन्दोलन की सफलता के लिए यह जरूरी है वह परिपक्व होने के पश्चात् उठा हो और उसके वेग मे उठने वाले लोगो का ध्येय उचित व न्यायसगत हो अर्थात् उनकी मागो के पीछे नैतिक बल हो । यदि किसी आन्दोलन का आधार न्यायसगत व नैतिक न होगा तो तेजी से उठने पर भी वह अपने ध्येय मे सफल नही हो सकता । अत हर आन्दोलन के लिए यह आवश्यक है कि जहा ध्येय अच्छा हो वहा साधन भी अच्छे हो । उदाहरण के तौर पर हमारे देश मे सन् १८५७ का गदर हुआ, पर साधन ठीक न होने के कारण

हमारी हार हुई और लगभग ७० वर्ष तक भारतीय जनता सिर न उठा सकी। किन्तु कौन जानता है कि युक्तप्रान्त के पूर्वी जिले, बिहार प्रान्त तथा सतारा जिला वही इलाके है, जो सन् १८५७ में अन्त समय तक लडते रहे और सन् ४२ में भी आन्दोलन के मुख्य तूफानी केन्द्र रहे। सन् १८५७ में इन इलाको की भूमि खून से रंगी जा चुकी थी और इस कारण इनमे विद्रोह की अग्नि कभी-न-कभी अवश्य सुलगनी थी।

सन् १९४२ से पहले

सन् १९१९ व २१ के असहयोग आन्दोलन से पहले इसी प्रकार स्थायी कारण परिपक्व हो चुके थे। रौलेट कानून, जलियानवाला बाग हत्या काड तथा खिलाफत के मसले ने इस आन्दोलन की विरोधाग्नि को प्रज्वलित किया। सन् १९३० व ३२ के नमक सत्याग्रह व लगानबन्दी के आन्दोलनो से पहले भी घटनाओ के जमघट ने एक प्रौढ आन्दोलन के लिए आवश्यक भूमिका तैयार कर दी थी। गान्धी जी की 'डाँडी यात्रा' और देश भर मे होने वाली गिरफ्तारियो के ताते ने इसे आन्दोलन का रूप दिया। सन् ३२ में सीमा प्रात व युक्तप्रान्त मे लगानबन्दी और सरकारी दमन आन्दोलन के तात्कालिक कारण बने। ठीक इसी प्रकार सन् १९४२ के 'खुले विद्रोह' से पहले देश में स्थायी कारण अपनी परिपक्व अवस्था को पहुच चुके थे। जनता की बेचैनी, परेशानी और असन्तोष ने उग्र रूप धारण कर लिया था। लडाई के नारो के साथ-साथ भारतीय आकाक्षायें व आशाए भी उभर चुकी थी। उनके साथ अब शाब्दिक मखौल नही किया जा सकता था। आर्थिक कठिनाइयाँ बढती जा रही थी। खाद्य पदार्थ बाजार से लोप हो रहे थे। चान्दी का सिक्का गायब हो रहा था। नोटो की भरमार थी। हागकाग से ब्रह्मा तक जापानी जीत ने अग्रेजो के प्रति जनता मे अविश्वास पैदा कर दिया था और उसे विश्वास होचला था कि अब अपनी रक्षा के लिए अग्रेजी सैनिक शक्ति पर निर्भर नही रहा जा सकता। ब्रह्मा से भागे हुए लोगो की करुण कहानी व जातीय विद्वेष की अनेक बातो ने अग्रेजो के प्रति भयकर घृणा के भाव पैदा कर दिये थे। अग्रेज सैनिको द्वारा रगून मे किए गए अग्निकाड व सम्पत्ति की लूट ने जनता को सचेत कर दिया था और उसका अग्रेजी न्याय व सत्ता पर से बिलकुल विश्वास उठ गया था। पूर्वी बगाल व आसाम मे हवाई अड्डो तथा अन्य फौजी कामो के लिए जमीनो की जब्ती ने घृणा व द्वेष को और भी भडका दिया था। आतक व भय से भरी जनता अपने नेताओ की ओर देख रही थी। उधर 'क्रिप्स मिशन' की विफ-

स्थिति मे नेता जनता को उठाता है, कारणो को ठीक रूप से तरतीब देता है और बेचैनी को आशा मे, परेशानी को हरकत मे बदलकर सघर्ष के लिए वातावरण पैदा कर देता है। क्षणिक कारण नीचे बिछी हुई बारूद में सुलगती हुई चिनगारी की तरह प्रचण्ड रूप धारण कर आन्दोलन, क्रान्ति अथवा विद्रोह को उग्र रूप दे देते है। आन्दोलन, सगठित भी हो सकता है और असगठित भी, हिंसात्मक और अहिंसात्मक भी, सफल और असफल भी। ये सब बाते देश की स्थिति, सस्कार, नेता के विचार व सगठन-शक्ति, सस्था के प्रभाव व सगठन, नारे की उपयोगिता तथा शक्ति इत्यादि अनेक बातो पर निर्भर होती है। फिर भी जनता की ओर से उठा हुआ कोई भी आन्दोलन अपने प्रभाव व ध्येय में सर्वथा विफल नही होता। हरेक आन्दोलन से दबी हुई जनता कुछ-न-कुछ सीखती ही है। हरेक आन्दोलन जोश, आशा, विश्वास, साहस, सगठन, सघर्ष करने की प्रवृत्ति आदि अनेक बहुमुखी शक्तियो की वृद्धि करता हुआ सघर्ष करने तथा सामूहिक रूप से सोचने के लिए बल प्रदान करता है। इस प्रकार एक आन्दोलन की विफलता ही आगामी आन्दोलन की सफलता की सीढी बन जाती है।

सघर्ष, जद्दोजहद व खीचातानी के वातावरण मे किसी एक पक्ष का दूसरे पर प्रहार कर देना तथा यकायक किसी भयकर घटना का हो जाना, जैसे सरकार का अकारण जनता पर प्रहार कर देना, दोनो पक्षो मे से किसी एक का धैर्य खो बैठना और उतावले होकर कोई कार्य कर बैठना, दोनो पक्षो का निरन्तर कठोर रवैया रखना और इस प्रकार झूठी शान की भावना पैदा कर लेना इत्यादि ऐसी अनेक बाते हो सकती है, जो चारो तरफ फैली हुई बारूद मे चिनगारी बनकर भयकर विस्फोट का कारण बन जाती है। ऐसे वातावरण मे कोई छोटी-सी घटना भी कभी उग्र रूप धारण कर लेती है और विद्रोह, क्रान्ति अथवा बगावत के रूप मे बदल जाती है। पर यह सब कुछ तभी होता है जब क्रान्ति के स्थायी कारण अपनी परिपक्व स्थिति को पहुँच चुकते है। हर आन्दोलन की सफलता के लिए यह जरूरी है वह परिपक्व होने के पश्चात् उठा हो और उसके वेग मे उठने वाले लोगो का ध्येय उचित व न्यायसगत हो अर्थात् उनकी मागो के पीछे नैतिक बल हो। यदि किसी आन्दोलन का आधार न्यायसगत व नैतिक न होगा तो तेजी से उठने पर भी वह अपने ध्येय मे सफल नही हो सकता। अत हर आन्दोलन के लिए यह आवश्यक है कि जहा ध्येय अच्छा हो वहा साधन भी अच्छे हो। उदाहरण के तौर पर हमारे देश मे सन् १८५७ का गदर हुआ, पर साधन ठीक न होने के कारण

हमारी हार हुई और लगभग ७० वर्ष तक भारतीय जनता सिर न उठा सकी। किन्तु कौन जानता है कि युक्तप्रान्त के पूर्वी जिले, बिहार प्रान्त तथा सतारा जिला वही इलाके है, जो सन् १८५७ मे अन्त समय तक लडते रहे और सन् ४२ मे भी आन्दोलन के मुख्य तूफानी केन्द्र रहे। सन् १८५७ मे इन इलाको की भूमि खून से रगी जा चुकी थी और इस कारण इनमें विद्रोह की अग्नि कभी-न-कभी अवश्य सुलगनी थी।

सन् १९४२ से पहले

सन् १९१९ व २१ के असहयोग आन्दोलन मे पहले इसी प्रकार स्थायी कारण परिपक्व हो चुके थे। रौलेट कानून, जलियानवाला बाग हत्या-काड तथा खिलाफत के मसले ने इस आन्दोलन की विरोधाग्नि को प्रज्वलित किया। सन् १९३० व ३२ के नमक सत्याग्रह व लगानवन्दी के आन्दोलनो से पहले भी घटनाओ के जमघट ने एक प्रौढ आन्दोलन के लिए आवश्यक भूमिका तैयार कर दी थी। गान्धी जी की 'डाँडी यात्रा' और देश भर मे होने वाली गिरफ्तारियो के ताते ने इसे आन्दोलन का रूप दिया। सन् ३२ मे सीमा प्रात व युक्त-प्रान्त मे लगानवन्दी और सरकारी दमन आन्दोलन के तात्कालिक कारण बने। ठीक इसी प्रकार सन् १९४२ के 'खुले विद्रोह' से पहले देश में स्थायी कारण अपनी परिपक्व अवस्था को पहुच चुके थे। जनता की वेचैनी, परेशानी और असन्ताप ने उग्र रूप धारण कर लिया था। लडाई के नारो के साथ-साथ भारतीय आकाक्षायें व आशाए भी उभर चुकी थी। उनके साथ अव शाब्दिक मखौल नही किया जा सकता था। आर्थिक कठिनाइयाँ वढती जा रही थी। खाद्य पदार्थ वाजार से लोप हो रहे थे। चान्दी का सिक्का गायव हो रहा था। नोटो की भरमार थी। हागकाग से ब्रह्मा तक जापानी जीत ने अग्रेजो के प्रति जनता मे अविश्वास पैदा कर दिया था और उसे विश्वास होचला था कि अव अपनी रक्षा के लिए अग्रेजी सैनिक शक्ति पर निर्भर नही रहा जा सकता। ब्रह्मा से भागे हुए लोगो की करुण कहानी व जातीय विद्वेष की अनेक वातो ने अग्रेजो के प्रति भयकर घृणा के भाव पैदा कर दिये थे। अग्रेज सैनिको द्वारा रगून मे किए गए अग्निकाड व सम्पत्ति की लूट ने जनता को सचेत कर दिया था और उसका अग्रेजी न्याय व सत्ता परसे विलकुल विश्वास उठ गया था। पूर्वी वगाल व आसाम मे हवाई अड्डो तथा अन्य फौजी कामो के लिए जमीनो की जब्ती ने घृणा व द्वेष को और भी भडका दिया था। आतक व भय से भरी जनता अपने नेताओ की ओर देख रही थी। उधर 'क्रिप्स मिशन' की विफ-

लता ने देश के सभी वर्गो मे ब्रिटिश नीति के विरुद्ध अविश्वास पैदा कर दिया था। लोगो में आम चर्चा थी, "यदि अग्रेज अपनी हार के समय ही हमे कुछ नही दे सकते, तो जब ये जीत जायगे तब तो कुछ भी न देगे।" इस प्रकार देश मे निराशा, घृणा, बेचैनी, क्षोभ, अविश्वास व असन्तोष बराबर दिनो-दिन बढ रहे थे। भारतीय नौकरशाही उपेक्षा और दमन नीति पर आरूढ थी। उसे अपनी सैनिक शक्ति पर भरोसा था। उसने अमेरिकन, आस्ट्रेलियन तथा ब्रिटिश सैनिको को काफी मात्रा मे हिन्दुस्तान बुला लिया था। शायद ब्रिटिश हाई कमाड दूसरे मोर्चो पर होने वाली हारो की क्षति-पूर्ति हिंदुस्तान के राष्ट्रीय आन्दोलन को कुचल कर करना चाहती थी।

क्रिप्स-मिशन

सन् १९४२ मे जब कि एक ओर जापानी भारत के दरवाजे खटखटा रहे थे और दूसरी ओर मुल्क मे चारो ओर बेचैनी थी, अव्यवस्था का साम्राज्य था, अग्रेजी सरकार की ओर से सर स्टेफर्ड क्रिप्स एक मसविदा लेकर भारतीय आकाक्षाओ की पूर्ति के लिए हिन्दुस्तान आये थे। यह वह समय था जब कि जापानी फौजे बिजली की तरह आगे बढ रही थी और ब्रिटिश सरकार को इस बात का ज्ञान हो गया था कि वह अपने साम्राज्य को सुरक्षित नही रख सकेगी। उसकी समुद्री शक्ति क्षीण हो चुकी थी और उसके सैनिको का नैतिक बल भी डावाडोल हो रहा था। पश्चिमी मोर्चे पर भी उसे निरन्तर पीछे हटना पड रहा था और रोम की फौजें सिकन्दरिया के दरवाज़े पर आ खडी हुई थी। उधर स्टेलिनग्राड की बस्तिया भी आए दिन जर्मन रूसियो के हाथ से छीन रहे थे और स्टालिन-ग्राड का पतन सन्निकट था। ऐसे भीषण समय मे भी ब्रिटिश सरकार ने भारतीय आकाक्षाओं के साथ मखौल करना ही उपयुक्त समझा। सर स्टेफर्ड क्रिप्स से, जिन पर भारतीयो का गहरा विश्वास था, कभी भी ऐसी आशा न थी कि वह कोई ऐसा मसविदा पेश करेंगे जिसमे केवल कोरे वायदे हो और वास्तविक रूप मे भारतीय हाथो में राजसत्ता सौपने के कोई ठोस प्रस्ताव न हो। सर स्टेफर्ड क्रिप्स की योजना मिस्टर चर्चिल, एमरी तथा सर क्रिप्स की मिली हुई भावनाओ का सार था। जिसमे एक ओर पूर्ण स्वतन्त्रता देने का वचन था तो दूसरी ओर उस वचन को निष्क्रिय तथा निकम्मा बनाने के सारे उलझाव व प्रतिबन्ध मौजूद थे। इस प्रकार क्रिप्स-प्रस्ताव ने भारतीय आकाक्षाओ को गहरी चोट पहुचाई और उसकी विफलता ने जनता मे और भी अधिक क्षोभ, बेचैनी, झुझलाहट और रोष पैदा कर दिया। लोगो को यह विश्वास हो चला था कि अग्रेज

भारत का तब तक न छोड़ेंगे जब तक कि उनसे अधिक शक्तिशाली ताकत उनको मारकर निकाल न दे। इस प्रकार के विचारो ने देश में अंग्रेजो के प्रति गहरा अविश्वास, घृणा व द्वेष पैदा कर दिया था जो अप्रत्यक्ष तरीके से धुरी राष्ट्रो के प्रति सहानुभूति के रूप मे बदलने लगा था।

ठीक ऐसे ही समय कई प्रमुख ज्योतिषियो ने भविष्यवाणी की कि अगस्त मास में १३ से २३ तारीख तक भयकर परिवर्त्तन होगे। इसका भी लोगो पर जादू जैसा असर पडा। जनता ने कहा, 'अंग्रेज हारे' और गाधीजी ने कहा, 'अंग्रेजो भारत छोडो'। दोनो बातो ने गहरा मेल खाया। यह था वातावरण अगस्त-विद्रोह से पहले, जब कि सडको पर, दूकानो पर, रेलो पर, चौराहो पर, चारो तरफ लोगो में इसी तरह की बाते चल रही थी। ९ अगस्त की नेताओ की गिरफ्तारी ने देश में बिछी हुई बारूद में चिनगारी लगा दी। जनता पागल हो उठी। उसने काग्रेस व काग्रेस नेताओ पर हुए प्रहार को अपनी आशाओ, अभिलाषाओ और आकाक्षाओ पर प्रहार समझा।

नौ अगस्त सन् १९४२

भारतीय इतिहास मे नौ अगस्त एक महत्वपूर्ण दिन रहेगा। अगस्त के अन्य दिनो की तरह इस रोज़ भी बम्बई मे एक भयकर तूफान की आशा की जा रही थी। चारो तरफ बादल घिरे हुए थे। तूफान अवश्य आया पर था वह राजनैतिक। इस तूफान ने भारतीय राजनीति के सारे रूप को ही बदल दिया। ब्रिटिश नौकरशाही का अपनी पूर्व सगठित योजनानुसार काग्रेस पर विद्युत् आक्रमण प्रारम्भ हुआ। यह जापानियो के पर्ल हारबर पर किये गये कमीने हमले से भी कही बढा-चढा था। काग्रेस महासमिति का अधिवेशन ८ तारीख के रात के १० बजे समाप्त हुआ। 'अंग्रेजो भारत छोडो' का प्रस्ताव पास हुआ। गाधी जी ने वायसराय को पत्र लिखने का सकेत किया। उधर ब्रिटिश नौकर शाही ने ९ अगस्त को सारे देश मे अपना हमला बोल दिया। कई दिन पहले से नेताओ की गिरफ्तारी के वारन्ट हर ज़िले में भेजे जा चुके थे। पब्लिक सरकुलर द्वारा केन्द्रीय सरकार ने प्रान्तीय सरकारो को कुछ हिदायतें दे दी थी कि किस प्रकार उन्हे काग्रेस तथा उसकी माग के विरुद्ध यहा तथा बाहरी देशो मे जनमत तैयार करना चाहिए। यह सब बातें इस बात का सबूत देती है कि ब्रिटिश नौकरशाही ने अपने को पहले ही से एक निश्चित व पूर्ण सगठित आक्रमण के लिए तैयार कर रखा था। प्रस्ताव के पास होते ही हुकूमत की

सारी नागरिक और सैनिक मशीनरी हरकत में आगई। कार्य-समिति के सदस्य तथा हर सूबे, जिले, शहर और गाव के काग्रेसी नेता पकड लिए गये। अखबारो के गले घोट दिए गये। आर्डिनेंसो और 'भारत रक्षा कानून' का राज्य स्थापित हुआ। इन आर्डिनेसो का एक ही अभिप्राय था कि जनता मे नेताओ की गिरफ्तारी के विरुद्ध कोई प्रदर्शन न हो। काग्रेस-सगठन गैर कानूनी करार दे दिया गया। काग्रेस-दफ्तरो पर ताले पड गये व उनकी सम्पत्ति को ज़ब्त कर लिया गया। इस प्रकार सारे देश में अर्द्ध-फौजी कानून स्थापित किया गया। सारा ही देश एक बडा जेलखाना बन गया और काग्रेस तथा जनता पर ज़बरदस्ती सघर्ष लादा गया। स्वभावत इसकी प्रतिक्रिया हुई। जोश व रोष से परिपूर्ण जनता ने विरोध प्रदर्शन किये, सभायें की, हडतालें की, दफा १४४ को तोडा और 'अग्रेजो भारत छोडो' के नारे से प्रभावित तथा खुले विद्रोह की प्रवृत्ति से प्रोत्साहित जनता विभिन्न कार्य-क्रमो की तलाश में भटकने लगी।

कांग्रेस का नेतृत्व

प्रत्येक आन्दोलन मे एक नेता की आवश्यकता होती है, जो उसके रूप एव उसकी गति-विधि को निर्धारित करता है तथा परिस्थितियो के कारण इधर-उधर बिखरी हुई जनता की शक्ति को एक निश्चित लक्ष्य की ओर प्रेरित करता है। वह आक्रमण करने तथा आक्रमण से बचने के ऐसे ढग निकालता है जिनसे लक्ष्य की प्राप्ति हो सके। भारत की राष्ट्रीय काग्रेस ब्रिटिश साम्राज्यशाही के चगुल से छुटकारा पाने के प्रयत्न मे जनता को सदा ही ऐसा नेतृत्व प्रदान करती आई है और सन् १९४२ के खुले विद्रोह मे भी वह अपने इस कर्त्तव्य को पूरा करने मे तनिक भी पीछे नही रही। सन् १९१४ के बाद प्रथम महायुद्ध की घटनाओ के कारण जो एक जागृति का काल आया, उसमे काग्रेस ने बडी शक्ति हासिल की और वह एक सुसगठित सस्था बन गई। देश के सुख-दुख में तथा उसकी आर्थिक, सामाजिक एव राजनैतिक प्रगति मे पूरा सहयोग देने के कारण उसने जनता का हृदय जीत लिया है और उसका प्रभाव देश के एक कोने से दूसरे कोने तक छा गया है। उसने अपने अनुभव एव दूरदर्शिता के आधार पर साम्राज्यशाही के जुए को उतार फेंकने के लिए अहिसा, असहयोग एव सत्याग्रह की एक नूतन कला की सृष्टि की है, नवीन टैकनीक ईजाद की है। महात्मा गाधी ने इसे एक ऐसा सुदृढ नेतृत्व प्रदान किया है, जो सन् १९२०-२१, १९३०-३१ १९४० व ४६ के

विपत्तिपूर्ण एव नाजुक समय मे भी खरा उतरा। इन आन्दोलनो तथा इनसे प्राप्त होने वाले फायदो के कारण भारतवासी आशावादी हो गये और उनका अपने नेताओ तथा अपने लक्ष्य की सफलता में पूरा विश्वास जम गया ।

सन् १९४२ का विपत्तिकाल काग्रेस नेतृत्व की परीक्षा का समय था, जिसमे वह पूरी तरह सफल सिद्ध हुआ है। इतिहास में शायद ही कोई ऐसा उदाहरण मिले जब कि किसी नेतृत्व को ऐसे विचित्र एव नाजुक समय का सामना करना पडा हो । काग्रेस नेतृत्व को जिस विपत्ति का सामना करना पडा, वह स्थानीय या राष्ट्रीय नही थी, वह तो सच्चे अर्थ में विश्व-व्यापी थी। साथ ही विपक्षियो के साधन इतने अधिक थे कि उनकी शक्ति का निर्धारण करना आसान न था । छिपाव एव दगाबाजी की कूटनीति चरम सीमा पर पहुंच चुकी थी। युद्ध इतना भयकर रूप धारण कर चुका था कि साधारण आदमी के लिए यह अनुमान लगाना कठिन हो गया था कि दूसरे ही क्षण क्या होने वाला है। समस्त ससार छिन्न-भिन्न हो रहा था । बडे-बडे राष्ट्र विजेता के चरणो मे नतमस्तक हो रहे थे। हरेक वस्तु पतन के कगारो पर खडी थी और समस्त ससार एक तूफानी समुद्र के रूप में बदल गया था।

ऐसे घोर विपत्तिकाल में काग्रेस को भारत जैसे महान् देश के ४० करोड नर-नारियो का नेतृत्व करना था और वह भी इस ढग से कि मुसीबत न उठानी पडे और सफलता भी मिल जाय। एक छोटी सी गलती के कारण देश को एक ऐसे खतरे के गड्ढे में जा गिरने का डर था जहा से वह पीढियो तक वापिस न निकल पाता। अतएव जब हम इन परिस्थितयो के साथ सन १९४२-४६ की भयानक घटनाओ की जाच करते हैं तो हमें महात्मा गाधी की दूरदर्शिता, बुद्धिमानी एव अनुभव का पता चल जाता है। वास्तव में महात्मा गाधी ने बहुत सी विपत्तियो से हमारी रक्षा की है। जिस राजनैतिक स्थिति को लोग पराजय की दृष्टि से देखते थे वही आज गौरवपूर्ण जीत दिखाई दे रही है।

प्रत्येक नेतृत्व मे सावधानी, दृढता एव जोश इन तीन बातो की बडी आवश्यकता होती है। एक बढती हुई विपत्ति की भिन्न-भिन्न अवस्थाओ में कभी सावधानी , कभी दृढता और कभी जोश से काम लेना पडता है। सर्व प्रथम सावधानी की जरूरत है। एक योग्य नेता के लिए अपनी तथा विपक्षी की शक्तियो का तुलनात्मक अध्ययन अनिवार्य होता है। उसे अपने द्वारा तथा विपक्षी द्वारा अपनाए जाने वाले सभी सम्भव साधनो को पहले से ही सोच कर इन्तजाम कर लेना पडता है और साथ ही इन सब के परिणामो पर विशेष

ध्यान रखना पडता है। इसके अतिरिक्त तेजी मे फैलते हुए युद्ध के प्रारम्भ काल में ही जनता को किसी वडे आन्दोलन के लिए खडा कर देना अदूरदर्शिता-पूर्ण एव असामयिक होता है। यही कारण है कि काग्रेस नेतृत्व उस विषम परिस्थिति में इन सव वातो को सोच समझ कर वडी सावधानी तथा दृढता के साथ अपने कदम रख रहा था। पर लोग इस वात का उस समय समझ न पाये थे। अत कुछ लोग उस पर अस्थिरता का और कुछ डरपोकपन का दोषारोपण करने लगे। कुछ इससे और आगे वढे और उन्होने उस पर सम्भाव्य क्रान्ति के मौके पर दगावाजी करने का लाछन लगाया। किन्तु वाद की घटनाओ ने उनके इन आरोपो को विल्कुल गलत सावित कर दिया तथा यह वात भी साफ तौर से प्रकट कर दी कि काग्रेस ने युद्ध के प्रारम्भ काल मे जिस नीति को अपनाया था वह सोलह आने विवेक-पूर्ण थी ।

ज्यो ही परिस्थिति कुछ गम्भीर हुई और आने वाली घटनाओ का चित्र सामने आया त्यो ही काग्रेस-नेतृत्व को एक ऐसी सुदृढ तजवीज तैयार करने का मौका मिला जिसे वह सकट-काल के अन्त तक अपनाता। मलाया, वर्मा आदि में स्थान-स्थान पर हार होने के कारण लोगो का विश्वास अग्रेजो की शक्ति पर से हटता जा रहा था। अग्रेजो की थल, जल एव हवाई शक्ति को वुरी तरह हानि पहुँच चुकी थी। या यो कहिए कि अग्रेज काफी हद तक परास्त हो चुके थे। अत. स्वाभाविक रूप से ही अग्रेजो का प्रभाव उठ गया था तथा नैतिक दृष्टि से भी उनमे शक्ति-क्षीणता, कमीनापन एव पतन के चिन्ह प्रत्यक्ष रूप से दिखाई पडने लग गये थे। इसलिए काग्रेस-नेतृत्व के लिए विरोध करने तथा अपनी माग दृढतापूर्वक रखने का यह अच्छा मौका था। उसने इस वात को समझा और अपनी मागे तैयार की तथा देश का समर्थन प्राप्त करने के लिए प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया। ज्यो-ज्यो समय के साथ युद्ध भारत की सीमा पर पहुँचता गया, त्यो-त्यो काग्रेस की आवाज तीव्र होती गई और उसके नेता अपने संगठन को दृढ करने तथा युद्ध के आधार पर जनता को तैयार करने का अथक प्रयत्न करते गये।

इस प्रकार सन् १९४२ का नाजुक समय आ पहुचा और जापान हांग-कांग से इम्फाल तक आश्चर्यजनक गति से वढ आया, जिससे इन प्रदेशो में ब्रिटिश शासन-सत्ता विल्कुल नष्ट होगई। अतएव यह वह मौका था जब कि एक ऐसा कदम उठाया जा सकता था जो निहत्थे लोगो को अपने पैरो पर खडे होने की इच्छा एवं सामर्थ्य प्रदान करता और उनको तेजी से छिन्न-भिन्न होते हुए सामाजिक ढांचे के स्थान पर एक उन्नत समाज का निर्माण करने के लिए

जी-जान से प्रयत्न करने को प्रेरित करता। सचमुच यह वह अवसर था जिसकी भारतवासी सदियो से प्रतीक्षा कर रहे थे, क्योकि निर्दयी एव अत्याचारी ब्रिटिश साम्राज्यवाद द्वारा जवरन लादी हुई समाज-व्यवस्था ने उनको पीस दिया था और उनका आर्थिक, सामाजिक तथा नैतिक पतन हो चला था। अतएव वे एक ऐसे मौके की बाट में थे जब कि वे अपने बन्धनो को तोड फेंकें और एक बिलकुल नवीन, उदार एव उन्नत व्यवस्था की स्थापना कर सकें।

सन् १९४२ का सुनहला प्रभात आया। समय के साथ सदा की भाति ग्रीष्म एव पतझड ऋतुये बारी-बारी से आईं और हमें वसन्त ऋतु प्रदान करके चली गईं। पर इस बार वे देश को वसन्त के साथ एक उपहार और दे गयी। वह उपहार था आजादी एव उन्नति हासिल करने के लिए क्रान्ति का सन्देश। ऐसा प्रतीत होता था मानो प्रकृति के अकाट्य नियमो के अनुसार गुलामी की जजीरो की कडिया स्वत ही छिन्न-भिन्न होना चाहती है। अतएव भारतवासियो के सामने यह प्रश्न था कि वे इस सुअवसर का लाभ उठा कर कुछ करेगे या हाथ पर हाथ धरे समय निकाल देंगे। जनता में क्राति की एक तीव्र लालसा दिखाई पड रही थी और लोग बडी आतुरता से काग्रेस के नेतृष्व की ओर देख रहे थे। वे सोच रहे थे कि काग्रेस ऐसे मौके पर उनका नेतृत्व करेगी या कर्त्तव्य पूरा न कर सकने के कारण अपना प्रभाव खो बैठेगी। भला काग्रेस ऐसे अवसर पर कब चूकने लगी? उसने लोगो को सचेत किया, "सगठित एव नियन्त्रित रूप मे आगे बढो और गुलामी की जजीरो को तोडकर फेक दो। अपने-आपको पूर्ण स्वतत्र समझो और उसी रूप में काम करो। जो भूमि अपने हिस्से की है उसे अपने अधिकार में कर लो और यदि कोई शक्ति, चाहे वह जर्मन हो, चाहे जापान, चाहे अग्रेज हो, चाहे और कोई, तुमसे उसको छीनना चाहे तो उसका पूर्ण दृढता से मुकाबला करो।"

वास्तव में जब कोई सेना अपनी इच्छित भूमि को हथियाने के लिए बढती है तो उसे अपनी रक्षा करने के लिए किसी साधन की आवश्यकता होती है। क्या काग्रेस-नेतृत्व ने आन्दोलन के लिए तैयार जनता को ऐसा कोई साधन दिया जिससे वह शत्रु के प्रतिघात को नाकामयाब बनाने में सफल हो सके? क्या उसने जनता को पीछे हटने का कोई साधन दिया? हमे इसी प्रकार के नाजुक प्रश्नो के आधार पर काग्रेस की जाँच करनी चाहिए, क्योकि इससे ही हम उसकी बुद्धिमानी, निपुणता, सावधानी, आदर्शवादिता, विपत्तियो का सामना करने की दृढता आदि गुणो को जान सकते है।

आन्दोलन की लपटों में

इस प्रकार देश एक भीषण आन्दोलन की लपटो से घिर गया और जैसी कि आशा की जाती थी, नेता लोग जेल के सीखचो में बन्द कर दिए गए। अत जब नेता लोग नही रहे तो हर एक स्त्री-पुरुष पर अपने नेतृत्व की जिम्मेवारी आगई और जनता ने अपने विश्वस्त नेताओ के अभाव में अपने उद्देश्य को प्राप्त करने का सब उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लिया। मदान्ध साम्राज्यवाद के निर्दयतापूर्ण दमन ने लोगो के हृदय मे तीव्र लगन एव दृढता उत्पन्न कर दी थी कि शारीरिक यातनाये सहन करके भी उन्हें अंग्रेजी शासन का मुकाबला करना चाहिए तथा उसे पर विजय प्राप्त करनी चाहिए। अतएव जनता ने विपक्षी पर आक्रमण करने के नए साहसपूर्ण तरीके ईजाद किये और उनके आधार पर आन्दोलन को चलाया। इस बीच आजादी के कुछ नए एव पुराने सैनिक आगे आए और शत्रु पर आक्रमण करने के लिए जनता का पथ-प्रदर्शन करने लगे। उन्होने जनता के हृदय में अधिकार प्राप्त करने की इच्छा जाग्रत कर दी और उसे कार्य रूप मे लाने का मार्ग भी बता दिया। अतएव स्वाभाविक रूप से ही इन नेताओ को कल्पनातीत ख्याति प्राप्त हुई। वास्तव में युद्ध काल से ही दूसरे देशो की परिस्थितियो के कारण राष्ट्रीय कांग्रेस मे एक क्रांतिकारी दल तैयार हो रहा था जो राष्ट्रीय युद्ध-नीति को क्रान्तिकारी रूप देना चाहता था। श्री सुभाषबाबू इस प्रकार की विचार-धारा के प्रतीक थे। जब तक वह भारत मे रहे, निरन्तर इस नीति को प्रोत्साहन देने एव कार्य रूप मे परिणत करने की कोशिश मे लगे रहे। और जब वे देश से बाहर चले गये तो वहाँ पर उन्होने अपने इस प्रयत्न को अन्त तक जारी रखा। सिंगापुर मे प्रसिद्ध आजाद हिन्द फौज का निर्माण कर तथा बर्मा एव भारत की सीमा पर आजाद हिन्द फौज की अंग्रेजो के साथ लडाइयाँ लडवाकर श्री सुभाषबाबू ने अपनी इसी भावना का परिचय दिया।

इधर भारत में भी उस समय बहुत से व्यक्ति सुभाषबाबू की इस नीति को आगे बढाने के लिए किसी उपयुक्त अवसर की बाट देख रहे थे। सौभाग्य से १९४२-४३ मे भारतीय जनता ने जो क्रांतिकारी प्रयत्न किए उनके कारण इन लोगो को अपनी इस नीति का प्रयोग करने का अच्छा अवसर मिल गया। इस प्रकार पिछले वर्षो की अपेक्षा अब हम अधिक अनुभवशील है। जब वातावरण शान्त हो जाय तो हमें इन विभिन्न प्रकार की घटनाओ एव प्रगतियो की वैज्ञानिक ढग पर निष्पक्ष जाँच करनी चाहिए,

ताकि राष्ट्रीय ज्ञान-कोष समृद्धिशाली बने और हमारे भावी आन्दोलन अधिक सफल हो सकें।

युद्धकालीन नेता एवं राष्ट्र के कर्णधार

यह एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण प्रश्न है जिसकी हम अवहेलना नही कर सकते। एक राष्ट्रीय युद्ध मे अनेक नायक उत्पन्न हो जाते है और खूब ख्याति प्राप्त करते है। हाल ही में समाप्त होने वाले महायुद्ध मे रोमेल, मोन्टगुमरी, मैकआर्थर, टिमोशेन्को आदि अनेक जनरलो ने महत्त्वपूर्ण काम किये और ख्याति के शिखर पर पहुँचे। परन्तु युद्ध के समाप्त होने और सामाजिक अवस्था के स्वभाविक स्थिति मे आने पर हमे प्रत्येक व्यक्ति को सामाजिक, राजनैतिक एव आर्थिक परिस्थिति के अनुरूप ही स्थान देना चाहिए। शान्ति-काल में किसी युद्धनायक के हाथो मे राष्ट्र की बागडोर सौंप देना बहुत ही घातक होगा, क्योकि इससे सम्पूर्ण सामाजिक ढाँचा अस्त-व्यस्त हो सकता है।

सैनिक दृष्टि से भी किसी खास मोर्चे पर समय एव परिस्थिति के अनुरूप काम मे लाई जाने वाली अस्थायी नीति का एकागी महत्त्व ही होता है, उसकी सम्पूर्ण युद्ध-नीति के साथ समता नही की जा सकती, क्योकि सम्पूर्ण युद्ध-नीति में युद्ध की तैयारी, शान्ति-काल की कूटनीति, प्रचार, आक्रमण करना, विपक्षी के आक्रमण का मुकाबला करना, समय पडने पर पीछे हटना रसद इकट्ठी करना तथा उसे विभिन्न मोर्चो पर भेजना, सैनिक भर्ती, सन्धि करना आदि अनेक जटिल समस्याये शामिल है। इस प्रकार इग्लैड, रूस, अमेरिका आदि देशो में उन जनरलो को, जिन्होने कठिन मोर्चो पर विजय प्राप्त की है तथा आक्रमण करने एव विपक्षी के आक्रमण से बचने के अनेक लाभप्रद एव सफल तरीके निकाले है, अनावश्यक महत्त्व देना हानिप्रद सिद्ध होगा।

सच्चे एव स्थायी हित की दृष्टि से देश की बागडोर उन्ही नेताओ के हाथ मे सौंपनी चाहिए जिनका अनुभव परिपक्व हो, जिनको बहुत पुराना तजुर्बा हो, जिन्होने अपनी ईमानदारी, लगन एव त्याग के द्वारा जनता के नेतृत्व का अधिकार प्राप्त किया हो तथा जो अपने आदर्शो के आधार पर एक बडे और उन्नत राष्ट्र के गौरव के अनुरूप सामाजिक सगठन निर्माण करने की क्षमता रखते हो।

कार्यक्रम

क्रोध एव रोष से उन्मत्त और जोश से भरी हुई जनता युद्ध करना चाहती

थी। उसमे साहस था, जोश था और थी अपने-आपको स्वतत्र करने की तीव्र इच्छा। बढते हुए दमन चक्र तथा दिल दहलाने वाली घटनाओ के रूप में लोग ब्रिटिश साम्राज्यशाही का नगा नाच देख चुके थे और उधर जेल के सीखचो में से उन्हे अपने प्रिय नेता महात्मा गान्धी का 'करो या मरो' का गगन-भेदी स्वर सुनाई पड रहा था।

आन्दोलन को चलाने के लिए उन्हे एक निश्चित कार्यक्रम कौन देगा? क्या नेताओ ने अपने पीछे कोई निश्चित कार्यक्रम छोडा है? यदि नही तो क्यो? कोई कार्यक्रम न पाने की सूरत मे उन्हे क्या करना है? इस प्रकार के कितने ही प्रश्न थे जिन पर जनता के लिए ठडे दिल से विचार करना आवश्यक था। परन्तु जब जनता आन्दोलन प्रारम्भ कर देती है तो वह किसी प्रकार का अवरोध सहन नही कर सकती और उसके सामने जो भी हथियार आता है, चाहे वह कितना ही खराब क्यो न हो, उसे अपने क्रान्तिकारी उपयोग मे ले आती है। यह एक नियम है। यही बात नेताओ की गिरफ्तारी के बाद यहा हुई। उस समय देश में यह बात जोरो से फैल चुकी थी कि ब्रिटिश साम्राज्य-वाद के शासन-सूत्र को पगु बना देना अत्यन्त आवश्यक है। इतने ही मे भारत-मत्री श्री एल० एस० एमरी ने काग्रेस को बदनाम करने एव उस पर दोषा-रोपण करने की नीयत से तोड-फोड का एक कार्यक्रम ब्राडकास्ट किया जिसमें ११ बातें थी। जनता ने इस ब्राडकास्ट को अपनी उत्तेजित भावना से देखा और उसके सामने जो भी ब्रिटिश शासन का चिन्ह आया उसे वह नष्ट करने पर तुल गई। परिणाम-स्वरूप पुलिस थाने जला दिये गए या तहस नहस कर दिये गये, डाकखाने लूट लिए गए, मीलो तक रेलवे लाइने उखाड डाली गईं, सरकारी रिकार्ड फूक दिये गये और इसी प्रकार अनेक तरीको से सरकारी शासन पर प्रहार किया गया और उसे काफी क्षति पहुचाई गई।

कार्यक्रम किसने दिया ?

यह कार्यक्रम किसने दिया, यह एक बहुत ही विवादास्पद प्रश्न बन गया है। कुछ लोग इसे एमरी के दिमाग की उपज बताते है। कुछ कहते है धुरी रेडियो एवं श्री सुभाष बाबू के ब्राडकास्ट द्वारा जनता ने इसे प्राप्त किया और कुछ लोग इससे भी आगे बढते है और वे इसकी जिम्मेदारी काग्रेस के उन नेताओ पर डालते है जो प्रथम दौर में गिरफ्तार न किये जा सके और जो इस प्रकार कार्य-क्रम बनाने तथा उसका प्रचार करने को स्वतन्त्र थे। हमारी समझ में ये सब बातें व्यर्थ की है। यह बात सभी जानते है कि जब प्रधान नेता गिरफ्तार कर

लिये गये तो उनके पीछे देश में एक अत्यन्त क्रान्तिकारी भाव उबाल खा रहे थे। बम्बई में लोगो ने 'कौंसिल आफ एक्शन' यानी 'सघर्ष समिति' की स्थापना करके अपने हृदय के इन भावो को दुनिया के सामने व्यक्त कर दिया। यह पहली सगठित क्रान्तिकारी सस्था थी और इसमें कांग्रेस के उन नेताओ ने भी, जो गिरफ्तार नही किये जा सके थे, भाग लिया था। इस सस्था के कार्यकर्ताओ ने अपना एक स्वतत्र प्रेस तथा ब्राडकास्ट स्टेशन बना लिया था, जिनके द्वारा ये अपने इधर-उधर बिखरे हुए साथियो एव जनसाधारण को आन्दोलन चालू रखने के सम्बन्ध मे हिदायतें देते थे। ये लोग तीन बातो पर खास जोर देते थे—१ यातायात के साधन नष्ट करना। २ गावो मे सरकारी सिक्के का बहिष्कार कर उसके स्थान पर वस्तु के बदले वस्तु देने की प्रथा की स्थापना तथा ३ पुलिस एव फौज का विरोध। वैसे लोगो को सरकारी सस्थाओ, जैसे पुलिस थानो, रेल्वे स्टेशनो, डाकघरो, माल गोदामो, अदालतो आदि पर कब्जा करने तथा मिलो, फैक्टरियो, स्कूल-कालेजो आदि मे हडताल कराने के लिए भी उत्साहित किया जाता था।

कोई कार्यक्रम क्यों नहीं दिया गया ?

नेताओ ने जनता को कोई निश्चित कार्यक्रम नही दिया ? इस सम्बन्ध में दो बातें विचार करने की है। क्या नेता लोग बिना किसी पूर्व चेतावनी के गिरफ्तार लिये गये ? या क्या कोई निश्चित कार्यक्रम देने के प्रश्न को उन्होंने उस समय जान बूझ कर टाल दिया था ?

जो महात्मा गाधी की प्रकृति को जानते है उनके लिए इस प्रश्न का उत्तर स्पष्ट है। यह सभी जानते है कि कोई कार्यक्रम तभी दिया जा सकता है जब कि उसे पूरा करने की मशीनरी तैयार हो और उसमे एक निर्दयी विपक्षी के प्रहार को सहने की क्षमता हो। उस समय जो परिस्थिति थी उससे यह स्पष्ट दिखाई पडता था कि ज्यो ही आन्दोलन प्रारम्भ हुआ कि नेता लोग जनता से छीन कर जेल के सीखचो मे बन्द कर दिये जायगे और इस प्रकार लोगो को अपना नेतृत्व स्वय करना पडेगा। ऐसी हालत में यह बिलकुल अनुचित था कि बिना किसी नेतृत्व के लोगो को तोड-फोड का क्रान्तिकारी कार्यक्रम दे दिया जाता। गान्धीजी को यदि यह विश्वास होता कि वह अपने कार्यक्रम को अन्त तक कार्यान्वित कर सकेंगे तथा एक अहिंसक आन्दोलन मे लोगो का नेतृत्व करने के लिए खुले छोड दिये जायगे तो वे एक निश्चित कार्यक्रम अवश्य देते, क्योंकि वे स्वय ऐसा करना चाहते थे। किन्तु अचानक वह कैद कर लिये गये

और उनकी नीति एव व्यवहार-कुशलता ने उन्हें इस बात के लिए प्रेरित किया कि वह लोगो को अपनी प्रकृति तथा सामर्थ्य के अनुरूप स्वय ही अपना कार्यक्रम तैयार करने के लिए स्वतत्र छोड दें । फौजी दृष्टि से भी उनके लिए किसी कार्यक्रम के लिए हुक्म देना बिलकुल अनुचित एव हानिकर था । हुक्म वे ही अफसर दे सकते है जो स्वय घटनास्थल पर सिपाहियो के साथ ऊची-नीची स्थिति का सामना करते है एव उसका निरतर अध्ययन करते है । जब इस बात की निश्चितता न हो तो नेता के लिए यही बात शेष रह जाती है कि वह जनता को आन्दोलन के विषय मे साधारण बाते बता दे अर्थात् नारा, चेतावनी आदि दे दे । कांग्रेस-नेतृत्व ने अपने इस कर्तव्य को पूरा किया और ज्यो-ज्यो आदोलन शुरू होने का समय आता गया, नेताओ ने बार-बार अपने भाषणो द्वारा लोगो को इन बातो का ज्ञान कराया तथा अखिल भारतवर्षीय कांग्रेस कमेटी के सामने भाषण देते हुए ८ अगस्त को तो महात्मा गाधी ने बिलकुल खुले शब्दो मे इन बातो का निर्देश कर दिया ।

कोई निश्चित कार्यक्रम न देने का एक और भी मुख्य कारण है । कोई भी नेता आन्दोलन के बीच मे उत्पन्न होने वाली तमाम सम्भाव्य परिस्थितियो का पहले से ही अनुमान नही लगा सकता । अत जब नेता को स्पष्ट दिखाई पडता है कि परिस्थिति के अनुसार वह अपने हुक्म को बदल सकने के लिए स्वतत्र न होगा तो ऐसी अवस्था मे पहले से ही अपनी सेना को एक निश्चित हुक्म दे देना कितना घातक हो सकता है यह सभी जानते है । ऐसी अवस्था मे युद्ध-स्थल पर उचित नेतृत्व न कर सकने के कारण नेता पर एक बहुत बडी नैतिक जिम्मेदारी आ जाती है । उस दशा मे सैनिक एक अजीब परिस्थिति मे पड़ जाते है और पीछे हटना, बगल से आक्रमण करना आदि असम्भव हो जाता है । इस प्रकार सैनिको का जीवन अपने नेता के हाथो मे चला जाता है जो स्वय अपने निर्दयी चालाक विपक्षी की दया पर ही जीवित रह सकता है। इन बातो को सोचते हुए यह स्पष्ट हो जाता है कि उस समय की अजीब परिस्थिति मे यदि कोई कार्यक्रम तैयार किया जाता तो वह हमारे लिए बहुत घातक सिद्ध होने के अलावा विपक्षी के लिए भी बहुत लाभप्रद सिद्ध होता और इस प्रकार हम दोहरी मार खाते और पिस जाते ।

आंदोलन के तूफानी केन्द्र

प्रारम्भ मे सारे देश मे हडताले, विरोधप्रदर्शन, जुलूस व सभाए हुईं । पर साथ ही साथ जहाँ-जहाँ भी मिस्टर एमरी की कांग्रेस-प्रोग्राम सम्बन्धी

घोषणा, सुभाषबाबू के नाम पर धुरी रेडियो द्वारा ब्राडकास्ट किया जाने वाला प्रोग्राम तथा अखिल भारतीय कांग्रेस के नाम से बाँटे गये पर्चे पहुँचते गए वहाँ-वहाँ पर सरकारी इमारतो, सस्थाओ तथा सरकारी सत्ता के चिन्हो, जैसे कचहरियो, थानो, डाकखानो इत्यादि पर जनता के सामूहिक प्रयत्न प्रारम्भ हुए । पर यह प्रोग्राम केवल उन्ही इलाको में अधिक फला-फूला और स्वभावत अपनाया गया जहाँ पर या तो युद्ध के विविध दबावो के कारण जनता तग आ चुकी थी या आर्थिक परेशानी बढ चुकी थी या काग्रेस नेतृत्व का जनता पर गहरा प्रभाव था या क्राति के लिए अन्य उपयुक्त कारण अपनी परिपक्व अवस्था को पहुँच चुके थे । उन इलाको मे यह प्रोग्राम तेजी से चला । इसीलिए आन्दोलन के तूफानी केन्द्र आसाम घाटी के जिले, बगाल के पश्चिमी जिले, मिदनापुर, बिहार के उत्तरी, पूर्वी व पश्चिमी इलाके, युक्तप्रान्त के पूर्वी जिले, उडीसा मे बालासोर जिला, महाराष्ट्र मे सतारा, पूर्वी खानदेश, पश्चिमी खानदेश विशेष रूप से रहे । यह प्रश्न किया जा सकता है कि आखिर इन्ही इलाको मे आन्दोलन का तूफान अधिक क्यो उठा ? उत्तर बडा सरल है । वहाँ पर शिक्षा का अधिक प्रचार है, गाँव-गाँव मे पढे-लिखे लोगो की काफी सख्या है, फौजी भर्ती के ये केन्द्र है और सन् १८५७ के गदर के समय भी ये सब जिले अन्त समय तक अपनी आजादी के लिए लडते रहे थे । यहाँ पर बहादुर लोग रहते है । भौगोलिक दृष्टि से यहाँ के लोग लुक छिप कर लम्बी लडाई लडने के लिए अधिक समर्थ है । यहाँ इस लडाई मे जनता पर हर प्रकार के बोझ पड चुके थे । अपने युद्ध-प्रयत्नो को सफल बनाने के लिए ब्रिटिश नौकरशाही ने तरह-तरह के प्रतिबन्ध लगा रखे थे । चूकि इन इलाको से काफी अधिक सख्या मे लोग फौज में भर्ती हो चुके थे, इसलिए उनके भाई व रिश्तेदार जो इन इलाको मे बसते थे, कुछ ऐसा सोचने लगे थे कि अब अपने फौजी भाइयो से मिलने का केवल एक ही उपाय है कि हिन्दुस्तान मुक्त हो जाय । इन बातो के अलावा ये वे इलाके है जहाँ पर काग्रेस नेतृत्व का जनता पर गहरा प्रभाव था ।

इस आदोलन का दूसरा विशेषता यह रही कि इसके तूफानी केन्द्र मुख्यत उन इलाको में रहे जो जापानी बमबाजी के नजदीक पडते थे । वहा की जनता को विश्वास हो चला था कि जापानियो के जुल्म भी उन्ही को सहने पडेगे, इसलिए उन्होने सोचा कि जब मरना ही है तो अपनी आजादी के लिए ही क्यो न मरें । यही कारण है कि पुरी, पूर्वी गोदावरी, गन्टूर, कोयम्बटूर, बगाल में कन्टाई इत्यादि जितने भी पूर्वी तट के इलाके है उन सब में

भयकर विस्फोट हुआ। हमारा तात्पर्य यहा पर उन कारणो को बताने का नही है जिनकी वजह से यह सब इलाके आन्दोलन के मुख्य केन्द्र बने । केवल सकेत रूप से यह बताना है कि क्यो इन खास इलाको मे आदोलन तेजी से रहा और क्यो एक विशेष प्रकार का आन्दोलन इन्ही इलाको में हुआ । उपरोक्त कारणो के अतिरिक्त और भी ऐसे ही कारण थे जो इन इलाको के आदोलन मे सहायक हुए थे।

तूफान उठा, वेग से बढा और अन्त मे यहाँ तक दीख पड़ा कि करोडो ने किसी-न-किसी रूप मे इसमे सहयोग दिया । पाँच-छ' माह बाद आन्दोलन का सामूहिक रूप खत्म हुआ। देश में सैनिक शक्ति स्थापित हुई। सरकार की ओर से कुछ आकडे छपे है, उनके अनुसारः—

पुलिस तथा फौज की गोलियो से मरे व्यक्तियो की सख्या	६४०
पुलिस तथा फौज की गोलियो से घायल व्यक्तियो की सख्या	१,६३०
कितनी बार गोलिया चलाई गयी	५३८
गिरफ्तार हुए व्यक्तियो की सख्या	६०,२२९
नजरबन्द किए गए व्यक्तियो की सख्या	१८,०००
उन स्थानो की सख्या जहा फौज बुलाई गयी	६०
उन स्थानो की सख्या जहा हवाई जहाजो से बम गिराए गए (पटना, भागलपुर, नदिया, मुगेर, तलकेरा और तमलक)	६
स्टेशनो की सख्या जो दिसबर मास तक बरबाद किए गए	३१८
गिराई गयी गाडियो की सख्या	५९
तोड़-फोड द्वारा रेलवे विभाग की क्षति	रु० १८,००,०००
मोटर लारियो की क्षति	रु० ९,००,०००
स्टेशन की इमारतो की क्षति	रु० ८,५०,०००
स्टेशनो की अन्य सामग्री की क्षति	रु० ६,५०,०००
पोस्ट आफिसो की सख्या जिन पर हमले किये गये।	९५४

नोट—इनमे से ६० पूर्णरूपेण बरबाद किए गए, २५२ बुरी तरह से बरबाद किए गए और बहुत से गोलीबार द्वारा बरबाद किए गए ।

नकद तथा दूसरी तरह से की गयी क्षति	रु० २,००,०००
कितनी जगह टेलीफोन व टेलीग्राफ के तार काटे गये	१२,०००

उपरोक्त हर्जाने के अलावा डाकखानो तथा तारघरो के आफिसो मे १,००,००० रुपए से अधिक का फरनीचर बरबाद कर दिया गया। सैकड़ो स्कलो

इमारतो को बरबाद करने से जो क्षति हुई है, उसकी सख्या भी हजारो और लाखो के करीब है।

सरकार का यह भी कहना है कि ६० स्थानो पर सेना को बुलाना पडा और लगभग ५३८ बार पुलिस को भीड को छिन्न-भिन्न करने के लिए ६ मरतबा हवाई जहाजो से भी गोलिया चलानी पडी। सरकार द्वारा यह भी बताया गया है कि जनता ने थानो, डाकखानो, स्टेशनो, सरकारी इमारतो आदि पर सामूहिक प्रहार किये तथा उनको जलाया।

उपरोक्त आकडो के बावजूद सरकार का कहना है कि आन्दोलन के कारण उसकी काई खास क्षति नही हुई, किन्तु आन्दोलन काल मे उसी के सप्लाई डिपार्टमेंट की ओर से एक विज्ञप्ति निकली थी जिसका सार हम नीचे देते है। इसको पढकर पाठक अनुमान लगा लेंगे कि सरकारी युद्ध-प्रयत्नो पर आन्दोलन का कितना अधिक प्रभाव पडा था। विज्ञप्ति में कहा गया है—

"काग्रेस आन्दोलन का प्रभाव कपडा मिलो पर बहुत पडा है। अहमदाबाद के करीब ९० प्रतिशत सूत कातने वालो ने काम छोड दिया। मद्रास प्रान्त में बकिंघम मिल और करनाटक की कुछ मिले २५ अगस्त तक बन्द रही। इसमे एक करोड की जगह केवल ५ लाख गज कपडा तैयार हो सका। बडोदा, इन्दौर, नागपुर तथा देहली की मिलो मे भी विभिन्न समय तक हडताले चलती रही। इस प्रकार आन्दोलन के प्रथम महीने मे कुल मिलाकर करीब ढाई करोड गज कपडे का नुकसान हुआ। ऊनी कपडे में भी लगभग इतनी ही हानि हुई। कैलिको मिल तथा मेसर्स हत्थीसिंह एण्ड कम्पनी के बन्द हो जाने से सिलाई के काम म आने वाला धागा न मिल सका और इस प्रकार सिलाई के काम को काफी धक्का पहुचा। लाहौर आदि कई स्थानो में तो बिलकुल भी काम न हो सका, क्योकि वहा पर धागे का स्टाक नही था।

तम्बोकू के काम मे भी काफी हानि हुई और इम्पीरियल तम्बाकू कम्पनी की कलकत्ता, बम्बई, बगलोर एव सहारनपुर की फैक्टरिया निश्चित समय पर अपना माल तैयार करके न दे सकी। इतना ही नही, मुगेर की फैक्टरी मे काफी तोड-फोड किया गया जिससे न तो सिगरेट बनाने का कागज ही मिल सका और न छपाई आदि का काम ही हो सका।

कानपुर आदि के चमडे के कारखानो मे आन्दोलन के कारण ५० प्रतिशत काम कम हुआ। बीजापुर में करीब एक लाख रेलवे स्लीपर तथा एक लाख २० हजार बास जलाकर भस्म कर दिये गये। आन्दोलन का वेग इतना भयकर था कि जगल का काम बन्द करना पडा।

गहू तथा गेहू की बनी चीजें भी आन्दोलन के प्रभाव से न बचसकी। सबसे अधिक नुकसान देहली की गणेश-फ्लोर मिल्स को उठाना पडा। आन्दोलनकारी इसकी वर्कशाप के तमाम औजार आदि उठाकर ले गये। उन्होने अन्न के स्टाक को भी हानि पहुचाई तथा करीब १५० टन अन्न लूट लिया। मशीनो आदि को क्षति पहुचने के कारण लगभग ४००० टन माल कम तैयार हुआ।"

जनता के अपने आकडे भी है, किन्तु नेताओ के पकडे जाने के बाद सारे देश के अखबार बन्द होगये और जो अखबार निकलते थे उन्हे आन्दोलन सम्बन्धी खबरे छापने का अधिकार न था।

महत्वपूर्ण बातें

इस आन्दोलन की तीन महत्त्वपूर्ण बाते है।

१ आन्दोलन की ज्वाला देशी रियासतो मे फैली।

२ विद्यार्थियो का अभूत-पूर्व कार्य, जिन्होने कांग्रेस नेताओ के पश्चात् आदोलन का नेतृत्व किया।

३ किसी जगह हिन्दू-मुस्लिम उत्पात का न होना अथवा दूसरे शब्दो में मुस्लिम जनता का मिस्टर जिन्ना की अनेक धमकियो के होते हुए भी आन्दोलन के प्रति हमदर्दी प्रकट करना।

सन १९४२ में राष्ट्रीय आन्दोलन का सर्व प्रथम देशी रियासतो की प्रजा के आन्दोलन के साथ गठबन्धन हुआ। क्राति की ज्वाला सब बाह्य नुमायशी बन्धनो को तोडती हुई रियासतो मे धधकी और आन्दोलन की गतिविधि वहाँ पर भी ऐसी ही रही जैसी कि ब्रिटिश भारत मे। मध्य भारत की रियासतो में आन्दोलन बडी तीव्र गति से फैला और भरतपुर, कोटा, इन्दौर, ग्वालियर, रतलाम और बडौदा आदि मे हडताले हुई, विरोध-प्रदर्शन हुए, सरकारी सत्ता पर आक्रमण हुए। दक्षिण भारत की रियासतो में भी इसकी लपटे फैली और विशेषकर मैसूर में तो उसकी गति-विधि बहुत ही बढ़ी-चढी रही। यहा पर जनता ने सरकारी राज-सत्ता पर प्रहार कर कब्जा करने के सफल व असफल प्रयत्न किये। उधर उडीसा और महाराष्ट्र की देशी रियासतो मे शोले उठे। निस्सन्देह देशी रियासतो मे जो आन्दोलन हुआ, उसका श्रेय वहा के प्रजा-मण्डलो को है, जिन्होने राज्य मे जागृति व बेचैनी पैदा कर दी थी और इस कारण इस आन्दोलन की बाह्य गति के समाप्त होते ही सारी रियासतो मे प्रजामण्डलो

का सगठन और सम्मान बढा और प्राय राजाओ ने अपने प्रजामण्डलो से किसी-न-किसी प्रकार समझौता करने की चेष्टा की।

२. जहाँ तक विद्यार्थियो का सम्बन्ध है इसमें कोई शक नही कि विद्यार्थियों की एक शक्ति भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की एक सञ्चित शक्ति थी। आन्दोलन से पहले विद्यार्थियो पर मुख्यत कम्युनिस्टो का प्रभाव था, पर ९ अगस्त को देश में आग लगते ही विद्यार्थियो ने जिस अपूर्व उत्साह, हिम्मत और बलिदान का परिचय दिया उससे विद्यार्थी जगत् के प्रति एक महान् सहानुभूति व सम्मान पैदा होगया है। हजारो ने कालेज व स्कूल छोड दिये और अपनी समझ के अनुसार आदोलन का नेतृत्व करने का प्रयत्न किया। इन नवसिखिये व उत्साही युवको से काग्रेस की अहिंसा नीति का अक्षरश. पालन करने की आशा नही की जा सकती थी, क्योकि न इन्हे कोई ट्रेनिंग थी और न किसी आन्दोलन की गतिविधि के साथ इनका कोई गहरा सम्बन्ध ही रहा था। बम्बई के विद्यार्थी आन्दोलन मे सबसे आगे थे और उन्होने साम्राज्यशाही के बिजली जैसे तेज आक्रमण का मुकाबला गोलियाँ और लाठिया खाकर किया। अहमदाबाद, शोलापुर व अन्य शहरो मे भी विद्यार्थियो ने आदोलन मे हिस्सा लिया। विद्यार्थियो मे लगी हुई यह आग चारो ओर फैली और युक्तप्रात, मध्यप्रात, आसाम आदि सब जगह के विद्यार्थियो ने इस आदोलन में सैकडो की तादाद मे हिस्सा लिया। धूलिया जिले के नन्दाबाजार और खेर जिले के विद्यार्थियो के ऊपर जो अमानुषिक अत्याचार हुए उसकी अपनी एक हृदय-विदारक कहानी है। युक्तप्रात में केवल बनारस डिवीजन मे ३२ हजार विद्यार्थियो ने सारे पूर्वी जिलो में एक नवजीवन व स्फूर्ति पैदा कर दी थी। वे सब इन जिलो मे फैल गये और वहाँ के आन्दोलन का नेतत्व ग्रहण किया।

३ यद्यपि एक प्रकार से उस समय हिन्दुस्तान मे आग्ल-मुस्लिम गुट्ट बन गया था और ऐसा मालूम पडता था कि मिस्टर जिन्ना ने काग्रेस आदोलन को कुचलने के लिए ब्रिटिश नौकरशाही के साथ कोई षड्यत्र कर रखा है, क्योकि कुछ दिन पहले उन्होने इस बात की घोषणा की थी कि यदि काग्रेस ने कोई आन्दोलन शुरू किया तो देश भर मे गृहयुद्ध हो जायगा, आपसी झगडे व उत्पात होगे। ९ अगस्त को जब देश भर मे दबी-पिसी जनता ने अग्रेजी नौकरशाही व साम्राज्यवाद के विरुद्ध खुली बगावत की तो उस काल मे एक भी जगह साम्प्रदायिक झगडा न हुआ। बल्कि इसके विपरीत

हजारो मुसलमानो ने खुले रूप मे इस आदोलन मे यत्र-तत्र हिस्सा लिया। सयुक्त प्रान्त के पूर्वी जिलो मे, बिहार में विशेषत पूर्णिया जिले मे, बगाल के चटगाव आदि जिलो में मुसलमानो ने इस विद्रोह मे हाथ बटाया और इस प्रकार दुनिया ने देखा कि भारत की मुस्लिम जनता भी साम्राज्यशाही के उतनी ही विरुद्ध है जितनी कि हिन्दू। यह दुर्भाग्य की बात थी कि मुस्लिम-नेता जनता की सरकार विरोधी भावना को ठीक तरीके से जाग्रत व सगठित नहीं करना चाहते थे।

व्यर्थ की बहस

ब्रिटिश प्रचार विभाग ने दुनिया के सामने इस बात का भरपूर प्रचार किया कि काग्रेसी नेताओ की इस आन्दोलन को चलाने की एक सगठित योजना थी और उसमें हिंसा व तोडफोड भी शामिल है। इसलिए देश में जो उत्पात हुए, सम्पत्ति का विनाश हुआ, हिंसात्मक काण्ड हुए, उनका उत्तरदायित्व काग्रेस पर है। दुर्भाग्य से कुछ थके, पस्त काग्रेसी भी इस प्रचार के शिकार बन गए और उन्होने जनता के इस सामूहिक आन्दोलन को काग्रेसी आन्दोलन न कह-कर कुछ दिलचले, बहके नौजवानो का ऊटपटाग प्रयत्न बताने की चेष्टा की और जनता की ओर से जो हिंसात्मक कार्य हुए थे उनकी निन्दा करनी शुरू कर दी। वास्तव मे यह घातक दृष्टिकोण है, हालाकि हमारा विश्वास है कि हिंसा तथा गुप्त कार्य, चाहे वे किसी भी रूप मे किये जाय, एक सामूहिक आन्दोलन व प्रयत्न की प्रगति के लिए घातक होते है। यदि वे न होते तो आन्दोलन को और भी शक्ति मिलती। किन्तु यह नही कहा जा सकता कि जो जनता सैकडो की तादाद में उठी, उसने आम हिंसात्मक प्रयत्न किये। वास्तव मे जनता के प्रयत्न काग्रेस की पुरानी शिक्षा के अनुसार ही थे। यह दूसरी बात है कि यत्र-तत्र गोलियो की बौछारो व लाठियो के प्रहारो से पीडित जनता ने ढेले आदि फेके हो और किसी जगह आवेश मे आकर क्रोधित जनसमूह हिंसात्मक कार्य करने के लिए तैयार हो गया हो, असगठित हिंसा कर बैठा हो। पर जहा तक आन्दोलन के रूप का ताल्लुक है, हम ऐसे इक्के-दुक्के काडो से उसे हिंसात्मक रूप नही दे सकते। जनता की ओर से जितने सामूहिक प्रयत्न हुए उनको जानने से पता चलता है कि हर जगह लोग काग्रेसी नेताओ के नारे व जय बोलकर आगे बढते थे और अधिकाश जगहो पर उनकी माग यही थी कि अब से सरकारी कर्मचारी काग्रेसी हुकूमत को माने। उनके हृदय में प्रारम्भ मे हिंसात्मक भावना नही थी।

हमें इसी काल में शुद्ध अहिंसात्मक प्रयत्नो के अनेक ऐसे गौरवपूर्ण उदाहरण मिलते है जिनमें लोगो ने सामूहिक रूप से अहिंसात्मक रहने का परिचय दिया है। यहाँ तक कि आवेशपूर्ण व बहुसख्यक जनता ने भी सरकारी कर्मचारियो पर हाथ नही उठाया। आसाम घाटी में जहा पर २० लाख से अधिक लोगो ने सरकारी कानूनो को खुले रूप से तोडा तथा अदालतो थानो व डाकखानो आदि पर सामूहिक प्रहार किये, बलिदान, त्याग और अहिंसा के ऐसे अनेक उदाहरण मिलते है। बिहार और युक्त-प्रान्त के पूर्वी जिलो में ऐसी अनेक घटनायें हुई हैं। कर्नाटक में जहा पर आन्दोलन अत्यन्त ही सगठित रूप मे चल रहा था, हजारो सुसगठित नवयुवको ने हिस्सा लिया और एक भी सरकारी नौकर नही मारा गया।

अवश्य ही जनता की ओर से कितनी ही जगह हिंसात्मक काण्ड भी हुए है, पर उनकी सख्या उन घटनाओ के सामने फीकी पड जाती है जो कि देश भर मे अहिंसात्मक प्रयत्नो की साक्षी है। सैकडो जगह जन समूह पर दस दस मिनट के बाद गोलिया चलाई गईं। इन गोलियो के प्रहार से जनता पीछे हटी, अपने मरे व जख्मी लोगो को उठाकर ले गई और थोडे समय बाद वह गोलियो का मुकाबला करने के लिए फिर आगे बढती देखी गई। इन घटनाओ से पता चलता है कि आन्दोलन का वास्तविक रूप अहिंसात्मक था और जनता के अन्दर पिछले आन्दोलनो द्वारा प्राप्त अनुभव और सगठन काम कर रहा था। यद्यपि जनता के सगठित रूप से हिंसा करने के सारे कारण मौजूद थे और उसकी तादाद सरकारी कर्मचारियो के मुकाबिले में कई गुना अधिक थी, फिर भी जितनी हिंसा हुई वह बहुत कम थी। जनता को जिस परिस्थिति का सामना करना पड रहा था, उसे देखते हुए तो कही अधिक हिंसा की आशा की जाती थी। जनता में जोश था, तडप थी और कुछ करने की महान् अभिलाषा थी। उसके नेता छिन चुके थे। उस पर एक वज्र प्रहार करने का प्रयत्न किया जा रहा था। चारो ओर से उसे घोडो की टापो, गोलियो की बौछारो और लाठियो के प्रहारो से दबाने के सगठित प्रयत्न किये जारहे थे।

लाखो इस तूफान के वेग में उठे, आगे बढे और जीवन-मरण के खेल खेले। इतना विशाल सामूहिक विद्रोह होते हुए भी सुना जाता है कुछ थोडे इने गिने सरकारी अफसर मरे और घायल हुए। केवल यही इस बात का सबूत है कि आन्दोलन का रूप वास्तविक रूप मे अहिंसात्मक था और यह कांग्रेस के पिछले आन्दोलनो द्वारा दी गई ट्रेनिंग व शिक्षा का ही फल था।

निस्सन्देह सरकारी दमन का चक्र जब जनता को रौंदता ही गया तो आन्दोलन का रूप सतह से हटकर सतह से नीचे चला गया और पश्चिमी क्रान्तियो के नियमो से प्रभावित सैकडो कार्यकर्ताओ ने समझा कि सम्पत्ति को क्षति पहुँचाना हिंसा नही है, वह अहिंसा की परिभाषा मे आ सकता है । इस तरह से गुप्त आन्दोलन, गुरिला युद्ध व तोड-फोड इत्यादि विचारो का जन्म हुआ । कुछ दिलचले नौ जवान सशस्त्र क्रान्ति की बात सोचने लगे । किन्तु यह सब आन्दोलन का बहुत छोटा सा रूप था और सरकारी प्रचार विभाग ने इ से केवल इसलिए बढा-चढा कर दिखाया कि वह निहत्थी जनता पर अपने द्वारा का गई हिंसा के लिए कोई बहाना ढूढ सके । जहाँ तक इन इक्के-दुक्के असगठित हिंसात्मक कार्यो की जिम्मेदारी का ताल्लुक है, ब्रिटिश सरकार एक भी ऐसी बात पेश नही कर पाई जिसके द्वारा कांग्रेसी नेताओ पर अभियोग लगाया जा सके । सच तो यह है कि उस जमाने मे कौन था जो काग्रेस के पक्ष को रखता और सरकारी अभियोगो का उत्तर देता ।

अहिंसात्मक शिक्षा

जनता को केवल तीन ही प्रकार से किसी सरकार के विरुद्ध सगठित किया जा सकता है ।

१ सगठित सामूहिक अहिंसा ।
२ सगठित हिंसा ।
३ असगठित हिंसा ।

देश के सास्कृतिक विचार, अन्दरूनी हालात, जनता की मनोवृत्ति तथा अन्य कई कारणो से हमारे देश मे गाधी जी के नेतृत्व ने जनता को सगठित सामूहिक अहिंसा की कला का सिखाया और गाधी जी ने कई आन्दोलनो द्वारा जनता को अहिंसात्मक युद्ध की शिक्षा दी । इस प्रकार राजनीति मे एक नये शस्त्र का प्रयोग हुआ, जिसके द्वारा निहत्थी तथा निस्सहाय जनता सगठित हिंसा का विरोध कर सकती थी । इन आन्दोलनो ने भारत की पिटी, पिसी, बिखरी, असगठित जनता मे आशा, उत्साह, बलिदान और सगठन इत्यादि अनेक बातें पैदा की । साथ ही यह भी दिखाँया कि सामूहिक अहिंसा द्वारा कभी जनता की हार नही हो सकती । इन आन्दोलनो के विभिन्न रूप रहे । कभी कुछ चुने हुए कानून तोड गये तो कभी व्यक्तिगत सत्याग्रह किया गया । पर हर आन्दोलन के पश्चात् काग्रेस अधिक बलशाली तथा सगठित निकली । खुला विद्रोह इस सगठित अहिंसात्मक आन्दोलन का एक स्वाभाविक

नतीजा था। जो शिक्षा सन् १९२० में दी गई थी, जिस बीज को सन् १९२० में बोया गया था उसका स्वाभाविक नतीजा यह होना था एक रोज खुले रूप से संगठित अहिंसा के शस्त्र द्वारा जनता ब्रिटिश साम्राज्यशाही के विरुद्ध विद्रोह करे। पर यह बात सर्वथा गलत और अमाननीय है कि गांधीजी तथा कांग्रेस का नेतृत्व संगठित हिंसात्मक आंदोलन चाहता था। हां, यह बात ठीक हो सकती है कि वह जनता का खुला विद्रोह चाहता था। यह दूसरी बात है कि वह इसका नेतृत्व न कर सका और उसे अपने ढंग पर न चला सका। जहां तक संगठित हिंसा का ताल्लुक है उसके लिए न तो हमारे देश में सब साधन ही मौजूद है और न व्यावहारिक दृष्टि से हम उस पर अमल ही कर सकते है। आज संगठित हिंसा के रूप में जब कि सरकार के पास लडाई के सारे साधन रेल, तार कलें तथा हथियार बनाने के कल-कारखाने इत्यादि मौजूद हैं, हिंसा की बातें करना कोरी कपोल कल्पना ही होगी। इसलिए गांधीजी ने शस्त्रों द्वारा संगठित प्रयत्न करने की बात कभी भी नही सोची। उन्होंने सदैव ही गुप्त संगठन तथा गुप्त कार्य करने का विरोध किया। अत आज यह कहना कि गांधीजी तथा कांग्रेस का नेतृत्व संगठित हिंसा चाहता था, उन्हे बदनाम करने का अच्छा साधन हो सकता है, पर जिस आदमी को जरा भी अक्ल है वह स्वयं सोच सकता है कि जब गांधीजी तथा कांग्रेस के दूसरे नेताओं ने सदैव अहिंसा द्वारा हर प्रकार से जीत ही पाई है तो वह किस आवेश व तजुर्बे की बिना पर हिंसात्मक साधन के लिए लोगो को प्रोत्साहित करते और जब कि वे स्वयं देख रहे थे कि समस्त छोटे-छोटे राष्ट्र हिंसात्मक साधनों की कमी के कारण अपने बडे व अधिक सुसंगठित प्रतिद्वन्द्वी के विरुद्ध हारते हो जा रहे है। सच तो यह है कि हमारे पास हिंसा के कुछ भी साधन न थे और इसलिए हम उनसे काम लेने की कल्पना भी न कर सकते थे।

जहां तक असंगठित हिंसा का ताल्लुक है, कोई भी नेता उसका समर्थन नहीं कर सकता। यह दूसरी बात है कि कहीं-कहीं आवेश तथा जोश के वशीभूत होकर जनता इधर-उधर असंगठित हिंसा कर बैठी हो। पर कोई भी नेता उसे अच्छा नही कह सकता। फिर उसकी जिम्मेदारी अधिकतर उन लोगों पर है जिन्होंने जनता पर प्रहार किये, उसके भावों को रौंदा और उसके प्यारे ध्येय व आदर्श को सदैव के लिए मिटाना चाहा।

खुला विद्रोह

हमारा विश्वास है कि सन १९४२ का खुला विद्रोह पिछले सभी आंदो-

लनो से ध्येय, युद्धनीति, सगठन, आकार, विस्तार इत्यादि की दृष्टि से भिन्न था। इसे अहिसात्मक सत्याग्रह का एक अन्तिम रूप ही समझना चाहिए।

ध्येय—इसका ध्येय एक ओर ता पूर्ण स्वतत्रता प्राप्त करना था और दूसरी ओर अपने देश को जापानी आक्रमण से बचाना था, साथ ही इस युद्ध को जनता जहा तक हो जनता के वास्तविक युद्ध में बदलना था।

युद्धनीति—इसकी युद्ध नीति यह थी कि यदि सम्भव हो तो बिना जनता को युद्ध की आग में ढकेले हुए ब्रिटिश सरकार से भारत की पूर्ण स्वतत्रता स्वीकार करा ली जाय और युद्धकाल में एक राष्ट्रीय सरकार की स्थापना हो जाय। दूसरी ओर सारे मित्र राष्ट्रो में विशेषकर अमरीका में भारतीय आजादी व आकाक्षाओ के प्रति एक प्रबल जनमत तैयार किया जाय और भारतीय प्रश्न को अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्न बनाने की चेष्टा की जाय। साथ ही सारी दुनिया के दबे, पिसे तथा गुलाम लोगो का साम्राज्यशाही के विरुद्ध मोरचा तैयार किया जाय यदि इस महान् उद्देश्य के लिए एक सामूहिक सगठित प्रयत्न तथा आन्दोलन की आवश्यकता हो तो उसके लिए जनता को मनो वैज्ञानिक तथा सगठित दृष्टि तैयार किया जाय और देश में इस प्रकार का वातावरण पैदा किया जाय।

नारा:—इस आन्दोलन का नारा था 'अग्रजो भारत छोडो' जो स्वाभाविक दृष्टि से उस समय जनता के हृदय की पुकार थी। स्वय जनता ऐसा कह रही थी और जमाना भी चाहता था। इस नारे ने जनता में एक विशेष प्रकार की स्फूर्ति व जीवन पैदा कर दिया और भारतीय प्रश्न को एक नया रूप, जीवन व धारणा प्रदान की।

तत्वज्ञान:—इस आन्दोलन का मन्तव्य था कि प्रत्येक सरकार जनता से सत्ता प्राप्त करती है। जो सरकार अपने इस नैतिक आधार को खो बैठती है और केवल पशुबल द्वारा जनता पर हुकूमत करती है उस सरकार के प्रति विद्रोह करना जनता का एक स्वाभाविक हक है। ब्रिटिश सरकार ने अपनी कारंवाइयो द्वारा जनता पर से अपना नैतिक प्रभाव खो दिया था। उसनें बिना जनता की इच्छा के देश को लडाई में झोक दिया था और वह अपनें युद्ध-प्रयास को सफल बनाने के लिए मनमाने तरीको से काम ले रही थी। इस प्रकार उसने भारत पर जापानी आक्रमण की दावत दी थी। अतः आन्दोलन की धारणा थी कि ऐसी सरकार के विरुद्ध बगावत करना और उसकी सत्ता पर अधिकार करना जनता का कर्तव्य है। 'खुली बगावत' का अर्थ है जनता का सरकार पर चौतरफा प्रहार करना, अपने को आज़ाद समझना तथा उसके किसी भी कानून

को अपने पर बन्धन न मानना ।

अब तक जो आन्दोलन काग्रेस ने किये थे उसमें कुछ चुने हुए कानूनो को तोडा जाता था, क्योकि जनता में 'खुले विद्रोह' की मनोवृत्ति पैदा करने का ध्येय न था । इसलिए इस आन्दोलन का रूप पिछले सभी आन्दोलन से भिन्न था । यद्यपि इसका मन्तव्य बडा सीधा और सरल था, पर इसका रूप बडा ही उग्र और व्यापक था ।

अहिंसा की शक्ति

सन् १९४२ के 'खुले विद्रोह' से हमने बहुत से मधुर व कटु अनुभव प्राप्त किये । उसने एक ओर सिद्ध किया कि सरकार की सगठित हिंसा का इक्के दुक्के छिपे गुरिला प्रयत्नो से मुकाबला नही किया जा सकता । जिस समय काग्रेस ने भारत में 'खुले विद्रोह' की दुन्दुभी बजाई, दुनिया के हालात ही निराले थे । अग्रेज साम्राज्यशाही पहले कभी भी सैनिक दृष्टि से इतनी सगठित नही थी । रोजाना हिंसा के नये-नये हथियारो की ईजादे हो रही थी । यूरोप के कितने ही राष्ट्र जर्मनी की सगठित हिंसा का शिकार बन चुके थे और उन्हे अपनी मुक्ति की किसी प्रकार भी आशा न थी । जर्मनी और जापान के आगे बिना शर्त आत्म समर्पण करना होगा, अत मित्र-राष्ट्र धुरी राष्ट्रो के मुकाबिले मे सगठित हिंसा के शस्त्रो को दिनो दिन बढा रहे थे । ठीक उन्ही घटनाओ के साये मे ८ अगस्त को एक पतले दुबले निहत्ये सरदार ने निहत्थे हिन्दुस्तानियो को 'खुले विद्रोह' का पाठ पढाया और इस आशा से पढाया कि चारो तरफ फैली हुई सगठित हिंसा के बीच केवल उसका अहिंसा-शस्त्र ही सफल हो सकता है । यद्यपि जनता ने अपने नेता की बातो पर पूर्णतया अमल नही किया, पर यह केवल अहिंसात्मक साधनो का ही फल है कि उस अग्नि-परीक्षा में काग्रेस पहले से कही अधिक शक्तिशाली, प्रभावशाली व सम्मानित होकर निकली और अग्रेज साम्राज्यशाही के प्रबल आक्रमण की शक्ति शीघ्र ही नष्ट हो गई । काग्रेस ने आत्म-समर्पण नही किया । अपने प्रस्ताव को आज तक वापस नही लिया, पर ब्रिटिश साम्राज्यशाही को काग्रेस नेताओ को छोडना पडा, काग्रेस से समझौता करना पडा अथवा दूसरे शब्दो में बिना शर्त हिन्दुस्तान में आत्म-समर्पण किया और हिंसात्मक लडाई के दूसरे मोर्चों पर अपने प्रतिद्वन्द्वी से आत्म-समर्पण कराया । इससे केवल हम यही नतीजा निकाल सकते है कि अहिंसा की अपनी महान् शक्ति है जिसमे हार के लिए कोई गुजाइश नही और जिसमें लडाई अपने प्रतिद्वन्द्वी के हथियारो के विरुद्ध

आत्मिक बल से मन, हृदय व मस्तिष्क के जरिए होती है । इस प्रकार की लडाई का फैसला हथियारो के वार, तेजी व तबाही से नही किया जा सकता, वल्कि अपने ध्येय एव कार्य की उच्चता, महानता और नैतिकता से किया जाता है ।

दमन के साधन

सन् १६ १९ से सन् १९४२ तक राष्ट्रीय आन्दोलनो की गतिविधि के साथ-साथ दमन के साधन भी वदलते रहे है । हर आन्दोलन ने जहाँ जनता को कुछ शक्ति दी, वही सरकार ने भी उसे दबाने, उसे कावू मे रखने, कुचलने के साधनो मे तरक्की की और इस प्रकार दमन के साधन तथा आन्दोलन की शक्ति अपने-अपने तरीके से बढते ही गये । सन् १६१६ व २१ की 'गान्धी की आन्धी' को नौकरशाही ने विशेषत १४४ दफा द्वरा काबू कर लिया था, यद्यपि कही-कही आतक फैलाने के लिए उसे फौजी कानून भी घोषित करना पडा था सन् १९३० में जनता ने कुछ विशेष चुने हुए कानून तोडे । नौकरशाही ने विशेषत लोगो को जेलो में भेजने, छोटे-छोटे हल्को मे लाठी चार्ज करने, अखवारो पर पाबन्दी लगाने इत्यादि तरीको को अपनाया । सन् १६३२ में देश मे लगानवन्दी के रूप मे कुछ विशेष कानून तोडे गये । नौकरशाही ने पकड'-धकड, घुडसवारो द्वारा मार-पीट, बडे पैमाने पर लाठी चार्ज, सामूहिक जुर्माने इत्यादि शस्त्रो को विशेषतः अपनाया । सन् १६४२ मे देश ने खुला विद्रोह किया । नौकरशाही ने सारे देश मे शान्ति स्थापित करने के लिए अर्द्ध फौजी कानून का ऐलान कर दिया और व्यापक रूप से गोलियो की वौछारो से आन्दोलन का स्वागत किया । इस प्रकार हर आन्दोलन की शक्ति के विकास के साथ उसके दवाने के साधन भी व्यापक और कठोर बरते गये ।

सन् १६४२ मे सरकारी दमन-साधनो को हम मिस्टर नियोगी एम० एल० ए० के कथनानुसार निम्नलिखित भागो में बाट सकते हैं'—

१ आम तौर पर जनता में पुलिस द्वारा आतक वैठाने के प्रयत्न करना तथा खुले रूप से जनता को लूटना, उनके घरो में आग लगाना तथा मारपीट करना । इस प्रकार के काम विशेषत विहार, युक्त प्रात के पूर्वी जिलो, मध्य प्रान्त और आसाम की घाटी के जिलो में हुए ।

२ जनता के समूहो तथा व्यक्तियो पर विना किसी कारण ऊटपटाग तरीके से गोलिया चलाना ।

३ निहत्थी, निर्दोष जनता पर सगठित रूप से गोलिया चलाना और

इस प्रकार जिन लोगो ने उत्पात किया था उनको कोई विशेष हानि न पहुचाकर उन इलाको की समस्त जनता के हृदय में आतक जमाना । इस प्रकार की घटनाए देहली, कलकत्ता, आसाम प्रान्त की घाटी और युक्त प्रान्त के पूर्वी जिलो में विशेषत हुई है ।

४ असगठित समूहो पर विना किसी इत्तिला के गोलिया चलाना । अपरिचित लोगो द्वारा जहा-कही भी कर्फ्यू आर्डर की थोडी-सी अवहेलना हुई, वहा उन पर निर्दयता पूर्वक गोलिया चलाना । इस प्रकार की घटनाए देहली तथा उन सब स्थानो में हुई जहा आन्दोलन का रूप व्यापक और उग्र था ।

५ छोटे बच्चो के खुले रूप मे कोडे लगवाना व उन्हे बे-रहमी से पीटना और प्रतिष्ठित आदमियो तक को जनता के सामने अपमानित करना, जैसे गलियो को साफ करवाना काग्रेसी झडो का जलवाना इत्यादि ।

६ जनता के सामने काग्रेस वालो के घरो को जलाना और फौज के द्वारा औरतो का सतीत्व नष्ट कराना । सवर्ण हिन्दुओ को अछूत कहलाने वाली फौजी टुकडियो के सैनिको से अपमानित कराना । ऐसी घटनाए मध्यप्रान्त, आसाम और बिहार में अधिक हुई ।

मिस्टर नियोगी ने केन्द्रीय असेम्बली मे भाषण देते हुए कितनी ही घटनाओ का वर्णन किया जिससे सरकारी दमन के निर्दयता-पूर्ण काडो की झलक मिल सकती है । अपने भाषण के दौरान में राज्य-परिषद् के एक सदस्य और मुजफ्फरपुर जिले के राष्ट्रीय युद्ध मोर्चे के एक नेता की बातो का हवाला देते हुए मिस्टर नियोगी ने बताया कि सैनिको और पुलिस के सिपाहियो को खुला छोड दिया गया । उन्होने वहाँ मनमाने ढग से निहत्थी जनता को लूटा, सम्पत्ति को नष्ट किया, गावो को जलाया, रुपया ऐंठा और पकड लेने की धमकिया दी । उन्होने यह भी बताया कि वहा मैंने अपनी आखो से देखा कि बाजार की सारी मालदार दूकानें लूटी गई । गाव के गाव सैनिको व पुलिसो द्वारा जलाये गये । मै इन घटनाओ को तथा इन दृश्यो को जीवन-पर्यन्त नही भूल सकता ।"
उन्होने आगे गाजीपुर जिले के एक आनरेरी मजिस्ट्रेट द्वारा युक्तप्रान्त की सरकार को भेजे गये एक नोटिस का जिक्र करते हुए, जिसमें जमीदार ने सरकार से अपने गाँव में सैनिको द्वारा की गई बरबादी का हरजाना मागा था, बताया "चार यूरोपियन सिपाही १५० देशी सिपाहियो के साथ रायफलों द्वारा सुसज्जित होकर २४ अगस्त को उसके गाँव में आये और उस गाँव के सारे आदमियो को गाँव छोडने का हुक्म दिया और थोडी देर बाद उन्होंने

सारी औरतो को घरो से बाहर निकलने का आदेश दिया और धमकाया कि जो बाहर नही आयगा उसको गोली मार दी जायगी । उसके पश्चात् उन सिपाहियो ने उन सब औरतो के जेवरो को छीन लिया और उनके घरो पर आक्रमण किया और जितना भी जेवर, रुपया और सामान था सब पर कब्जा किया । इन सिपाहियो ने मेरे किसानो के २० घरो में आग लगा दी और इस प्रकार गाव के सब लोगो को राइफल की नोको से धमकाया और डर दिखाया, उन्हे रोने और चीखने तक को मना किया गया ।"

उपरोक्त एक आध उदाहरणो के द्वारा केवल यह बताने का चेष्टा की गई है कि देश-भर में नौकरशाही के दमन-चक्र द्वारा निर्दोष और निहत्थी जनता पर हर प्रकार से अत्याचार हुए । आवश्यकता पड़ने पर आसमान से मशीनगन का भी प्रयोग किया गया । इस सब दमन का एक अभिप्राय था । जनता की उभरती हुई आवाज का फौरन गला घोट दिया जाय, उसकी सामूहिक शक्ति को तोडा जाय और उसके हृदय मे आतक बैठाया जाय ।

कांग्रेस पर सरकार के आरोप

इस किताब मे सरकारी दमन-काडो पर कोई विशेष जोर नही दिया गया है, क्योकि पुस्तक लिखने का मुख्य ध्येय जनता के कार्यो पर प्रकाश डालना है । केवल मिसाल के तौर पर कुछ सरकारी दमन के साधनो को बताने की चेष्टा की गई है । आदोलन के थोडे दिनो पश्चात् सरकार ने एक पुस्तक छापी, जिसमे काग्रेस को उन तमाम उत्पातो, हिंसा तथा तोड-फोड के कार्यो का दोषी ठहराते हुए दुनिया को यह बताने की चेष्टा की गई कि हिन्दुस्तान में जो कुछ उत्पात हुआ, जाने व धन की क्षति हुई, जनता को कष्ट पहुंचा उस सब की जिम्मेदारा काग्रेस पर है । जहाँ उस किताब में एक ओर यह सब कुछ दिखाने की चेष्टा की गई है वहाँ दुनिया को यह भी दिखाने का असफल प्रयत्न किया गया है कि आन्दोलन व्यापक नही था । उसने मित्र-राष्ट्र को युद्ध-प्रयास में कोई खास क्षति नही पहुँचाई । यह दोनो बाते जब एक ही किताब मे पढने को मिलती है तो कुछ आश्चर्य-सा होता है, क्योकि एक ओर तो सरकार ने काग्रेस को सारे आन्दोलन का जिम्मेदार ठहराने के लिए आन्दोलन की गति-विधि का बडे ही उग्र, तीव्र व व्यापक ढग से प्रकट किया दूसरी ओर दूसरे देशो की जनता व सरकार की आँखो में धूल झोकने के लिए इस आन्दोलन की गति को कम व थोड़ी बताने का असफल प्रयत्न किया है । सरकारी प्रचार-विभाग कुछ भी कहे, पर यह डके की चोट कहा जा सकता है कि सन्

१९४२ का 'खुला विद्रोह' ध्येय, राजनीति, निपुणता, व्यूह-रचना तथा आकार, विस्तार, त्याग, बलिदान, सगठन, जनोत्साह, आदि की दृष्टि से कही बढा-चढा था। सन् १८५७ का गदर, फ्रासीसी राजक्रान्ति, रूस की लाल क्रान्ति सभी कई बातो में इसके सामने फीकी जान पडती है।

तलपट

हर महान् आन्दोलन के बाद प्रतिक्रया-काल आता है। इस काल में नेता व कार्यकर्त्ता आन्दोलन-काल में होने वाली घटनाओ, अपने द्वारा की गई गलतियो एव हानि-लाभो को आकने का प्रयत्न करते है, ताकि उस आन्दोलन की त्रुटियो व गलतियो से लाभ उठाकर आने वाले आन्दोलन में उन्हे न होने दे। हर आन्दोलन के लिए यह अनिवार्य काल है और यह इसी प्रकार आता है जिस तरह रात के बाद दिन तथा कार्य के बाद थकान। हमारे सारे आन्दोलन १९१९, २१, १९३० व १९३२, १९४० व ४२ के पश्चात् ऐसा काल आया कि उसकी सतह पर शान्ति दिखाई दी, आन्दोलन का बाह्य रूप धीमा दिखाई देने लगा और नौकरशाही ने समझा कि अब उन्होने आन्दोलन को दबा लिया है। पर हुआ इसके विपरीत अपने हर आन्दोलन का प्रोग्राम नारा व युद्ध-नीति रहते है। इसका अर्थ यह है कि गान्धीजी ने समय, जनता की शक्ति, देश की बाह्य स्थिति व असहनीय हालत सब को पूरे तरीके से आककर समयानुसार आन्दोलन के लिए, ध्यय, प्रोग्राम व नारे जनता को दिये। जनता उठी, आगे बढी और थकान से पस्त होकर क्षणिक काल के लिए पीछे हटी। किन्तु हर एक आन्दोलन ने प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप मे जनता को क्रान्ति की कला की शिक्षा दी है। इसी प्रकार सन् १९४२ ने भी हमें अमूल्य सबक सिखाये है।

आन्दोलन की शिक्षायें

१ हमे इस बात का अनुभव हुआ है कि यद्यपि जनता मे क्रान्तिकारी मनोवृत्ति पैदा होगई है और देश में काफी क्रान्तिकारी शक्ति उत्पन्न हो चुकी है, पर हमारा सगठन ऐसा बिखरा हुआ है कि हम शक्ति का पूर्णतया प्रयोग करने के लिए मजबूत व सुदृढ नही है। अत काग्रेस को अपना सगठन व्यापक, सरल और सुदृढ बनाना चाहिए, ताकि क्रान्ति-काल मे वह लम्बे अर्से तक कायम रह सके और जनता पर इसका नियत्रण रहे।

२ इस आन्दोलन में हमने अनुभव किया कि हमारे अहिसा व हिसा के प्रश्न पर मिले-जुले विचार है। अपनी इस अनिश्चित मानसिक स्थिति के कारण

हमे दोनो शस्त्रो के दुष्परिणाम तो भोगने पडते है, पर न तो हम जनता को पूर्णत अहिंसा के लिए तैयार कर पाते है और न सगठित हिंसा के लिए ही। और इस प्रकार असगठित अहिंसा और सुसगठित हिंसा दोनो का नुकसान होता है। इस आन्दोलन ने हमें बताया कि असगठित आहिंसा व सुसगठित हिंसा से भारत कभी सफल नही हो सकता, अत उसे अपनाना जान-बूझकर कुए मे गोते लगाना है। इस कारण हमें सगठित अहिंसा की ओर अधिक प्रयत्न करना चाहिए।

३. इस आन्दोलन के पश्चात् काग्रेस-जन तथा सभी राजनीतिक विषयो पर सोचने वाले लोग इस बात पर एकमत है कि अब काग्रेस के सगठन को बदलती हुई हालत के मुताबिक नये ढग से चलाना होगा और उसकी बुनियाद किसी दार्शनिक आधार पर होनी चाहिए।

४. काग्रेस-जन, विशेषकर साधारण काग्रेस जन इस बात को अनुभव करने लगे है कि काग्रेस मे अन्दरूनी आपसी मेल व परस्पर गहरी जानकारी होना आवश्यक है।

५. गान्धी जी के नेतृत्व मे काग्रेसी कार्यकर्ताओ का अधिक विश्वास बढ रहा है।

लाभ

१, सन् १९४२ के 'खुले विद्रोह' ने ठीक वही किया जो नाटक से पहले रिहर्सल (पूर्व तैयारी) द्वारा पूरा होता है । इस आन्दोलन ने जनता को खुले विद्रोह की कला तथा शक्ति छीनने की नीति का ज्ञान कराया।

२ इसने भारतवर्ष के सारे दबे-पिसे गुलाम लोगो का नेतृत्व किया। अत आज इस आन्दोलन के कारण भारतवर्ष सारे एशिया के दबे हुए राष्ट्रो का मार्ग-प्रदर्शन करता है। इधर पश्चिम में अरब एक ओर खुले रूप से 'अग्रेजो निकल जाओ' का नारा उठा रहा है तो दूसरी तरफ मलाया, जावा, सुमात्रा, इडोचीन, चीन आदि सारे सुदूरवर्ती पूर्वीय देश हमसे 'अग्रेजो निकल जाओ' का नारा सुनकर अपने-अपने यहा साम्राज्यशाही के विरुद्ध सघर्ष कर रहे है।

३ इस आन्दोलन ने भारत का सम्मान यहा और बाहरी देशो मे काफी बढा दिया है और स्वय ब्रिटिश जनता मे विचारो के आधार पर दो वर्ग पैदा कर दिये है। प्रगतिशील वर्ग अपने यहा की जनता को यह बताने की चेष्टा कर रहा है कि स्वतत्र भारत हमारे लिए शक्तिशाली और अच्छा मित्र हो सकता है और दूसरी ओर साम्राज्यशाही विचारो के लोग वही पुराने साधन व मार्ग अपनाने का स्वप्न देख रहे है।

४ इस आन्दोलन ने जनता को अग्रेजी शासन-व्यवस्था, उसकी शक्ति व उसके सगठन का ज्ञान कराया और यह भी बताया कि कितनी कम शक्ति से हम करोडों भारतीयो पर ब्रिटिश साम्राज्यवाद को लादे हुए है।

५ इस 'खुले विद्रोह' ने जनता को एक ऐसा नारा दिया जो सदा ही उसके हृदय में एक कसक और तडप बनाये रखेगा और जिसके कारण उसमें एक नया जीवन और स्फूर्ति पैदा हो गई है।

हानि

जहा तक हमारी क्षति का सम्बन्ध है उसे केवल शारीरिक क्षति, भौतिक नुकसान, जैसे माल, सामग्री, रुपया-पैसा आदि का नुकसान तथा मानसिक यातनाओ के रूप में समझ सकते है। जैसे लोग जेलो में गये, कष्ट भोगे, सामूहिक व व्यक्तिगत जुर्माने दिये, गाँवो में आग लगी, हजारो खानदान वीरान हुए और तरह-तरह के अमानुषिक अत्याचार हुए। पर हम इस क्षति का यूरोप मे होने वाली क्षति, कष्ट तथा यातनाओ से मुकावला करते है तो यह सब उसके सामने वडी फीकी दिखाई पडती है। इस महायुद्ध में लाखो मारे गये, घायल हुए और करोडो की सम्पत्ति का नाश हुआ। कुछ देश स्वतन्त्र रह सके तो कुछ पराधीन होगये। किन्तु हमारे यहा ता इसके विलकुल विपरीत हुआ। नौकरशाही को मुह की खानी पडी। अन्त में उसको अपने दमन के सारे ही साधन निरर्थक दिखाई दिये। उसने स्वय अपने प्रहार को वापस लिया। काग्रेसी नेता छोडे गये और काग्रेस के साथ समझौता करना पडा। इसका वहुत कुछ श्रेय हमारे नारे और युद्ध-नीति को है।

संघर्ष जारी है

आज केन्द्र में अस्थाया राष्ट्रीय सरकार कायम हो चुकी है और अधिकाश प्रान्तो मे काग्रेस मन्त्रिमण्डल कायम है। साधारण आदमी सोचते हैं कि शायद भारत को स्वराज्य मिल गया। अव अग्रेज हुकूमत व काग्रेस के बीच कोई सघर्ष वाकी नही रहा। पर वास्तव में बात इसके विपरीत है। ब्रिटिश साम्राज्यवाद और भारतीय राष्ट्रवाद में तब तक सघर्ष जारी रहेगा जब तक या तो ब्रिटिश साम्राज्यशाही अस्त-व्यस्त न हो जाय और ब्रिटिश जनमत इस बात को स्वीकार न कर ले कि दूसरो को गुलाम रखना कोई फायदे की चीज नही है, वलिक इसके विपरीत उसके लिए वहुत वडी कामत देनी पडती है। युद्ध होते है, अरवो व करोडो की सम्पत्ति का नाश होता है और देश की वहुमूल्य शक्ति यानी नौजवानो के खून की आहुति देनी पड़ती

है। अत इस प्रकार की आर्थिक व सामाजिक व्यवस्था को नष्ट ही कर देना चाहिए, जिसके कारण न तो अपने देश को लाभ होता है, बल्कि दूसरे देशो को गुलाम बनाने और उनका पतन करने का अभिशाप व्यर्थ मे लगता है। युद्ध यद्यपि एक कठोर साधन है पर उसके द्वारा कौमो को अनेक सबक भी मिलते है। उसी के द्वारा जीवन के दृष्टिकोण तथा विचारो में भारी उथल-पुथल होती है और युद्ध-काल मे अनेक लोग राष्ट्रीयता का नशा पीकर एक दूसरे की जान के भूखे होते है, मरते और मारते है। और बाद में जब वह नशा कुछ फीका पड जाता है तो उन्हे उसकी असली उत्पत्ति, कारण तथा उसकी निरर्थकता का पता चलता है। प्रत्येक साम्राज्यशाही राष्ट्र में भी एक भयकर क्रातिकारी परिवर्तन होता है और उस देश के लोग स्वय अपने साम्राज्य को अपने कन्धे से उतार फेंकने का प्रयत्न करते है। यही कारण है कि यद्यपि युद्ध-काल में ब्रिटिश जनता ने चर्चिल को अपना नेता स्वीकार किया, पर युद्ध के बाद उन्हे अपने कन्धे से उतार फेंकना ही मुनासिब समझा, क्योकि उसने अनुभव किया कि जो नेता युद्ध-काल में जिता सकता है, आवश्यक नही कि शाति काल का भी वही नेता हो। साम्राज्यवाद का विनाश एक ओर युद्धो के द्वारा होता है, दूसरी ओर उसके गृह मे स्वय विद्रोह और बगावत प्रारम्भ होती है और ठीक इसी काल में दबे-पिसे राष्ट्रो के लोग करोडो की तादाद मे उसके विरुद्ध विद्रोह करते है। हम आज उस स्थिति मे से गुजर रहे है और हमे विश्वास है कि सघर्ष तब तक जारी रहेगा जब तक ब्रिटिश जनमत भाई-चारे तथा एक-दूसरे राष्ट्र की बराबरी के सिद्धात को स्वीकार न कर लेगा। इतिहास हमारी तरफ है, घटनाए हमे मदद दे रही है। साम्राज्यशाही ढाचा अपने निरन्तर प्रतिस्पर्धात्मक कारणो से टूट रहा है। उसके विरुद्ध यहा और बाहर चारो ओर मनोवैज्ञानिक वातावरण तैयार है और अन्त में जैसा कि सघर्ष का नियम है, सघर्ष अपने अन्तिम काल में केवल नीति, विचार, धारणाओ व मानसिक शक्ति पर निर्भर रहता है। इस कारण हम यह कह सकते है कि इस दृष्टि से भी नैतिक पक्ष हमारा ही दृढ है। न्याय, नैतिकता, इतिहास, विचारो की प्रगति, दुनिया का जनमत सभी हमारी ओर है। अत हमारी विजय अवश्य होगी।

नया नेतृत्व बनाम कांग्रेस हाई कमाण्ड

हर आन्दोलन की प्रतिक्रिया होती है। यह एक अनिवार्य काल है। उस काल में तरह-तरह के प्रश्न व पेचीदगियाँ पैदा हो जाती है। अन्दरूनी और

बाहरी दोनो ही ओर से नेतृत्व के ऊपर दवाव बढ जाता है। जनता में निराशा फैलती है। साथी कार्यकर्ता हताश होकर व्यर्थ की समालोचनाए करने लगते हैं। कुछ उग्रदल वाले दूसरा नेतृत्व स्थापित करने की चर्चा करने लगते हैं। सगठन शिथिल हो जाता है। इस प्रकार इस काल में नेतृत्व को एक ओर जनता की निराशा को आशा मे वदलना होता है, हार को जीत का रूप देना होता है, दूसरी ओर विरोधी शक्ति से वचाव करना होता है और आने वाले आन्दोलन के लिए नई नीति, कला और कार्यक्रम सोचने पडते हैं। हमारा राष्ट्रीय नेतृत्व जिसे हम कांग्रेस हाई कमांड के नाम से सम्बोधित करते हैं कई वार इस अनिवार्य काल में से होकर गुजरा है। जब कितने ही राजनीति के पडित इस प्रकार की घोषणा करने लगे थे कि अब इस नेतृत्व के पुन शक्ति मे आने की कोई आशा न रही और दूसरी ओर कुछ मन-चले उग्रवादी कार्यकर्ता नई नीति व नए प्रोग्राम की वातें करने लगे थे, तव भी हमने पिछले २६ सालो में देखा कि हर आन्दोलन के पश्चात् कांग्रेस हाई कमान्ड अधिक शक्तिशाली और सम्मानित होकर निकला।

सन् १९४२ के आन्दोलन के पश्चात् देश में एक अजीव वहम प्रारम्भ हुई और उस वहम के परिणाम-स्वरूप नए नेतत्व की वात जोर पकडती रही। सन् १९४२ में तोड फोड के जो अनेक सगठित व असगठित कार्य हुए और जिनमें काफी लोगो ने भाग लिया, उन्हें कांग्रेस हाई कमान्ड ने अपनाने से इन्कार कर दिया। स्वभावत दूसरे लोगो ने जो नई कला, नई नीति व नए प्रोग्राम की वात करते है, उन कार्यो को अपनाया और इस प्रकार हिन्दुस्तान के राष्ट्रीय आन्दोलन मे दो स्पष्ट विचार-धाराओ के चिह्न दृष्टिगोचर हुए। आज देश के सामने दो विचार-धाराए स्पष्ट रूप मे मालूम पडती है। इन दोनो के अपने तरीके है। अत अब हमारे लिए यह प्रश्न केवल कल्पना और वहस का नही है, वल्कि एक जीवित प्रश्न है और उसका उत्तर हमें स्पष्टत देना है। प्रश्न है कि यदि समझौते की मौजूदा वातें जो आजकल हो रही है, असफल हो गईं या टूट गईं और ब्रिटिश साम्राज्यशाही ने समझौते द्वारा सत्ता सौंपने की नीति को छोड दिया तो कांग्रेस नेतृत्व क्या करेगा? यदि उसने आन्दोलन छेडा तो वह किस प्रकार का होगा और उस का क्या प्रोग्राम होगा अथवा वह सन् १९४२ की तरह जनता को विना किसी प्रोग्राम के फिर छोड देगा।

आज नये नेतृत्व ने, जो हमारे सामने है, अपने ढग से मौजूदा स्थिति का विश्लेषण किया है। उसका कहना है कि आज देश में क्रान्तिकारी बेचैनी है। समाज का हर तबका सरकार के विरुद्ध उठ रहा है। आन्दोलन के लिए इससे

बढ़कर उपयुक्त समय दूसरा नही हो सकता। एक ओर ब्रिटिश साम्राज्य कमजोर हो चुका है तथा दूसरी ओर उसका भीतरी ढाँचा निकम्मा हो चुका है। इस लिए आज उससे कोई समझौता न करके उसके विरुद्ध एक सामूहिक क्रान्तिकारी आन्दोलन शुरू कर दिया जाय। यदि यह आन्दोलन शुरू न किया गया तो ब्रिटिश साम्राज्यशाही, जो इस समय केवल समय का लाभ उठाकर समझौता करने के लिए मजबूर हुई है, पुन अपने को मजबूत कर लेगी और बाद में राष्ट्रीय आन्दोलन को क्षीण करने का प्रयत्न करेगी और उपयुक्त समय पर प्रहार भी करेगी। अत समय की दृष्टि से, नीति के ख़याल से मौजूदा समय क्रान्ति करने का समय है। इस समय साम्राज्यवादी ढाचे को अस्त व्यस्त करके शक्ति छीनी जा सकती है और अपना राज्य स्थापित किया जा सकता है।'

इस नेतृत्व का अपना प्रोग्राम है। उसका कहना है कि जेल जाने के प्रोग्राम मे अब कुछ रोचकता नही रह गई और हमारा राष्ट्रीय आन्दोलन उस सीढी को पार कर चुका है। अब आन्दोलन करने का समय नही है, क्योकि आज समाज के सारे ही वर्ग, क्या मजदूर, क्या किसान, क्या मध्यम श्रेणी के लोग, क्या उच्च श्रेणी के लोग ब्रिटिश साम्राज्यशाही के विरुद्ध है। उनमे विद्रोह करने की शक्ति जोर मार रही है। अत इस समय हमारे लिए आवश्यक है कि शक्ति छीनने की कला और तरीको की जनता को शिक्षा दी जाय। सन् १९४२ के आन्दोलन ने तो रिहर्सल का काम किया है। आने वाला आन्दोलन हमे शक्ति छीनने और साम्राज्यशाही सत्ता को नष्ट कर जनता का आधिपत्य स्थापित करने से प्रारम्भ करना चाहिए।

उनके प्रोग्राम के आक्रमणात्मक और रक्षात्मक दोनो पहलू है। आक्रमणात्मक प्रोग्राम द्वारा नये नेता जनता को गाँव, जिले और सूबेवार दस्तो में सगठित करना चाहते है और फिर इन सब सूबो को एक अखिल भारतीय सगठन के रूप में। उनका कहना है कि यह दस्ते सरकारी सत्ता पर प्रहार करें। गाव की जनता को ग्राम पचायतो के रूप मे सगठित किया जाय। एक ओर जनता मे, जिसमें आक्रमण करने की शक्ति क्षीण हो चुकी है, शक्ति पैदा की जाय और दूसरी ओर इस शक्ति को कायम रखने के लिए सैनिक-बल को बढाया जाय। ब्रिटिश नौकरशाही की राज्य-व्यवस्था को अस्त-व्यस्त करने के लिए तोड-फोड के कार्यों को व्यापक रूप से चलाया जाय। रेल, तार, सडकें, पुल इत्यादि को नष्ट कर दिया जाय। इस प्रोग्राम को चलाने के लिए यह लोग गुप्त साधनो मे विश्वास करते है और इन लोगो का खयाल है कि हमारा राष्ट्रीय आन्दोलन अब इस अवस्था को पहुँच गया है कि जब सरकारी

फौज व पुलिस के लोग हमारे साथ आ जायगे और इस प्रकार जनता का आदोलन अवश्य ही सफल होगा। यह लोग अहिंसा और हिंसा की बातो में नही पडते। अत जिस साधन से उन्हे सफलता मिलती हो उसको ही अपनाने में उनका विश्वास है। इस प्रकार के नए नेतृत्व को आन्दोलन-काल में काफी सफलता भी मिली है। यह सफलता यद्यपि ध्येय तक पहुँचने की दृष्टि से नही के बराबर है, पर इस प्रकार के गुप्त आदोलन का एक रोचक तरीका होता है। एक शक्तिशाली दुश्मन की आँखो से अपने को बचाना, इधर-उधर छिपकर सी० आई० डी० की आँखो मे धूल झोकना, गुप्त प्रेस चलाना इत्यादि ऐसी अनेक रोचक बाते है जो नवयुवको को खास तौर पर बडी अपील करता है। इस प्रोग्राम के नेताओ से स्पष्टत पूछा जाय कि इस नई युद्ध-कला द्वारा जनता मे कुर्बानी करने की कितनी शक्ति पैदा हुई और किस प्रकार उनके साधनो द्वारा आन्दोलन ने व्यापक रूप धारण करके अपनी गतिविधि को शक्तिशाली बनाया तो वह कुछ अधिक नही कह सकते ।

कांग्रेस हाई कमाण्ड का स्थिति-विश्लेषण इस से विभिन्न है। उनका कहना है कि देश में क्रान्ति के लिए न तो उपयुक्त मनोवैज्ञानिक तैयारी ही है और न सगठन ही। निस्सदेह जनता में बेचैनी व परेशानी है। ६ सालो में जनता काफी तकलीफो मे होकर गुजरी है। आज कांग्रेस मन्त्रिमडलो के स्थापित हो जाने तथा ब्रिटिश शक्ति के क्षीण हो जाने के कारण जनता के विभिन्न वर्गों में चीखने-चिल्लाने तथा अपने दुखो को जोर से कहने की शक्ति बढ गई है। उस शक्ति के आधार पर हम यह अवश्य कह सकते है कि जनता क्राति चाहती है। पर उसकी अन्तरात्मा इस समय कुछ काल तक शान्ति चाहती है। वह अपने कष्टो का निवारण चाहती है। दूसरे हाई कमाण्ड का विश्वास है कि यदि ब्रिटिश साम्राज्यशाही धोखा करेगी तो वह साहस से मुकाबला करने को तैयार है। उसके लिए आवश्यक है कि कुछ काल तक ब्रिटिश नौकरशाही की शासन-व्यवस्था पर, जिसका जाल गाव-गाव मे फैला हुआ है, कब्जा करके अपने को अन्दर-ही-अन्दर और सुदृढ कर लिया जाय ताकि समय पडने पर इस शक्ति का प्रयोग आन्दोलन की गतिविधि को बढाने मे किया जा सके। इस काल में दुनिया की अन्य सरकारो के साथ अपने स्वतन्त्र सम्बन्ध स्थापित करके देश के सम्मान को बढाया जा सकेगा।

हमारे नेताओ का विश्वास है कि इस नीति के द्वारा ब्रिटिश साम्राज्यशाही मे उतनी भी शक्ति न रह पायगी कि वह किसी दूसरे आक्रमण की कल्पना कर सके। इसलिए कांग्रेस हाई कमाड ने आज शाति और सुलह की

नीति को अपनाया है। उसका विश्वास है कि इस तरह हम बहुत थोडे समय में अपने ध्येय के नजदीक पहुच सकेंगे।

तोड-फोड, गुप्त कार्य तथा गुरिला मोर्चेबन्दी आदि के बारे मे काग्रेस हाई कमाड का कहना ह कि इन तरीको से हम आजादी के नजदीक नही पहुँच सकते, बल्कि यह सब साधन किसी भी सामूहिक आन्दोलन की गतिविधि के लिए घातक है। अत एक ओर सामूहिक आन्दोलन करना जिसमें लाखो-करोडो आदमी साहस, धर्य व जोश के साथ जुट सकें, खुलकर बलिदान कर सके और दूसरी ओर गुप्त साधनो की बातें सोचना एक साथ विभिन्न प्रकार की दो कल्पनायें करना है। काग्रेस हाई कमाण्ड की यह भी राय है कि जनता की ओर से की हुई कोई भी हिंसा सरकार की सगठित हिंसा को प्रोत्साहन देती है और इस प्रकार उसे निहत्थी जनता के विरुद्ध सगठित हिंसा करने का मौका मिल जाता है। हिंसा का सीधा नियम यह है कि जिसके पास अधिक शक्ति होती है वही जीतेगा। अत यह नेतृत्व उस शतरज पर खेलना नही चाहता जिस पर उसे पूर्ण विश्वास है कि उसके मोहरो से ही उसे मात मिल सकती है। इसलिए वह हिंसा का विरोधी है और वह समझता है कि तोडफोड के कार्यों से इतना अधिक लाभ नही हो सकता जितना कि नुकसान। अन्त में उसका यह भी कहना है कि तार, पुल इत्यादि जनता के पैसे से ही बने है, इसलिए उनका नाश करना अपना नुकसान करना है। इसके विपरीत यह कही अच्छा है कि जनता सामूहिक रूप में लगानबन्दी कर दे और सरकारी नियमो को न मानकर अपना सगठन स्थापित कर ले। यदि आन्दोलन का सामूहिक रूप कायम है और जनता उसमें शरीक है तो तोड-फोड के कार्यो की आवश्यकता ही नही। इस प्रकार यह नेतृत्व इस प्रोग्राम से सहमत नही है।

किसी नये नेतृत्व का प्रश्न तभी उठता है जब या तो पुराने नेतृत्व से अनेक पराजयो के कारण जनता ऊब उठी हो या उससे अधिक अच्छा नेतृत्व पैदा हो गया हो, जिसकी जडे समाज के अन्दर जम गई हो। जब हम इस प्रश्न को इस दृष्टि से देखते है तो मालूम पडता है कि वर्तमान काग्रेस हाई कमाड आज पहले से अधिक सम्मानित व शक्तिशाली है। आज उसे जनता का अटूट प्रेम और विश्वास प्राप्त है। नेतृत्व का यह कर्त्तव्य है कि वह अपने सैनिको को पराजय की स्थिति से निकालकर जीत की स्थिति मे रख दे। क्या आष्टी, चिमूर, सितारा, मिदनापुर, युक्त-प्रान्त के पूर्वी जिलो आदि के अपने सैनिको को, जिन्हें ब्रिटिश नौकरशाही ने लम्बी-लम्बी और मौत तक की सजाए दी थी, इस ने नाक नहीं छुडा लिया? इस प्रकार इस नेतृत्व ने सन् १९४२ की हार को

आज एक ऐसी जीत मे बदल दिया कि ब्रिटिश साम्राज्यशाही को उन नेताओ के साथ,जिनको वह छोडने को तैयार न थी, वात करना नही चाहती थी, समझौता करने तथा अपने ही हाथो स शक्ति दने के लिए मजबूरहोना पडा। अतः इस नेतृत्व की शक्ति क्षीण होने का प्रश्न तो उठता ही नही। दूसरा प्रश्न यह है कि क्या नये नेतृत्व ने समाज के अन्दर अपना इतना गहरा प्रभाव व लगाव पैदा कर लिया है कि समाज उसकी ओर आकर्षित हो जाय अर्थात् उसे अपनी आशाओ और आकाक्षाओ का केन्द्र ममझे। अभी तो ऐसा हुआ नही है। इमके अलावा युद्ध-काल में जो नेता होते है जरूरी नही कि वही शान्ति-काल में भी हो। इस कारण हमारा विश्वास है कि देश की बागडोर मौजूदा काग्रेम हाई कमाड के हाथ मे रहेगी और यदि देश को नये आन्दोलन के लिए विवश होना भी पडा तो अगला आन्दोलन गान्धीवादी नेतृत्व में ही होगा।

: ३ :

मनोवैज्ञानिक वातावरण

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का अधिवेशन

"परन्तु इससे क्या हुआ ? यह युद्ध भारत ने तो शुरू किया नही है।"

"भाई, इसे मै जानता हूँ। अवश्य ही उन्होने हमारे नेताओ से परामर्श किये विना ही भारत को युद्धग्रस्त घोषित कर दिया और इस प्रकार वे हमारे जन, धन और साधनो का उपयोग कर रहे है। किन्तु वे आखिर स्वाधीनता व प्रजातत्र के लिए ही तो यह युद्ध लड रहे है।"

"स्वाधीनता और प्रजातत्र की रक्षा के लिए, बिलकुल झूठ। यह कहो कि अपने साम्राज्य और वेईमानी से प्राप्त दूसरे लाभो की रक्षा के लिए यह युद्ध लडा जा रहा है। चाहे हमारे देश के वीर युद्ध मे जाय या न जाय, परन्तु इस वार साम्राज्यवादियो की कुशल नही है। उनके ग्रह वुरे है। क्या तुमने वच्चू सूर की भविष्यवाणी के वारे में कुछ नही सुना ? उनका कहना है कि १३ अगस्त से २३ अगस्त तक का समय अग्रजो के लिए बहुत कठिन है। उनका पतन अवश्यम्भावी है।"

"हाँ, लक्षण तो कुछ ऐसे ही है, परन्तु हम ग्रहो के भरोसे क्यो बैठे रहे ? रूस व चीन की तरह हम भी क्यो न अपने पैरो पर खड़े हो जाय ? अपनी स्वाधीनता के लिए हम भिक्षा नही माँग सकते। उसके लिए तो लडना पडेगो और हमें ऐसा करना ही चाहिए। यही उपयुक्त समय है।"

"तुम ठीक कहते हो। सरकार राजी-खुशी कभी कुछ नही देती। स्वाधीनता कभी उपहार के रूप में नहीं दी जाती। जिस स्वाधीनता और प्रजातन्त्र के लिए अग्रेज आज लडने का दावा कर रहे है, हमारे नेताओ ने भी वही चीज उनसे माँगी थी, परन्तु मिला क्या ? पहली वार लार्ड लिनलियगो द्वारा एक परामर्शदात्री असेम्वली, दूसरी वार एमरी की अगस्त-घोपणा और तीसरी और अन्तिम वार सारे ब्रिटिश मत्रिमण्डल का उपहार—

क्रिप्स-प्रस्ताव। हमने माँगी थी रोटी, परन्तु मिले हमें पत्थर, वह भी एक नही तीन।"

"इसीलिए अव गाधीजी ने उनसे भारत से चले जाने के लिए कहा है। हम लोग भी उनसे अव उकता गये है। जितनी जल्दी वे इस देश से चले जाय उतना ही अच्छा है। लेकिन जव तक उन्हें भगाया नही जायगा तव तक वे टलने वाले जीव नही है।"

"वैसे तो मै राजनैतिक वातो को कम समझता हूँ, परन्तु एक वात जरूर जानता हूँ। वह यह कि गाधीजी को ईश्वरीय-प्रेरणा है। वे भविष्य की वातो को जान सकते है और उनका यह कहना है कि यह अन्तिम सग्राम होगा और उसे अन्त तक लडा जायगा। जो कुछ वे कहते है वह होकर ही रहेगा। गाधीजी अग्रेजो के लिए वैसे ही है जैसे कृष्ण कस के लिए थे। अग्रेजो का अन्त निश्चित है।"

"चारो ओर यह अफवाह फैली हुई है कि इस वार गाधीजी एक ऐसा नया कार्यक्रम रखने वाले है जिससे देखते-देखते सारी सरकारी व्यवस्था पगु हो जायगी, ताश के पत्तो की तरह विखर जायगी। ९ ता० के वाद रेलगाडियाँ, मोटर वस, टेलीफोन इत्यादि कार्य करना वद कर देगे।"

"क्या तुम नही जानते कि काग्रेस के नेतागण वम्वई में जमा हो रहे है ? देखना है, ये लोग वहा क्या निश्चय करते है। यह एक महत्त्वपूर्ण अधि-वेशन होगा। हमारी दृष्टि उसी ओर लगी है। कमर वाधकर तैयार रहना चाहिए। यदि इस समय न लडे तो फिर आग की लपटे हम को घेर लेगी।'

"भाई, गाधीजी महात्मा से कही अधिक एक राजनीतिज्ञ है। वे जानते है कि यदि इस वार हम न लडे तो मृत्यु,नाश और नैतिक अव पतन हमारा स्वा-गत करने के लिए तैयार है। हमे एक वीर के सदृश मरना चाहिए। गाधीजी की मान्यता है कि चाहे अग्रेज हो चाहे जापानी, भारत को स्वाधीनता के शत्रुओ से लडना ही चाहिए।"

रेलगाडियो, मदिरालयो, वाजारो तथा चौराहो आदि में लोग इसी प्रकार की वातें करते हुए पाये जाते थे। वातावरण आतकपूर्ण था। इस सन-सनी के कारणो को ढूढ निकालना कुछ कठिन नही। भारत की भूमि पर पहला वम गिरने और शत्रु के भारत की सीमा तक पहुँचने से भी वहुत पहले से देश में घोर भय फैल गया था। लोगो ने वडे-वडे नगरो को छोडकर दूसरे स्थानो की ओर भागना शुरू कर दिया था। इसका कारण था। प्रथम तो कई पीढ़ियो से अग्रेजी शासन में रहते-रहते लोग नपुसक हो गये थे और उनम

किसी भी आतक का मुकाबला करने की अधिक शक्ति न रह गई थी। दूसरे अन्य देशो से युद्ध के आरम्भ में भयकर तबाही के जो समाचार प्राप्त हुए, उनसे उनका रहा-सहा साहस भी जाता रहा। ऐसे वातावरण मे अगस्त की ८ वी तारीख को काग्रेस-कार्य-समिति के प्रस्ताव पर अपना अन्तिम निर्णय देने के लिए अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी का बम्बई मे अधिवेशन हुआ। उसमे अग्रेजो से भारत छोडकर चले जाने के लिए केवल इसलिए नही कहा गया था कि भारतवासियो की स्वाधीनता की माग पूरी हो जाय, बल्कि उस समय यह भारत और मित्रराष्ट्रो की सुरक्षा के लिए भी आवश्यक था। लोगो का विचार था कि अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी का यह अधिवेशन काग्रेस और भारत के इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण घटना होगी और उसका प्रभाव ससार के इतिहास पर भी पड सकता है। इसलिए सारे विश्व का इस अधिवेशन की ओर उत्सुकतापूर्वक देखना आश्चर्य की बात न थी। अग्रेज और अमेरिकन पत्र-प्रतिनिधियो के अतिरिक्त चीन और रूस के पत्र-प्रतिनिधि भी उसमें उपस्थित थे। ५० विदेशी पत्रकारो सहित कुल ३५० पत्र-प्रतिनिधि-पास बाट गये थे। देखने मे यह बैठक वार्षिक अधिवेशन के समान ही भव्य थी, परन्तु महत्त्व और जनता के उत्साह की दृष्टि से यह उससे भी कही अधिक बढी-चढी थी। अधिवेशन के आरम्भ होने से लगभग एक सप्ताह पहले से काग्रेस-भवन मे बडी चहल-पहल मची हुई थी। अखिल भारतीत काग्रेस कमेटी के सदस्यो, अतिथियो, दर्शको व कार्यकर्ताओ का ताता-सा लगा हुआ था। कर्मचारी, कार्यकर्ता, स्वयसेवक आदि बडी उमग और जोश से आदेश देने और उन्हे पूरा करने के लिए इधर-उधर दौडते हुए दिखलाई दे रहे थे। लोगो के झुड के-झुड प्रवेश-टिकट पाने के लिए इच्छुक थे। परन्तु कोशिश करने पर भी टिकटो की बढती हुई माग को पूरा नही किया जा सका। बहुत से निराश होकर लौट गये। कुछ लोगो ने स्थिति का लाभ उठाते हुए निजी तौर से १० रुपये के टिकट को १००० तक मे बेच डाला। इस अधिवेशन के लिए एक लाख रुपये की लागत से गवालिया टेक मैदान में बहुत बडा पडाल खडा किया गया था।

३५००० वर्ग फीट पडाल का हर इच जनता से खचाखच भर गया था। हजारो आदमी पडाल के बाहर उत्सुकता से राष्ट्रीय पार्लियामेंट की कार्रवाई को सुनने के लिए एक-दूसरे से चिपटे खडे थे। लगभग ३००० स्वयसेवक, जिनमें २०० के करीब सेविकाए भी थी, दर्शको, अतिथियो तथा काग्रेस-सदस्यो का स्वागत तथा इतजाम करने में सलग्न थे। चारो तरफ तिरगे झडे सारे दृश्य

को मनोहारी बना रहे थे। अधिवेशन शुरू होने से ठीक पहले एक घटना आश्चर्यजनक तरीके से देखने में आई। उसका अभी तक मेरे मस्तिष्क पर प्रभाव है। उसने वहा पर एकत्र समस्त जनता पर अपनी छाप डाली। वह घटना यह थी कि एक हवाई जहाज कांग्रेस पंडाल के ऊपर अधिवेशन शुरू होने से कुछ मिनट पहले उडा। पता नहीं उसका क्या तात्पर्य था। हो सकता है कि उसके द्वारा ब्रिटिश-शक्ति का प्रदर्शन किया गया हो या अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी को इस बात की चेतावनी दी गई हो कि यदि उसने सरकार को चुनौती देने वाला प्रस्ताव स्वीकार किया तो उसका अच्छा परिणाम न होगा। शायद वह आगे चलकर बिहार मे की गई हवाई गोलाबारी की पूर्व-सूचना थी।

ठीक २॥ बजे 'वन्देमातरम्' गान के साथ अधिवेशन प्रारम्भ हुआ। देश के सम्मानित नेता मच पर बैठे थे। इन बहादुर नेताओ को, जिनका सारा जीवन देश की स्वतत्रता की लडाई मे कटा था, देखकर साधारण आदमियो मे उत्साह पैदा होता था। वे उनकी ओर उत्सुकता, श्रद्धा, विश्वास और चाह की दृष्टि से देख रहे थे। राष्ट्रीय नारो की गगनभेदी ध्वनि के साथ राष्ट्रपति मौलाना अबुल कलाम आजाद मच पर आकर बैठे। कुर्सी पर बैठे-बैठे उन्होने बोलना शुरू किया। उनको सुनकर कौन था जो यह कह सकता कि वह उनसे अधिक भारत की रक्षा के लिए उत्सुक है। उन्होने बारदोली प्रस्ताव के पहले के हालात और युद्ध के प्रति कांग्रेस के रवैये पर प्रकाश डाला। उनके मुह से शब्द निकल रहे थे और श्रोताओ पर एक अजीब प्रभाव पड रहा था। उन्होने अधिवेशन मे दो भाषण दिये—एक प्रारम्भ मे और दूसरा अधिवेशन की कार्रवाई समाप्त करते हुए। दोनो भाषण लोगो को बहुत दिनो तक याद रहेगे।

८ अगस्त वाला प्रस्ताव, जो 'भारत छोडो' प्रस्ताव के नाम से मशहूर है, प० जवाहरलाल नेहरू ने पेश किया और सरदार पटेल ने उसका समर्थन किया। प्रस्ताव पर अग्रेजी मे बोलते हुए प० नेहरू ने कहा—"प्रस्ताव कोई धमकी नही है। यह तो एक निमत्रण है। इसके द्वारा हमने बताया है कि हम क्या चाहते है। हमने सहयोग का हाथ आगे बढाया है। किन्तु उसके पीछे एक साफ इशारा भी है कि यदि कुछ बाते न हुई तो परिणाम क्या हो सकता है। यह स्वतत्र भारत के सहयोग का दावतनामा है। किसी दूसरी शर्त पर हमारा सहयोग नही हो सकता। उसके अलावा हमारा प्रस्ताव केवल सघर्ष और लडाई का वादा करता है।"

आगे चलकर प० नेहरू ने कहा—"दूसरे देशो मे रहने वाले हमारे कुछ

दोस्तो का खयाल है कि हम गलती कर रहे है । पर मैं ऐसा नही कहता कि वे गलतफहमी में हैं, क्योंकि जिस खास वातावरण मे वे लोग रहे है, उसमे वह और कुछ सोच नहीं सकते । लेकिन मैं इस बात की घोषणा करता हूँ कि हम अपनी धारणा में निश्चित है । उसके बारे मे किसी को गलतफहमी नही होनी चाहिए । हम एक समुद्र-तट पर खडे हुए है और यदि जरूरत हो तो गोता लगाने के लिए भी तैयार है ।"

आगे चलकर प० नेहरू ने बताया—"जब यह प्रस्ताव पास हो जायगा तो यह केवल अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी का फैसला न होगा, बल्कि उसके द्वारा समस्त भारत की दबी हुई आवाज, धारणा तथा इच्छा का प्रतिनिधित्व होगा । इतना ही नही, मैं तो यहां तक कह सकता हू कि उसके द्वारा हम समस्त ससार की दबी हुई जनता की आवाज का प्रतिनिधित्व कर सकेंगे । अगर ब्रिटेन इस प्रस्ताव को मजूर करेगा और उसके मुताबिक कार्य करेगा तो भारत में तथा सारी दुनिया में एक आश्चर्यजनक तब्दीली देखने को मिलेगी । उससे सारी लडाई का नकशा व रूप ही बदल जायगा और युद्ध के बीच एक क्रान्तिकारी परिवर्तन पैदा हो जायगा ।"

नेहरू जी ने बताया—"यह लडाई केवल लडाई ही नही है, बल्कि उससे कही अधिक महत्त्व रखती है। इस युद्ध की गोद मे आने वाली भयकर क्राति छिपी है जो सारे ससार को ढक लेगी। युद्ध हो सकता है समाप्त हो जाय और यह भी हो सकता है कि कुछ और वक्त तक चलता रहे । लेकिन तब तक शान्ति नही हो सकती जब तक दुनिया के पराधीन देश आजाद नही हो जाते । बडे दुर्भाग्य की बात है कि पिछली लडाई से युद्ध के नेताओ ने कुछ नही सीखा और न उन्होने युद्ध द्वारा होने वाली क्रान्ति को ही समझा । वर्तमान युद्ध के नेता भी इस युद्ध को पुराने ढंग से चला रहे हैं और सोचते है कि हम अधिक जहाज और हवाई जहाज बनाकर लडाई जीत लेंगे । हो सकता है कि उनकी अवस्था मे मैं भी यही करता । पर मैं यह कहे बिना नही रह सकता कि ये नेता जनता की भावनाओ के आधार को नही समझ रहे है । जब तक ये उसे नहीं जानेंगे, उन्हे सफलता नही होगी, हालाकि मुझे आशा है कि यह कुछ सबक सीखेंगे और यह भी आशा है कि इसमें अधिक देरी न होगी ।"

चर्चिल तथा उनके जैसे अन्य अग्रेजो की आलोचना करते हुए प० नेहरू ने कहा कि मिस्टर चर्चिल एग्लो-सेक्षन जातीय आधिपत्य की दृष्टि से सोचते हैं । मैं अग्रेजो और अमरीकन लोगो को याद दिलाना चाहता हू कि ससार में इन जातियो के अलावा और भी जातिया रहती है जो इस जातीय भेद-भाव व

आधिपत्य का वरदाश्त नही कर सकेंगी। मित्र-राष्ट्रो के ध्येय की ओर सकेत करते हुए पडित जी ने कहा—'अभी तक उनके ध्येय नकारात्मक दृष्टि से केवल इसलिए ठीक है कि जर्मनी और जापान इनसे भी बुरे है। लेकिन यदि भारत स्वतन्त्र कर दिया जाय तो उसमे लडाई का रूप बदल जायगा और मित्र राष्ट्रो का ध्येय व्यवहारत भी ठीक हो जायगा। उसका नाजी लोगो पर भी प्रभाव पडेगा और जो उनकी मदद कर रहे है उन पर भी एक गहरा और जबर-दस्त नैतिक प्रभाव पडेगा। मुझे अफसोस है कि इग्लैण्ड और अमेरिकन लोग इस प्रश्न पर सकीर्ण दृष्टि से सोच रहे है और उनके ध्यान में यह बात अभी तक नही आई कि भारत की आजादी का इस लडाई से क्या सम्बन्ध है।" कुछ जोश में आते हुए प० जवाहरलाल ने कहा कि "कुछ लोग हमें धमकी दे रहे है, लेकिन वे नहीं जानते कि ऐसे नाजुक मौके पर धमकी का और भी भयकर परिणाम हो सकता है और यह उनके लिए भी घातक हो सकता है। मै तो भारतीय लोगो से अपील करूगा कि वे इस सशय, धमकी व तनातनी के वातावरण में अपने सच्चे ध्येय और धारणा को न भूल जाय, वे भारत की आजादी के लिए ही नहीं, वल्कि समस्त दुनिया के लोगो की आजादी और विशेषकर रूस व चीन की आजादी के लिए लड रहे है। मै एक राष्ट्रवादी हूँ और मुझे इसका गर्व है, लेकिन मैं एक संकीर्ण राष्ट्रवाद के चगुल में नहीं फस सकता। हम अपने मे अन्तर्राष्ट्रीय भावना पैदा करनी है।"

आगे चलकर प० नेहरू ने कहा—"हमारे रास्ते मे बहुत-सी कठि-नाइया है। उन अग्रेजो और अमेरिकनो से, जो यह समझते है कि हम गलती कर रहे है, मै यह कहूँगा कि यह हमारी परेशानी है और उसे हम ही ठीक कर सकते है। हम अग्रेजो और अमरीकनो से कही अधिक जानते है कि गुलामी क्या चीज है, क्योकि हम उसके अभिशापो को सहन कर रहे है। आखिर युद्ध में जापान ने भारत पर आक्रमण किया तो हमे ही कठोर कुर्वानी और तकलीफे वरदाश्त करनी होंगी। हमें ही आग की लपटो मे झुलसना होगा। अब तो हम आग में कूद पडे है, या तो सफल होकर निकलेंगे या उसी में जलकर भस्म हो जायगे। जहा तक हिन्दू-मुस्लिम का प्रश्न है, मैंने मि० जिन्ना से जाकर बातचीत की और पूछा कि मुस्लिम लीग क्या चाहती है। मैंने उनसे पत्र लिखकर भी पूछा, लेकिन मुझे कोई भी उत्तर नही मिला। मिस्टर जिन्ना का रवैया वही है जो नाजी जर्मनी और फासिस्ट इटली का है। लेकिन फिर भी 'वम्बई क्रानिकल' हमसे यह कहता नही थका है कि मुस्लिम लीग से काग्रेस को फैसला कर लेना चाहिए। मै 'वम्बई क्रानिकल' के सम्पादक से

पूछना चाहता हू कि उनका इस पुराने तार को बजाने से क्या तात्पर्य है? जब कि काग्रेस ने हर समय मुस्लिम लीग के पास सुलह की पेशकश की, हमारे सामने दरवाज़ा बन्द कर दिया गया और फिर उलटा हमारे ऊपर इलज़ाम लगाया गया। आखिर हम कब तक ऐसा अपमान सहते रहेगे?" (करतल ध्वनि)

सरदार पटेल

इस प्रस्ताव का समर्थन करने के लिए सरदार पटेल खडे हुए, जिन्होने एक सीधी और स्पष्ट वक्तृता द्वारा समस्त जनता मे बिजली-सी पैदा कर दी। उनके शब्दो मे बल था, निश्चित धारणा थी, स्पष्टता थी, और था जनता की भावना का प्रदर्शन। उन्होने वही कहा जो जनता चाहती थी, अनुभव करती थी व किसी के द्वारा सुनना चाहती थी। यही कारण था कि उनकी वक्तृता के दौरान मे उत्साह से भरी हुई जनता ने बार-बार करतल-ध्वनि द्वारा अपने भावो का परिचय दिया। निस्सन्देह उनकी वक्तृता मे कुछ अप्रिय लगने वाले व तीखे वार भी थे। किन्तु यह एक ऐसे सरदार की वक्तृता थी जो मरते हुए लोगो में भी जीवन पैदा कर सकते है। सरदार ने कहा, "सरकार चाहती है कि हम उसमें और उसके हथियारो में विश्वास करें। क्या हम उन्ही हथियारों का विश्वास करे, जिन्होने बर्मा और मलाया के लोगो की रक्षा की? क्या हम ऐसे ही भाग्य का स्वागत करें जो उनका हुआ? वह उन देशो से भाग खडी हुई और वहाँ के लोगो को जापानियो के रहमो-करम पर छोड दिया। कौन जानता है कि वह हमें उसी तरह नष्ट और तबाह करके यहाँ से नहीं चली जायगी। हम वादो पर कैसे विश्वास करें जब कि धोखो का ताता लगा हुआ है।"

इस प्रस्ताव मे बहुत-सी तरमीमे पेश हुई, जिनमे मुख्य वह थी जो कम्युनिस्टो ने पेश की थी।

प्रस्ताव तथा सशोधनो पर मत लेने से पहले मौलाना आजाद ने बताया कि किस प्रकार काग्रेस बराबर दो साल से हिन्दू-मुस्लिम मेल का प्रयत्न कर रही है। लेकिन यह केवल एक-तरफा प्रयत्न रहा है। दूसरी पार्टी ने जरा भी हमारे बढे हुए हाथ की न तो सराहना की और न अपनी ओर से क्रियात्मक कदम ही उठाया। जहाँ तक काग्रेस का ताल्लुक है, उसका रवैया बिलकुल साफ है। उसका दरवाजा सदा सबके लिए खुला हुआ है। इसलिए कॉग्रेस को कुछ कहने की क्या जरूरत है? जो लोग हिन्दू-मस्लिम फैसले की बाते कहकर शोर-गुल मचा रहे है, अच्छा होता कि वे लीग का दरवाज़ा खटखटाते, जो हमारे लिए न केवल बन्द कर दिया गया है, बल्कि जिसमे कीलें

ठीक दी गई है।" इसके बाद मौलाना आजाद ने प्रस्ताव व संशोधनों पर मत लिये। केवल कम्युनिस्टों द्वारा पेश हुए संशोधन के पक्ष में १२ मत आये और शेष संशोधन या तो वापस ले लिये गए या गिर गए। इस प्रकार महान् करतल ध्वनि के बीच ८ अगस्त सन् १९४२ का वह ऐतिहासिक प्रस्ताव पास हुआ। ठीक उसके पश्चात् महात्मा गांधी ने २॥ घंटे तक अंग्रेजी और हिन्दुस्तानी में एक ओजपूर्ण तथा सारगर्भित भाषण दिया जिसका दर्शकों व सदस्यों पर जादू का-सा प्रभाव पड़ा। पूरे ढाई घंटे तक एक अजीब सन्नाटा रहा। उस समय महात्मा गांधी की वाणी से निकला हुआ एक-एक शब्द मालूम पड़ता था लोगों के हृदयों व स्नायु-मण्डल पर अपना प्रभाव डाल रहा है। जिस समय गांधी जी बोल रहे थे तो मालूम देता था कि उनके जरिए सारा राष्ट्र अपने हृदय को खोलकर रख रहा है।

गांधीजी का भाषण

सबसे पहले गांधीजी ने उन लोगों को, जिन्होंने बड़ी दिलेरी व हिम्मत के साथ इस प्रस्ताव के विरुद्ध अपनी राय दी थी, बधाई दी। वे यह जानते थे कि प्रस्ताव बहुमत से पास होगा, फिर भी उन्होंने अपने विचारों व विश्वासों का प्रदर्शन किया। इस प्रकार गांधीजी ने कहा कि उन्होंने उस उसूल की रक्षा की है जो वह ५० साल से बराबर सबके सामने रखते रहे हैं। आगे चलकर हिन्दू-मुस्लिम एकता पर बोलते हुए महात्मा गांधी ने कम्युनिस्ट भाइयों का ध्यान मौलाना आजाद व प० जवाहरलाल नेहरू के भाषणों की ओर दिलाया कि किस प्रकार कांग्रेस ने एकता के प्रयत्न किये हैं और कहा, "एक जमाना था जब मुसलमान कहते थे कि हिन्दुस्तान हमारा मुल्क है। उस समय वे नाटक नहीं करते थे। वे हमारे साथ लड़े थे। खिलाफत में शरीक हुए थे। उनके साथ मैं बरसों रहा। लोग कहते हैं कि मैं भोला हूं। पर इसके मानी यह थोड़े ही है कि मैं यह मान लेता हूं। पर मैं सुन लेता हूं। मुझे धोखेबाज बनने के बजाय भोला कहलाना अच्छा लगता है। मेरा तो यह स्वभाव है, कि जब तक कोई चीज सामने नहीं आती, मैं ऐतबार कर लेता हूं। यह चीज प्रस्ताव में भरी है। मुसलमान और हिन्दू भी कहते हैं कि हिन्दू-मुस्लिम एकता होनी चाहिए। दूसरी सभी कौमों का भी इत्तिहाद होना चाहिए। होता है, तो अच्छा ही है। कुछ लोग मुझसे आकर कहते हैं कि तू जब तक जिन्दा है, तभी तक यह बनेगा। लेकिन मेरा हृदय इसे कबूल नहीं करता। जिसे मेरा दिल कबूल नहीं करता उसमें मुझे रस नहीं है। मैं तो जब छोटा बच्चा था, तब से इस चीज को

जानता था। मदरसे मे हिन्दू, मुसलमान और पारसी सब थे । उनसे मैने दोस्ती की थी। मै जानता था कि यदि हम हिन्दुस्तान मे अमन से रहना चाहते है, तो पडोसी के फर्ज का भली-भाति पालन करना चाहिए । अफ्रिका भी गया तो मुसलमानो का काम लेकर गया और सबका दिल हरण कर लिया। जो मेरे उसूलो के मुखालिफ थे,उन्होने भी मुझ पर विश्वास किया। वे जानते थे, कि यह जो बात कहेगा, वह न्याय की ही होगी। वहा से आया, सो भी हारकर नही आया। सबको रोते हुए छोडकर आया। यहा भी वही चीज मेरे सामने पैदा हो गई। बडा काम किया, तो मुसलमानो के लिए भी किया। उस समय मुझे कोई दुश्मन नही मानता था। खिलाफत मे मैने क्या स्वार्थीपन किया ? मै गाय की पूजा करता हू। हम एक है, तो सिर्फ इन्सान ही नही जीव-मात्र एक है। सब खुदा के बन्दे है। इसकी फिलासफी आज मै समझाना नही चाहता। वे दोनो भाई और मौलाना बारी मेरी गवाही दे सकते है कि मैने गाय के बारे मे क्या कहा था । मैने कहा था कि गाय को बचाने के लिए मै सौदा करना नही चाहता। अगर आप स्वतन्त्र रूप से ऐसा करेगे, तो अच्छा होगा। मै तो मुसलमानो के साथ खाना भी खा लेता हू । लोग उस जमाने मे इसे अच्छा नही मानते थे। अब तो सब जान गये कि यह तो भगी के साथ भी खा लेता है। लेकिन उन दिनो मौलाना बारी ने कहा कि मै आपको अपने यहा नही खिलाऊगा। उस समय यह उनके लिए बडी शराफत की बात थी। बडी तगी से मकान मे रहते थे। उनके पास कोई महल थोडे ही पडा था ? फिरगी महल के एक कोने मे रहते थे। मेरे लिए ब्राह्मण रखते थे । शराफत के साथ शराफत चलती थी। यह सब मै सबको सुनाना चाहता हू। जिन्ना साहब को भी। वे भी तो काग्रेसी थे। भले ही आज बिगड गये तो क्या हुआ ? भाई तो है। खुदा उनको बडी उमर दे । वे तब याद करेगे कि गाधी ने कभी धोखा नही दिया, झूठी बात नही की। आज वे या मुसलमान नाराज़ है, तो मै क्या करूं। मारना चाहे तो मार भी सकते है। मेरे पास क्या है, मेरी गर्दन तो उनकी गोद मे पडी है। और कोई मेरे गले मे छुरी भी मार दे, तो बुरा भी नही लग सकता। मै बुरा क्यो मानू ? वह कोई सच्चे गाधी को थोडे ही मारना चाहते है, वह तो उस गाधी को मारना चाहते है जिसे वह बुरा मानते है। तो मै तो वही आदमी हू। इस बात को मुसलमान न भूले। गालिया देना चाहे तो दे। इससे मुझे ईजा नही पहुचती। इस्लाम को मै जानता हू। वह तो कहता है दुश्मन को भी गालिया देना बुरा है। मुहम्मद साहब भी यही कहते थे। वे दुश्मन को अपनाते थे। उसके साथ नेकी करते थे। अगर मुसलमान इस्लाम के

है तो जो आदमी खुदा को हाजिर नाजिर कहकर कोई बात कहता है, तो उस पर विश्वास करना चाहिए । जो गालिया देते है, वे तो गोलियाँ चलाते है । वे गोलियो से मेरा खातमा कर दे, तो भी मुझ पर असर नही कर सकते । पर इस्लाम का क्या ? वे बारह आदमी है । उन्हे मौलाना साहब ने कितना समझाया, पर उन पर कोई प्रभाव नही हुआ । पर इसकी कोई बात नहीं । जहा हमारी फिलासफी की बात हो, वहा दोस्ती इस्तेमाल न की जाय । आपको जो सही लगे, सो ही करे । कोई काम मेरे लिए नही, इस्लाम की भलाई के लिए करे है ।

अगर पाकिस्तान सही चीज है, तो वह जिन्ना साहब की जेब मे पडा ही है । हर मुसलमान की जेब मे पडा है । पर अगर वह सही चीज नही है, तो उसे कौन हजम कर सकता है । तकब्बरी से तो खुदा भी भागता है कोई क्या जाने कि जिन्ना क्या चाहते है । जिन्ना साहब बडे नाराज होते है । एक बार उन्होने लिखा, 'मेरे खत पढकर आपको बहुत दुख होता होगा । आपको मेरी बात बहुत चुभती होगी । पर मै क्या करू ? जो दिल में है, सो कहता हू ।' मै उन्हे इसके लिए मुबारकबादी देता हू । लेकिन आप जो उस चीज को नहीं मानते, उनसे मै कहता हू कि आपको जो बात सही मालूम हो, वही करे । सबकी राह न देखे । अरब मे करोडो लोग पडे थे । लाखो थे उनमे अकेले । उनमें अकेले पैगम्बर साहब की क्या बिसात थी ? पर उन्होंने कभी ऐसा नही कहा कि जब मेरे साथ करोडो होगे तभी इस्लाम जारी करूंगा । मै आपसे कहता हू, जिसे सही न माने, उसे कबूल न करें ; राजाजी से भी मैने यही कहा । वे कहते थे कि दे दो । दे देगे तो वे मागेगे नही । मेरी शराफत होगी । पर मै इस चीज को ठीक नही मानता । मै तो जिन्ना साहब से भी कहता हू कि जो महज आपको मनाने के लिए बात करते है, उसे आप कभी कबूल न करें । मेरे पास कई मुसलमान आते है । वे कहते है, पाकिस्तान बुरी चीज है । पर दे दो । पर पीछे इसका नतीजा क्या होगा ? यह बुरी बात है । और जब तक उसे मै बुरा मानता हू, साथ न दूगा । पर इसके मानी क्या है ? समझ ले हम मुसलमानो को दबा कर कोई बात नही करना चाहते । इस तरह विश्वास कैसे हो सकता है ? वह अहिंसा से हो होगा । इसलिए कहता हू कि जो हक की बात है, उसे मान ले । यह मै काग्रेस की तरफ से कहता हूँ । पच भी बना सकते है । पर उनमे भी हमारा एतबार तो होना चाहिए । उसे भी नही मानेगे, तो आपकी जबरदस्ती नही तो क्या है ? उसे कोई कैसे मानेगा ? एक जिन्दा चीज के टुकडे करेंगे ? जिन्दा कौम को मारकर क्या लेंगे ? हा, हम यह कहते है कि कोई किसी को मजबूर

नहीं कर सकता । लडाई करके ले सकते है । मुजे तो खुल्लम-खुल्ला कहते है, ऐसा हिन्दू मैं नही हू । काग्रेस ऐसे हिन्दुओ का प्रतिनिधित्व नही करती । अगर आप काग्रेस का एतबार नहीं करते, तो आपके हिन्दुस्तान के नसीब मे झगडे ही झगडे है । पर यह ठीक रास्ता नही है । अगर मुझमे खुदा ठीक बोल रहा है, तो आप इसमे मुझे जिन्दा नही पाएगे । अगर चीज सही नही है तो तलवार के बल पर लेगे, यह कहना क्या ठीक है ? मुहम्म साहब ने यह तरीका नही बताया ।

मैने बहुत वक्त लिया । सारी रात भर सोचता रहा । पर तन्दुरुस्ती की भी फिक्र रखनी पडती है । डॉक्टरो ने भी फरमाया कि सम्हलकर काम करो । पर जो चीज खुदा ने दे दी है, उसे तो उसके लिए खर्च करना ही है । और अभी तो जबान चल रही है । पहले तो मै हिन्दू-मुसलमानो की बात करता हूँ । हम एक बन जाय, सही माने से मान ले, दिल मे कोई परदा नही रखे और हिन्दुस्तान को विदेशी कब्जे से छुडाने के लिए यत्न करे । पाकिस्तान भी तो आखिर हिन्दुस्तान का एक हिस्सा है । इसलिए पहली बात यही है कि हिन्दुस्तान के लिए लडे । अगर ऐसा करेगे तो बहुत जल्दी कामयाब होगे । छ महीने तो बडी बात है । आज रात को भी ले सकते है । पर एक बात याद रखे । हिन्दू-मुसलमान एकता तो चाहिए । पर अगर नही मिलती, तो भी आजादी तो लेनी ही है ।

पर हम यह समझकर नहीं लें कि अकेले हिन्दुओ के लिए लेना है । पैंतीस करोड के लिए लेना है । हक की बात है । जिन्ना साहब कहते है कि मुस्लिम राज होगा । मौलाना साहब की ऑफर का यह मतलब नही की मुस्लिम राज होगा । हो जाय तो उसकी भी परवा नही । पर जो हमने ऑफर की सो जिन्ना साहब की मुसलमानो की बादशाहत के लिए नही की । वह तो हिन्दू मुसलमान पारसी वगैरा सबकी होगी । मेरा लडका मुसलमान हो गया, तो उसका होमलैंड कहा होगा ? और अब तो वह आर्य समाजी है। उसकी हालत क्या होगी ? उसका कौन-सा मुल्क होगा, उसे कहा रखेगे ? वह अपने बाप को थोडे ही भूल गया है । उसकी मा ने खत लिखा । वह पक्की हिन्दू है । राम को मानती है । पर उसका खुदा तो भोला है । अनपढ औरत है । पर उसका खुदा उसकी सुन लेता है । उसका नाम लिख लेता है । ऐसा बेवकूफ खुदा है, सो उसने लिखा कि मेरा लडका मुसलमान हो गया, इसकी मुझे शिकायत नही । पर वह शराब पीता है, उसे आप कैसे बरदाश्त करते है ? उसका लडका खतरा उठाकर भी मुसलमानो के बीच यह देखने के लिए गया कि उसके बाप ने शराब और व्यभिचार दोनो मे से एक भी छोडा या नही । पर उसने एक भी नही छोडा ।

पर मैंने उससे सबक लिया। इस चीज को समझ सब जाय। इस लडाई मे जितने हिन्दू है, उतने ही मुसलमान भी आ सकते है। मुसलमानो को कांग्रेस के दफ्तर मे कौन-सी रुकावट है। वह तो बडा डेमोक्रेटिक आरगेनाइजेशन है। इसलिए पहला सबक यह है कि आप जो लडते है, सिर्फ हिन्दुओ के लिए नही लडते। सब माइनोरिटीज के लिए लडते है। मुसलमान भी लडे। सबके लिए लडे। आपस मे जरा भी नही लडना चाहिए। किसी हिन्दू ने मुसलमान को मार डाला या किसी मुसलमान ने हिन्दू को मार डाला यह मै नही सुनना चाहता। हिन्दू मुसलमान एक दूसरे के लिए अपनी जान दे दे। यह मसला सबका है। झगडे के मौके हर वक्त आने वाले है। इसलिए कहता हू, सब्र करे। कोई एक मारे तो आप दो न मारे। मुसलमान भी ऐसा ही करें। कोई तलवार चलाता है, तो अपनी गर्दन उसके हाथ मे रख दे। मेरी हिदायत सबके लिए है। क्योकि यह Mass Struggle कैसे चलेगा, सो बता रहा हू। यह छोटी-से-छोटी शर्त है।

पकल साहब का फर्मान पढे। उसे छापकर मैंने सरकार की खिदमत की है। 'हरिजन' मे दे नही सकता था। आपको पता चल जायगा कि सरकार कैसे चलती है। पर उसका रास्ता टेढा है। आपका सीधा है। आप आंखे मूंदकर भी उस पर चल सकते है। यही सत्याग्रह का रास्ता है।

कोई कहते है, यह जल्दी होगी। तैयारी की जरूरत है। जितनी मुसाफरी मैंने की, उतनी किसी ने नही की जो जिन्दा है। मै लोगो को जानता हू, मेरा तो दिल उनके पास है। और तैयारी का क्या करू? मेरी तैयारी कच्ची, मै कच्चा और मेरा लश्कर भी कच्चा। पर हमला आगया तो क्या करू? अब तैयारी कर ले। खुदा क्या कहेगा? वह तमाचा नही मारेगा? क्या वह यह नही कहेगा कि तुझको मैंने जो खजाना दिया, उसे तो निकाल देता। बाकी तो पीछे मै था ही। मै सिर्फ हिन्दुस्तान के लिए नही लडता। यो तो मेरे पास बहुत-सी लडाइया पडी थी। पहले कहते थे, परेशान नही करेगे। पर अब ऐसे कब तक बैठेगे? वे बारह भाई जूझते है, तब मै क्यो नही जूझू? आप मेरे दिल को समझ सकते है।

अब क्या करना है, वह सुना दूं। आपने रेजोल्यूशन तो पास कर लिया। पर हमारी सच्ची लडाई शुरू नही हुई। आप मेरे मातहत होगये। अभी तो वाइसराय से मिन्नत करूंगा। समय तो देना होगा, उस बीच आपको क्या करना है।

मौलाना साहब ने पूछा कि तब तक कोई कार्यक्रम ता

तो बताइए। मैंने कहा, चरखा है। मौलाना साहब निराश होगये। मैंने कहा चौबीस घण्टे काम करना है, तो कुछ तो चाहिए। इसलिए चरखा बताया। और भी कहता हू। तब मौलाना खुश होगये। अब सुनाता हू, सब क्या कर सकते है।

आप मान ले, कि हम आजाद बन गये। आजादी के माने क्या है? गुलाम की जजीरें तो छूटी। उसके दिल से तो छूटी। अब वह तदबीर करता है। अपनें मालिक से कहता है, मैंने गुलामी छोड दी। लेकिन आप से नही डरूगा। आप जिन्दा रखना चाहते है, तो जिन्दा रखे। आप मुझे खुराक देते थे। पर वह तो मेरी ही पैदा की हुई थी।

अब बीच में समझौता नही है। मै नमक की सुविधाये या शराबबन्दी लेने को नही जा रहा हू। मै तो एक ही चीज लेने जा रहा हू आजादी। नही देना है, तो कत्ल करे। मै वह गाधी नहीं, जो बीच मे कुछ चीज लेकर आ जाय। आपको तो मै एक मन्त्र देता हूँ, 'करेगे या मरेगे।' जेल को भूल जाय। आप सुबह शाम यही कहे, कि खाता हू, पीता हू, सास लेता हू, तो गुलामी की जजीर तोडने के लिए। जो मरना जानते है उन्ही ने जीने की कला जानी है। आज से तय करे कि आजादी लेनी है। नही लेनी है तो मरेगे। आजादी डरपोको के लिए नही। जिनमे करने की ताकत है, वही जिन्दा रह सकते है। हम चीटिया नही। हम हाथी से भी बडे है, हम शेर है।

पहले तो मेरे सामने अखबार है। वे या तो सरकार की आवाज है और अगर हमारी आवाज है, तो दबकर काम करते है। पर वह जजीर से छुट जाय। आजादी के लिए सबको बुलाता हू। आप तो इस मैदान मे आजाय। अपनी कलम मुझे दे दें। अगर यह भय हो कि सरकार छापेखाने ले लेगी। तो मै इतना ही कहता हू कि अखबार बन्द कर दे। खामखाह जमानत न दे। अगर देना चाहे तो दे दे। पर कलम को न रोके। वह भी बहादुरी का काम है। मैने क्या किया? इतना बडा कारखाना चलता था। सबको बन्द कर दिया। और अब फिर नया प्रेस पैदा हो गया। फिर मैंने तो आपको एक मध्यम मार्ग बताया। अखीरी चीज आपके सामने नही रखी। एलान कर दे कि अब स्टैन्डिग कमेटी को छोड देंगे। सिर्फ आजाद हिन्दुस्तान की सरकार को ही मानेंगे। अगर आप बहुत दूर नही जा सकते, तो कहे आपकी चीज भी देगे और काग्रेस की भी देंगे। अगर बरदाश्त नही कर सकते, तो नही करना है।

आजादी आ रही है, और इसके लिए राजा लोगो मे तो मै वह भी नही

मागता। उनसे कहता हूं कि मै आपका खैरख्वाह हू। काठियावाड का हू। मेरे पिता तीन जगह दीवान रहे। आपका नमक खाया। मै नमकहराम कभी नही हुआ। आपके सामने एक नमकहलाल मिन्नत करता है। अब तक आप सल्तनत के रहे। उससे सत्ता पाई। पैसे लिये। पैसे तो पिताजी ने भी पाये। पर उन्होंने पोलिटिकल एजेन्ट से लडाई की। एक दिन हवालात मे भी रहे। उनका मै लडका हू। मेरे जिन्दा रहते आप कुछ काम करेगे तो आपके लिए जगह है। मेरे पीछ करेंगे तो भी जवाहरलाल नही मानेगे। वह तो कहता है राजा लोग, पूंजीपति, जमीदार किसी के लिए अब जगह नही है। वह तो प्लान्ड एकोनामी वाला है। उसकी बहुत-सी बाते पी जाता हू। वह तो उडने वाला आदमी है। चाहेगा तो हवाई जहाज मे बैठकर चीन भी चला जायगा। पर मेरे पास तो सबके लिए जगह है। एक मत्र है, तुझे कोई चीज अपनाना है, तो पहले खुदा को दे दे, उसको छोड़ दे। हिन्दुस्तान में इतने लोग है। मै तो इन्ही की मारफत खुदा को पहचानता हू। वही खुदा है। अगर वह नही है तो मै दूसरे खुदा को नही जानता। इसी तरह राजा लोग भी प्रजा से कह दें, राज आपकी ही मिलकियत है। तब राजाओ को किसी बात की कमी न रहेगी। प्रजा उन्हे दोनो हाथो से देगी। वह राजा रहेगा। वश-परम्परा नही। वश-परम्परा भी रहेगी अगर वे दुनिया की सेवा करते रहेगे। इसलिए राजाओ से कहना चाहता हू कि आप गुलामी में न रहे। रहना है, तो हिन्दुस्तानियो की सल्तनत मे रहे। पोलिटिकल डिपार्टमेट को लिख दे कि खल्कत उठ गई तो हम कहा रहे। चक्रवर्ती तो मातहत राजाओ को बचाता है। जिसको राजा उठाते है, वह चक्रवर्ती नही। इसलिए कह दीजिए कि हम तो रैयत के होगये। वह बैठाएगी तो बैठेगे। हम उसका साथ देगें। इसमे कोई कानूनी कठिनाई नही। राजाओ के लिए कोई कानून नही। पोलिटिकल डिपार्टमेट की जबानी बातो को ही माने तो मै क्या करू? यह तो आप दावा नही कर सकते कि हम अलग है। अगर आप रैयत के साथ रहेगे, तो आप उसके सरदार रहेगे।

राजाओ से इस तरह साफ-साफ कह दे। और इतने पर वे मारें तो मर जाय। तेरह हो तो तेरह। कोई बात छिपाकर नही करनी है। इस लडाई मे गुप्तता तो है ही नही।

अब जज वगैरह से। वे भी अभी कुछ न करें। आज ही इस्तीफा न दे। रोक ले। पर अपनी आजादी कायम रखे। कह दें, मै तो काग्रेस का आदमी हूँ। रानाडे ने यही किया था। सिर्फ एक मर्यादा का पालन करूगा। न्यायासन पर न काग्रेस का हू न सरकार का। आज़ाद। कोई कानून नही जो

मुझे यह कहने से मना करे। रानाडे जब तक जिन्दा थे ऐसा ही करते थे। काग्रेस मे बराबर जाते थे, पर भाग नही लिया। समाज-सेवा-सघ पैदा कर दिया। उस जमाने मे यह कम नही था। आज भी जज ऐसा कर सकते है। गुप्त हिदायते निकले, उनको न माने। कह दे कि हम तो काग्रेस के आदमी है। यह सरकार को मजूर हो, तो रहे नही तो निकल जाय।

अब सिपाही! वे इतना तो कह दे कि अब तक तो हमने अपने दिल की बात छिपा कर रखी, पर अब तो हम कहते है कि हम काग्रेस के है।

कई सिपाही मेरे पास आये, जवाहरलाल के पास भी आये, मौलाना साहब के पास आये, और अलीभाइयो के पास भी आये थे। सिपाही नही बडे-बडे अफसर भी। पर हम उनको रोकते रहे। पर अब वे एलान कर दे कि हम पेट के लिए काम करते है, पर आदमी तो काग्रेस के है। आप हमारे ही लोगो पर गोला-लाठी चलाने की बात कहेगे, तो नही मानेगे। अपने दुश्मन पर चला देगे। इतना कह देंगे तो बहुत बडी आबोहवा पैदा हो जायगी है। कितने ही ऐरोप्लेन आये, हमे परवाह नही।

इसी तरह से प्रोफेसर और विद्यार्थी। उनको भी आज तो खीचना नही चाहता। वे भी इतना तो कह दें कि हम तो काग्रेस के है। प्रोफेसर भी कह दें। वे तो उस्ताद है। पर काम तो हमारा ही करते है। मेरी भी एक गाना सिखाने वाली उस्ताद थी। वायोलिन सिखाती थी। कितनी मुहब्बत से वह सिखाती थी। नौकर की तरह काम करती थी। मै तो Englislh Gentleman बनने जा रहा था। उसका ठीक-ठीक अर्थ बताने वाला शब्द तो मेरे पास है ही नही। वाशिगटन आयरलिग ने इसकी ठीक परिभाषा लिखी है। सो वह मुझे इग्लिश जेंटिलमैन बनाने के लिए वायोलिन सिखाती थी। जो फीस लेती थी उसका पूरा बदला देती थी। इसी तरह प्रोफेसर भी सिखाते है। उनसे हम कह दें, कि आप सल्तनत के है, या हमारे। हमारे है, तो अच्छा है। मकान खाली करने की आज जरूरत नही, इनमे से जिनको निकालना चाहूगा, निकालूंगा। हवाई बात नही करता।

मेरे दिल मे तो कहने को बहुत है। पर सब मैं बाहर कर सकूँ, इतना समय नही है। मुझे अभी थोडा अग्रेजी मे भी बोलना बाकी है। रात हो गई है, बहुत देर होगई है, फिर भी इतनी शान्ति से, इतने ध्यान से आपने मुझे सुना इसके लिए मै आपको धन्यवाद देता हू। सच्चे सिपाही ऐसा ही करते है।

बाईस वर्ष तक बोलने-लिखने मे मैंने सयम रखा है, ताकत इकट्ठी की है। जो अपनी ताकत हमेशा खर्च नही करता वह ब्रह्मचारी—पाकदामन—कहा

जाता है। वह हमेशा जीभ पर काबू (सयम) रखकर दवी जवान से वोलेगा। जिन्दगी भर मेरा प्रयत्न इस दिशा में रहा है, फिर भी आज इतने सारे लोगो को इतनी रात तक रोक रखकर---आपके ऊपर जबर्दस्ती करके भी—मुझे आपको आज जो कहना चाहिए था, वह कह दिया। उसका मुझेपश्चात्ताप नही है। आपकी मार्फत सारे हिन्दुस्तान को कह दिया।

इसके वाद अग्रेजी भाषा में वोलते हुए गाधीजी ने वताया कि जिनकी सेवा के लिए अभी आपने मुझे नियुक्त किया, उनके सामने मेरे अन्तर के मन्थन को वाहर उडेलने में मैंने आपका वहुत समय ले लिया है। मुझे नेतागिरी वख्शी गई—फौजी परिभाषा मे मुझे सेनापति पद दिया गया, पर मै इस दृष्टि से नही देखता। मेरे पास अपना सेनापति पद चलाने के लिए प्रेम के अलावा दूसरा शस्त्र नही है। जिस लकडी के सहारे मै चलता हूँ उसे तो आप आसानी से तोडकर फेंक सकते है, ऐसी है। ऐसे अपङ्ग आदमी को जव ऐसी लडाई का बोझा उठाने के लिए आमन्त्रित किया जाय तो इसमें उसके लिए पौरुष अनुभव करने जैसा क्या है? मेरा यह बोझा आप तभी हल्का कर सकते है जव कि मै आपके सेनापति के रूप में नही वल्कि आपके नम्र सेवक की तरह खडा रहू। जो सेवा मे सवसे चढकर हो वह समान दरजे के सेवको में अगुआ सेवक है, इतना ही इसका अर्थ है।

इसलिए पहली सीढी पर ही मै आपसे क्या क्या अपेक्षा रखता हूँ, इस वावत अपने मन के उद्‌गार मैंने अव तक आपके सामने रखे। ध्यान रहे कि आज भो अभी लडाई शुरू नही हुई है। अभी भी मुझे शरिस्ते मुजव अनेक विधिया करनी पडेंगी। जो बोझा मुझ पर आया है, सच ही वह असह्य है। मुझे ऐसो के सामने जाकर विनय-प्रार्थना करनी है जिनका आज मुझ पर विश्वास नही है। दुनिया भर के अनेक मित्रो के आगे भी आज मै अपनी साख खो वैठा हूँ। मेरी समझदारी पर, वल्कि मेरी प्रामाणिकता पर भी उनके मन मे शङ्का खडी हो गई है। मेरी समझदारी की कीमत कम आकी जाय, इसका मुझे दुख नही है, पर मेरी नीयत के वारे मे शङ्का उठाई जाय, यह तो मेरे लिए दारुण आघात है। लेकिन आज तो यही स्थिति है।

ऐसे प्रसग आदमी की जिन्दगी मे आते है, पर सत्य के शोधक के लिए जिसे डर या पाखण्ड के विना मानव जाति अथवा देश की यथाशक्ति सेवा करनी है, उसे तो यह सब सहने ही पडते हैं। पचास वर्ष की अपनी शोध मे शुद्ध सेवा का इससे दूसरा रास्ता मैंने नही जाना। मैंने मानव जाति की, साम्राज्य की एक से अधिक प्रसगो पर यथाशक्ति सेवा वजाई है और मै ऐसा कह सकता हू कि कही

भी अपने किसी निजी स्वार्थ अथवा बदले की आशा से मैंने कोई काम नही किया। लार्ड लिन्लिथगो के साथ मेरी मित्रता है, जो उनके ओहदे की सीमा को भी लाघ गई है। अपनी लडकी के साथ भी उन्होंने मेरा परिचय कराया। उनकी लडकी और जमाई दोनो मेरी तरफ आकर्षित हुए। उनके जामाता ए डी सी० है और वे महादेव के खास मित्र बन गए है। इनकी लडकी आज्ञाकारिणी और सबको प्रिय लगने वाली है। इन सब पवित्र व्यक्तिगत सम्बन्धो का उल्लेख मै इसलिए कर रहा हू कि लार्ड लिन्लिथगो और मेरे बीच जो व्यक्तिगत प्रेम सम्बन्ध है, उसका आपको पता चल जाय। और ऐसा होने पर भी नम्रता पूर्वक जाहिर करता हू कि यदि कभी ऐसे लार्ड लिन्लिथगो के सामने, साम्राज्य के प्रतिनिधि रूप में, मरणान्त लडाई छेडना मेरे नसीब में लिखा होगा तो यह व्यक्तिगत प्रेम-सम्बन्ध रत्ती भर भी बीच में नही आएगा। मै सल्तनत के पशु-बल का सामना करोडो भारतीयो की मूक-शक्ति से करूँगा, जिन्होने लडाई के लिए उपयुक्त अहिंसा के सिवाय और कोई मर्यादा नही रखी होगी। मेरे लिए अत्यन्त कठिन काम होगा कि जिनके साथ मेरा ऐसा घरोपा है, उन्ही के सामने मै लडाई छेडू। उन्होंने एक से अधिक अवसरो पर मेरे शब्दो पर विश्वास किया है, मेरे लोगो पर भी विश्वास रखा है। यह कहते हुए मुझे गर्व और सुख होता है और यह मै इसलिए कहता हू जिससे सब जान लें कि जिस सल्तनत का मै वर्षों तक वफादार रहा और जिसकी मैंने सेवा बजाई, वह सल्तनत जब मेरे विश्वास की पात्र नही रही तब, जो अग्रेज उस सल्तनत का प्रतिनिधि था, उसको उसके सामने लडाई छेडने के पहले मैंने पूरी खबर कर दी थी।

ऐसे मौके पर चार्ली एड्रूज की पवित्र याद आये बिना कैसे रह सकती है? एड्रूज की आत्मा इस समय मेरे आस-पास मडरा रही है। मेरी नजर में अग्रेजी सस्कृति की सबसे उज्ज्वल परपराओ के वे सस्कार-मूर्ति थे। हिन्दुस्तानियो की अपेक्षा भी उनके साथ मेरा अधिक निकट का नाता था। मेरे ऊपर उनका गले तक विश्वास था। हमारे बीच में कुछ भी प्राइवेट (खानगी) नही था। रोज हम एक दूसरे के साथ अपने हृदय की बात खोलकर रख देते थे। जरा भी आनाकानी या मन की चोरी (छिपाव) बिना वह मुझे सब बता देते थे। गुरुदेव के भी वे मित्र थे जरूर, पर गुरुदेव की आत्मा से वे चकाचौंध होते और उनका अदब करते थे। पर मेरे तो वे प्राणप्रिय मित्र बन गये थे। वर्षो पहले वे गोखले का परिचय-पत्र लेकर मेरे पास आये। पीयर्सन और एड्रूज दोनो आदर्श अग्रेज के नमूने थे। मै जानता हू कि उनकी आत्माएँ अभी भी मेरी वेदना-वाणी सुन रही है।

कलकत्ता के मेट्रोपोलिटन (ईसाई धर्माचार्य) का भी हितैषिता से भरपूर मुबारकबादी का पत्र मिला है। उनको मैं पाकदिल खुदापरस्त पुरुष गिनता हू। मेरी कमनसीबी से वे भी आज मेरा यह कदम पसद नहीं करते। फिर भी उनका दिल मेरे साथ है। उनके दिल की भाषा मैं पढ सकता हू।

यह सारी पार्श्वभूमि उपस्थित करके मैं दुनिया को बताना चाहता हू कि पश्चिम में रहने वाले अनेक मित्रो का विश्वास आज मैंने खो दिया है—और उसका मुझे दुख है—तो भी उन सबकी मैत्री और प्रेम की खातिर भी मैं अपने अन्दर से उठने वाली आवाज को दबा नही सकता। आत्मा कहिये, मूलगत स्वभाव कहिये, वह, या मेरे भीतर रहने वाले मेरे दिल का दर्द, मेरी व्यथा पुकार-पुकारकर कह रही है, आज मुझे प्रेरित कर रही है। मैं भूत दया जानता हू। मनुष्य स्वभाव का भी मैंने थोडा-बहुत अभ्यास किया है। ऐसा आदमी अपने अन्तरात्मा को समझ सकता है। आप उसे जो चाहे नाम दे, पर यह अन्दर की आवाज मुझे कह रही है—'तुझे अकेला बिना सहारे खडा रहना पडे तो भी आज तमाम दुनिया के सामने खडा होने मे ही तेरा छुटकारा है। दुनिया लाल-पीली, रक्तपूर्ण आखो से तेरे सामने घूरे तो भी तुझे उसकी नजर के सामने नजर मिला करके खडे रहना है। डर मत। अपने अन्दर की आवाज को ही सुन। यह आवाज तुझे कहती है कि पुत्र, स्त्री, सम्पत्ति, शीश सब कुछ समर्पण कर देना, पर जिस चीजके लिए तू जिया करता है और जिसकी खातिर तुझे मरना है, उस सत्य की पुकार करते-करते मरना।' मित्रो, इस बात का विश्वास रखिये कि मुझे मरने की जल्दी नही है। मुझे अपने सौवें वर्ष तक जीना है। बल्कि मैंने तो आयु की सीमा १२० वर्ष तक आँकी है। इतने में तो हिंद आजाद होगया होगा—दुनिया भी आजाद हुई रहेगी। आज तो मैं इग्लैंड को या अमेरिका को भी आजाद मुल्क के रूप मे नही मानता। अपनी रीति से ये भले ही आजाद हो—ये आजाद है दुनिया की रगीन जातियो को गुलामी की जजीरो में जकडे रखने के लिए। इन कौमो की आजादी के लिए क्या आज अमेरिका और इग्लैंड लड रहे है? तो फिर मुझे इस लडाई के पूरी होने तक रुकने को मत कहो। मेरी आजादी की परिभाषा को किसलिए आप सकुचित करते है? इग्लैंड और अमेरिका के आचार्य, उनका इतिहास, उनका उदात्त काव्य-भडार यह नही सिखाता कि आजादी की व्याख्या को सकुचित रखा जाय, विशाल नही बनाया जाय और ऐसी व्याख्या के गज से जब मैं नापता हू तब मुझे कहना ही पडता है कि इग्लैण्ड क्या और

अमेरिका क्या, कोई भी आजाद नही है। उनके आचार्यो ने और कवियो ने जिस स्वतन्त्रता के गाने गाये है, उसकी उनको पहचान नही है। इसकी पहचान करनी हो तो उनको हिन्दुस्तान के चरणो मे बैठना होगा। घमड और गुस्ताखी के साथ नही, पर सच्चे सत्यशोधक बनकर आना पडेगा। बाईस वर्ष से हिन्द इस आधारभूत सत्य का प्रयोग कर रहा है। यो तो काग्रेस अपने जन्म-काल से ही जाने या अनजाने अहिसा की—वैधानिक मर्यादा मे रहकर आदोलन करने की—राह से चलती आई है और एसा होने पर भी दादाभाई और फीरोजशाह जैसे नेता हिन्द को अपनी अगुली पर नचाते थे—वे विद्रोही थे, काँग्रेस प्रेमी थे, काग्रेस के कर्ता धर्ता थे, तब भी उसके सच्चे सेवक थे, खून-खराबी और छिपे कामो को प्रश्रय देने वाले नही थे। आज काग्रेस में बहुत से रगे सियार भी है, यह मै मजूर करता हू। सारा देश अहिसक लडाई मे ही कूदेगा ऐसा मेरा विश्वास है। क्योकि मनुष्य के स्वभाव मे रही हुई भलाई और विषम अवसरो पर सत्य को परखने और उस पर दृढ रहने की उसकी कुदरती शक्ति पर मेरा विश्वास है। पर मेरा विश्वास खोटा भी साबित हो तो भी मै अपनी राह मे विचलित होने वाला नही हू, डिगने वाला नही हू। काँग्रेस की राह शुरू मे ही शान्ति की रही है। आगे चलकर उसमे स्वराज्य का समावेश हुआ और बाद की पीढियो ने उसमें अहिसा-असहकार का तत्त्व शामिल कर दिया। दादाभाई ने जब ब्रिटिश पार्लियामेन्ट में प्रवेश किया, सालसबरी ने उन्हे काला आदमी कहा। पर अङ्गरेज-जनता ने दादाभाई को अपनाया—चुना और सालसबरी हारे। हिन्द खुशी से पागल होगया। पर हिन्द के लिए आज ये सारी बातें पुरानी हो गईं। पर इन सब पिछली भूमिकाओ को ध्यान मे रखकर मै अङ्गरेजो से, यूरोप से और मित्रराष्ट्रो से पूछता हू कि वे अपने हृदय पर हाथ रखकर कहे कि हिन्द जो आजादी मागता है, उसमे कौन-सा गुनाह है? ऐसी कार्रवाइयो और पचास से अधिक वर्ष तक ऐसी सेवाओ के इतिहास वाली सस्था पर अविश्वास करना, उसकी बदनामी करना और अपने हाथ के विशाल साधनो का उपयोग करके दुनिया भर मे उसकी शिकायत करना यह क्या शोभा की बात है? आकाश-पाताल एक करके चाहे जैसे रास्ते से, विदेशी अखबारो की मदद लेकर, अमेरिका के प्रेजिडेण्ट की मदद लेकर, चीनी सेनापति मार्शल चागकाइशेक की भी मदद लेने के प्रयत्न करके हिन्दुस्तान को गदे विकृत रूप मे दुनिया मे पेश करना क्या उचित है? सेनापति चाग से मै मिला हू। श्रीमती शेक ने हमारे बीच दुभाषिया का काम किया। उनकी सहायता से मैने सेनाधिपति शेक का परिचय पाया और यद्यपि सेनापति को

मे पार नही पा सका तो भी उन्होने श्रीमती शेक की मार्फत उनके मन के झुकाव का मुझे परिचय पाने दिया। हमारे मुकाबले मे आज सारी दुनिया को खड़ा किया गया है—उभाड दिया गया है। सभी अपनी नाराजगी का इजहार कर रहे है। कहते है कि हम भूल कर रहे है। हमारी प्रवृत्ति असमय की है। ब्रिटिश मुत्सद्दीगिरी के लिए मेरे मन में मान था। आज उसकी गन्दगी से मेरा जी अकुला रहा हूं। पर नौसिखुए अभी भी इसके चरणो मे अपना सवक ले रहे है। इन तरीको से ये शायद चार दिन दुनिया के लोकमत को अपने पक्ष में रख सकेंगे। किन्तु हिन्दुस्तान तमाम दुनिया के लोकमत के इस तरह के अघटित सङ्गठन के सामने खडा होकर भी आज अपनी पुकार बुलन्द करेगा। सारा हिन्दुस्तान मेरा त्याग करे तो भी मै दुनिया को सुनाऊँगा—तुम ठोकर खा रहे हो, तुम भूल में हो। हिन्द की आजादी मजबूती से पकड रखने वालो के पास से भी हिन्द अहिंसा के बल पर यह आजादी ले लेगा। यह आजादी आने के पहले भले ही मेरी आँखे बन्द हो जाय, मै भले ही रुक जाऊ, पर अहिंसा रुकेगी नही। बहुत ज्यादा देरी से लेना वसूल करने के लिए कदमबोशी करने, विनती करने वाले हिन्द की आजादी का विरोध करके चीन और रूस का भी तुम क्या भला कर सकने वाले हो। तुम उनको प्राणघातक धक्का ही लगाओगे। किसी महाजन को देनदार की आजिजी करते जाना है? और उसके सामने ऐसे-ऐसे विरोध-बाधाए उपस्थित करने पर भी कांग्रेस तो आज विरोधियो को कहती है कि "हम साफ शराफत की लडाई लडेगे, पीठ मे घाव नही करेंगे, हम अहिंसा को अङ्गीकार कर चुके है।" ब्रिटिश सरकार को दिक न करने की काग्रेस की नीति का प्रचारक मै खुद ही तो था? तो भी आज यह सख्त भाषा इस्तेमाल कर रहा हू। मै कहता हू हमारी शराफत के लायक ही यह बात है। इसमे अयुक्त—अनुचित ऐसा क्या है? किसी आदमी ने मुझे गर्दन से पकड रखा हो और वह मुझे डुबाना चाहता हो तो क्या मै उसकी पकड में से छूटने के लिए उसी क्षण चेष्टा न करू? काग्रेस के निश्चय में अयुक्त अथवा असङ्गगत ऐसा कुछ भी नही है।

विदेशो के अखबार वाले यहा इकट्ठे हुए है। उनकी मारफत दुनिया को और मित्र राष्ट्रो की प्रजाओ को— जिनका कहना है कि हिन्द का साथ उन्हे चाहिए—मै कहता हू कि हिन्द को आजाद जाहिर करके तुम्हारी नीयत सच्ची करके दिखलाने का आज अवसर है। इसे खो दोगे तो जिन्दगी में ऐसी घडी आने वाली नही है और इतिहास इस बात को अकित करेगा कि तुमने अवसर पर अपना फर्ज अदा न करके सब कुछ खो दिया। तुम्हारी मार्फत मै दुनिया को

आशीर्वाद मागता हू कि मै विरोधियो को मनाने मे सफल बनू। मित्रराष्ट्रो की जनता से मुझे उनका खुला फर्ज अदा करने के बाद और कुछ ज्यादा नही चाहिए। अहिंसा अथवा शस्त्र-सन्यास करने को मै उन्हे नही कहता। फासिज्म और उन लोगो के साम्राज्यवाद, जिसके सामने मै लड रहा हू, दोनो के बीच भी मौलिक भेद रहा हुआ है। ब्रिटिश सल्तनत को अभी हिन्दुस्तान से जैसा चाहिये, वैसा क्या मिल रहा है? मिल रहा है, वह तो गुलाम से मिल रहा है। हिन्द आजाद दोस्त के रूप मे साथ दे तो कितना फर्क पडे, इसका विचार करके देख लो। आजादी यदि उसे मिलने वाली हो तो वह आज ही आनी चाहिए। ऐसा होने में तुम मदद कर सकते हो। ऐसा होने पर भी मदद न करो तो बाद मेंआजादी मिले, उसमे स्वाद नही रहेगा। आज करो तो इस आजादी के चमत्कार से जो बात अशक्य लगती है, वह कल शक्य हो जायगी। हिन्द मुक्त होगा तो चीन को मुक्ति दिलाएगा, रशिया की मदद को दौड़ेगा। बर्मा-मलाया मे अग्रेजों ने तो प्राण बिछाये नही थे, हिन्दुस्तानियो की ही शक्तियो का नाश किया। किस तरह से बिगडी बाजी सुधारी जा सकती है, इस पर विचार करलो। मै कहाँ जाऊ—चालीस करोड को कहा ले जाऊ? आजादी के स्पर्श बिना करोडो की जनता को दुनिया की मुक्ति के यज्ञ में दिल से भाग लेने की और क्या कोई रीति हो सकती है? आज तो जनता के प्राण शोषित हो गये है—पीस दिये गये है, उनकी निस्तेज आखो में तेज लाना हो तो आजादी कल नही, आज ही आनी चाहिए। इसी से मैने आज काग्रेस से यह बाजी लगवाई है, या तो काग्रेस देश को आजाद करेगी अथवा खुद फना हो जायगी। 'करेंगे या मरेंगे।'

गाधीजी के इस स्फूर्तिदायक एव प्रेरणाप्रद भाषण ने देश को इस कोने से उस कोने तक हिला दिया। उससे सघर्ष की भूमिका और भी दृढ हो गई, जो पिछले कुछ समय से देश में तैयार हो रही थी। इसलिए जब सरकार ने ९ अगस्त को सुबह नेताओ की सामूहिक गिरफ्तारी करके काग्रेस पर प्रहार किया, तो देश का बच्चा-बच्चा 'करेंगे या मरेंगे' की भावना से प्रेरित हो उठा। स्वतन्त्रता का सघर्ष शुरू हो गया और उसमे देश ने कितना गौरवपूर्ण हिस्सा लिया, यह हम अगले अध्यायो में बताने का प्रयास करेंगे।

: ४ :

बम्बई प्रान्त आग की लपटों में

अब हम भारत के विभिन्न प्रान्तो एव रियासतो में आन्दोलन जिस प्रकार चला, उसका कुछ खुलासा वर्णन देने का प्रयत्न करेंगे। सर्व प्रथम हम बम्बई को ही लेते हैं। यह वह स्थान है जहाँ अखिल भारतवर्षीय कांग्रेस कमेटी का महत्त्वपूर्ण इतिहास-प्रसिद्ध अधिवेशन हुआ था, यह वह जगह है जहा राष्ट्र के प्रिय नेतागण राष्ट्र से छीनकर जेल के सीखचो में बन्द कर दिये गये थे, यह वह नगर है जहा गवालिया मैदान में एकत्रित स्वतन्त्रता के सिपाहियों (जिनमे अधिक सख्या महिला स्वयसेविकाओ की थी) तथा उत्तेजित जनता को ब्रिटिश सरकार ने सर्व प्रथम अपनी गोलियो का लक्ष्य बनाया था।

बम्बई एक प्रसिद्ध नगर है। यह एक द्वीप पर बसा हुआ है तथा विशाल और भव्य बन्दरगाह एव जहाजी गोदियो से युक्त है। यह बडी तीव्र गति से कलकत्ता को व्यापारिक क्षेत्र मे पछाड रहा है। यह ऐसे महत्त्वपूर्ण स्थान पर स्थित है, जहाँ से यह पूर्वीय देशो के व्यापार का केन्द्र बन सकता है। रूई के व्यापार के लिए तो यह ससार का एक प्रधान केन्द्र है ही। इसमें सभी वर्गो के लोग रहते हैं तथा इसके मुख्य-मुख्य उद्योग पारसियों के हाथ में हैं। पारसी लोग बहुत उन्नतिशील हैं। ये सदा से ही राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के समर्थक रहे हैं। यो तो ये भारत के प्राय सभी हिस्सो में थोडी-बहुत सख्या में बसे हुए हैं, किन्तु बम्बई शहर मे इनका आधिक्य है। ये प्राचीन भारत की उस जाति की सतान हैं जो अग्नि देवता की उपासक थी। अतएव स्वभावत. ही इनमे अपने पूर्वजो की भाँति स्वतन्त्रता एव न्याय के लिए तीव्र अनुराग तथा जोश है। इन्ही कारणो से जब-जब भारतीय स्वतत्रता का आन्दोलन छिडा है, बम्बई नगर सर्वदा सबसे आगे रहा है। इसकी बनावट ब्रिटिश नगरो से अधिक मिलती-जुलती है, जिससे यह एक अन्तराष्ट्रीय स्थान बन गया है। इसका आकार बहुत विस्तृत होते हुए भी यह अन्य नगरो की अपेक्षा अधिक साफ-सुथरा है। शिक्षा, कला, विज्ञान, उद्योग तथा व्यापार का यह मुख्य केन्द्र है।

भारत के प्रसिद्ध-प्रसिद्ध व्यापारीगण इसी नगर में है, तथा उन पर महात्मा गान्धी एव काग्रेस का बहुत प्रभाव है। भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन में जब-जब रुपए की आवश्यकता पड़ी है, इन्होने खुले हाथो सहायता दी है। अतएव हम यह कह सकते है कि इन्होने भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को पुष्ट करने में बड़ी मदद की है। यहा के तथा इस प्रान्त के मज़दूरो पर महात्मा गान्धी के प्रयत्नो का बहुत असर पडा है। वे सब आपस मे एक सुव्यवस्थित सगठन के सूत्र मे गुंथे हुए है तथा उनके व्यवसाय-सघ काफी हद तक राष्ट्रीय है और जब-जब भारतीय काग्रेस ने स्वतत्रता का युद्ध छेडा है, तब-तब इन सघो ने अपनी एक सुदृढ फौज तैयार करके मैदान में लाकर खडी कर दी है। बम्बई शहर की उन्नति का श्रीगणेश अमेरिका के गृह-युद्ध से हा समझना चाहिए, जब कि इसे अपने रूई के व्यवसाय को बढाने का अच्छा अवसर मिला था। इस समय करीब ग्यारह लाख इकसठ हज़ार नर-नारी इसमे रहते है।

बम्बई प्रान्त का दूसरा नाम पश्चिमी प्रेसीडेन्सी है। इसके अन्तर्गत २६ ब्रिटिश जिले तथा १९ इधर-उधर बिखरी हुई रियासते है। यह भू-भाग समतल और उपजाऊ है तथा इसके उत्तरी भाग मे नर्मदा नदी बहती है। इसका दक्षिणी हिस्सा पठारी है। उत्तरी भाग में, जो अधिक उपजाऊ है, रूई, अफीम और गेहूँ मुख्यतया उत्पन्न होते है। दक्षिणी हिस्से मे लोहे की खाने है, किन्तु कोयले का अभाव है। इस कारण इस प्रान्त को बिहार आदि प्रदेशो से, जहा कोयले की खाने है, अपना सम्बन्ध बनाये रखना पडता है। किनारे एव मैदानी भाग का जलवायु उष्ण एव नम है, किन्तु पठारी प्रदेश बहुत सुहावना है। यहा के सुहावने एव स्वास्थ्य-वर्द्धक जलवायु, के कारण भारत के भिन्न-भिन्न भागो के लोग स्वास्थ्य-लाभ के लिए इस प्रान्त मे आते है। इस कारण यहा कई प्रसिद्ध आरोग्य-मन्दिर बने हुए है। यहा सभा-सस्थाओ के जलसे भी प्राय होते रहते है, जिसके फलस्वरूप यह प्रदेश भारत का एक बहुत उन्नत तथा जाग्रत भाग बन गया है। इस प्रदेश में रूई के व्यवसाय ने बेहद उन्नति की है त । यहा से रुई, कपडा, चीनी, चाय, ऊन आदि विदेशो को भेजे जाते है। इस प्रान्त की जन-सख्या करीब एक करोड अस्सी लाख है तथा इसका क्षेत्रफल ७७,२२१ वर्ग मील है।

सम्पूर्ण बम्बई प्रान्त मे तथा खासकर बम्बई शहर मे काग्रेस का बहुत अधिक जोर है। यहा के राष्ट्रीय सिपाही बहुत उत्साही तथा मजबूत है और राष्ट्रीय भावनायें उनके हृदयो में बडी मजबूती से घर कर चुकी है। जब ९ अगस्त को अंग्रेजी सरकार ने यकायक राष्ट्र पर हमला बोल दिया, तो इस प्रान्त ने

अंग्रेजी साम्राज्यवाद का साहसपूर्ण मुकाबला किया और उसे मुंह-तोड़ उत्तर दिया। नेताओं को जेल में ठूस दिये जाने के बाद भी बम्बई प्रान्त ने ही जनता को आन्दोलन जारी रखने के लिए सलाह, नेतृत्व तथा सामग्री प्रदान की थी। इस प्रकार बम्बई ने स्वतंत्रता के आन्दोलन का मुख्य मोर्चा बनने का गौरव प्राप्त किया।

९ अगस्त का दिन बम्बई में अपनी विशेषता लिये हुए आया। ८ अगस्त की रात को चारों ओर बादल छाए हुए दिखाई देते थे और किसी भयंकर तूफान की आशा की जाती थी। तूफान आया अवश्य, किन्तु वह था राजनैतिक, जिसके वेग में करोड़ों हिन्दुस्तानी आशा, उत्साह, तड़प, कसक व झुंझलाहट से उठे। यह तूफान बम्बई तक ही सीमित न रहकर सारे हिन्दुस्तान में बिजली की भांति फैला। रात में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अधिवेशन के पश्चात् मैं कमेटी के कुछ सदस्यों तथा अन्य साथियों के साथ अपने डेरे पर लौटा। हम लोग रात को एक अजीब प्रकार के मिश्रित विचारों को लेकर सोए। अब क्या होगा ? हमें क्या करना होगा ? गान्धीजी क्या प्रोग्राम देंगे ? आन्दोलन किस प्रकार चलेगा ? इसी प्रकार के विषयों पर हम लोग काफी देर तक आपस में बातचीत करते रहे। सुबह गान्धीजी ने हर प्रान्त के १०–१२ प्रमुख कार्यकर्ताओं को अपने विचार एवं प्रोग्राम देने को बुलाया था। मैं भी उनमें से एक था और इस प्रकार मेरे हृदय में भी तरह-तरह की कल्पनाएं पैदा हो रही थीं। यकायक सवेरे चार बजे अखबार बेचने वालों ने आवाज दी, "कांग्रेस नेता गिरफ्तार कर लिये गये।" हम लोग सब-के-सब अवाक् हो उठे एक-दूसरे की ओर देखने लगे। हम सभी की स्थिति किंकर्तव्य विमूढ-सी हो गई। सबने यही निश्चय किया कि बिड़ला हाउस चलें और अपने अन्य साथियों से मिलें। पर सवेरे ७ बजे न कोई सवारी थी और न कोई अन्य साधन। चारों ओर आश्चर्य-चकित एवं क्रोधित लोगों के गिरोह दिखाई देते थे। सब एक दूसरे से यही पूछ रहे थे कि अब क्या होगा, हमें अब क्या करना है ? सबके हृदय में 'करो या मरो' का मन्त्र अपना कार्य कर रहा था।

९ अगस्त के धुंधले प्रभात का जिसमें भारत की आज़ादी की लड़ाई ने सहसा एक नए मोड़ पर कदम रखा था, सदैव ही अपना एक विशेष स्थान रहेगा।

९ अगस्त को सुबह ८ बजे गवालिया मैदान में राष्ट्रीय स्वयंसेवक दल की परेड हुई थी। लेकिन उस समय तक सारे बम्बई ही क्या देश भर

में यह खबर फैल चुकी थी कि काग्रेस नेता गिरफ्तार हो चुके है। चारो तरफ से लोग जानकारी प्राप्त करने के लिए उत्सुक थे, अतएव सब गवालिया मैदान में इकट्ठे हुए। स्वयसेवको के अतिरिक्त देश-सेविकाए भी अपना केसरिया बाना पहने हुए कतारो मे आ-आकर इकट्ठी हो रही थी, किन्तु जन-समूह के आने से पहले ही गवालिया मैदान पर पुलिस का कब्जा हो चुका था। फिर भी एक कार बडी होशियारी के साथ उस मैदान के बीच अपने रास्ते को चीरती हुई आगे बढी और झण्डे के पोल के पास तक पहुची। उसमे श्री भूलाभाई के सुपुत्र बैठे हुए थे। दक्षिण भारत के कुछ थोडे से काग्रेसी भी बीच तक पहुच गये। उन्होने झडे को पोल के कुछ गज के फासले से सलामी दी।

फौरन ही एक यूरोपियन सारजेण्ट उनके पास पहुचा और उन्हे बताया कि गवालिया मैदान पर पुलिस का कब्जा है। स्वयसेवको तथा अन्य लोगो को वहा पहले से अलग कर दिया जाय, वर्ना उनके विरुद्ध अश्रु गैस का प्रयोग होगा। श्रीयुत् ए० नीलकान्त ऐयर, जो कोचीन प्रजा-मण्डल के प्रधान थे, ने कहा, "मै इस उत्सव का इचार्ज नही हू। अतः अच्छा हो यदि आप उक्त सज्जन को यह बात बताए" और यह कहकर श्रीयुत ऐयर ने श्रीमती अरुणा आसफअली को सर्जन के हुक्म की इत्तिला दी और कहा कि लडके और लडकिया, जो गवालिया मैदान में अपनी-अपनी जगह खडे है, अच्छा हो आने वाले खतरे से बाहर निकल जाय। इस पर वे बाहर चले गये। अरुणा आसफअली ने बोलना प्रारम्भ किया। इसी बीच पुलिस ने अपने खौफनाक व मनहूस गैस टोपो को अपनी गाडियो से निकाल लिया और गैस-बक्सो को अपने हाथो मे ले लिया। अफसरो ने एक बार फिर चेतावनी दी कि लोग मैदान से निकल जाय। पर कोई भी अपने स्थान से न हिला। अरुणा आसफअली का भाषण खतम हो चुका था। राष्ट्रीय झण्डा ऊपर चढकर हवा में फहराने लगा था। पुलिस के लिए यह बात असहनीय थी। उसने स्वयसेवको के गिरोह पर, जो मैदान मे था, गैस छोड दी। इस प्रकार अग्रेजो द्वारा भारतीय राष्ट्रवाद पर पर्लहार्बर जैसा आक्रमण प्रारम्भ हुआ। स्वय-सेवक तथा अन्य लोग जमीन पर लेट गये और दो मिनट के पश्चात् सारा समूह फिर उठ खडा हुआ। पुलिस का दूसरा आक्रमण शुरू हुआ और वह भी विफल रहा। इस प्रकार लगभग ६ हमलो के बाद पुलिस ने अपनी युक्तियो को बदल दिया। अश्रु-गैस को छोडकर अब उन्होने लाठी-प्रहार का आसरा लिया। कुछ स्वयसेवक नेता पुलिस की हिरासत मे ले लिये गये और

इस प्रकार लाठियो के प्रहारो से जनता तितर-वितर होने लगी। श्रीयुत ऐयर पर, जो अश्रु-गैस के प्रभावो से अपनी जलती हुई आँखें पोछ रहे थे, लाठियो के प्रहार प्रारम्भ हुए। श्रीमती मृदुला वहन या मणि वहन पटेल ने, जो वहा पर थी, तेज प्रहारो का सहा और मिस्टर ऐयर मे अपने प्रान्त में लौटकर काग्रेस का पैगाम देने के लिए कहा। इस प्रकार कुछ देर राष्ट्रीय झडा फहराता रहा और अन्त में उस ब्रिटिश अफसर ने उसे खीचकर नीचे उतार लिया।

पूर्व निश्चयानुसार शाम को शिवाजी पार्क मे गान्धीजी तथा अन्य नेता वोलने वाले थे। यहा पर भी सैनिक पुलिस ने अपना आधिपत्य जमाने का विफल प्रयत्न किया। चौराहो और शिवाजी पार्क को जाने वाले रास्ते पर पुलिस-शक्ति का गहरा प्रदर्शन था, ताकि लोग डरकर वहा न जाय। फिर भी लगभग २ लाख आदमी चारो ओर से इस पार्क मे इकट्ठा होगये। वहा जन समूह समुद्र की भाति उमडा हुआ दिखाई दे रहा था। यद्यपि वोलने वाले नेता न थे, पर कितने ही नेता जनता में से आकर वोल रहे थे। कस्तूरवा वहा पर आने वाली थी, पर वह पहले ही पकड ली गई। इस समूह पर चारो ओर से लाठी-प्रहार तथा अश्रु-गैस के आक्रमण हो रहे थे, पर लोग दृढता और खुशी के साथ इन वारो का मुकावला कर रहे थे। पार्क के अतिरिक्त चारो ओर के मकानो की ऊपर की मजिलो मे अनगिनत जनता खडी हुई थी और कपडे, रूमाल व तौलिये भिगो-भिगोकर जनता के उस विशाल समूह के वीच फेक रही थी, ताकि वह सफलता से अश्रु गैस का मुकावला कर सके। वह अभूतपूर्व सघर्ष था। ब्रिटिश नौकरशाही अश्रु-गैस द्वारा जनता को भगाना चाहती थी। जनता अश्रु-गैस पर कावू कर विरोध प्रदर्शन करना चाहती थी। इस प्रकार ९ अगस्त को वम्बई में जगह-जगह लाठी-प्रहार किये जाने व गोलिया वरसाये जाने की खवरें मिली। लगभग १५ जगह पुलिस को गोलिया चलानी पडी और सरकारी आकडो के अनुसार ८ आदमी मरे और १६९ आदमी गोलियो से जखमी हुए।

इस प्रकार ९ अगस्त से वम्बई ने पूरे अगस्त मास तक यह न जाना कि शान्ति से वैठना कैसा होता है? सडको पर चारो ओर पत्थर, छोटे मोटे पेड व अन्य रुकावटो के साधन पडे हुए थे। दीवारो पर, चौराहो पर, जमीन पर, यहा तक कि हर जगह गान्धी जी का 'करो या मरो' का आदेश लिखा हुआ था।

शहर मे हडताल थी और कालेजो मे भी। आधी से अधिक मिले वन्द थी और सरकारी रेलवे कारखाने भी वन्द करने पडे थे। उत्साही नवयुवक जिस मोटर व ट्राम को देखते थे, जला देते थे। इस प्रकार कई दिनो तक

बम्बई में ट्रामें बन्द रही। पुलिस-स्टेशन तथा अन्य सरकारी इमारतो पर सामूहिक आक्रमण हुए। टेलीग्राफ के तार काटे गये। इतना ही नही, कितनी ही जगह रेल की पटरियो को उखाडकर अस्त-व्यस्त करने के भी प्रयत्न किये गये। कही-कही तो स्टेशन जला दिये गये। साराश यह कि जिस प्रकार से भी जनता अपना विरोध-प्रदर्शन कर सकती थी, वह सब उसने किया।

१० अगस्त को १० जगह पुलिस ने गोलिया चलाई और ५ जगह फौज को गोलिया चलानी पडी। लाठी-चार्ज और अश्रु-गैस के प्रहारो की तो गिनती ही न थी। सरकारी आकडो ने बताया कि १६ आदमी मरे और ११४ घायल हुए। १० अगस्त को सरकारी बयान द्वारा बताया गया कि सोमवार के दिन चारो ओर विरोध-प्रदर्शन हुआ और गिरगाव और दादर में विशेष प्रकार के काड हुए। दोपहर में बी० बी० सी० आई० रेलवे के दादर स्टेशन पर आग लगाने का प्रयत्न किया गया, जिसे पुलिस ने रोक लिया। ६ पुलिस-स्टेशनो पर आग लगाई गई, जिनमें से २ जलकर भस्म हो गये। कुछ टेलीग्राफ के तार व पोस्ट बक्सो को तोडा-फोडा गया और एक ट्राम और एक म्युनिसिपल लारी में आग लगाई गई। फोर्ट एरिया में भी बहुत-सी जगह छोटी-छोटी सडको व गलियो में पत्थर व ईटें व अन्य गन्दा सामान इकट्ठा करके रास्तो को बिल्कुल रोक दिया गया। ज्यो ही पुलिस ने इस सब सामान को उठाकर रास्तो को साफ किया, जनता ने उसमें फिर वैसा सामान लाकर रख दिया। इतना ही नही, कुछ जगह प्रदर्शन-कर्त्ताओ ने मजदूरो की बस्तियो मे जाकर उन्हे काम पर न जाने की प्रेरणा भी दी।

११ अगस्त को बम्बई सरकार ने जनता के उभरते हुए क्रोध-प्रदर्शन तथा उसकी भावना को कुचलने के लिए कोडेमार कानून का उपयोग किया। उधर सारे शहर के विभिन्न स्थानो मे अग्रेजी हैट, टाई व यूरोपियन पोशाक का सामूहिक रूप से चौराहो पर जलाने का सिलसिला प्रारम्भ हुआ। उस दिन भी पहले रोज की तरह पुलिस ने दो जगह गोलिया चलाई। उस दिन प्राय सारे शहर मे बस सर्विस तथा मोटरो का आवागमन बन्द रहा। इतना ही नही, जी० आई० पी० और बी० बी० सी० आई० रेलवे की लाइनो को कई जगह से उखाडा गया और माटुगा रेलवे स्टेशन पर जनता ने सामूहिक आक्रमण कर उसमें आग लगा दी और सिगनल इत्यादि सब चीजो को तोड डाला। परेल की ओर भी प्रदर्शन हुआ। स्कूल और कालेज बन्द रहे। बम्बई सिटी कारपोरेशन ने अपने मेयर की गिरफ्तारी के विरोध मे अपनी बैठक स्थगित कर दी। उन्मादित जनता चारो ओर रेल, तार, डाकखानो पुलिस-

चौकियों, रेलवे स्टेशनो पर आक्रमण करने व उन्हें जलाने लगी। लगभग १० बार से ज्यादा पुलिस को गोलिया चलानी पडी।

१२ अगस्त को भी यही हाल रहा।

१३ अगस्त को अधेरी और विले पारले में डाकखाने जलाये गये। तार भी उखाडे गये। इस प्रकार सारे इलाके में अन्धेर छा गया। सिडनम कालेज के विद्यार्थियो ने भी विरोध-प्रदर्शन किये और शहर के प्राय सारे ही स्टाक एक्सचेंज बन्द रहे और मगलदास बाजार तथा इस इलाके के अन्य सारे बाजारो में हडताल रही। इस रोज तोड-फोड का भी कितना ही काम हुआ। १३ तारीख तक बम्बई में लगभग १००० के करीब कार्यकर्ता पकड लिये गये। इस रोज सरकारी कथनानुसार ३ बार गोली चली और ३ आदमी मरे तथा ४२ जख्मी हुए।

१४ अगस्त को कालबादेवी में तथा कुछ अन्य जगहो पर प्रदर्शन हुआ। स्टाक एक्सचेंज, रूई, सोना चादी व कपडे के बाजार पूर्णत बन्द रहे। ५० आदमी पकडे गये। ७५ प्रमुख व्यापारी भी पकडे गये। पुलिस ने कई बार गोलिया चलाई और २ आदमी मरे।

इस प्रकार अगस्त मास में हर रोज किसी-न-किसी इलाके में विरोध-प्रदर्शन होता रहा। बाजारो में हडतालें रही, तार काटे गये, आवागमन के रास्तो को अस्त-व्यस्त करने का प्रयत्न किया गया। आन्दोलन का यह रूप प्राय सारे ही अगस्त मास तक रहा। सारे शहर मे कर्फ्यू था। पुलिस को सख्त हिदायत थी कि तोड-फोड करने वाले को फौरन गोली मार दी जाय।

अगस्त के तीसरे सप्ताह से यद्यपि जाहिरा तौर पर बाजार कही-कही पर खुले पाये जाते थे, पर उनमें किसी प्रकार का भी व्यापार न होता था। सरकारी दमन-नीति के विरोध में कितनी ही म्युनिसिपैलिटियो से प्रमुख लोग इस्तीफे दे रहे थे। उधर सरकार भी अपने दमन के साधनो को उग्र रूप दे रही थी। हडताल करने वालो को धमकी दी गई थी कि उनकी दूकानो के ताले तोड दिये जायगे। मिलो पर सरकारी कब्जा कर लिया जायगा। स्वभावत इस उग्र दमन के कारण आन्दोलन का बाह्य रूप दिनो-दिन कुछ घटता हुआ-सा दिखाई देने लगा। किन्तु अब बाह्य-प्रदर्शन के बजाय आन्दोलन को अधिक लम्बे समय तक चलाने के लिए एक सुदृढ सगठन बनाने के लक्षण दिखाई देने लगे थे। शक्ति का ठीक तरीके से प्रयोग करने के लिए उस समय के नये नेताओ ने अपने ही प्रोग्राम बनाये। उन्होने कुछ दिन निश्चित किये और तय किया कि उन दिनो कोई-न-कोई सामूहिक प्रदर्शन अवश्य किया

जाय । साथ ही उन्होंने अपना एक गुप्त सगठन भी बना लिया । प्रारम्भ में महीने मे ऐसे तीन दिन निश्चित किये गये । यह थे ९ तारीख १५ तारीख और हर महीने का आखिरी इतवार । इन दिनो झडा सलामी की जाती थी, जुलूस निकाले जाते थे और सभायें की जाती थी । इन दिनो के अतिरिक्त स्वतत्रता-दिवस, तिलक-दिवस, राष्ट्रीय-सप्ताह, गान्धी-जयती आदि समारोह भी मनाये जाते थे ।

आन्दोलन का यह रुप सन् १९४४ के फरवरी मास तक रहा । सितम्बर मास में बम्बई में कालेज खुले । लेकिन सैकडो विद्यार्थियो ने विरोध-प्रदर्शन किया और कालेज पर धरना दिया । इस सिलसिले में एलफिस्टन कालेज की ५ लडकिया और कुछ लडके पहली सितम्बर को गिरफ्तार हुए ।

बम्बई प्रान्त में दो साल में लगभग ५० हजार आदमी विभिन्न अभियोगो में पकडे गये । इनमें से लगभग एक हजार ऐसे लोग थे जो दो माह के बाद छोड दिये गये । साढे चार सौ से ५ सौ तक लोगो को ६ सप्ताह से लेकर ५ साल तक की सजाये हुईं । इनमें से झडा फहराने वालो तक को कई जगह २॥ साल की सजाए हुईं । रेडियो वाले विख्यात केस मे एक काग्रेसी को ५ साल और एक स्वयसेवक को ४ साल की सजा हुई । लोग निम्नलिखित अभियोगों में पकड़े गये —

१. किसी गैर कानूनी सस्था के मेम्बर होने पर ।

२. किसी प्रदर्शन में शरीक होने पर ।

३ हडताल करने व सभायें करने के अभियोग मे ।

४. दूकानो पर धरना देने और दूकानदारो की हडताल कराने पर ।

५ आपत्तिजनक पर्चे बाटने, छापने और पास रखने के अभियोग में ।

६ सरकार विरोधी नारे लगाने या दीवारो व सडको पर लिखने के अभियोग म ।

७ मजदूरो की हडताल करवाने या उसमे मदद देने पर ।

८ ढेले व सोडावाटर की बोतलें फेंकने के अभियोगो मे ।

९ तोड-फोड सम्बन्धी कार्यों, जैसे तारो को काटने, ढेले फेंकने, रेल की पटरियो को अस्त-व्यस्त करने और विस्फोटक पदार्थ रखने के अभियोग मे ।

१० डाक, तार, रेडियो इत्यादि के नियमो की अवहेलना करने पर ।

११ कर्फ्यू आर्डर तोडने तथा गैर-कानूनी शस्त्र रखने के अभियोग में ।

१२ किसी भागे हुए अभियुक्त को पनाह देने पर ।

१३ सरकार विरोधी अन्य कोई कार्य करने पर।

बम्बई में पहला बम सन् १९४२ के आखिरी सितम्बर में फटा। फिर उसके बाद तो बमो के फटने का एक ताता-सा लग गया। अन्त में सन् १९४३ के फरवरी मास में गाधीजी के उपवास के समय उनकी गति धीमी हुई।

३ अक्टूबर सन् १९४२ को पजगाव कोर्ट के अहाते मे एक भयकर विस्फोट हुआ, जिससे वहा की इमारतें जलकर राख हो गई।

१८ अक्टूबर सन् १९४२ को फिर एक भयकर विस्फोट हुआ जिसके कारण अरगेली रोड पर 'टाइम्स आफ इडिया' अखबार का गोदाम जल गया। इसमें लगभग दो लाख रुपये की हानि हुई। पुलिस ने इस सम्बन्ध में बहुत से लोगो को पकड लिया, उनमे से कुछ छूट गये और कुछ पर मुकदमे चले। लेकिन अन्त में सभी मजिस्ट्रेट के यहा से बरी हुए। जिन्हे मजिस्ट्रेट की अदालत से सजा भी मिली, वे हाईकोर्ट से बरी हो गये। पर पुलिस ने इन सब लोगो को किसी-न-किसी मौके पर पकड लिया। इन लोगो के साथ जो बर्ताव किया गया, वह बडा ही बर्बर था। इनसे जानकारी प्राप्त करने के लिए हर प्रकार के हृदय विदारक तरीके अपनाये गये। कुछ लोग मार-पीट से बचने के लिए सरकारी गवाह भी होगये। इसी सम्बन्ध में बरली जेल में दो बार लाठी-चार्ज भी हुआ।

तोड-फोड के मुख्य प्रयत्न अगस्त के पहले सप्ताह मे खुले रूप से हुए, जब कि सैकडो की तादाद में लोग उनमे भाग ले रहे थे। पर पुलिस के दमन-चक्र के सामने यह सामूहिक रूप न ठहर सका और इसलिए सितम्बर के अन्त से उसने गुप्त रूप धारण कर लिया।

बम्बई ने हर आन्दोलन में कुछ-न-कुछ नवीनता प्रस्तुत की। पिछले आन्दोलनो में बम्बई ने आर्थिक सहायता के अलावा सारे देश के आन्दोलनो को नये विचार दिये। इस खुले विद्रोह में भी बम्बई ने—बावजूद कितनी ही पाबन्दियो के—कुछ नई बातें की। उनमें एक यह थी कि रेडियो द्वारा सारे हिन्दुस्तान में आन्दोलन सम्बन्धी खबरे भेजी जाती थी। इस काल मे रेडियो ब्राडकास्टिग के सामान को इकट्ठा करने और उसे सुचारु रूप से चलाने के लिए महान सगठन की जरूरत थी। पुलिस ने इस ब्राडकास्टिग स्टेशन को ढूढने के लिए सिर-तोड प्रयत्न किये। आखिर १९४२ के नवम्बर मे उसने इस स्टेशन पर छापा मारा और उसका सामान जब्त कर लिया। कई लोगो को गिरफ्तार भी किया और उन्हें ४,५ साल तक की सख्त सजाए दी गई।

बुलेटिनो की तो बम्बई मे भरमार ही रहती थी। बड़े अजीबोगरीब

तरीके से यह बुलेटिन लोगो और सरकारी कर्मचारियो के पास पहुंचाए जाते थे। कितनी ही बार कई मोटरें गिरफ्तार भी हुई और लाखो बुलेटिन पकडे गये।

१० अगस्त सन् १६४२ को केन्द्रीय सरकार ने सारे अखबारो तथा छापाखानो इत्यादि को सख्त ताकीद कर दी थी कि वे किसी भी रूप मे आन्दोलन सम्बन्धी खबरें न छापें। बम्बई के मुख्य अखबारो ने इस अपमान-जनक स्थित को मजूर नही किया और छापाखानो ने काग्रेस बुलेटिन इत्यादि छापने में काफी मदद दी। कई छापेखानो व अखबारो की जमानतें भी जब्त होगई।

यद्यपि सरकार ने इस प्रकार की कडी हिदायतें जारी कर दी थी ताकि दूकानदार व बडे-बडे व्यापारी किसी भी प्रकार इस आन्दोलन में हिस्सा न ले सकें, फिर भी बम्बई के बडे-बडे बाजार कितने ही दिनो तक पूर्णतः बन्द रहे और उसके पश्चात् माह में एक-दो मर्तबा काग्रेस-प्रोग्राम के दिन बन्द रहते थे। १७ अगस्त सन् १६४२ को भारतीय व्यापारी सघ से सम्बन्धित लगभग ४० सस्थाओ के प्रतिनिधि एकत्र हुए। उन्होंने सरकार की दमन-नीति की घोर निन्दा की और विशेषत इस बात को बडी घृणा से देखा कि सरकार ने भोलेश्वर, माटुगा और दादर में जमा हुए कूडे को शहर के सम्मानित व्यक्तियो से साफ करवाया। काग्रेस के ८ अगस्त वाले प्रस्ताव का समर्थन भी किया गया। इस प्रकार बम्बई के बाजार काग्रेस के साथ रहे और जब कभी उन्हे हडताल करने का आदेश दिया गया तो उन्होने उसका पालन किया।

सन् १९४२ के खुले विद्रोह में बम्बई के मजदूरो ने उतना अच्छा भाग नही लिया जितना कि अहमदाबाद के मजदूरो ने। कारण स्पष्ट है। कुछ तो इन लोगो पर कम्युनिस्टो का प्रभाव था और दूसरे मुस्लिम मजदूर यद्यपि हृदय से आन्दोलन के साथ थे, पर वह खुले रूप से इसमें शरीक न हुए। इस कारण बम्बई की कपडा मिले ६ अगस्त से आठ-दस रोज तक तो बन्द रही, लेकिन फिर चलनी शुरू हो गईं। फिर भी शुरू के दिनो मे सारे मजदूरो ने आन्दोलन में भाग लिया।

बम्बई के विद्यार्थियो को सबसे पहले इस आन्दोलन मे अपने जौहर दिखाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। कौन जानता है इन्ही के आदर्श को लेकर सारे हिन्दुस्तान के विद्यार्थी आन्दोलन में कूदे हो। लगभग ८० प्रतिशत विद्यार्थी आन्दोलन के प्रारम्भिक दिनो में स्कूल-कालेजो से बाहर निकल आये। यद्यपि यूनिवर्सिटी के अधिकारियो ने कई दफा एक निश्चित तारीख तक स्कूल-कालेजो

म लौटने की धमकी दी, लेकिन विद्यार्थी अपने सकल्प से न हटे। यह सिल-सिला ३,४ माह तक रहा। उसके पश्चात् इसका जोश धीमा पड गया और विद्यार्थी स्वय ही कालेजो मे जाने लगे। इस काल में विद्यार्थियो ने दिल खोल-कर आन्दोलन में हिस्सा लिया और सब यातनाओ को सहर्ष सहा।

सन् १९४२ में बम्बई कारपोरेशन पर काग्रेस का कब्जा था। काग्रेस-नेताओ की गिरफ्तारी के बाद कारपोरेशन ने काग्रेस की मागो का समर्थन किया और सरकार की आलोचना की। कारपोरेशन की बैठको को कई बार स्थगित होना पडा। १० अप्रैल सन् ४३ को कारपोरेशन के मेम्बरो ने नगीनदास टी मास्टर को, जो उस समय जेल में नजरबन्द थे, अपना मेयर चुना। कारपोरेशन के ६३ काग्रेसी मेम्बरो में से ३३ नजरबन्द थे।

बम्बई बार ने भी आन्दोलन-काल मे एक महत्त्वपूर्ण सेवा की। उन्होने चार प्रतिष्ठित एडवोकेटो की एक कमेटी बनाई जिसका काम जनता के नाग-रिक अधिकारो की हिफाजत करना था। इस कमेटी के मेम्बर मिस्टर डी० एन० बहादुर भूतपूर्व एडवोकेट जरनल, मिस्टर के० पी० पुरनपौवाला भूतपूर्व जज बम्बई हाईकोर्ट और मिस्टर के० एम० मुशी, भूतपूर्व होम मिनिस्टर थे। इन लोगो ने सरकारी दमन-नीति की तीव्र आलोचना की और नागरिको पर जो तरह-तरह के गैर कानूनी प्रतिबन्ध लगाये जा रहे थे उनका विरोध किया। एक कानूनी सहायता कमेटी भी बनाई। उसने लोगो पर चलाये जाने वाले मुकदमो में काफी कानूनी मदद दी।

बम्बई के नागरिको ने इन्ही दिनो एक 'राजनैतिक पीडित सहायता फड' भी खोला। इसके द्वारा विभिन्न प्रान्तो में कितने ही कार्यकर्ताओ व उनके परिवारो को मदद दी गई। बम्बई प्रान्तीय काग्रस कमेटी के कथनानुसार सहा-यता प्राप्त करने वाले परिवारो की सख्या इस प्रकार है —

महाराष्ट्र ८६, गुजरात १३, कर्नाटक ३७५, तामिलनाड ६, मलावार ५, आध्र ८७, बिहार ३८, बम्बई १५, उडीसा १७१, युक्त प्रान्त १६३, मध्य प्रान्त ३८। इस प्रकार इस कमेटी ने भारतवर्ष के कोने-कोने मे जहा भी पता चला मदद देने की कोशिश की।

बम्बई की बाबत यह अनुमान लगाना कठिन है कि कितने लोगो ने खुले रूप से आन्दोलन मे अपना विरोध प्रदर्शित किया। पर प्रारम्भिक दिनो मे बम्बई की काफी बस्तिया ऐसी थी जिनके सारे लोग इस आन्दोलन में किसी-न-किसी रूप में हिस्सा ले रहे थे। मालूम पडता था कि बम्बई के लोग काग्रेस के पीछे पागल है।

बम्बई के खुले विद्रोह के सरकारी आंकड़े

बम्बई सरकार की ओर से अगस्त विद्रोह के सिलसिले मे ६ फरवरी १९४३ तक के जो अक प्राप्त हुए हैं वे नीचे दिये जाते हैं। इन अको मे गुजरात, महाराष्ट्र और कर्नाटक के अक भी शामिल हैं।

गिरफ्तारिया	५०००
कितनी बार पुलिस ने गोलिया चलाई	१९५
कितने आदमी मरे	१०६
कितने आदमी घायल हुए	३३२
कितने आदमी पुलिस के मरे	५
कितने आदमी पुलिस के घायल हुए	५२७
कितने अवसरो पर टियर (आसू बहाने वाली) गैस का का प्रयोग किया	११
कितने अन्य सरकारी नौकर मरे	१

नोट —एक रेवेन्यू हेड क्लर्क, जिसे भीड ने इसलिए अपने आगे कर लिया था कि उस पर पुलिस सामने से हमला न कर सके, पुलिस के गोली चलाने से मर गया।

कितने अन्य सरकारी नौकर घायल हुए	११५
कितनी बार फौज ने गोलिया चलाई	१४
कितने आदमी मरे	८
कितने आदमी घायल हुए	३२
कितने पुलिस स्टेशन या चौकिया और सतरियो के खडे होने के अड्डे बरबाद कर दिये गये या उनको सख्त नुकसान पहुचाया गया	४३
प्रान्तीय सरकार की अन्य कितनी इमारते बरबाद कर दी गई या उनको सख्त नुकसान पहुचाया गया	१८२
सरकारी इमारतो के अलावा अन्य कितनी ऐसी इमारतें जैसे म्युनिसिपैलिटी की मिल्कियत, स्कूल, अस्पताल इत्यादि को बरबाद कर दिया गया या उनको सख्त नुकसान पहुचाया गया	३८
कितनी मशहूर प्राइवेट इमारतें बरबाद कर दी गई या उनको सख्त नुकसान पहुचाया गया	११
कितने बम फटे	३७५

कितने ऐसे बम या बारूदी चीजें पाई गई जिनसे कुछ नुकसान नही हुआ। (इनमें ऐसे बम या बारूदी चीजे शामिल हैं जिनको पुलिस ने तलाशी

लेते समय अपने कब्जे में कर लिया)। २४३

कितने सरकारी नौकर मरे (इनमें फौज के चार बडे अफसर भी शामिल हैं) ५

कितने सरकारी नौकर घायल हुए (इनमें फौज के १६ बड़े अफसर भी शामिल हैं) ८२

जनता के कितने लोग मरे (इनमें बम मारने वाले खुद भी शामिल हैं) मर्द ९ और बच्चे ४ १३

जनता के कितने लोग घायल हुए (इनमें बम बनाने वाले खुद भी शामिल हैं) मर्द ७८, औरतें ९०, बच्चे २० १८८

बिजली कम्पनियों की मशीनें इत्यादि तोड फोड डाली गईं २७

उन लोगों की सख्या जो ऐसी घटनाओं में मरे जो आन्दोलन के कारण घटित हुईं

(अ) सरकारी या रेलवे कर्मचारी ३

(ब) जनता के लोग ११

उन लोगों की सख्या जो ऐसी घटनाओं में घायल हुए जो आन्दोलन के कारण घटित हुईं

(अ) सरकारी या रेलवे कर्मचारी ५

(ब) जनता के लोग ३१

रेलवे स्टेशनों की सख्या जो बरबाद कर दिये गये या उन्हें सख्त नुकसान पहुचाया गया १६

कितनी रेलगाडियां तोड-फोड़ के कारण उलटी गईं १३

उन गावों या कस्बों की सख्या जिन पर सामूहिक जुर्माने किये गये १४०

सामूहिक जुर्मानों की रकम ६,९३,४५०

वसूलशुदा सामूहिक जुर्मानों की रकम ६ ०४,९६५

स्थानीय सस्थाओं की सख्या जिन्हें भारत रक्षा नियम ३८ ब के अधीन या किसी और प्रकार से तोड दिया गया २२

गुजरात प्रान्त

भारतीय आजादी के सग्राम में गुजरात का एक महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। उसकी अपनी ख्याति है । जहा एक ओर गुजरात ने अखिल भारतीय ख्याति के बडे-बडे नेता जैसे महात्मा गान्धी, स्वर्गीय विट्ठलभाई पटेल, सरदार वल्लभभाई पटेल आदि पैदा किये है, वहा दूसरी ओर गुजरात को कई आन्दो-

लन चलाने का श्रेय भी प्राप्त है। गुजरात को यदि महात्मा गान्धी की अहिंसात्मक युद्ध-कला की प्रयोगशाला कहा जाय तो अनुचित न होगा। सन् १९१५ के पश्चात् जब गान्धीजी अफ्रीका से लौटे तो उन्होने अहमदाबाद को अपना केन्द्र बनाया और यही से उन्होने अहिंसा के प्रयोग तथा सत्याग्रह के शस्त्र को अमल में लाने के लिए इस छोटे से प्रान्त को अपना कार्य-क्षेत्र बनाया। उन्होने इस महान् कार्य के लिए यहा उपयुक्त वातावरण पैदा किया और योग्य कार्यकर्ताओ को जन्म दिया। गुजरात ने गान्धीजी के प्रत्यक्ष नेतृत्व मे अन्याय के विरुद्ध तीन सघर्ष किये। इन सघर्षों द्वारा गान्धीजी के सत्याग्रह शस्त्र का विकास हुआ और आगे चलकर सारे हिन्दुस्तान मे उसका सामूहिक व व्यापक प्रयोग किया गया। सन् १९१८ में सर्व प्रथम खेडा जिले में मालगुजारी न देने का सत्याग्रह किया गया। इसके कुछ दिनो बाद अहमदाबाद के मजदूरो की व्यापक व विख्यात हडताल हुई और उसके परिणामस्वरूप अहमदाबाद में मजदूर महाजन सघ जैसी शक्तिशाली मजदूर यूनियन का निर्माण हुआ। इसके बाद रोलैट एक्ट के विरुद्ध आन्दोलन हुआ और गान्धीजी ने जनता को अहिंसात्मक एव सगठित तरीके से उठने का पाठ पढाया। सन् १९२० के असहयोग आन्दोलन में गुजरात का काफी नाम रहा और कई प्रमुख व्यक्ति राजनैतिक क्षेत्र में आये। गुजरात विद्यापीठ की स्थापना हुई और प्रान्त में कितने ही आश्रम खुले। असहयोग आन्दोलन के पश्चात् एक छोटे से इलाके बोरसद मे सत्याग्रह हुआ जो सरकारी लगान की ज्यादती के विरुद्ध था। इसका नेतृत्व सरदार वल्लभभाई पटेल ने किया। बारदोली के लगानबन्दी सत्याग्रह ने गुजरात का नाम और भी ऊचा उठा दिया। सन् १९३० व ३१ मे रही-सही कमी को गान्धीजी की 'डाडी-कूच' व 'नमक-सत्याग्रह' ने पूरा कर दिया और इस प्रकार गुजरात ने भारतीय राजनीति मे एक अभूतपूर्व स्थान ग्रहण किया।

गुजरात में ५ जिले है। सूरत, खेडा, भडौच, अहमदाबाद और पचमहाल। आर्थिक दृष्टि से इस प्रान्त की हालत बहुत अच्छी है। सूरत, खेडा और भडौच की जमीन उपजाऊ है। अहमदाबाद सारे प्रान्त के व्यापार का केन्द्र है। नि सन्देह पंचमहाल कुछ पिछडा है। इसमें लगभग दो लाख भील रहते है और इसका बहुत बडा भाग बडौदा रियासत से मिलता है। गुजरात के लोग स्वभावत गाधीजी के भक्त है और सरदार वल्लभभाई पटेल को बहुत मानते है। यद्यपि सन् १९४२ में क्राति के आर्थिक व सामाजिक कारण इस प्रान्त में अपनी परिपक्व स्थिति को न पहुचे थे, पर अन्य सारी बातें यहाँ मौजूद थीं। गुजराती लोग महात्मा गान्धी तथा सरदार पटेल को अपनी आशाओ व

आकाक्षाओ का केन्द्र समझते है। अत ६ अगस्त १६४२ को जव काग्रेसी नेताओ की गिरफ्तारी हुई तो अन्य प्रान्तो की तरह गुजरात के लोगो ने गाधीजी तथा पटेल से घनिष्ठ सम्वन्ध होने के कारण उन पर हुए प्रहार को अपने ऊपर प्रहार समझा। वे गुस्से से झुंझलाकर सैकडो की तादाद में उठ खडे हुए।

अहमदावाद के लोगो ने नौकरशाही के विरुद्ध एक सगठित व लवी लडाई लड़ी, जिसका वर्णन मैं आगे करूगा। गुजरात के गाव-गाव व कस्वे-कस्वे में आन्दोलन के प्रारम्भ के दिनो में सरकारी नीति के विरुद्ध विरोध-प्रदर्शन, हडतालें व सभाए हुई। विद्यार्थियो ने भी इस आन्दोलन में वहुत वडा भाग लिया। सैकडो विद्यार्थी स्कूल कालेजो से पढाई छोडकर गावो में फैल गये और काग्रेस के सन्देश को घर-घर पहुचा दिया। स्वभावत सरकार ने आन्दोलन को उसके प्रारम्भिक काल में ही दवाने के सव प्रयत्न किये। अहमदावाद मे तो ६-७ तारीख से ही पुलिस के जमाव इधर-उधर दिखाई देते थे। यकायक सारे नेता ८ तारीख से ही पकडे जाने शुरू होगये। सूरत जिले के वारदोली व जलालपुर ताल्लुको में सरकार को भय हुआ कि कही लगानवन्दी सत्याग्रह न प्रारम्भ हो जाय इसलिए उसने वहा पर लगान पहले से ही इकट्ठा करना शुरू कर दिया। पुलिस गावो को घेर लेती थी और फिर लोगो से लगान वसूल किया जाता था। यही खेडा प्रान्त में भी हुआ। वारदोली में विलोची सिपाहियो का प्रयोग किया गया और गावो पर सामूहिक जुर्माना किया गया जिसे वडी सख्ती के साथ वसूल किया गया।

गुजरात प्रान्त की म्युनिसिपैलिटियो व पचायतो मे से ६० प्रति शत पर काग्रेस का कब्जा था। इन सस्थाओ ने वडी दिलेरी के साथ काग्रेस-प्रस्ताव का समर्थन किया। अत उनमें से वहुतो को मुअत्तिल कर दिया गया।

अन्य प्रान्तो की भाति जव आन्दोलन का व्यापक रूप यहा भी धीमा पडने लगा तो तोड-फोड का कार्य आरम्भ हुआ। डाकखानो को वरवाद किया गया। टलीफोन के तारो को भडौच और सूरत ज़िलो में सैकडो मीलो तक काट दिया गया। काठियावाड में दो-तीन जगह रेल गिराने की दुर्घटनाए भी हुई, जिनमें एक पालघर स्टेशन और दूसरी कलुवी आर एन रेलवे स्टेशन के पास हुई। कुछ स्टेशनो को जलाया गया। वी वी एण्ड सी आई रेलवे के भी कई स्टेशन जलाये गये। सन् १९४४ के मई मास से १९४५ के मई मास तक इस प्रकार के कार्य होते रहे, जिनमे डाकखानो को जलाना और पुलिस-थानो पर आक्रमण करना भी सम्मिलित था। खेडा जिले मे लगभग ३० डाक ले जाने वाले हरकारो के थैले जलाये गए और उनका सामान ले लिया

गया। इस प्रकार डाक-व्यवस्था अस्त-व्यस्त करने के प्रयत्न हुए। गुजरात प्रान्त के आन्दोलन का जिलेवार विस्तार से वर्णन करने का यहा प्रयत्न किया जायगा।

अहमदाबाद

सन् १९४२ के आन्दोलन में अहमदाबाद को वही श्रेय प्राप्त है जो यूरोपियन महायुद्ध में स्टेलिनग्राड को था। ९ अगस्त के सवेरे अहमदाबाद के १७ प्रमुख काग्रेस कार्यकर्ता पकड लिये गये। काग्रेस भवन पर पुलिस ने कब्जा कर लिया। शहर को बाहर की दुनिया से बिल्कुल काट दिया गया। शहर में ५ आदमी से अधिक इकट्ठे न होने की घोषणा कर दी गई। फिर भी सारे शहर में सैंकडो आदमी इकट्ठे झडे लेकर निकलने लगे। सारे शहर में पूर्ण हडताल रही। ६ व ७ तारीख से अहमदाबाद में सनसनी थी। पुलिस चारो ओर किसी प्रतीक्षा में दिखाई देती थी। अहमदाबाद कुछ ऐसे तरीके से बसा हुआ है कि वहा के लोग सगठित तरीके से जमकर बहुत अर्से तक लडाई लड सकते हैं। नेताओ पर प्रहार होते ही सारे शहर मे खलबली मच गई। ऐसा मालूम दिया कि अहमदाबाद के नागरिक नौकरशाही के इस आक्रमण का सगठन, धैर्य व वीरता से उत्तर देना चाहते हैं। शहर में सामूहिक हडताल हुई। आमदोरफ्त के सारे जरिये बन्द हो गये और मजदूर-महाजन-सघ ने अनिश्चित समय तक हडताल करने की घोषणा की। अत. हजारो मजदूर शहर छोडकर चले गये। आन्दोलन-काल में गुमाश्ता सघ का भी निर्माण हुआ। गुमाश्तो, विद्यार्थियो तथा मजदूरो ने मिलकर अपनी एक सत्याग्रह समिति बनाई। इस प्रकार आन्दोलन को एक लम्बे काल तक चलाने की योजना बनाई गई। गुजरात-विद्या-प्रचारक मण्डल तथा स्वयसेवक दल ने भी आन्दोलन में काफी ख्याति प्राप्त की। १० व ११ तारीख के बीच शहर में विद्यार्थी सगठन कमेटी की स्थापना हुई जिसने अपना दैनिक पत्र निकालना प्रारम्भ किया। विद्यार्थी सघ ने गुजरात प्रान्त को ८ हिस्सो में बाँट दिया और अपनी एक केन्द्रीय कमेटी भी बना ली। १० तारीख के सवेरे गुजरात कालेज के विद्यार्थियो ने एक जुलूस निकाल कर काग्रेस भवन तक जाने का प्रयत्न किया। उधर दूसरी ओर शहर से एक जुलूस निकलकर आने वाला था और दोनो जुलूसो को मिलकर काग्रेस-भवन के सामने आना था। पुलिस ने विद्यार्थियो के जुलूस को अस्त-व्यस्त करने के लिए कालेज के आगे और पीछे के दरवाजो पर आक्रमण किया। यहा श्री विनाद किनारीवाला

नामक एक बहादुर नवयुवक को, जो कांग्रेस झंडा लिये हुए था, गोली का शिकार बनाया गया। विनोद किनारीवाला ने सीना खोलकर गोली का स्वागत किया और इस प्रकार झंडा दूसरे विद्यार्थी के हाथ में पहुचा। पुलिस ने झंडा छीनने के बहुत से प्रयत्न किये, पर वह असफल रही। पुलिस ने भीड को लाठियो के प्रहारो से तितर-बितर करना चाहा। इस भीड मे अधिकांश विद्यार्थी थे, जिन्होने पुलिस के वार को असफल करने के लिए एक नई नीति को अपनाया। जब भी पुलिस भीड के पास आती थी, वे छोटी-छोटी टुकडियो में बट जाते थे। उस दिन कई लडके जख्मी हुए। पुलिस ने इन जख्मी लडको के पास किसी को न आने दिया। कितनो को इस प्रयत्न में मार भी पडी। इस जुलूस में २॥ व ३ हजार लडके थे। जुलूस को तितर-बितर करने के लिए अश्रु-गैस का प्रयोग भी हुआ। फलस्वरूप यह जुलूस अपनी योजनानुसार कांग्रेस भवन तक न पहुच सका। इसी बीच अन्य कालेजो व स्कूलो के विद्यार्थी जुलूसो के रूप मे नारे लगाते हुए आगे बढे। पुलिस ने उनकी शक्ति को देखकर उन्हे पुल पार करने दिया। जनता के उमडते हुए जोश तथा शक्ति को देखकर १० तारीख को शहर में फौजे बुलाई गई। थोडी देर पश्चात् ही ७०० सैनिक लारियो में भरकर आये और उन्होने लडकियो तथा लडको के जुलूस पर भयकर लाठी चार्ज प्रारम्भ किया। छात्रो का यह जुलूस जमीन पर बैठ गया और उन्हे इन निर्दयी सैनिको ने उठा-उठाकर ढेलो की तरह निर्दयतापूर्ण तरीके से फेंकना शुरु कर दिया।

११ अगस्त १९४२ को नौकरशाही ने जनता की उमडती हुई बाढ को रोकने के लिए अत्यन्त क्रूर शस्त्रो को अपनाया। टैको और मशीनगनो का शहर मे प्रदर्शन किया गया, ताकि लोगो के हृदय में आतंक बैठ जाय। पुलिस गलियो मे घुसी और आदमियो तथा बच्चो व औरतो तक को मारना-पीटना शुरु कर दिया। बूढे तक उनके क्रूर और निर्दय हाथो से न बच सके। यह मार-पीट इतना अन्धाधुन्धी से की गई कि बडे-बडे मिल-मालिको को भी निर्दोष ही इसका शिकार होना पडा। सारा शहर बियाबान हो गया। मिल, बाजार, स्कूल, कालेज सब बन्द थे। उधर उन्मत्त जनता ने डाकखानो, तार-घरो इत्यादि पर हमले शुरु कर दिये। अहमदाबाद में गोलियां चलना जीवन की एक साधारण घटना बन गई।

१२ तारीख को पुलिस ने ८ बार गोलिया चलाई और अपने रहने के लिए फौज ने सिनेमाघर पर कब्जा कर लिया।

अहमदाबाद का शहर किले की तरह बसा हुआ है। इसमें अन्दर हो-

अन्दर बहुत-सी पोले है और एक सरकिल से दूसरे सरकिल मे जाने के लिए रास्ते इस तरह बने हुए है कि जनता पुलिस व फौज के विरुद्ध सामूहिक व सगठित मोर्चा आसानी से कायम कर सकती है। इस किलेबन्दी की वजह से जनता को काफी सहूलियत हुई। जब लाठियो के प्रबल प्रहारो तथा अन्य दमनकारी उपायो के कारण आन्दोलन का वाह्य रूप धीमा पडने लगा तो जनता ने अपनी सुविधा व स्थिति के अनुसार विरोध प्रदर्शन के तरीके भी बदल दिये। रात को लोग अपनी छतो पर चढ-चढकर काग्रेसी नारे बोलते थे और पुलिस उन्हे पकड नही पाती थी और न देख ही पाती थी। इसका प्रतिकार करने के लिये फौज ने बिजली की बडी-बडी रोशनियो का प्रयोग किया और घोषणा की कि जो कोई उस उजाले में दिखाई पडेगा, उसको मार दिया जायगा। रात के समय अलग-अलग पोलो में एक-एक दो-दो हजार के जुलूस निकलते थे और जब पुलिस और फौज के सैनिक एक पोल में जाते थे तो ठीक उसी समय दूसरी पोल में जुलूस निकलना शुरू हो जाता था।

इस प्रकार जन-आन्दोलन कितने ही मग्स तक चलता रहा। इस आन्दोलन मे नौजवानो, गुमाश्तो, मजदूरो तथा विद्यार्थियो ने विशेष रूप से भाग लिया। शहर के प्रमुख व्यापारियो की हमदर्दी भी उनके साथ थी। पुलिस ने गुस्से मे आकर रास्ते चलते नागरिको को मारना-पीटना शुरू कर दिया था।

जहा तक गिरफ्तारियो का सम्बन्ध है, अहमदाबाद मे रोजाना ही पुलिस कितने ही लोगो को पकड-पकड कर अपनी लारियो में भरकर ले जाती थी और शहर से बहुत दूर कहीं छोड आती थी। प्रारम्भ में दो-तीन सौ गिरफ्तारिया रोजाना हुईं। नवयुवक अधिकतर पकडे गए। बहुत से लोग पुलिस-चौकियो से ही छोड दिये गए। अहमदाबाद में १०५७ आदमी पकडे गए, ३९७ नजरबन्द रहे और ४३० को सजा हुई।

सन् १९४२ के आन्दोलन में अहमदाबाद सारे गुजरात के आन्दोलन का केन्द्र रहा। यही आन्दोलन के सगठन और सचालन के आवश्यक साधन जुटाये गए। लगभग ५०० विद्यार्थियो ने प्रतिज्ञा की कि वे आन्दोलन को चलाने के लिए अपना पूरा समय लगायगे। यह लोग एक निश्चित प्रोग्राम और योजनानुसार देहात की ओर पिल पडे। पहले अहमदाबाद जिले में गये और फिर दूसरे जिलो में।

समय के साथ आन्दोलन धीमा पडता गया। फिर भी अहमदाबाद मे लोगो ने महीने में दो-तीन रोज ऐसे निश्चित किये, जब कि वे कई सामूहिक व व्यक्तिगत प्रदर्शन करते थे। विद्यार्थियो की हलचलें लगभग एक साल तक

रही। कपडो की मिलो की हडताल लगभग ३॥ माह तक रही। बडे व छोटे बाजार लगभग ४ माह तक बन्द रहे। म्युनिसिपल बोर्ड के कर्मचारियों की हड़ताल लगभग ४ माह तक रही। अखबारो ने भी काफी समय तक हडताल रखी। अनगिनत बार लाठी चार्ज हुए। प्रारम्भिक दिनो में तो उनका ताता ही बन्धा रहा। लगभग २० बार पुलिस को गोलिया चलानी पडी। प्राय एक-डेढ साल तक माह की ९ तारीख के प्रदर्शनो पर गोलिया चली। १५ से २५ वर्ष तक की अवस्था के लोगो ने एक बहुत बडी सख्या म आन्दोलन में हिस्सा लिया। १४ से अधिक आदमी मरे, २२५ आदमी जिनके सख्त चोटे आई थी, शफाखानो में भर्ती हुए और जिन लोगो ने अपना दूसरी जगह इलाज कराया उनकी सख्या का कुछ पता नही चलता। सरकारी इमारतो पर भी हमले हुए। इनमें १२ काण्ड मशहूर है।

१, दसाराई, तालुम, ममलतदार, मदलपुरा, चोर, जुडिशियल कोर्ट, पुलिस सिटी हेडक्वार्टर, बहुत से छोटे-छोटे डाकखाने, अस्थायी पुलिस चौकिया, म्युनिसिपल स्कूल, बिजलीघर, मेडिकल हास्पिटल, छोटे रेलवे पुल, म्यूनिसिपैलिटी, पुलिस सब इस्पेक्टरो के बगले।

तोड़-फोड़ कार्य

नीचे लिखे स्थानो पर तोड-फोड के कार्य हुए —

१. पाच बिजली के स्टेशन। २ विक्टोरिया की मूर्ति। ३ मेडिकल स्कूल होस्टल। ४ एलिस पुलिस चौकी। ५ घनकामता पुलिस चौकी। ६ प्रेम दरवाज पुलिस चौकी। ७ मनु नायक बम केस। ८ पिपार्दी पोल बम केस। ९ गवर्नमेंट लेबर वेलफेयर सेन्टर। इसके अतिरिक्त १० जगह और बम फटे। रेल गिराने के तीन प्रयत्न हुए। २० मिलो में तथा गवर्नमेंट वर्कशाप और ए० आर० पी० के आफिस मे टेलीफोन के तार कटे और प्राय शहर के सभी जगह के तार काटे गये। कुछ लारिया जो फौजी सामान लिये जा रही थी, लूटी गई।

खेड़ा जिला

खेडा गुजरात का महत्त्वपूर्ण जिला है। यहा की भूमि बहुत ही उपजाऊ है और यहां के बहुत से लोग हिन्दुस्तान के बाहर के देशो में व्यापार करते है। अहमदाबाद की घटनाओ ने खेडा जिले के लोगो को बता दिया था कि उन्हे क्या करना है और उनके ऊपर क्या बीतना है। अतएव खेडा जिले की कपड़ा मिल भी अहमदाबाद की भाति बन्द कर दी गई और प्रमुख कस्बों में प्राय.

सभी स्कूल तथा कालेज बन्द रहे व बाजारो में हडतालें रही। जिले के निवासियो ने सगठन-शक्ति का काफी परिचय दिया और यहा से जो दूध व अन्य खाद्य-सामान फौज के लिए जाता था उसे भेजने से इन्कार कर दिया।

लाठी-चार्ज तो उन दिनो गावो और कस्बो की दिनचर्या बन गई था। नडियाद, आनन्द, कपडव्वज, डाकोर, उमरेठ, बोरसद, घवा, चकला, इत्यादि स्थानो मे कई लाठी-काड हुए। बिना किसी विशेष कारण के लाठी-प्रहार किय जाते थे। मालूम होता था कि पुलिस के सिपाहियो को ऊपर से कुछ ऐसा ही करने की आज्ञा थी। खेडा जिले में १६ बार गोलिया चली। जिन स्थानो मे गोलीकाड हुए, उनमें नडियाद, डाकोर, आदास, चकला, भदरन, कारगसहत कस्बो के नाम उल्लेखनीय है। इनमें आदास और डाकोर के नाम तो सारे हिन्दुस्तान में मशहूर हो चुके है। आदास मे जिस हृदयहीन तरीके से विद्यार्थियो पर गोलिया चलाई गई उसकी अपनी हृदय विदारक कहानी है।

बडौदा से ५० विद्यार्थियो की एक टोली ने निश्चय किया कि वह गाव-गाव में प्रचार करती हुई तथा जनता को काग्रेस का प्रोग्राम बताती हुई आगे बढती जायगी। ऐसा मालूम पडता है कि उनके साथ कोई पुलिस पार्टी भी उनका पीछा करती हुई चली। सूरत और खेडा जिले के गावो में आदास रेलवे स्टेशन पर यह टोली दो हिस्सो मे बट गई। सायकाल का समय था। विद्यार्थीगण पास के एक खेत मे, जो स्टेशन के करीब था, भ्रमण करने लगे। ठीक उसी समय पुलिस की टोली हवलदार सहित स्टेशन पर पहुची। पुलिस वालो ने उन विद्यार्थियो को रेल में बैठने का आदेश दिया। हवलदार के बर्ताव तथा दारोगा की बातो से मालूम पडता था कि उन लोगो ने शराब पी रखी थी। पुलिस जमादार, जो पहले से विद्यार्थियो का पीछा कर रहा था और जिसे आस-पास के गावो मे जनता की ओर से कुछ सुनना भी पडा था, उन लोगो पर अधिक क्रोधित था। कस्बे मे आते ही उसने विद्यार्थियो को खेत मे बैठने का आदेश दिया। ये लोग गाडी से जाना चाहते थे, पर यह समझकर कि जमादार का हुक्म उन्हे गिरफ्तार करने का है, वे वही बैठ गये। ट्रेन छूट चुकी थी। आदास का स्टेशन गाव व शहर के बाहर था। इस प्रकार इन निहत्थे छात्रो पर पुलिस ने गोलिया चलाईं जिससे ५ छात्र तो फौरन ही मर गये और १३ जख्मी हुए। गालियो की आवाज तथा लडको की चीख-पुकार ने गाव के लोगो का ध्यान इस घटना की ओर खीचा। पर पुलिस वालो ने उन्हे लडको के पास न जाने दिया। उन्होने यहा तक बर्बरता की कि घायलो को पानी तक देने की सुविधा न दी। वे सारी शाम और तमाम रात उसी स्थिति में पडे

रहे। सुबह सामान के पुलन्दों की तरह उन्हें लारियों में भरकर शफाखाने पहुंचाया गया और लुत्फ तो यह था कि यह सब करने के बाद भी पुलिस ने उल्टा उन्हीं पर मुकदमा चलाया।

डाकोर गोली-काड आदास से भी अधिक हृदय-विदारक है। रचोद-राई के प्रमुख शिवाले के पास पुलिस ने निहत्थी जनता पर गोली चलाने का आदेश दिया। पुलिस के दबाव के कारण जनता छोटी छोटी गलियों में भागने लगी। पर पुलिस ने उनका पीछा किया और तब तक गोलियां चलाना जारी रखा जब तक कि उनका सारा गोला बारूद खतम न होगया। फिर भी जनता का उत्साह भग न हुआ और उसने पुलिस पर आक्रमण करना चाहा। लेकिन स्वर्गीय छोटाभाई मुखी के हस्तक्षेप पर पुलिस का बाल भी बांका न हुआ, अन्यथा पुलिस का एक भी आदमी जिन्दा न बचता। पर थोडी ही देर बाद दूसरी पुलिस-पार्टी वहां पर आ गई और उसने छोटाभाई मुखी को अपनी गोली का शिकार बनाया। यहां पर यह बात उल्लेखनीय है कि श्रीयुत छोटाभाई मुखी को थाने के पास मारा गया और घंटों तक उनकी लाश वहीं पडी रही। आश्चर्य की बात तो यह है कि पुलिस के सिपाही, जो उनके पास थे, वही थे जिन्हें छोटाभाई मुखी ने जनता के प्रचड क्रोध से बचाया था। इस प्रकार इन दो काडों में ७-८ विद्यार्थी मरे। घायलों की सख्या का तो पता ही नहीं चला। खेडा जिले में निम्नलिखित सरकारी इमारतों पर जनता के सामूहिक आक्रमण हुए। नडियाद आय-कर आफिस, गवर्नमेंट हाउस, धर्मराज हाई स्कूल सौचित्र हाई स्कूल।

१ नडियाद और अहमदाबाद मे बम फटे और नडियाद के आय-कर आफिस मे आग लगाई गई।

२ कितनी ही जगह तार काटे गये।

३ लगभग ७५ डाकखानों के डाक के थैलों को लूटा गया और ३० फीसदी डाकखाने बन्द कर दिये गए।

४ खेडा जिले में १० हजार रुपया सामूहिक जुर्माना हुआ। इस जिले में २९९ गिरफ्तार और ११२ नजरबन्द किये गए। ११७ आदमियों को सजाएं दी गई।

सूरत जिला

हडतालें प्राय सभी कस्बों मे रही और कई जगह काफी अर्से तक चली। कपडा-मिलें ३॥ मास तक, बाजार दो मास तक और विद्यार्थियों की हडताल एक साल तक रही। गोलियां सूरत, जलालपुर और बारडोली में कई बार चली।

सूरत गुजरात प्रान्त का एक महत्त्वपूर्ण जिला है। व्यापार तथा खुशहाली यहा पर काफी है। सूरत में मुसलमानो की तादाद भी काफी है। सूरत जिले में आन्दोलन का उतना व्यापक रूप तो न रहा, पर सूरत शहर में काफी चहल-पहल रही। विद्यार्थियो के आन्दोलन का रूप बहुत काफी बढ़ा-चढ़ा रहा।

सूरत में ३० से अधिक पुलिस-चौकियो पर जनता के सामूहिक व गुरिला आक्रमण हुए, बहुत से डाकखानो को भी जलाया गया तथा किशन और तिवरवा रेलवे स्टेशनो पर भी आक्रमण किये गए।

तोड़-फोड के कार्य में सूरत पीछे नहीं रहा। सूरत शहर व जलालपुर ताल्लुके में निरन्तर तार काटने का प्रोग्राम चलता रहा। बारडोली में काफी दूर तक रेल की पटरिया उखाड दी गई। दिपाली और जलालपुर में भी रेल की पटरियाँ उखाडी गई। तापती वैली में ९ माह तक बराबर रेल की पटरियो को उखाडने का सिलसिला जारी रहा।

सूरत जिले में १,६५,३५० रुपया सामूहिक जुर्माना हुआ, पर इससे कही अधिक गुण्डो की मदद से वसूल किया गया। सूरत जिले के सारे कांग्रेस-सगठन पर पाबन्दी लगा दी गई। जितने आश्रम थे उन पर कब्जा कर लिया गया। सूरत की म्युनिसिपेलिटी ने आन्दोलन में काफी मदद दी और इसीलिए उसको मुअत्तिल कर दिया गया।

सूरत जिले में कुल १२८१ गिरफ्तारिया हुई और ३७६ व्यक्तियो को नजरबन्द किया गया। इसके अलावा ९०५ व्यक्तियो को सजायें हुईं।

भड़ौच जिला

भडौच जिले के जम्भूसर ताल्लुके में आन्दोलन की गतिविधि तीव्र रही। यहा के आन्दोलन ने महाराष्ट्र सूबे के सतारा जिले के आन्दोलन जैसा रूप ग्रहण किया। यहा के प्रमुख नेता श्री छोटाभाई का हिंसा के साधनो में विश्वास है। उन्होने इस आन्दोलन-काल में अपनी शक्ति के अनुसार जनता को हिंसात्मक साधन अपनाने का प्रोत्साहन दिया। अत कुछ नवयुवक इस विचार-धारा से प्रभावित होकर ताल्लुके में अपनी सरकार कायम करने तथा पुलिस-चौकियो व थानो पर आक्रमण करने की नीति को अपनाने लगे। ये नवयुवक विशेषत वही लोग थे जो आन्दोलन-काल से पहले अखाडो में व्यायाम आदि करते थे। इनके विचार प्रारम्भ से ही हिंसा की ओर झुके हुए थे। ठीक इसी समय इन लोगों को प्रमुख बागी मेघजी नायक का भी सहयोग प्राप्त हुआ। मेघजी भडौच जिले में एक विचित्र बागी है जिनके लिए जनता में बडे विचित्र खयाल

है। मेघजी ने, सुना जाता है, कभी भी किसी गरीब को नही लूटा। इसके विपरीत वे अमीरो को लूटकर गरीबो की सहायता किया करते है। इस जिले में थानो पर आक्रमण किये गये और सरकारी हथियारो को छीनकर वहा से हटाने के सफल व असफल प्रयत्न हुए। भडोच जिले मे आमदोरफ्त के रास्ते भी थोडे है, और इसलिए पुलिस आक्रमणकारियो को तेजी से पकडने मे सफल नही हुई। उसके विपरीत मेघजी और छोटाभाई के लूटने के अपने प्रोग्राम सफल रहे। उन लोगो ने पुलिस की वर्दिया पहनकर कई थानो पर प्रहार किये और इस प्रकार ३ माह तक इन लोगो ने अपने अपने इलाको मे अपना राज्य स्थापित रखा।

सरकारी आकडो के अनुसार इस जिले में १७१ गिरफ्तारिया हुईं, ९९ नजरबन्द किये गए और ७२ को सजायें दी गई। गैर-सरकारी सूत्रो के अनुसार गिरफ्तारियो की सख्या इमसे कही अधिक रही।

पंचमहल जिला

नेताओ की गिरफ्तारी के पश्चात् इस जिले म भी हडतालें और सामूहिक प्रदर्शन प्रारम्भ हुए और सरकार ने लाठियो की बौछारो से उसका स्वागत किया। विद्यार्थियो ने स्कूल कालेज छोडे और हडताल करने के कारण कितने ही दूकानदार पकडे गय। इस जिले मे गोलीकाड केवल एक बार ही हुआ। एक फरार को पकडने के लिए पुलिस को गोलिया चलानी पडी। ठीक इसी तरह तोड-फोड के कार्य भी कम हुए। हा, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड आफिस जलाये गए और कलोल मे दो-तीन पुलिस-चौकियो पर बम के विस्फोट हुए। कलोल तालुके मे शिवराज ग्राम के पास गुजरात रेल की पटरी उखाडी गई। इसका तात्पर्य यह था कि पुलिस और फौज की टुकडिया जो कलोल मे दमन करने के लिए आ रही थी, उनको रोका जाय। इस उद्देश्य के लिए कलोल रेलवे पुल को तोडने के प्रयत्न किये गए। इस प्रकार कई गाडिया गिर पडी और सैनिको के चोटे आई। मेनसेना और कलोल मे भी रेल का चलना बन्द हो गया था। कलोल के नज़दीक हज़ारो आदमी एक मेले में इकट्ठे हुए और वे अपने साथ लाठिया व बर्छी इत्यादि शस्त्र भी लाये। पुलिस और जनता मे झगडा हुआ। इस ज़िले मे औरतो ने भी काफी सख्या मे भाग लिया। करौंदी ग्राम मे कुछ थोडे से गुरिलो ने पुलिस की टुकडियो से हथियार रखवा लिये। पर फौज ने गाव वालो से इस कार्य का काफी बदला लिया। कलोल में रेवेन्यू दफ्तर भी जला दिया गया। इन इलाको में पुलिस और गुरिला दस्तो के इक्के-

दुक्के कई झपट्टे हुए । इस जिले मे २८३ व्यक्ति गिरफ्तार किये गए, ३१ नजरबन्द रखे गये और २४४ को विभिन्न सजाये दी गई ।

महाराष्ट्र

महाराष्ट्र का भारत के इतिहास मे अपना निराला स्थान है । यहा के लोग मेहनती, जफाकश, हृष्टपुष्ट, गठीले तथा तीव्र बुद्धि है । इस इलाके की भौगोलिक स्थिति और खासकर पथरीली और पहाडी जमीन का यहा के लोगो के जीवन, शरीर तथा विचार-धारा पर गहरा प्रभाव पडा है । स्वभावत महाराष्ट्र के लोग गुरिल्ला लडाई के लिए बहुत ही उपयुक्त है । उनका इतिहास भी उन्हे इस ओर प्रोत्साहन देना है ।

महाराष्ट्र मे ब्राह्मण व अब्राह्मण दो पार्टिया है । विशेषत सरकार के सारे महकमो पर तथा उन्नति के सारे साधनो पर ब्राह्मणो का ही आधिपत्य है, पर अब काग्रेस की गतिविधि के साथ अब्राह्मण लोगो मे बडी जागृति फैल रही है और उनके पढे-लिखे लोग हर क्षेत्र मे छा जाना चाहते है । महाराष्ट्र में कई जिलो मे आन्दोलन ने जो जोर पकडा उसका एक कारण यह भी था कि ब्राह्मण लोग ज्यादातर सरकारी कर्मचारी थे और उनके विरुद्ध जनता मे काफी भाव थे । अत सन् १९४२ मे इन इलाको मे जब जनता उठी तो उसे इस बात से भी प्रोत्साहन मिला कि वह ब्रिटिश नौकरशाही के साथ इस ब्राह्मण-शाही का भी अन्त कर देगी । महाराष्ट्र मे इस आन्दोलन मे गाव के लोग अधिक आये और आन्दोलन की गति खानदेश, सतारा, कोल्हापुर रियासत और शोलापुर में अधिक रही ।

महाराष्ट्र के देहातो व प्राय सभी कस्बो ने सन् १९४२ में अपना खेल खेला । सरकार ने अपनी पूरी शक्ति के साथ जनता के इस महान् एव प्रबल प्रयत्न को कुचलने की कोशिश की । प्रारम्भ मे बडे-बडे शहरो में हडताले और प्राय विराट प्रदर्शन शुरू हुए। बाद में पूना, शोलापुर, नासिक और अहमदनगर के सभी स्कूल व कालेज बन्द होगये और इस प्रकार हजारो विद्यार्थियो ने आन्दोलन की गतिविधि को बढाने मे सहायता दी ।

पूना में गोली-काण्डों की भरमार

१० अगस्त को परसराम भाऊ कालेज के सामने विद्यार्थियो का एक विशाल समूह इकट्ठा हुआ । पुलिस ने गोलिया चलाई । जनता गोलियो की बौछारो मे इधर-उधर भागने लगी । पुलिस वालो ने गलियो तथा बाजारो मे भागने वाला जनता को लाठी से मारना शुरू कर दिया और डाक्टरो तक को

किसी प्रकार की मदद न करने दी। इस प्रकार सैकडो आदमी घायल हुए। पर पूना-निवासी विना किसी भय के निरन्तर अपन जुलूस निकालते रहे। अनेक मर्तबा लाठी-वर्षा तथा गोलियो की बौछारें हुई। विद्यार्थियो के एक समूह ने शिवाजी मदिर पर एक झडा लगाकर शहर मे जुलूस निकालने का प्रयत्न किया। पुलिस ने गोलियाँ चलाई और कई दर्जन विद्यार्थी घायल हु । रात को जनता की टुकडियो ने पुलिस के थानो व चौकियो पर आक्रमण किया। गोलिया चली और दो आदमी मरे। पूना की पुलिस ने जब काग्रेस तथा अन्य लोक-नेताओ को गिरफ्तार कर लिया तो हजारो की तादाद में विद्यार्थी सैनिको व पुलिस के सिपाहियो के घेरो को चीरते हुए आगे बढने का प्रयत्न करने लग। पुलिस ने गोलिया व लाठिया चलाई। दो रोज के बाद पूना शहर को फौज के आधीन कर दिया गया जिसने कितनी ही बार इधर-उधर अन्धाधुन्ध गोलिया चलाईं। इस प्रकार चार रोज तक शहर में फौज का अधिकार रहा। आन्दोलन सतह मे हटकर गुप्त षड्यत्र का रूप धारण करने लगा। आन्दोलन को जीवित रखने के लिए लोगो ने गुप्त सगठन कायम कर लिये।

अब शहर में तोड-फोड के कार्य अधिक मात्रा मे होने लगे। कैपिटल सिनेमा में बम फटा। इस सिनेमा में अधिकतर गोरे सिपाही आते थे। इस विस्फोट मे ५ गोरे सैनिको की मृत्यु हुई। पूना के निकट गोली-बारुद के एक गोदाम मे भयकर आग लगी, जिसके कारण एक करोड रुपये से अधिक का नुकसान हुआ।

जो गोली-बारूद इन विभिन्न काण्डो में इस्तेमाल किया गया, सुना जाता है कि वह कुर्की के फौजी गोदाम से आया था। यदि यह सच हो तो ऐसा फौज के सैनिको और अफसरो की सहानुभूतिपूर्ण रवैये के कारण ही हुआ होगा। बाद में एक महाराष्ट्र षड्यत्र केस भी चला जिसमें इस फैक्ट्री के २५ आदमी पकडे गये थे। पूना मे आन्दोलन ज्यादा काल तक न रहा, किन्तु जो कुछ हुआ उसमे विद्यार्थियो का विशेष हाथ था। लगभग ३० व ४० जगह टेलीफोन के तार भी काटे गये। तोड-फोड के कार्य अक्तूबर व नवम्बर मास में अधिक हुए।

पूर्वी व पश्चिमी खानदेश

पूर्वी व पश्चिमी खानदेश मे यद्यपि आन्दोलन का रूप अधिकतर सामूहिक न रहा, पर पूर्वी खानदेश के कुछ इलाको मे, विशेषकर नन्दूबार और अमलनेर के इलाको मे आन्दोलन का रूप बडा ही उग्र और व्यापक रहा। प्रारम्भ मे इन जिलो के शहरो में हडतालें, जुलूस और सभाये हुई जिनको

लाठी-प्रहारो द्वारा तितर-बितर कर दिया गया। १४ व १५ अगस्त को नन्दूबार मे विद्यार्थियों का एक जुलूस निकला जिस पर पुलिस ने गोलिया चलाईं। यद्यपि विद्यार्थियों का जुलूस शान्तिपूर्वक सडको व गलियो में से गुजर रहा था, किन्तु पुलिस ने उन पर बेतो की बौछारे शुरू कर दी। बहुत से विद्यार्थी घरो मे घुस गये। जो किसी जगह न घुस सके उन पर एक थानेदार ने गोली चलाई। वह उत्तेजना से पागल होकर कुछ छात्राओ की तरफ लपका। इसी समय उसके सामने एक लडका आया जिसने अपना सीना खोलकर उससे गोली मारने के लिए कहा। थानेदार ने लडके के गोली दाग दी, पर सौभाग्य से वह उसे न लगी। लडके ने बिना किसी हिचकिचाहट के थानेदार को फिर गोली मारने की दावत दी। इस बार उसने फौज के सिपाहियो से उसे पकडने के लिए कहा और इस प्रकार उसे पकडकर गोली मार दी गई। यह वीर वही जमीन पर गिर पडा। उसके पश्चात् थानेदार एक टोली मे घुसा और एक लडके को गोली मारी। इस प्रकार ४ लडके मरे और १७ जख्मी हुए। उन्हें किसी भी प्रकार की डाक्टरी सहायता नही दी गई। एक वकील को, जो गाधी टोपी पहने पास ही तागे मे बैठे जा रहे थे और जिन्होने इन जख्मियो के प्रति सहानुभूति दिखानी चाही थी, तागे से नीचे खीच लिया गया और कोडे लगाये गये।

पूर्वी खानदेश के अमलनेर इलाके मे आन्दोलन का रूप उग्र रहा। यह वह इलाका है जहा महाराष्ट्र प्रात के कितने ही प्रमुख किसान व मजदूर नेता पैदा हुए है। साने गुरुजी यही के रहने वाले है। इस इलाके मे युवतियो ने भी काफी हिस्सा लिया। यहा के नेता डा० उत्तम पाटिल थे जो कि एक किसान के घर मे पैदा हुए थे। इनके पीछे इनकी बीबी लीला पाटिल ने भी आन्दोलन मे बहुत हिस्सा लिया और तोड-फोड के अभियोग मे उन्हे ६ साल की सजा हुई। वह पूना हॉस्पिटल से पुलिस की हिरासत से फरार हो गई। सन् १९४४ मे डा० उत्तम पाटिल भी गिरफ्तार हुए, परन्तु वह भी पुलिस हिरासत से भाग गये और गुरिला आन्दोलन का सचालन करते रहे।

अमलनेर में इन लोगो ने एक सामूहिक मोर्चा लगाया जिस पर लगभग ३ हजार आदमी जमकर दृढता के साथ पुलिस से लडे और पुलिस-स्टेशनो, डाकखानो, रेलवे स्टेशनो तथा ताल्लुका कचहरी पर कांग्रेस का झडा फहराने के लिए आक्रमण किये। काफी लोग पकडे गये और अन्त मे गोली भी चलाई गई। कुछ अर्से बाद आन्दोलन का सामूहिक रूप छिन्न-भिन्न होने लगा और वह गुरिला युद्ध के रूप मे बदल गया। इन दोनो जिलो की भूमि और भौगोलिक स्थिति गुरिला युद्ध के लिए उपयुक्त भी है।

नासिक

नासिक शहर में नेताओं की गिरफ्तारी के बाद फौरन ही हड़ताल हुई और रोजाना जुलूस निकलने शुरू होगये। पुलिस कुछ लोगों को पकड़ने के लिए आई तो लोगों ने पुलिस के हथियार छीन लिये। उसके बाद पुलिस ने नासिक में लाठियों की बौछारों से आतंक फैलाना शुरू कर दिया। गोली भी चली। आन्दोलन ने गुप्त रूप धारण कर लिया। तार काटने, डाकखानों को जलाने, रेलवे लाइनों को उखाड़ने के सामूहिक काम भी हुए। ब्रिटिश नौकरशाही ने सामूहिक जुर्माने किये। नासिक जिले के देहातों में भी आन्दोलन हुआ। इसमें मुख्यतः किसान लोग थे। सवा महीने पश्चात् नासिक में अन्न के लिए आन्दोलन शुरू हो गया।

अहमदनगर

कांग्रेस-कार्य-समिति के सदस्य अहमदनगर में रखे गये, इस कारण इस जिले का महत्त्व आन्दोलन की दृष्टि से और भी बढ़ गया। सच तो यह है कि आन्दोलन-काल में सारे देश की आंखें अहमदनगर के किले की ओर ही लगी रहीं। कितने ही मुर्झाये दिल आशा व प्रोत्साहन के लिए किले की ओर देखते थे। यह किला पिटी व पिसी जनता की आशाओं व आकांक्षाओं का केन्द्र बन गया। पटवर्धन बंधु भी यहीं के रहने वाले थे। यहां के आन्दोलन में मुख्यतः किसानों ने हिस्सा लिया। प्रारम्भ में हड़तालें हुईं, विरोध-प्रदर्शन हुए, सभायें हुईं और अन्त में आन्दोलन का रूप गुरिला युद्ध में बदल गया। तोड़-फोड़ के कार्य भी काफी हुए। अहमदनगर जिले के एक बेंच मजिस्ट्रेट की अदालत में आग लगाई गई। केण्टोनमेण्ट में गुरिला तबके ने पुलिस के सिपहियों की वर्दी उतरवा ली।

जिले के अन्दर गावों में भी आन्दोलन फैला। कोपर गाव और शेगाव में काफी समय तक निरन्तर तार काटने का कार्य चलता रहा और अधिकारियों के लिए अपना काम चलाना काफी मुश्किल कर दिया गया। डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट के यहां तथा मॉडर्न हाईस्कूल और लड़कियों के स्कूलों में कई बार बम-विस्फोट भी हुए। स्कूल बहुत दिनों तक बन्द रहे। तोड़-फोड़ सम्बन्धी कार्यों का पता चलाने के लिए पुलिस ने काफी तलाशियां ली। इन तलाशियों में दो फौजी ठेकेदारों और एक दूकानदार के यहां भी तलाशी हुई।

सितारा

सन् १९४२ के खुले विद्रोह में सितारा जिले ने अपना एक निराला

ही इतिहास बनाया है। इस जिले की अपनी विशेष स्थिति है, जिसका वहा के आन्दोलन के विकास व गतिविधि पर खास प्रभाव पड़ा है। यह एक पहाडी जिला है और ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत मशहूर है। मराठा साम्राज्य का सितारा एक प्रमुख शहर रहा है और मराठे अपने सैनिक गुणो के लिए इतिहास में प्रसिद्ध हुए है। उनमे बडे उच्च श्रेणी के नेता हुए हैं। भारतीय सेना मे भी सितारा के सिपाहियो की काफी बडी सख्या है। यह जिला अग्रेजो के लिए सैनिको की भर्ती का केन्द्र है। सितारा के आदमी हृष्ट-पुष्ट, गठीले तथा बहादुर है। पूर्व की ओर सितारा जिला पश्चिमी घाटो और नीरा नदी के साथ उत्तर से शुरू होता है और दक्षिण मे वरना नदी के साथ समाप्त होता है। पश्चिमी भाग पहाडी कतारो से भरा पडा है। इसी जिले मे महाबलेश्वर का विख्यात पहाड है। कृष्णा नदी भी यही से निकलती है। पूर्वी भाग कम उपजाऊ है जहा वर्षा भी कम होती है।

सन् १९२१ से यहा पर जन-आन्दोलन का जन्म हुआ। प्रारम्भ म सत्यशोधक आन्दोलन का श्रीगणेश हुआ। इस आन्दोलन का उद्देश्य कुछ सामाजिक सुधार करना था। सन् १६२७-२८ में बारदोली मे किसान-सघर्ष और लगानबन्दी आन्दोलन शुरू हुआ तो सितारा के किसानो मे भी जागृति पैदा हो गई और वह बारदोली के किसानो से प्रोत्साहन लेने लगे। इसके थोडे दिनो बाद सन् १६३० का सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ और गान्धीजी के डान्डी कूच ने सितारा जिले के किसानो मे एक नई स्फूर्ति व आजादी की इच्छा पैदा कर दी। लगभग ५७ आदमी इस जिले से जेल गये और हजारो किसानो ने जगल-सत्याग्रह मे भाग लिया। तम्बूरा, रेठरी और बिलेशी गाँवो मे इस सत्याग्रह ने विशेष स्थान प्राप्त किया। उस समय यहा अपनी सरकार बनाने के प्रयत्न हुए, पर पुलिस की बडी ताकत द्वारा उन्हे दबा दिया गया।

सितारा में जो बीज सन् १६३० मे बोया गया था, वह सन् १६४२ में बडे वृक्ष के रूप मे प्रकट हुआ। आन्दोलन के व्यापक होने के कई कारण थे। सितारा जिले के प्राय हर गाव के कितने ही लोग फौज मे भरती होगये थे। उनके घर वालो को उनकी चिन्ता थी। अग्रेजी साम्राज्य से लोगो का विश्वास उठ रहा था। अत इस स्वतन्त्रता आन्दोलन मे उनको अपने घर वालो के लौटने की एक झलक दिखाई दी। यहा के किसान काफी जागृत हो चुके थे। यहा की भौगोलिक स्थिति आन्दोलन को लम्बे अर्से तक जारी रखने में सहायक हुई और परम्परा ने गुरिला युद्ध के लिए प्रेरणा दी।

९ अगस्त को जब सितारा जिले की जनता ने कांग्रेसी नेताओ की

गिरफ्तारी की बात सुनी और अपने जिले में गिरफ्तारियां होने देखी तो काफी जोश पैदा होगया। सैकडो जगह सभायें हुई और उनमें कार्यकर्ताओं ने लोगो से जीने व मरने की शपथ ली। इन सभाओं में कितने ही गावो के मुखियों ने इस्तीफे दिये। जब महाराष्ट्री नेता बम्बई से लौटकर आये तो जनता ने उनका पवित्र तीर्थ से लौटे हुए यात्रियो की भाति हार्दिक स्वागत किया। लोग बडी उत्सुकता से पूछते थे, 'गान्धीजी ने क्या कहा ? क्या आदेश दिया ? क्या अब वह बूढे हो गये है ?' इस प्रकार के प्रश्न पूछते हुए उनकी आखो से अश्रुधारा बहती थी। अन्त में खिन्न होकर वह पूछते थे, 'क्या गांधी जी पकड लिये गये ? उन्हे क्यो पकडा गया ? निर्दयी सरकार को उन्हें इस बुढापे में पकडते हुए दया नही आई ?' और तब वह क्रोध से उन्मत्त हो पागल की तरह पूछते थे, 'अब हमें क्या करना चाहिए ? गान्धीजी ने हमें क्या करने का आदेश दिया है ?' लौटे हुए काग्रेसी नेताओ ने जनता को कांग्रेस का प्रोग्राम व गान्धीजी का आदेश बताया।

यद्यपि जिले मे दफा १४४ लग चुकी थी, पर लोगो ने लगभग १०० से अधिक स्थानो पर सभायें की। किरलोसकर कापर फैक्ट्री मे पूर्ण हडताल हुई और यह फैक्ट्री एक माह तक बन्द रही।

लोगो ने अपना क्षोभ ताल्लुका कचहरी के सामने शान्त प्रदर्शन करके उतारना चाहा। ताल्लुका के प्रत्येक गाव से ग्रामवासी एक निश्चित तिथि पर जुलूस बनाकर 'भारत छोडो' का नारा लगाते हुए किसी ज़िम्मेदार कांग्रेस-कार्यकर्ता के नेतृत्व मे ताल्लुका कचहरी के पास आये। वहा उनके नेता ने कांग्रेस-झडा फहराया और अगस्त-प्रस्ताव लोगो को समझाया। उसके बाद व्याख्यान हुआ और लोगो ने झडा अभिवादन किया। लोग विजय-मुद्रा में पीछे हटे। यह लोगो का शान्तिमय कदम था। २४ अगस्त से १० सितम्बर तक यानी ९ अगस्त के बाद दूसरे पखवाडे मे ताल्लुका मे ५ बार शान्तिमय प्रदर्शन किये गए। इस प्रकार का प्रथम प्रदर्शन कराद में २४ अगस्त को हुआ। यह लोगो के लिए एक नई चीज़ थी। श्री बालकृष्ण पटेल उन्दालय निवासी के लगभग २५ हज़ार किसानो ने शान्तिपूर्वक प्रदर्शन में भाग लिया और कचहरी नेतृत्व में तक गये। कचहरी के हाते के बाहर एक महती सभा हुई। तभी एक पुलिस अधिकारी आया और उसने नेता से पीछे हट जाने को कहा। इसके बाद हथियारबन्द पुलिस भीड के बीच मे घुसी। बन्दूक की चोट से एक कांग्रेस-कार्यकर्ता श्री पाडुरग देशमुख घायल हुए। इससे लोग आवेश मे आ गये। इस पर नेता खडा हुआ और लोगो को तितर-बितर हो जाने का आदेश दिया। उसने

कहा, "हमारा प्रदर्शन सफल हो चुका। हम विजयी हो गये। अब आप लोग घर चले जाइये। मै जानता हू कि हम लोग इस समय इतनी सख्या मे है कि हम उनको पकड़ सकते है जो हम पकडना चाहते है। पर हमारे प्रदर्शन का तात्पर्य यह नही है। मैने शान्तिपूर्ण तरीके पर कैदी होना स्वीकार कर लियो है। गान्धीजी ने हमको कुछ करने या मरने का आदेश दिया है। लेकिन उन्होने हमे अहिंसक रहने के लिए भी कहा है। अगर हम हिंसात्मक कार्य करेंगे तो गान्धीजी उसे पसन्द न करेगे। उनके हृदय को बहुत दु ख होगा। इसलिए आप शान्तिपूर्वक घर चले जाइए।"

गान्धीजी के नाम पर यह एक कसम थी। लोगो ने अपने नेता का कहना माना और वे शान्तिमय ढग से अपने घरो को वापस लौट गये।

सितारा ने आगे चलकर, जब आन्दोलन ने गुप्त रूप धारण किया, तो इस दिशा मे और भी असाधारण ख्याति प्राप्ति की। जो कार्यकर्ता फरार हुए उन्होने समानान्तर सरकार की स्थापना की। इसे पटरी सरकार कहा जाता था। इसने सरकार-परस्तो में भारी आतक बिठा दिया। उसका न्याय-शासन बडा सख्त था। जो लोग इस सरकार की दृष्टि से अपराध करते थे और विदेशी राज को मदद पहुचाते थे, उनको अग-भग करके सख्त सजा दी जाती थी। जब अन्य भागो मे शान्ति होगई, तब भी सितारा मे सरकार का दमन बराबर जारी रहा। वहाँ पूर्ण शान्ति तो काग्रेसी मन्त्रि-मण्डल की स्थापना के पश्चात् ही कायम हुई, जब कि तमाम दमनकारी कार्रवाई बन्द की गई।

कर्नाटक

भारतवर्ष के राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास मे कर्नाटक का सदा महत्त्व-पूर्ण स्थान रहा है। सन् १९२१ से १९४२ तक जितने भी आन्दोलन चले, कर्नाटक के लोगो ने इन सबमे अपनी प्रतिभा, सगठन-शक्ति व सामूहिक जोश का प्रदर्शन किया है और अनेक प्रकार की यातनाये सही है। स्वभाव से ही यहा के लोगो का गान्धीजी के नेतृत्व मे पूर्ण विश्वास रहा है। कर्नाटक का शानदार इतिहास है। वह कला व सस्कृति के लिए विख्यात है। कर्नाटक के लोगो को सगीत से बडा प्रेम है और वे स्वभावत धार्मिक है। शायद इसी कारण उन्हे गान्धीजी के नेतृत्व मे और अधिक विश्वास है। दक्षिण के वीरो की अनेको कहानिया प्रचलित है। यहा रेड्डी, तलवार, वादम, नायक आदि कितने ही प्रकार के सैनिक है जिन्होने अपनी बहादुरी व सैनिक कला के कारण कर्नाटक मे ही नही बल्कि दक्षिण के और सूबो मे भी ख्याति प्राप्त की है।

मैंने उपरोक्त बातों को थोड़ा-सा केवल इसलिए बताने का प्रयत्न किया कि आन्दोलन की गतिविधि पर प्रत्येक प्रान्त की जनता की मनोवृत्ति, भावनाओं, कल्पनाओं तथा बाह्य परिस्थितियों का गहरा प्रभाव पड़ता है। कर्नाटक में जब कांग्रेसी नेताओं के पकड़े जाने की खबर फैली तो वहां के लोगों ने विभिन्न आन्दोलनों द्वारा जो ट्रेनिंग पाई थी, उसके अनुसार अपना विरोध प्रकट किया। वे लाखों की तादाद में संगठित रूप से उठे और आन्दोलन को सबसे अधिक लम्बे काल तक सामूहिक व व्यक्तिगत रूप से जारी रखा। इस दृष्टि से कर्नाटक प्रान्त सारे भारत में सर्वप्रथम है। किसी भी प्रान्त में इतने संगठित रूप में आन्दोलन का प्रवाह नहीं रहा। इसका श्रेय कर्नाटक के नेताओं को ही है। इतना ही नहीं जहां एक ओर कर्नाटक के गांव-गांव में विद्रोह की यह अग्नि फैली वहां दूसरी ओर हमने देखा कि वहां पर एक भी सरकारी कर्मचारी की हत्या नहीं हुई, हालांकि वहाँ लोगों के घरों को जलाया गया और उन्हें तरह-तरह की शारीरिक यातनाएं भोगनी पड़ी।

गान्धीजी का सन्देश

८ अगस्त, सन् १९४२ की रात को कर्नाटक के नेता श्री गोपालराव विलवादी गान्धीजी के पास सन्देश लेने के लिए गये। गांधीजी ने संघर्ष की सम्भावना समझते हुए यह सन्देश दिया, "मैं कर्नाटक के रहने वालों से यह आशा करता हूं कि वे आने वाले यज्ञ में अपनी पूर्ण शक्ति से योग देंगे।" इसका वहां के लोगों पर इतना गहरा असर पड़ा कि उन्होंने अनगिनत लाठियों के प्रहारों, गोलियों की बौछारों, और फौज व पुलिस की ज्यादतियों को दिलेरी व जवामर्दी से खुशी-खुशी सहा। लगभग २ हजार आदमी आन्दोलन में पकड़े गये।

आन्दोलन की गतिविधि

कर्नाटक में होने वाले आन्दोलन को हम तीन भागों में बांट सकते हैं—

१ ८ अगस्त सन् १९४२ से लेकर १६ सितम्बर सन् १९४२ तक।

इस काल में वहां की जनता ने सामूहिक विद्रोह किया और न्याय व शान्ति-रक्षा का भार अपने ऊपर ले लिया। गांव-गांव और कस्बे-कस्बे में हड़तालें, सभायें और विरोध-प्रदर्शन हुए और इस प्रकार जनता ने ब्रिटिश राज्य को मानने से साफ इन्कार किया। पर यह जो कुछ हुआ, वह सब संगठित नहीं हुआ। इसमें जोश की मात्रा अधिक थी।

२ १८ सितम्बर सन् १९४२ से लेकर ५ नवम्बर सन् १९४२ तक।

इस काल में कर्नाटक के नेताओ ने जनता के जोश व शक्ति को ठीक तरीके से प्रयोग करने के लिए आन्दोलन को सगठित रूप दिया और सरकार के विरुद्ध सगठित नीति को अपनाया । इसी काल में कर्नाटक में सरकारी राज्य-व्यवस्था तथा मार्ग-व्यवस्था रेल, तार, टेलीफोन आदि को अस्त-व्यस्त, करने का सगठित प्रयत्न किया गया ।

३ ५ नवम्बर सन् १९४२ से लेकर ५ मई सन् १९४६ तक ।

इस काल में कर्नाटक मे सगठित खुले सामूहिक प्रयत्न हुए । सरकारी राज्यसत्ता प्राप्त करने के लिए यह प्रयत्न शुद्ध सत्याग्रही आधार पर थे । पर इस बार उनमें अधिक तेजी व शक्ति थी । इस प्रकार आन्दोलन का पहला काल असगठित व क्षणिक था, दूसरे में सगठित व सतत प्रयत्न थे और तीसरे मे सत्याग्रही सिद्धान्तो का पूर्ण न पालन किया गया । गान्धीजी के छूटते ही यहाँ के आन्दोलन की गति समाप्त हो गई ।

इन तीनो कालो मे जो आन्दोलन इस प्रान्त मे हुए और जिस प्रकार के प्रोग्राम बनाये गये उन्हे हम दो भागो में बाट सकते है । (१) सत्याग्रही विरोध प्रदर्शन और (२) सरकारी व्यवस्था को अस्तव्यस्त करने के तोड-फोड़ के काम । जहा तक पहली किस्म के कामो का सम्बन्ध है, उनका विस्तार से बताना मुश्किल है, पर फिर भी इस प्रोग्राम के अधीन इस प्रकार के कार्य किये गये :—

१ जुलूसो और जलसो पर लगे हुए प्रतिबन्ध को साफ खुले तरीके पर तोड़ा गया ।

२ छापेखानो तथा साइक्लोस्टाइल वाले प्रतिबन्धो की अवहेलना की गई ।

३ बुलेटिन व पोस्टर खुले रूप से बाटे गए ।

४. नमक कानून तोडा गया ।

५ अदालतो व शराब की दूकानो पर पिकेटिंग किया गया ।

६. बगैर टिकट के सफर किया गया ।

इस प्रकार के प्रोग्राम पर सारे प्रान्त में अमल हुआ और सरकार ने उसे पकड-धकड़, लाठी, राइफल की मार तथा भारत रक्षा कानून द्वारा विफल करने का प्रयत्न किया ।

तोड़-फोड़

इस प्रान्त मे जो तोड-फोड के कार्य हुए, उनमें मुख्य ये है —

१. टेलीग्राफ और टेलीफोन के तारो को उखाडा गया । इस प्रकार के

१६०० सफल व असफल प्रयत्न प्रान्त में हुए।

२ २२० गावों में गाव के रेकार्ड छीने व जलाये गये।

३ छोटे व बड़े लगभग ३२ डाकखानों को क्षति पहुची और उन पर कब्जा करने के प्रयत्न हुए। लगभग ५१ की सदी चिट्ठी डालने की सदूकनियों को बरबाद किया। लगभग १०० डाक थैले छीने गये और उन्हें बरबाद किया गया। लगभग १६ डाक ले जाने वाली गाड़ियों पर आक्रमण हुए और डाक के थैलों को छीना गया।

४ लगभग ४४ डाक बगलों को क्षति पहुची या पूर्ण बरबाद कर दिये गये। बगलों में उस काल में पुलिस व रेवेन्यू अफसरों के कैम्प थे।

५ लगभग ६५ शराब व गाजे की दूकानों पर आक्रमण हुए और उन्हें नष्ट किया गया और लगभग ५० डिब्बों को जिनमें शराब भरी हुई थी, बहा दिया गया।

६ २५७ गावों के सरकारी दफ्तर या तो क्षति-ग्रस्त हुए या नष्ट हुए।

७ १॥ लाख रुपये की सरकारी लकड़ी में आग लगा दी गई।

८ लगभग २६ रेलवे स्टेशनों को या तो जलाया गया या क्षति ग्रस्त किया गया।

९ लगभग ११ बार रेलगाड़िया पटरी पर से उतरीं और १३ दफा रेल की पटरिया उखाड़ी गई और रेलवे सम्पत्ति को क्षति पहुचाने के अनेक प्रयत्न किये गये।

नोट—केवल एक दफा एक मुसाफिर गाडी उतरी जिसमें एक आदमी की क्षति हुई। अन्यथा अधिकतर मालगाड़ियों को ही उलटने का प्रयत्न किया गया।

१० सड़को पर के लगभग २५ पुलियों के तोड़ने के सफल व असफल प्रयत्न हुए।

११ इस बार लगानबन्दी का प्रयत्न नहीं हुआ, सिर्फ सरकार जो रुपया वसूल करती थी उसे छीनने के अनेक प्रयत्न हुए।

१२ लगभग ३० पुलिस सिपाहियों की वर्दियां उतरवाई गईं और उनसे हथियार रखवा लिये गये।

विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि कर्नाटक प्रान्त में एक भी मिसाल ऐसी नहीं मिलती कि जनता ने किसी की व्यक्तिगत सम्पत्ति पर आक्रमण किया हो या उसे लूटा हो। सारा आन्दोलन सरकारी सत्ता के विरुद्ध केन्द्रित था और जब आन्दोलन के नेताओं को मालूम हुआ कि दो-चार जगह स्कूलों

के रिकार्ड जलाये गये तो उन्होने ऐसा न करने की हिदायत जारी कर दी। बाद मे इस बात का पता चला कि यह वह स्कूल थे जहा पर पुलिस ने अपने कैम्प डाल रखे थे।

दमन के तरीके प्राय सभी जगह एक-से रहे। डराना, आतक फैलाना, मासूम लोगो से रुपये वसूल करना आदि उपाय काम मे लिये गये। पर चूंकि कर्नाटक प्रान्त मे कितने ही कार्यकर्ता ऐसे थे जो आन्दोलन प्रारम्भ होते ही अपने घरो से भाग निकले थे और आन्दोलन का सचालन कर रहे थे, इसलिए पुलिस ने उनको पकडने के लिए उनके रिश्तेदारो व मित्रो को अनेक प्रकार की यातनाये दी। बेटे के बजाय बाप को पकडा गया और लोगो को पुलिस और फौज के घेरे मे जमा किया गया तथा इस प्रकार उनके हृदय मे भय बिठा-कर उनसे भागे हुए लोगो की जानकारी प्राप्त करने की कोशिश की गई।

प्रारम्भ मे धारवाड, बेलगाव और उत्तरी कनारा मे इन फरारो की सख्या, जो घोषित की गई, ३०,२२ तथा ३४ थी, लेकिन कुछ ही दिनो बाद फरारो की सख्या केवल धारवाड जिले मे ही २३२ तक पहुच गई। उन लोगो ने आत्म-समर्पण नही किये और पुलिस के नियम की अवहेलना की। जब पुलिस उन्हे न पकड सकी तो यह कार्य फौज को सौंपा गया। फौज ने बेलगाव ज़िले व धारवाड तथा रतनार जिले के प्रमुख इलाको को घेर लिया और पहाडो व जगलो को छान मारा। फौजी रात को गावो पर हमले करते थे। इनके आक्र-मणो का यह तरीका था कि गाव से बाहर लारिया खडी करके रात को गावो में चुपके से घुसते थे और सडको पर खड़े होकर आने-जाने वाले आदमियो को रोकते थे। रात भर उन्हे बन्द रखते थे और फिर उन सब जगहो की तलाशी लेते थे। जहा पर उन्हे किसी फरार का सन्देह होता था वहा न केवल घरो की तलाशी ली गई, बल्कि फरारो को एक-एक करके चुनने के भी प्रयत्न हुए। रात को घरो मे जा-जाकर टार्च की रोशनी व बन्दूको के प्रहारो से तलाशिया ली गईं। जगलो मे रात को उडने व चमकने वाले बम अर्थात् रोशनी करने वाले बम फेंके गये। रास्ते में जहा कही भी इक्के-दुक्के आदमी मिलते थे उन पर गोली चलाई जाती थी। इस प्रकार कितने ही लोग जख्मी हुए। पुलिस ने मार-पीट की तो हद कर दी। उगलियो मे पिनें चुभाना, रात को सोने न देना, तथा अन्य प्रकार की मानसिक यातनाए देने के काफी उदाहरण मिलते है। एक स्कूल मास्टर को बस से नीचे उतारकर इसलिए सडक पर खीचा गया कि उसने कांग्रेसी नारे बोले थे। बेतकी जिले मे एक छोटे से बच्चे के सारे दात तोड दिये गये, क्योकि उसने फरारो की बाबत कोई इत्तिला नही दी।

बेलगाव जिले के एक गाव में पुलिस की एक टुकड़ी ने ५० नारियों के साथ ६ नवम्बर सन् १९४२ को घेरा डाला और प्रत्येक पर की तलाशी ली। उस समय उस लाइन के टेलीग्राफ पोस्ट पर पुलिस और फौज का पहरा था। डिप्टी सुपरिण्टेण्डेण्ट और चार सब इंसपेक्टर वहा पर मौजूद थे। वहा पर उन्हें कुछ नही मिला। उन्होने केवल चर्खा-संघ के दो कार्यकर्ताओ को पकड़कर ही सन्तोष किया।

३ नवम्बर को आधी रात के कुछ देर पश्चात् कई सौ फौजी सैनिकों ने मकेश्वर ग्राम पर धावा बोला। सारे गाव व उसके खेतों तक को घेर लिया और गाव के लोगो को एक घर से दूसरे घर तक नहीं जाने दिया। लगभग २०-३० आदमियो को हिरासत में लिया और फिर बाद में छोड़ दिया। उत्तरी कनारा में डिप्टी सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिस ने कई सौ पुलिस के सिपाहियों सहित अकोला से बमेगौन और लुवेरे तक २० वर्ग मील के क्षेत्रफल पर धावा बोला। हर घर की तलाशी ली। इस प्रकार पुलिस ने फरारों के पकड़ने के कितने ही व्यर्थ प्रयत्न किये, पर इस इलाके के लोगो ने अपने कार्यकर्त्ताओं को, जो उन्हें अपने जीवन से भी कहीं अधिक प्यारे थे, बचाया और पुलिस तथा फौज के अनेक प्रयत्नो के बावजूद कार्यकर्त्ता आजाद लोगो की तरह घूमते रहे।

कर्नाटक में लगभग १८ जगह गोलिया चली। बगलोर में दो दिन के अन्दर पाच जगह गोलिया चली। इस प्रकार प्रान्त में लगभग १७८ आदमी मरे और ६०० घायल हुए। लगभग १६ जगह लाठी चार्ज हुआ और ३१ दफा में लगभग ९० आदमी सख्त जख्मी हुए और सैकड़ो को छोटी-मोटी चोटें आई। पुलिस ने फरार व्यक्तियो को पकड़ने के लिए ढाई सौ से १५ सौ रुपए तक के इनाम की घोषणा की और लगभग साढे तीन सौ कार्यकर्ताओ को गजट द्वारा फरार घोषित किया। लगभग ३ लाख ३६ हजार रुपए गावो व शहरों पर सामूहिक जुर्माने के रूप में लगाये गये, पर वसूल इससे कही अधिक किया गया। लगभग १५ गावो में इस जुर्माने को वसूल करने के लिए कुर्किया हुई। आन्दोलन-काल में लगभग ३ हजार कुर्किया हुई और लोगो के बर्तन, गाय, बैल, भैंस सभी कुर्क कर लिये गये। विभिन्न अपराधो में बहुत से लोगों पर मुकदमे चले और इस प्रकार कर्नाटक प्रान्त में ५ आदमियो को फांसी की सजा हुई और ११ को काला पानी। इसके अतिरिक्त और भी बहुत से लोगों को लम्बी सजाए हुई। सारे प्रान्त मे लगभग ७१५७ आदमी गिरफ्तार हुए, जिनमें से २५०० मैसूर रियासत के थे।

इन इलाको में से कुछ ने जुर्माना न देने का निश्चय किया। यह इलाके

निम्नलिखित हैं—पँचापुर, हीरा पागेस, वादी और होसूर, बेलगाव जिले में कुमारिली और गाकारा। उत्तरी कनारा जिले मे हीरावोगेसवादी ग्राम मे जब डिप्टी कलेक्टर साहब १५ नवम्बर १९४२ को जुर्माना वसूल करने गये तो उस गाव के मुखिया और अहलकारान ने कलेक्टर के साथ जाने और उस गाव के लोगो की सम्पत्ति कुर्क करने मे मदद देने से साफ इन्कार कर दिया। उत्तरी डिवीजन के कमिश्नर ने तो साफ तरीके से सरकार को लिख दिया कि जुर्माना वसूल करने की नीति से लोगो के अन्दर और आग भडकती है। फिर भी कर्नाटक मे जुर्माना वसूल करने मे एक प्रकार की खुली लूट हुई। अनेको जगह पुलिस ने सामान को लूट लिया और निर्दिष्ट जुर्माना देकर बाकी सामान अपने साथ ले गये।

कर्नाटक प्रान्त के न्याय-विभाग ने कितने ही व्यक्तियो को छोड दिया, जिन्हे नीचे की अदालतो ने बिना कानून-कायदे लम्बी सजाए दे दी थी।

कर्नाटक प्रान्त मे आन्दोलन-काल मे अनेक ऐसे उदाहरण मिलते है जब कि जनता ने बावजूद काफी उत्तेजना के हिंसा के मार्ग को नही अपनाया और न किसी व्यक्ति की सम्पत्ति को ही नुकसान पहुचाया।

असरगढ़ रेलवे स्टेशन के स्टेशन मास्टर ने एक प्रमुख कार्यकर्ता से शिकायत की कि उनका बटुआ छीन लिया गया है। उसने वहा पर उसकी तहकीकात की और उनका बटुआ वापस दिलाया।

इसी प्रकार जनवरी सन् १९४३ मे जब कि जनता की एक टुकडी ने अनकालजी पुलिस स्टेशन पर धावा बोला तो कुछ लोगो ने इन सिपाहियो का निजी सामान भी उठा लिया। पर बाद मे मालूम हुआ कि आग से बचाने के लिए उन लोगो ने उसे एक सुरक्षित स्थान पर रख दिया था। इस प्रकार के और भी कई उदाहरण मिलते हैं।

मैने ऊपर कर्नाटक मे होने वाले आन्दोलन का बाह्य रूप बताने का प्रयत्न किया है। जहा वह व्यापक था वहा सगठित भी था और उसकी गति-विधि से पता चलता है कि उसके नेता बडे ही नीति-निपुण थे। यहा पर सामूहिक प्रदर्शन और तोड-फोड़ दोनो ही प्रकार के कामो मे एक जैसी सगठन-शक्ति दिखाई देती है। जैसा मैने ऊपर बताया है, यहा के लोगो मे वीरता है और वे वीर की हृदय से पूजा करते है। इस कारण कर्नाटक प्रान्त मे कितने ही ऐसे अपूर्व उदाहरण मिलते है जिनको सुनकर गर्व से छाती ऊची हो जाती है। यदि इस प्रकार के उदाहरण कही यूरोप के रण-क्षेत्र मे हुए होते तो ब्रिटिश सरकार उन बहादुरो को तरह-तरह के खिताब और तमगे देती, पर पराधीन

भारत में तो गोलियो द्वारा ही उनका स्वागत किया गया।

वीरतापूर्ण कार्य

हुबली में गोलियो की बौछार से नरेन्द्र नामक एक छोटी उम्र के बालक की मृत्यु हुई। मरने से कुछ पहले डॉक्टर ने उससे पूछा कि तुम क्या चाहते हो, तो उस बहादुर बच्चे ने अपनी मुट्ठी बाधकर जोर से कहा, "मै स्वराज्य चाहता हू, और कुछ नही।" अगले दिन १५ हजार के समूह द्वारा उसकी अर्थी सजाकर जुलूस निकाला गया।

बेलगाव जिले में खदरीशिवपुर ग्राम मे ग्रामीण लोग एक जलसा करने के लिए इकट्ठे हुए और उन्होने अपने को पूर्ण स्वतन्त्र घोषित किया। यह खबर सुनते ही पुलिस के सुपरिण्टेण्डेण्ट सदल-बल गाव में पहुचे। उस समय गाव में प्रभात-फेरी निकल रही थी। पुलिस अफसर ने लोगो को तितर-बितर होने का आदेश दिया। लेकिन जुलूस के नेता शोतिया जोनिया ने कहा, "हम आजाद लोग है और आपके हुक्म को नही मान सकते। डिप्टी सुपरिण्टेण्डेण्ट ने गोली चलाने की धमकी दी। नेता ने धमकी को नजरअन्दाज किया और वही उसे गोली मार दी गई।

सवादत्तकी ग्राम मे जब एक प्रमुख नागरिक अमावपत की गिरफ्तारी हुई और उसे नभतल दायर के दफ्तर ले जाया गया तो एक बडे हुजूम ने उसे पुलिस से छीनना चाहा। गोलिया चली और जनता ने उनका वीरतापूर्वक मुकाबला किया अन्त में अमाघपत को छोड दिया गया।

विद्यार्थियों और मजदूरों का योग

अन्य प्रान्तो की भाति कर्नाटक प्रान्त मे भी विद्यार्थियो ने आन्दोलन मे अपूर्व जोश व बलिदान का भाव दिखाया। प्राय हर कस्बे में, जहा स्कूल थे, उन्होने हडतालें की, भारत-रक्षा-कानून की धाराओं को तोडा और प्रचार के लिए गावो में गये। कितनी ही जगह उन्होने स्टेशनो को जलाया। देवनगर और बहावर के विद्यार्थियो ने जुलूस निकालने, झडो की सलामी देने, बुलेटिन बाटने व छापने के कार्यो में विशेष हाथ बटाया। धारवाड, हुबली, घटक, गेराव के विद्यार्थियो ने विदेशी कपडे और टोप इत्यादि जलाने तथा अपने प्रोफेसरो व अध्यापको को खादी से कपडे देने के प्रोग्राम को चलाने का भी प्रयत्न किया। लगभग ३०० विद्यार्थियो को सजाए हुई। कितने ही विद्यार्थियो ने कई माह तक पनावा और देवनगर के बीच बगैर टिकिट सफर किया और रेलगाडी के इजनो पर काग्रेसी झडा लगाया और यूरोपियन लोगो को गाधी टोपिया पहनाने का प्रयत्न किया।

कर्नाटक मे बहुत कम मिले है। फिर भी भारत मिल्स और हुबली रेलवे वर्कशाप में हडतालें रही।

आन्दोलन की विशेष बातें

सन् १९४२ के नवम्बर मास मे अखिल भारतीय खुफिया विभाग ने अपनी रिपोर्ट छापी थी। उसमें लिखा है कि कर्नाटक के प्रमुख काग्रेस-नेता आन्दोलन से बाहर रहे अथवा फरार होगये। उन्होने अपने सगठन को सुदृढ बनाकर सूब में तोड-फोड के काम प्रारम्भ किये। पर वास्तविकता उसके विपरीत है। निस्सन्देह कर्नाटक के प्रमुख नेता बाहर रहे और उन्होने आन्दोलन का सगठन भी किया पर उन्होनें अपनी पूरी शक्ति इस ओर लगाई कि आन्दोलन को लम्बे अर्से तक जारी रक्खा जाय और उस समय के विभिन्न कार्य-क्रमो को सफलता पूर्वक चलाया जाय। चूकि इन लागो का अपने-अपने इलाको में गहरा प्रभाव था, इसलिए जनता ने उन्हे हर प्रकार की मदद दी। यह लोग खुले तरीके से गावो में घूमते थे और कार्य करते थे। हा, सरकारी कर्मचारियो के साथ सीधा मोर्चा न लेते थे। वे इस बात का ध्यान रखते थे कि किसी को जान की हानि न हो।

डेढ साल से अधिक काल तक कर्नाटक प्रान्त की जनता का साहस व जोश वैसा ही बना रहा, यद्यपि उसे दबाने व आतक फैलाने के अनेक प्रयत्न किये गये। पुलिस व फौज की लारिया गावो मे घुमाई जाती थी पर जनता के हृदय मे लचक पैदा नही हुई। वह इस प्रकार के आक्रमणों की आदी हो गई थी और उसने उनके प्रत्युत्तर देने के तरीके भी सीख लिये थे। लारी के आते ही यथा-सम्भव दूसरे गावो मे खबर भेज दी जाती थी।

अन्तिम प्रयास

आन्दोलन का अन्तिम काल ५-११-४३ से शुरू होता है, जब कि कर्नाटक प्रान्त के कार्यकर्त्ताओ ने सत्याग्रह-समिति बनाई और आन्दोलन के अन्दर पुन नई जान डाली तथा उसको सामूहिक रूप देने का प्रयत्न किया। समिति ने निश्चय किया कि सरकार की खाद्य-नीति तथा आये दिन होने वाली अन्य ज्यादतियो के विरुद्ध जनता को नये सिरे से अपना विरोध-प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया जाय। सभाए की जाय और जुलूस निकाले जाय तथा लगे हुए प्रतिबन्धो को तोडा जाय। इस प्रकार ५-११-४३ से ५-५-४४ तक ६०० आदमी और औरतो को सजाए हुई।

६ मई सन् १९४४ को जब गाधीजी छूटे तो कर्नाटक के कई कार्य-

कर्ताओं ने उनके आदेशानुसार खुले रूप से कार्य करके तथा अपने को सरकार को सौंपना शुरू कर दिया और इस प्रकार कर्नाटक प्रान्त का विद्रोह जो ६ अगस्त सन् १६४२ को शुरु हुआ था, कई उतार-चढाव के बाद समाप्त-प्राय हो गया।

कुछ आंकड़े

यद्यपि किसी प्रान्त के ठीक-ठीक आकडे प्राप्त करना मुश्किल है पर कर्नाटक के काग्रेस नेताओ व कार्यकर्ताओ ने सगठन को इतना व्यवस्थित और सुदृढ वना रखा था कि उनका अपने प्रान्त के हर जिले, कस्बे व गाव से सीधा सम्बन्ध रहा। फिर भी जो आकडे आगे दिये जाते है, हो सकता है कि वे अधूरे हो और वास्तविक आकडे कही अधिक हो।

गिरफ्तारियां

जिला	सख्या	घोपित गिरफ्तारिया
वेलगाव	२३२६	२२
बेलारी	१५१	
बीजापुर	३६५	
कुर्ग	७४	
धारवाड	१३३७	२८४
उत्तरी कनारा	६४४	१४
दक्षिणी कनारा	३८	
मैसूर राज्य	२५०४	
कुल योग	७४३६	३२०

आन्दोलन-काल मे सरकार ने फरारो को पकडने तथा तोड-फोड के कार्यो का पता चलाने के लिए २५० रुपये से लेकर ५०० रुपए तक इनाम देने घोषणा की। इनमें से १० धारवाड जिले तथा ६ वेलगाव जिले के कार्यकर्ताओ के फरारो के लिए घोपित किये गये।

गोली-काण्डों में जन-हानि

कर्नाटक प्रान्त में आन्दोलन में गोली काण्डो के फल-स्वरूप हमारे आकडो के अनुसार लगभग १८१ आदमी मरे और ५२० जख्मी हुए। कुछ स्थानो के अक प्राप्त न हो सके। वगलौर शहर में तोपखाने का भी प्रयोग किया गया और अश्रु-गैस कई वार छोडी गई।

जुल्मों की अन्य घटनायें

प्रान्त के कुछ ही स्थानो मे हुए जिन लाठी-प्रहारो के अक प्राप्त हुए हैं उनके अनुसार इन स्थानो मे ३१ मर्तबा लाठी-प्रहार हुए और उसके फल-स्वरूप ८९ व्यक्ति जख्मी हुए ।

दक्षिणी कनारा के कार्यकर्ता श्री सजीवन कामत को १५ बेंत तार काटने के आरोप मे लगाये गये ।

आन्दोलन के सिलसिले में ५ को फासी, ११ को आजीवन कालापानी, ६ को ७ साल, ६४ को ५ साल, १५ को ४ साल और १२० को ३ साल कैद की सजाए दी गईं । साधारणत कर्नाटक में ६ माह से लेकर २ साल तक की सजाए हुईं । किन्तु कितने हो लोगो को डिस्ट्रिक्ट तथा ताल्लुका पुलिस मे काफी अर्से तक रहना पड़ा ।

निम्न प्रकार सामूहिक जुर्माने वसूल किये गये ।

बेलगाव	१२	२०६००० रु०
बीजापुर	१	२००० रु०
धारवाड	२३	६३९०० रु०
उत्तरी कनारा	२६	५३५०० रु०
मैसूर रियासत	४	२००० रु०
जमखन्डी रियासत	१	९००० रु०
कुल योग	७०	३३६४०० रु०

नोट —केवल निपानी नगर से १॥ लाख रुपया वसूल किया गया ।

अन्य कार्य

ब्रिटिश कर्नाटक के १६ स्टेशनो और मैसूर रियासत के ९ स्टेशनो पर हमले किये गये ।

			जायदाद को हानि
ब्रिटिश कर्नाटक	८	५	३
मैसूर रियासत	३	८	१०

केवल एक पैसेंजर ट्रेन धोखे से उलट गई, किन्तु इस घटना मे कोई भी जख्मी नही हुआ । उसके बाद कभी भी पैसेन्जर न ट्रेनही उलटी गई ।

पुल व पुलियों को क्षति पहुचाने की २५ वारदातें हुईं ।

तार काटने की बेलगाव जिले में ५६०, बेलारी मे १३०, बीजापुर में ७०, धारवाड में ३९०, उत्तरी कनारा मे १८० और मैसूर रियासत मे ३५० ।

इस प्रकार कुल १६८० घटनाएं हुईं। कुर्ग के आकडे प्राप्त नही हो सके।

डाकखानों की हानि

बेलगाम जिले के निपनी, नन्दागढ़, बेल्होनगल, सावाडवटी, गनपती-गली, बेलगाव शहर और १२ दूसरे डाकघरो को, बीजापुर के बगलकोट डाकखाने को, धारवाड के ९ डाकखानो को तथा मैसूर रियासत में बंगलौर शहर हैड पोस्ट आफिस और शहर के तीन और डाकघरो को नुकसान पहुंचाया गया। बेलगाव, गोकक, हुबली, बैदगी, सिरसी और सीडापुर के मुख्य डाकघरो में चिट्ठियो को जलाया गया।

नीचे लिखे अनुसार डाक की लारियों पर हमले किये गये और थैलो को लूटा गया---

जिला	लारियो की सख्या	थैलो की सख्या	चिट्ठियो के डिब्बे
बेलगाम	७	७२	—
बेलारी	१	१	२५
बीजापुर	—	३	५
धारवाड	५	२९	०
उत्तरी कनारा	३	३	०
मैसूर रियासत	—	—	१२

बेलगाव जिले में १८ छोटे डाकखाने पूर्णत बन्द होगये थे और कुछ काल तक तो बेल्होगली ताल्लुका के सारे छोटे डाकखानो की डाक तालुका पोस्ट आफिस से मिलती थी।

बेलगाम जिले मे डाक बगलो और आरामघरो पर १७, बेलारी मे १, बीजापुर में ३, धारवाड में ६ और उत्तरी कनारा मे ४। इस प्रकार कुल ३४ हमले किये गये।

बेलगाव में १३६, धारवाड मे ६४ और उत्तरी कनारा में २५ गावो के इस प्रकार कुल २२५ रिकार्ड बर्बाद किये गये।

बगलौर शहर मे शराब व गाजे की सारी दूकाने एक माह तक पूर्णतः बन्द रहीं। बेलगाव जिले मे बेचप्नाथ गाव के नजदीक २५० और मैसूर रियासत में ५० ताडी के पेड़ काट डाले गए।

डीडवाद १५०० रु०, टोलगी ३००० रु०, हानर ६५० रु०, टीगाडोली ४५० रु०, नेगलर ८०० रु०, ईटागी और सेसलर ८०० रु० हेबल ३००० रु० कुल १०२०० रु० का सामूहिक जुर्माना किया गया।

युद्ध सम्बन्धी क्षति

१ युद्ध में भेजने के लिए गगावती नदी के किनारे जो स्लीपर व लकड़ी जमा की गई थी उसे जला दिया गया। इस प्रकार लगभग एक लाख की क्षति हुई।

२ उत्तरी कनारा मे हर्थीकर में साल की लकडी के डिपो भी जलाये गये और लगभग १५ हजार का नुकसान हुआ।

३ उत्तरी कनारा मे सिरसी मे गवर्नमेट के लकड़ी के स्टाक को आग लगाकर जला दिया गया।

४ बेलगाम में दो घास के फौजी स्टाक जला दिये गये और लगभग २० हजार का नुकसान हुआ।

पुलिस को निहत्था बनाना

पुलिस को निहत्थे बनाने के ६ प्रयत्न किये गए जिनमे लगभग २६ से अधिक पुलिस अफसरो व सिपाहियो के हथियार धरवा लिये गये और उन्हें निहत्था बना दिया गया। इसके अतिरिक्त पुलिस-चौकियों से कई जगह हथियारो को हटा लिया गया।

: ५ :

बिहार में खुला विद्रोह

कुछ आंकड़े

जिला	नजरबन्द	गिरफ्तार	दण्डित	मारे गये	घायल हुए	सामूहिक जुर्माना
पटना	—	४३३४	२२४३	३०	१२१	८,००,०००
मुंगेर	५४	६२७	३८८	८६	३५	१,६७,७००
चम्पारन	१७	२,००८	७००	२२	५५	१,०३,३५०
शाहबाद	७९	२२५५	१८१०	—	—	५०,०००
गया	४६	१,०३५	७८९	१४	—	३,५३,३००
हजारीबाग	३२८	१३,३१०	७,००१	५३३	६६६	१,७७,२००
भागलपुर	१०४	४,०००	१,०००	४४७	३६२	२,१८,४८०
मुजफ्फरपुर	६०	१००	३००	५०	१००	३,६६,०००
पूर्णिया	२५	१,४७५	७००	४६	६०	१,२८,०००
सारन	५५	२,०००	७१२	५१७	—	१,२५,०००
राची	१२	३९४	९१६	—	—	६,०००
दरभङ्गा	१८	१,२००	२००	३८	१००	४,८८,६००
मानभूम	—	—	—	५	१६	३४,६४०
सिहभूम	२५	१७५	२७२	—	—	२,१६४
पलामु	८	—	३००	—	१,२८६	३,४००
सथालपरगना	—	६००	—	२६	—	५०,०००

नोट—बिहार मे १२२ जगह गोलिया चली। ५२५० सरकारी मस्थाओ पर आक्रमण हुआ। १४४९ गाँव और ४७ सस्थाये सरकारी दमन और लूट की शिकार हुई।

बिहार का बलिदान

सन १९४२ के आन्दोलन ने बिहार में अपना एक विशेष इतिहास बनाया ह, जिसका प्रत्यक पृष्ठ व्यक्तिगत एव सामूहिक वीरता, अपूव जनो-

त्साह, वलिदान, हृदय-विदारक दमन, गावो की लूट, सैनिको की पाशविक वृत्ति के नगे नाच, अवलाओ, निरीह बच्चो तथा निरपराध जनता पर लाठियो और गोलियो की बौछार, राज-सत्ता प्राप्त करने के सामूहिक एव व्यक्तिगत सफल और असफल प्रयत्न तथा इसी प्रकार की अन्य सैकड़ो बातो से भरा पडा है।

साम्राज्यशाही के आक्रमण का उत्तर बिहारवासियो ने खुले विद्रोह द्वारा दिया और 'करो या मरो' मत्र से उन्मादित हाकर मालूम पड़ता है सारा-का-सारा बिहार एक साथ समुद्र की भाति उमड पडा। क्या गाँव, क्या शहर, प्रान्त के कोने-कोने में विद्रोह फट पडा, जिसने मुर्दा दिलों में भी जान डाल दी और उन्हे स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए हँसते-हँसते प्राण निछावर करने के लिए तैयार कर दिया। ऐसा होना बिहार जैसे प्रदेश के लिए कोई आश्चर्य की वात नही है। क्रान्ति के सब कारण विहार में परिपक्व दशा में पहुच चुके थे। इसके अतिरिक्त बिहार सदा से ही हिन्दुस्तान का राजनैतिक एव सास्कृतिक केन्द्र रहा है। उसके आगन में देश की राजधानी रह चुकी है। उसने देश की स्वतत्रता को आते-जाते देखा है। उसने ससार को भारत का सदेश सुनाया है। ससार के दो महान् धर्मो को उसने जन्म दिया है। उसे भारत की आजादी के कई प्रसिद्ध आन्दोलन छेडने एव उन्हे सफल बनाने का श्रेय प्राप्त है। बिहार में ही गाधीजी के नेतृत्व मे चम्पारन का सत्याग्रह हुआ। रचनात्मक कार्य के कितने ही सुव्यवस्थित आश्रम, राजेन्द्र बाबू जैसे महान् तपस्वी नेता तथा अपने अपूर्व साहस, विलक्षण बुद्धि-कौशल आदि के द्वारा देश को मुग्ध एव चकित करने वाले जयप्रकाश नारायण जैसे वीर—ये सब बिहार की ही देन है।

बिहार मुख्यतया कृषिप्रधान प्रान्त है। यहा कस्बे बहुत कम है। स्वभाव से ही यहा के लोग सीधे, सरल और धार्मिक प्रकृति के है। इनमे विश्वास, धैर्य तथा रचनात्मक कार्य करने की प्रवृत्ति स्वभावत अधिक है। यहा पर काग्रेस के अधिकाश नेता देहात के लोग है और इन पर गान्धीजी के सिद्धातो का गहरा प्रभाव है। हा सारन जिले में, जो श्री जयप्रकाशनारायण की जन्म भूमि एव निवासस्थान होने के कारण समाजवादियो का मुख्य गढ माना जाता है, समाजवादी विचार बढ रहे है। किन्तु प्रान्त की जनता गान्धीजी तथा उनकी नीति से ही अधिक प्रेम करती है। अतएव जब ९ अगस्त को बम्बई शहर में ब्रिटिश नौकरशाही ने काग्रेस पर पर्लहार्बर जैसा प्रहार किया और बिहार के प्राण राजेन्द्र बाबू भी जेल के सीखचो में बन्द कर दिये गये तो जनता क्षुब्ध हो उठी। वह अपने क्रोध को, अपने आवेग को, हृदय को विदीर्ण कर

वाहर फूट पडने वाले जोश को रोक न सकी और अपने प्रान्त के तथा जिले के प्रमुख नेताओ के पकडे जाने के वावजूद उसने अपना विरोध अत्यन्त उग्र रूप में प्रकट किया।

आन्दोलन का रूप

विद्रोह का आरम्भ हडतालो से हुआ। प्रान्त भर के प्राय सभी स्कूलो तथा कालेजो के विद्यार्थी ब्रिटिश सरकार के इस निन्दनीय कार्य के प्रति अपनी हार्दिक घृणा प्रकट करने के लिए अपनी पढाई को छोडकर स्कूलो तथा कालेजो से वाहर आ गये। प्रान्त भर के व्यापारियो, मजदूरो आदि ने भी पूर्ण हडताल कर दी। स्थान-स्थान पर जुलूस निकाले जाने लगे और विरोध प्रदर्शन किया जाने लगा। पर जनता को इससे सन्तोष न हुआ। क्रोधित एव उन्मादित जनता कुछ अधिक करना चाहती थी। उसने मिस्टर एमरी का काग्रेस प्रोग्राम सम्वन्धी ब्राडकास्ट भाषण सुना। उधर वम्वई से लौटे हुए कार्यकर्ताओ ने जनता को वताया कि उन्हे सरकारी व्यवस्था को अस्त-व्यस्त कर उसे मटियामेट कर देना चाहिए। अत १३-१४ अगस्त से ही विहार मे सरकारी सत्ता पर कव्जा करने, रेल, तार, डाक, इत्यादि महकमो को अस्त-व्यस्त करने तथा गुलामी के जूए को उतारकर उसके स्थान पर अपनी स्वतत्र सरकार स्थापित करने के सफल एव असफल प्रयत्न क्या शहर, क्या गाँव, क्या वाजार, क्या घर सभी जगह प्रारम्भ होगये।

एक हजार मे कही अधिक डाकखानो पर जनता ने या तो कव्जा कर लिया या उन्हे वरवाद कर दिया। इस प्रकार वहुत से गावो में कोई डाकखाना हा न रह गया था। इन गावो में स्वय सेवको के सगठित दल घूमते थे और मोर्चा-सा वनाकर रहते थे। गाँवो के लोगो को आशका थी कि कोई वाहरी ताकत उन पर हमला करेगी। अत अपनी सत्ता व सम्पत्ति को वचाने के लिए उन्हे सतर्क रहना है। यद्यपि विद्रोह का साम्राज्य छाया हुआ था, परन्तु सराहनीय वात यह थी कि गाँवो मे कोई लूट-मार के चिह्न नहीं थे। हिन्दू और मुसलमान दोनो ही सामूहिक रूप से पचायते वना रहे थे और शान्ति स्थापित करने के प्रयत्न कर रहे थे। कितने ही गाँवो पर जव फौज ने धावा वोला तो वहाँ के लोगो ने सगठित एव शातिमय तरीको से दमन का मुकावला किया। मुजफ्फरपुर के जिले में जनता ने लकडी के ढाल वनाकर गोलियो का मुकावला किया। कुछ गावो में देहाती लोगो ने लम्वे-लम्वे वाँसो में आग लगाकर फौजी लारियो का मुकावला करने की सोची थी। प्राय हर गाँव में पचास स्वय-सेवक रहते थे और कुछ गाँवो में तो उनका सगठन और मोर्चावन्दी इतनी अच्छी

थी कि फौजवालों को उस गाव में घुसने से पहले सोचना पडता था। संथाल परगना तथा दक्षिणी डिवीजन के सिंहभूम मानभूम, हजारीबाग आदि कुछ जिलो को छोडकर बाकी सभी जगह यह आन्दोलन अभूतपूर्व उत्साह के साथ चला। पर इसका मतलब यह नही कि उन जिलो में बलिदान न हुए। बलिदान अवश्य हुए और उनका भारत के स्वतन्त्रता-युद्ध मे एक विशेषस्थान है। कहने का तात्पर्य इतना ही है कि अन्य जिलो की अपेक्षा उनमें आन्दोलन की गति धीमी रही। पूर्वी तथा पश्चिमी बिहार मे तो लाखो की तादाद मे जनता उठी और उसने ब्रिटिश शासन के चगुल से निकलने के विभिन्न रूपो में अनेक सफल व असफल प्रयत्न किये।

आन्दोलन की विशेषता

आन्दोलन की घटनाओ पर विचार करते समय हमारा ध्यान उसकी दो एक खास बातो पर गये बिना नही रहता। प्रान्त के मुसलमानो न भी अपने भाइयो के साथ इस आन्दोलन में काफी भाग लिया। प्रान्त मे आन्दोलन सबधी मुस्लिम बन्दियो की सख्या २५० तक पहुँच गई थी। काफी प्रलोभन दिये जाने पर भी मुसलमानो ने आन्दोलन में सहयोग देने से मुह न मोडा और उनको अपने पर बडा नाज़ है। यहाँ की स्त्रियो ने भी पुरुषो के साथ कधे-से-कधा भिडा कर स्वतन्त्रता की इस लडाई मे वीरता का परिचय दिया।

जेलों पर हमला

बिहार प्रान्त मे कई स्थानो पर उत्तेजित जनता ने जेलो पर हमले किय और कैदियो को भगा दिया। मधुबनी मे कैदियो ने जेल अधिकारियो के विरुद्ध विद्रोह कर दिया, सुपरिन्टेन्डेण्ट पकड लिया गया और जबरन जेल में ठूँस दिया गया। राजनीतिक कैदियो को छोड़कर बाकी सब कैदी जेल से भाग निकले, किन्तु उनमे से दो बाद मे पकड लिये गये। करीब ३००० व्यक्तियो ने हाजीपुर जेल पर हमला किया। जेल के फाटक नष्ट-भ्रष्ट कर दिये गये और करीब १०० कैदी, जिनमे राजनैतिक कैदी भी शामिल थे, जेल से फरार हो गये। बाद में कुछ राजनैतिक कैदी पुलिस के हाथो पड गये और बुरी तरह पीटे गये, गधे पर चढाकर घुमाये गये तथा उन पर ८०,००० रुपया जुर्माना किया गया। सीतामढी में १० हजार लोगो ने अपने नेता ठाकुर मडर्लसिह तथा दूसरे कैदियो को मुक्त करने के लिए जेल को चारो ओर से घेर लिया। पुलिस ने जनता पर अश्रु गैस का प्रयोग किया किन्तु जनता धैर्य के साथ डटी रही और आखिर जेल पर काग्रेस का तिरगा झडा लहराकर मानी। आरा और गोडा (सथाल

परगना) की जेलें भी जनता के क्रोध का शिकार वनी और वहा से क्रमश ७०० तथा ६०० कैदी भगा दिये गये ।

विद्यार्थियों का कार्य

विहार के आन्दोलन में विद्यार्थियो तथा गाँवो के नौजवानो ने खास हिस्सा लिया । नई विचार-धारा से प्रभावित इन विद्यार्थियो तथा नौजवानो के झुड-के-झुड घर-घर गली-गली एव गाव-गाव से निकल-निकल कर स्थान-स्थान पर घूमने लगे और जनता को अपनी स्वतत्र सरकार स्थापित करने का दिव्य-सदेश सुनाने लगे । इन नौजवानो में त्याग था, उत्साह था, जोश था और थी अपने देश को स्वतत्र करने की तीव्र इच्छा । उनकी वाणी में मुर्दा दिलो में भी जोश भरने की शक्ति थी । यही कारण था कि अधिकाश जगह गाँवो मे फैले हुए सरकारी कर्मचारियो को जनता की इस उमडती हुई वाढ के सामने अपना सिर झुकाना पडा और गाँव-गाँव में सरकारी इमारतो पर काग्रेस के झडे लहराते हुए दिखाई पडने लगे । लोगो ने कम-से-कम कुछ दिन के लिए तो जाना कि स्वतन्त्रता क्या चीज है ?

तोड़-फोड़

विहार में तोड-फोड का प्रोग्राम तव प्रारम्भ हुआ जव जनता तथा उस समय के नेताओ को दिखाई देने लगा कि अव व्रिटिश सरकार अपना राज्य पुन स्थापित करने तथा जनता को कुचलने के लिए वडे पैमाने पर पुलिस और फौज इधर-उधर भेज रही है । जनता सरकार की इस नीति से घवरा उठी । उसके पास सुसज्जित सैनिको का मुकावला करने के लिए आवश्यक सामान कहा था ? अतएव उसे सरकार की इस कोशिश को विफल करने का यही एक तरीका दीख पडा कि चारो ओर रेल-तार काट दिये जाय, स्टेशन जला दिये जाय और इस प्रकार यातायात के साधन नष्ट कर दिये जाय । इस प्रोग्राम में उसने काफी सफलता प्राप्त की । पूर्वी, पश्चिमी तथा उत्तरी जिलो के थोडे से स्टेशनो को छोडकर प्राय सभी स्टेशन या तो जला दिये गये थे या उन्हे वहुत अधिक नुक़सान पहुँचा दिया गया । मीलो तक रेल की पटरियाँ उखाड दी गई । पूरे अगस्त और १५ सितम्वर तक यही हालत रही । न कही टिकिट मिलते थे और न कही उन्हे काटने की पंचिग मशीन तथा अन्य औजार ही मिलते थे । वहुत दिनो तक लोग एक ही टिकट द्वारा सफर कर सकते थे और तार इत्यादि भेजने का सिलसिला तो कई महीने वाद जारी हुआ ।

इस असहयोग के कारण अधिकारी लोग बडे क्रोधित हुए और उन्होने लोगो को गिरफ्तार करना तथा उन पर किर्चों एव लाठियो से प्रहार करना शुरू कर दियो। जोरहाट में पुलिस के इन प्रहारों के कारण ५० कार्यकर्त्ताओ को स्थाया चोटें पहुची और बहुत से घायल हुए।

जोरहाट सब-डिवीजन मे टेग्रोक काग्रेस का एक प्रधान केन्द्र है। यहा पर असहयोग का सबसे अधिक जोर रहा और फौज के लिए मदद प्राप्त करने में वडी कठिनाई होने लगी। अतएव अधिकारी लोग जल भुन गए थे और वे किसी अवसर की प्रतीक्षा कर रहे थे। अचानक एक दिन ३००० ग्रामीण काग्रेस दफ्तर के सामने जमा हुए, जो थाने के बिलकुल ही पास था। बस, दारोगा की मनचाही हो गई। उसने झट जोरहाट से काफी तादाद में फौज बुला ली और पुलिस तथा फौज की सहायता से एकत्रित भीड पर हमला कर दिया। किर्चों एव लाठियो से निरपराध स्त्री, पुरुष तथा बच्चो पर बुरी तरह प्रहार किया गया। कुछ स्त्रिया राष्ट्रीय झडे लिए हुए थी। दमनकारियो ने उनके हाथ से झडे छीनने की कोशिश की, लेकिन वीर महिलाओ ने अपने प्राणों की बाजी लगाकर भी राष्ट्रीय झडे का अपमान न होने दिया। दो स्त्रियो के साघातिक चोटें लगी तथा १८ अन्य स्त्री-पुरुष घायल हुए। प्रधान-प्रधान काग्रेस कार्यकर्ता, गिरफ्तार करके जेलो में डाल दिये गये और बाद में दो महीने पीछे उन पर केस चलाया गया और १३ व्यक्तियो को २१ महीने से लेकर दो साल तक के कठिन कारावास की सजाए हुईं।

सरकारी विज्ञप्ति के अनुसार एक और दो नवम्बर को टीटाबार के मैनेजर का बगला, अमगुरी का अग्रेजी मिडिल स्कूल और प्राइवेट गर्ल्स स्कूल, डिमोउ का ब्राच पोस्ट ऑफिस तथा टीटाबार जला दिये गये। तीन नवम्बर से लेकर १२ नवम्बर तक कई स्थानो पर स्कूल तथा पोस्ट ऑफिस आदि जलाये गये तथा तार काटे गये। फरवरी १९४३ में लकवा रेलवे स्टेशन के पास एक सवारी गाडी गिराई गई जिसके कारण बहुत से व्यक्ति घायल हुए और कुछ मारे गए।

उत्तरी आसाम के सिवसागर एव लखीमपुर जिलो में गोली न चली, इसका यह अर्थ नही कि यहा सरकारी दमन-चक्र की गति कुछ धीमी रही। यहाँ जेल के बन्दियो को भी अत्याचारो का शिकार बनाया गया, जोरहाट जिले में राजनैतिक कैदियो को न तो पूरा भोजन दिया जाता था, न पूरे बर्तन और न पूरे कपडे। बेचारे बूढे एव जवान स्त्री-पुरुषो को सर्दी की रातें ठिठुर-ठिठुर कर बितानी पड़ती थी। अपनी शिकायतें दूर करने के लिए बन्दियो ने एक-

दो दिन भूख हडताल भी की, परन्तु कुछ परिणाम न निकला। इसी बीच १४ फरवरी, ४३ का दिन आ पहुचा। बन्दियो को महात्मा गान्धी के उपवास की सूचना मिली तथा यह भी ज्ञात हुआ कि उनकी अवस्था चिन्ताजनक है। सहानुभूति प्रदर्शन करने के लिए कुछ लोगो ने नाम कीर्तन प्रारम्भ किया। कुछ लोग दैनिक प्रार्थना कर रहे थे तथा कुछ भोजनशाला में भोजन कर रहे थे। अचानक बाहर से आग लगने की घटी बजी। चौकीदार लोग पहले से तैयार की हुई लाठिया लेकर दौडे। उधर रिजर्व पुलिस के सिपाही भोजन-शाला में पहुचकर बन्दियो पर अन्धाधुन्ध लाठियो की वर्षा करने लगे। लाठी-प्रहारो से बदियो को इतनी चोटें आई कि भोजनशाला का फर्श लहू-लुहान हो गया। इतना ही नही, इन निर्दयी लोगो ने दो-एक वार्डों को छोड-कर, जिनमे प्रधान-प्रधान नेता थे, बाकी वार्डों के फाटक खोल दिये और उनमे घुमकर बन्दियो को बुरी तरह से पीटा। ४० व्यक्तियो के साघातिक-चोटें आई, जिनमें १५ के तो सिर फट गए। हाथ, पैर, छाती, कमर आदि में चोटें आने वालो की सख्या तो अनगिनत थी।

सुबह जब श्रीयुत गोपीनाथ बारदोलाई आदि नेताओ को इस घटना की सूचना मिली तो उन्होने अधिकारियो की अनुमति से घटनास्थल पर जाकर वस्तु-स्थिति की जाच की। जहा आग लगी थी, वहा पर पुराने मकान के शहतीर के कुछ अधजले कूडे तथा मिट्टी के तेल भिगोये हुए कुछ टाट के चिथडे पडे हुए थे, जिनसे यह स्पष्ट प्रकट होता था कि बन्दियो को पीटने के लिए आग का बहाना किया गया था, वास्तव में आग नही लगी थी।

इसी प्रकार लखीमपुर डिवीजन के नारायणपुर गाव में भी झूठा बहाना बनाकर लोगो को बुरी तरह से पीटा गया। बात यह थी कि इस गाव के पास एक अग्रेजी हवाई जहाज टूटकर गिर गया था। गाव के कुछ लोग कौतूहल वश उसे देखने के लिए वहा चले गये। बस, फिर क्या था। सब-डिवीजनल अफसर ने लोगो पर इल्जाम लगाया कि वे जहाज का कुछ सामान उठाकर ले गये हैं अत उन्हे मरम्मत आदि काम में बेगार देनी पडेगी। लोग निर्दोष थे, इसलिए उन्होने बेगार देने से साफ इन्कार कर दिया। एस० डी० ओ० ने कुछ बहाना निकाला। गाव में कुछ काग्रेस कार्यकर्त्ता भी रहते थे। अतएव उसने चट लोगो पर यह इल्जाम लगा दिया कि वे इन काग्रेस-कार्य-कर्त्ताओ के कहने मे सरकार के विरुद्ध बगावत करते है और उसने फौज का गाव लूटने-खसोटने का हुक्म दे दिया। अफसर का हुक्म पाते ही फौजी गाव पर टूट पडे। उन्होने गाव के स्त्री-पुरुषो को बुरी तरह पीटा, उनके घरो का

लूट लिया, स्त्रियो के साथ बलात्कार किया एव प्रमुख लोगो को वन्दी बनाकर तरह-तरह की तकलीफें दी और अपमानित किया।

सरकारी दमन की भीषणता से आन्दोलन का बाह्य रूप दब गया और लोग लुक-छिपकर मौका लगने पर तोड-फोड़ करने लगे। यह तब तक चलता रहा जब तक कि सन् ४३ मे गाधीजी एव वायसराय का पत्र-व्यवहार प्रकाशित नही हो गया।

नौगांव जिला

नौगाव जिले में आन्दोलन की गति सबसे तीव्र रही। यहा के ग्रामीणों ने भी नागरिको के साथ आन्दोलन को आगे बढाने में पूरा सहयोग दिया। सरकारी दमन से बचने के लिए यहा के लोगो ने तुरही बजाकर अपने-आपको इकट्ठा करने की प्राचीन परिपाटी से काम लिया था। शान्ति-सेना का प्रधान कार्य-क्षेत्र इसी जिले में था। यहा के बरापुजिया गाव के वीर पुरुष तिलक डेका ने जिस साहस एव कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया है, उसकी समता ससार के इतिहास में मिलनी कठिन है।

बरापुजिया गाँव ग्राडट्रकरोड से ३,४ मील हटकर बसा हुआ है। पिछले १२ वर्षों से यह सब प्रकार के रचनात्मक कार्यों का सदर मुकाम रहा है। यहाँ की अधिकाश जनता मूल-निवासियो की सन्तान है। ये लोग अपने साहस एव कर्तव्य-परायणता के लिए प्रसिद्ध है। इन्होंने शान्ति-सेना का सगठन बडी मज-बूती से किया था। एक दिन फौजियो के एक बडे जत्थे ने रात को गाँव पर हमला कर दिया। शान्ति-सेना के स्वयसेवक गाव के चारो ओर पहरा दे रहे थे। तिलक डेका उनका अगुआ था। उसने नियम के अनुसार झट तुरही बजा-कर गाँव के लोगो को फौज का सामना करने के लिए सावधान करना चाहा और अपनी तुरही की ओर हाथ बढाया। फौज के कप्तान ने अपना रिवाल्वर डेका की छाती पर लगा दिया और गरजकर कहा, 'बस रहने दे नौजवान, जीना चाहता है तो तुरही की ओर हाथ न बढा। तिलक डेका को जान की अपेक्षा आन प्यारी थी। उसने गम्भीरतापूर्वक उत्तर दिया, 'कप्तान साहब चुप रहिये। मैं इस प्रकार के शब्द नही सुनना चाहता। मुझे जो जिम्मेवारी सौंपी गई है उसे पूरा करूगा, चाहे आप मेरे सीने में गोली दाग़ दें,।' उसने झट तुरही ली और उसमे इतनी जोर से फूंक मारी कि सारा वायुमडल उसके गगन-भेदी स्वर से गुजायमान हो गया। उधर कप्तान ने अपना रिवाल्वर दबाया। धाय-धाय करती हुई गोली तिलक डेका के सीने में से निकल गई। वह वीर वही गिर पडा और उसने सदा के लिए अपनी आखें बन्द कर ली।

तुरही एव रिवाल्वर की आवाज रात्रि के उस सन्नाटे में चारो ओर गूंज उठी। गाव के स्त्री-पुरुष, जो अपने स्वयसेवको के भरोसे सुखपूर्वक सो रहे थे। अचानक इस आवाज को सुनकर चौंक पडे। वे झट घटना-स्थल की ओर दौड पडे और चारो ओर से फौजियो को घेर लिया। गौरव की बात तो यह थी कि गिरफ्तार होने या गोली खाने के लिए सबसे आगे स्त्रिया ही बढी। फौजी दमन पर तुले हुए थे ही। उन्होने गोली चलाना शुरू कर दिया। ५, ६ आदमी बुरी तरह से घायल हुए। लोग मार खाकर भी डटे रहे और उन्होने अपने नेता तिलक डेका के शव को उठा लिया। फौजियो ने गोली बरसाकर एव किर्च भोककर काफी चेष्टा की कि लोग शव न ले जाने पाय, पर वे सफल न हुए। लोग जैसे-तैसे शव को ले ही आए। दूसरे दिन सुवह गाव के तीन सौ व्यक्ति गिरफ्तार कर लिये गये एव उनके साथ वहुत बुरा वर्ताव किया गया।

कामपुर मे भी जनता की ओर से इन दिनो बडे शान्तिपूर्ण प्रदर्शन किये गये। गाव के स्त्री-पुरुष, लडके-लडकियाँ बडी सख्या मे स्टेशन पर जमा हो जाते और जव गाडी स्टेशन पर ठहरती तो 'अग्रेजो भारत छोडो' आदि राष्ट्रीय नारे लगाते। कई वार तो गाडी में बैठे हुए फौजी लोग भी जनता के साथ 'गान्धीजी की जय' 'स्वाधीन भारत' आदि नारे लगाते थे।

एक वार एक सैनिक अफसर ने गाडी से नीचे उतरकर लोगो से राष्ट्रीय झडा छीनना चाहा, परन्तु लोगो के साहस के सामने उसकी एक न चली। पुलिस दारोगा कुछ सशस्त्र कास्टेवलो के साथ वही खडा था। सैनिक अफसर ने उसे जनता पर गोली चलाने का हुक्म दिया। दारोगा ने देश की आजादी के लिए आन्दोलन करने वालो पर गोली चलाने से इन्कार कर दिया, परन्तु वह वेचारा तीन दिन के अन्दर-अन्दर गिरफ्तार कर लिया गया।

शान्ति-सेना के सगठन से अधिकारी भयभीत हो गये थे। उनके मन मे यह वात अच्छी तरह वैठ गई थी कि जव तक यह सगठन कायम है, आन्दोलन दवना कठिन है। अतएव उन्होने गाव-गाव में घूमकर शान्ति-सेना के कैम्पो पर हमला करना शुरू कर दिया। एक स्थान पर ब्रिटिश कमाण्डर की अध्यक्षता मे कुछ फौजियो ने शान्ति-सेना के वहुत से कर्मचारियो को गिरफ्तार कर लिया और कैम्प में आग लगा दी इतने मे कमाण्डर ने लोगो को पीटने का हुक्म दिया। गिरफ्तार व्यक्तियो में एक छोटा सा लडका भी था। वह कमान्डर के इस हुक्म को सहन न कर सका। वह झट आगे वढा और कमान्डर को फटकारता हुआ वोला, 'आपको शर्म नही आती जो

निरपराध व्यक्तियो को पिटवाते है।' कमाण्डर के हृदय में बच्चे के ये शब्द तीर के समान लगे। वह आग-बबूला होकर बच्चे पर झपटा और उसे दोनो हाथो से पकड लिया। पहले तो उसने ५,७ ठोकरे बच्चे के लगाई और बाद मे उसे पास मे जलती हुई आग में फेंक दिया। पर जिसे ईश्वर बचाना चाहे उसे कौन मार सकता है। सयोगवश बच्चा लुढककर एक तरफ गिर गया और गाम मे खडे हुए गाव के लोगो ने उसे उठा लिया।

बरहमपुर मे भी आन्दोलन का काफी जोर रहा। यद्यपि नेताओ की गिरफ्तारी के साथ ही पुलिस ने काग्रेस-आफिस, शान्ति-सेना कैम्प आदि पर कब्जा कर लिया था, पर इससे जनता के उत्साह मे कुछ कमी नही आई और उसने १६ सितम्बर को काग्रेस-आफिस के सामने एक दावत करने का निश्चय किया। बडी सख्या मे लोग इकट्ठे हुए। स्त्री, पुरुष बच्चे, सभी उम्र के लोग थे। कुछ राष्ट्रीय गाना गा रहे थे, कुछ तिरङ्गा झडा लिये घूम रहे थे तो कुछ दावत की तैयारी करने मे लगे हुए थे। अधिकारावर्ग को यह भी सहन न हुआ, चट पुलिस एव फौज के बडे-बडे अफसर वहा आ धमके। कुछ लडकिया राष्ट्रीय झडे लिये घूम रही थी। अफसरो ने उनके हाथो मे से जबरन झडे छीन लिये। पर रतन फूकन नामक १५ वर्षीय लडकी ने अपने हाथ मे से पुलिस कमाण्डर को झडा नही छीनने दिया। कमाडर ने कुछ जबरदस्ती करनी चाही। रतन की मा पास मे खडी थी। वह कमाण्डर की इन हरकतो को सहन न कर सकी। उसने झट बास की एक छडी कमाण्डर के मुँह पर जमा दी। बस, फिर क्या था। सब सिपाही टूट पडे। बेचारी बुढिया गोली से मार दी गई। यह दृश्य देखकर दावत मे इकट्ठे लोग भी सचेत हो गए। वे खागीराम हजारी के नेतृत्व मे रतन को बचाने के लिये झपटे। पुलिस ने गोली चलाना प्रारम्भ कर दिया। परिणाम-स्वरूप थोगीराम नायक नामक एक २५ वर्षीय नौजवान शहीद हो गया और भी बहुत से घायल हुए। पर लोग गोली खाकर भी डटे रहे। अधिकारी लोग बार-बार उन्हे भाग जाने की आज्ञा दे रहे थे। पर उन्होने भागकर जान बचाने की अपेक्षा अपने साथियो के साथ मरना अधिक अच्छा समझा और पुलिस-अधिकारियो के विरोध करने पर भी उन्होने अपने मृत एव घायल साथियो को अपने अधिकार में कर लिया।

सूचना मिलने पर पुलिस-सुपरिन्टेण्डेण्ट और सिविल सर्जन घटनास्थल पर आ पहुचे। निहत्थी जनता शान्तिपूर्वक बैठी थी। अधिकारियो ने एक बार पुन: घायलो एव मरे हुए व्यक्तियो को छीनने की चेष्टा की, पर जनता की दृढ़ता के सामने उनका प्रयत्न सफल न हुआ। जनता रात भर वही डटी

रही । सुबह बडे धूम-धाम से शहीदो की अर्थी निकाली गई और विधिपूर्वक उनकी क्रिया की गई ।

योगीराम बोरा का बलिदान आजादी की लडाई के इतिहास में सदा अमर रहेगा । कहते है मरते समय उसके पास केवल एक पर्स, एक फाउन्टेन पेन तथा १० पैसे थे, जिनको वह काग्रेस एव स्वतन्त्र भारत के नाम पर दे गया। ऐसे वीर पुरुष की स्त्री भी वीर ही थी । योगीराम की मृत्यु का समाचार जब उसकी स्त्री को मिला तो उसने बडी खुशी के साथ कहा, 'मुझे गर्व है कि मेरा पति देश की आजादी की लडाई में मारा गया और मुझे अपने आसुओ द्वारा भारत माता के पैर धोने के लिए छोड गया ।' क्या ससार के इतिहास में ऐसे उदाहरण मिल सकते है ?

सरकारी विज्ञप्ति के अनुसार ८ नवम्बर सन् १९४२ की रात को नौगाव जगलात का बगला जनता द्वारा जलाकर राख कर दिया गया । ९ एव १० नवम्बर को एक चाय की जमीदारी के कार्यालय से रेनी, धातु काटने की आरी, गन्धक आदि उडाने की चेष्टा की गई ।

सरकारी दमन भी जोरो से चला । रेलवे लाइन या पुल के पास से गुजरने वाले निर्दोष राही भी गोली से उडा दिये जाते थे । २८ अगस्त को शाम को बेवेनिया पुल पर से दो ग्रामीण नौजवान गुजर रहे थे । पुल के नीचे छिपे हुए फौजियो ने उनको भी अपनी गोली का शिकार बनाया । इतना ही नही बेवेजिया गाव के असहाय निर्दोष स्त्री-पुरुषो एव बच्चो पर आधी रात के समय अमानुषिक अत्याचार किये गए । दूसरे दिन गाव के ४०० स्त्री-पुरुषो तथा बच्चो का इकट्ठा करके सशस्त्र पुलिस की देख-रेख मे नौगाव थाने मे ले जाया गया, जो ९ मील दूर है । इनमें एक ऐसी औरत भी थी जिसके तीन दिन पहले बच्चा हुआ था । बेचारी का बच्चा रास्ते मे ही मर गया तथा उस प्रसूता स्त्री को भी बहुत दिन तक घोर बीमारी झेलनी पडी ।

रोहा स्कूल मे निरपराध अध्यापको को बुरी तरह पीटा गया । स्कूल पर तीन-चार साल से राष्ट्रीय झडा फहरा रहा था । उधर से गुजरते हुए एक यूरोपियन अफसर ने उन्हे झडे को उतार लाने का हुक्म दिया, किन्तु अध्यापको ने ऐसा करने से इकार कर दिया । परिणाम स्वरूप बेचारो पर बडी निर्दयतापूर्वक मार पडी ।

दारांग जिला

इस जिले के आन्दोलन की यह विशेषता रही कि जनता गोली एव लाठी का प्रहार सहकर भी पूर्ण अहिंसक रही । एकदम निहत्थो एव शान्त

जनता ने पुलिस-अधिकारियो से थाने आदि खाली करने की माग की, पर नौकरशाही के प्रतिनिधियो ने उसका जवाब नाना प्रकार के अमानुपिक प्रहारो से दिया और वाद मे लोगो को जेलो मे ठूंस दिया। दूसरी खास बात यह है कि अन्य जिलो की भाँति यहा पर स्त्रियो ने पुरुषो की अपेक्षा अधिक वलिदान किया।

सर्वप्रथम हम गोहपुर को लेते है, क्योकि यहाँ पर अहिंसा शक्ति का जैसा प्रदर्शन हुआ है, उसकी दूसरी मिसाल मिलनी कठिन है। २२ सितम्बर की बात है, करीब ५०० आदमियो का जुलूस थाने पर तिरगा झडा फहराने के लिए चला। पुलिस के अत्याचारो की कहानी लोगो के कानो मे पड चुकी थी। अतएव लगभग ५००० स्त्री-पुरुष नौजवानो के इस साहसपूर्ण कार्य को देखने के लिए थाने के पास इकट्ठे हो गये। जुलूस गाव की गलियो मे होता हुआ थाने के सामने जा पहुचा। थाने के आगे एक बहुत बडा तालाव है। इसलिए थाने मे घुसने के लिए जुलूस दो हिस्सो में बट गया और तालाब के बायें और दाहिने दोनो तरफ से एक साथ थाने मे घुसने लगा। सबसे आगे वीर कन्या कनकलता थी और उसके पीछे दो तीन नौजवान। जुलूस थाने के फाटक पर पहुचा। पुलिस दारोगा हाथ मे रिवाल्वर लिये अपने साथियो के साथ डटा खडा था। उसने कनकलता को थाने में घुसने से मना किया। वीर कन्या कनकलता ने गरजकर दारोगा से कहा, थाना प्रजा की वस्तु है। यदि थाने के कर्मचारी प्रजा के सेवक की भाति कार्य न करे तो प्रजा को अधिकार है कि वह थाने पर कब्जा कर ले और उन कर्मचारियो को निकाल बाहर करे।" दारोगा एक १४ वर्ष की लड़की से ऐसा मुह-तोड उत्तर सुनकर चुप हो गया। थोडी देर मे उसने फिर हिम्मत करके कहा,'अबोध बच्ची वाते न वना। जहा है वही खडी रह। यदि कदम आगे वढाया तो गोली से भून दूंगा।'

कनकलता भला इसमे कब डरने वाली थी। वह तो अपनी जान हथेली में लिये खडी थी। उसने अपने साथियो की ओर मुह फेरा और उन्हे हिम्मत दिलाती हुई वोली, 'भाइयो एव बहनो, आओ देश की आजादी के लिए मृत्यु का आलिगन करे।' और फिर दारोगा की ओर मुह फेरकरके वोली, 'मैं अपना कर्त्तव्य पूरा करूगी, आप अपना करे।' इतना कहते-कहते उस वीर कन्या ने झट अपना पैर आगे बढा दिया। उधर दारोगा ने तुरन्त अपना रिवाल्वर दवाया और देखते-देखते सनसनाती हुई गोली कनकलता के सीने से पार हो गई तथा कनकलता के पीछे खडे युवक की खुली छाती पर लगी। पर पुलिस-अधिकारियो की रक्त-पिपासा इससे शान्त न हुई। उन्होने वाकी जुलूस पर भी

अन्धा-धुन्ध गोलियो की वर्षा करना प्रारम्भ कर दिया।

इधर यह नर-सहार होरहा था, उधर स्वयसेवको का दल बडी हिम्मत के साथ आगे बढता जा रहा था। अचानक जय-घोष हुआ। लोगो की दृष्टि झट ऊपर की ओर गई। देखा, थाने पर राष्ट्रीय झडा लहरा रहा है। जनता का बलिदान सफल हुआ।

सरकार का कहना है कि इस गोली-काण्ड में सिर्फ ६ व्यक्ति मारे गये। परन्तु दमन की भीषणता को देखते हुए भी गोपीनाथ बारदोलाई जैसे व्यक्तियो का मत है कि मृत्यु-सख्या कम-से-कम ६० तक अवश्य पहुच गई थी। गोहपुर में आज भी बहुत से ऐसे स्त्री-पुरुष है जिनके मुह, हाथ, छाती अथवा शरीर के किसी अन्य अग पर बने हुए गोली के निशान उस गौरवपूर्ण दिन की याद दिला देते है।

इसी दिन लगभग इसी समय जब कि गोहपुर में यह भयकर नर-मेध हो रहा था, ढेकिया जुली की जनता ने पुलिस एव फौज की बर्बरता का नगा नाच देखा। इस दिन वहा पर कोई स्थानीय मेला था, अतएव १० हजार के करीब लोग थाने के आस-पास इकट्ठे हो गये थे जो कि बाजार के बिलकुल नजदीक पडता था। इतने में ही बाजार की ओर से नवयुवको का एक जत्था राष्ट्रीय झडा लिये हुए थाने पर आ पहुचा और उसने अधिकारियो से वही माग की जो गोहपुर निवासियो ने की थी। नवयुवको के नेता ने दारोगा को बडे नम्र शब्दो में कहा, 'आप हमारे देश भाई है। देश की आजादी के लिए आप सरकारी नौकरी से इस्तीफा दे दीजिए और हमारे साथ हो जाइये।' दारोगा भला यह बात कब मानने लगा। वह अपनी जगह पर अकड के साथ खडा रहा। सभी नौजवान बिलकुल शात थे तथा झडो के अलावा उनके पास कुछ भी न था। वे थानें पर झडा फहराने के लिए भीतर घुसने लगे। पुलिस-अधिकारियो ने इस पर गोली चलाना शुरू कर दिया। पर जिसके हृदय में लगन है उसे कौन रोक सकता है? गोलियो की वर्षा मे भी एक युवक आगे बढा और जैसे-तैसे अपने शरीर को बचाता हुआ थाने की इमारत पर जा चढा तथा पुलिस अधिकारियो के देखते-देखते बडी शान से थाने पर राष्ट्रीय झडा फहरा दिया। पर दूसरे क्षण ही दारोगा के रिवाल्वर से निकली हुई गोली उसकी छाती में जा कर लगी और वह वीर लडखडाता हुआ नीचे आ गिरा।

चारो ओर सन्नाटा छा गया। पुलिस के लोग गोलियो की वर्षा कर रहे थे। इतने में ही अधिकारियो का सकेत पाते ही थाने के पीछे पहले से

तैनात गुडे जनता पर टूट पड़े। उन भाड़े के टट्टुओ ने विना कुछ सोचे समझे भीड़ पर लाठियो की बौछार कर दी। सैंकडो आदमी घायल हुए, जिनमें बहुत से मेले के लिए इकट्ठे हुए लोग भी थे, जिनका जुलूस से कुछ सम्बन्ध न था। इन गुडो ने मजदूरो की निर्दोष स्त्रियो को भी बहुत दूर तक खदेडा तथा उनके साथ नाना भाति से बलात्कार किये। इस हत्याकाड में २० से अधिक जाने गई, जिनमें से एक तेरह वर्ष की वीर बालिका तुलेश्वरी भी थी।

अभी यह नर-सहार समाप्त भी न हो पाया था कि शहर के बहुत से फौजी अपने कमान्डर के साथ वहा आ पहुचे। उन्होने कुछ भी दरयाफ्त करने का कष्ट न किया और मेले मे इकट्ठे हुए लोगो को काग्रेस स्वयसेवक समझकर उन पर गोली चलाना शुरू कर दिया। १६ आदमी गोली से मर गये और बहुत से बुरी तरह घायल हुए। शहीद होने वालो में तीन स्त्रिया भी थी, जिनमें से एक गर्भवती थी।

इस घटना के बाद पुलिस ने २९ व्यक्तियो पर मुकदमा चलाया। सिर्फ तीन व्यक्ति कानून के मुताबिक दोषी निकले, बाकी सब कुछ सबूत न मिलने के कारण छोड दिये गए। सजा का हुक्म देते हुए मजिस्ट्रेट ने पुलिस के जनता पर अन्धाधुन्ध गोलिया चलाने के इस अमानुषिक कार्य को, जो अविवेकपूर्ण, कायरता से भरा हुआ था, अनियन्त्रित घोषित किया। अधिकारी लोग इस कलक को धोने की इच्छा से हाईकोर्ट तक पहुचे, पर उसने इस मामले में हस्तक्षेप करने से इन्कार कर दिया। अदालत का यह निष्पक्ष फैसला 'आसाम ट्रिब्यून', 'अमृत बाजार पत्रिका' एव 'हिन्दुस्तान स्टेंडर्ड' में आलोचना के साथ प्रकाशित हुआ। अधिकारियो ने उपरोक्त तीनो पत्रो पर भारत रक्षा नियमो की मातहत केस चला दिया। गोहपुर घटना मे एक व्यक्ति को सजा हुई। वहा पर भी मजिस्ट्रेट को कहना पड़ा कि जनता का प्रदर्शन पूर्ण रूप से अहिंसक था।

इस घटना की खबर जब तेजपुर पहुची तो वहा के नेताओ ने पुलिस द्वारा जनता पर की गई इस ज्यादती के विरोध मे २१ सितम्बर को एक सभा करने का निश्चय किया। पुलिस-अधिकारी भला इसे कैसे सहन करते उन्होने २ बजे से ही शहर के प्राय नाको पर राइफल एव किर्चो से सुसज्जित सिपाही तैनात कर दिए कि लोग शहर में न आ सके। पुलिस के लाख प्रयत्न करने पर भी हजारो की तादाद मे जनता टाउन हाल मे इकट्ठी हुई। लोग निहत्थे एव शान्त थे। सभा करने के अतिरिक्त उनकी और कुछ मशा न थी। पर अधिकारी सशस्त्र पुलिस को साथ लेकर सभा-स्थल पर जा पहुचे और लोगो

का सभा भग करने का हुक्म दिया। जनता अपने स्थान पर डटी रही। इधर से अधिकारियो ने अन्धाधुन्ध मार-पीट प्रारम्भ कर दी। सैकडो व्यक्ति घायल हुए। कुछ ने अपनी जान बचाने के लिए भागने की चेष्टा की, पर पकडे गए और बुरी तरह से पीटे गए।

२० सितम्बर को छोटिया एव बेहेला थानो पर हुई घटनाए भी अपना एक विशेष स्थान रखती है। करीब ५००० व्यक्तियो ने, जिन में स्त्रिया भी काफी सख्या मे थी, छोटिया तथा बेहला थानो पर धावा किया और थानो की इमारतो पर राष्ट्रीय झडा फहराने मे सफलता प्राप्त की। पुलिस-अधिकारी खडे देखते रहे। पर जनता के जोश के सामने कुछ बोल न सके। शाम को भीड अपनी सफलता पर खुशी मनाती हुई अपने घरो को चली गई। बाद में पुलिस ने लोगो के घरो पर आक्रमण किया और उन पर नाना प्रकार के अमानुषिक अत्याचार किए।

जुर्माना वसूल करने में यहा पर भी नौगाव जैसे राक्षसी तरीके काम मे लाये गये।

कामरूप

इस जिले मे भी आन्दोलन बहुत अशो में अहिंसात्मक रहा। मुक्तापुर गाव के प्रसिद्ध काग्रेस कार्यकर्ता श्री महेन्द्रनाथ डेका तथा उनके अन्य साथियो ने अपूर्व अहिंसात्मक बलिदान का परिचय दिया। उसका वर्णन अन्यत्र किया जा चुका है।

जिले के बारपटे सब डिवीजन मे बाजाली एक स्थान है जो बहुत घना बसा हुआ है। रचनात्मक कार्य का यह प्रधान केन्द्र है। अतएव स्वाभाविक रूप से ही यहा अहिंसात्मक प्रदर्शनो का जोर रहा। २१ सितम्बर को जोला, चौखुटी एव नित्यानन्द, इन तीन स्थानो पर एक साथ सभायें हुई। पिछले दोनो स्थानो मे पुलिस ने किसी प्रकार का दखल न दिया। परिणामस्वरूप सभा शान्तिपूर्वक हो गई। परन्तु जोला में प्रधान पुलिस अफसर ने सभा भग करने का हुक्म दिया। लोग कुछ देर तो डटे रहे, पर जब उन पर अधिक सख्ती की जाने लगी तो उन्होने सभा भग कर दी। लोग चुपचाप अपने घरो को लौटने लगे। कुछ लोग आते समय सडक के किनारे पेड के नीचे बैठ गये। पुलिस-अफसर थाने को लौटता हुआ वहाँ से निकला। उसने गरजकर लोगो को चले जाने को कहा। पर वे अपने स्थान पर बैठे रहे माना उन्होने उसके हुक्म को सुना ही न हो। अफसर ने झट अपना रिवाल्वर सम्भाला

और दो व्यक्तियो को गोली मार दी। इसके बाद पुलिस अफसर मस्ती के साथ आगे बढा। थोडी दूर पर उसे फिर कुछ आदमी सभा से लौटते हुए मिले। उसने पुन गोला चलाई और कई मनुष्यो को घायल कर दिया।

पाठशाला नामक स्थान पर जनता ने पुलिस थाने पर आक्रमण किया और उसे दिन भर अपने अधिकार में रखा तथा बडी शान मे उस पर राष्ट्रीय झडा फहराया।

पुलिस एव फौज के दमन की प्रतिक्रिया हुई। कई जगह लोगो ने सरकारी हवाई अड्डो पर आक्रमण किये। लोगो ने जो कुछ किया खुले आम किया, लुक-छिप कर चोरो की भाँति नही। २६ अगस्त को सोभाग हवाई अड्डे पर हुआ आक्रमण इसका ज्वलन्त उदाहरण है। आन्दोलन के पूर्व से ही यह हवाई अड्डा बन रहा था। ठेकेदारो का बहुत-सा सामान वहा पडा था। जनता की एक बडी भीड ने अड्डे पर आक्रमण कर दिया और जितना भी सामान था, सब में आग लगा दी। तीन एम० ई० एस० की लारियाँ भी खडी थी, उनको भी आग की भेंट कर दिया गया। इसके बाद जनता इन्स्पेक्शन बगलो एव कुछ क्वार्टरो पर भी टूट पडी और उनमे आग लगा दी। चारो ओर से लपटें इतनी भयानकता से उठी कि १६ मील दूर बरपेटा में रहने वाले एस० डी० ओ० को अपने मकान से आग का पता लग गया। वह हडबडाकर घटनास्थल की ओर दौडा। परन्तु फेरी घाट पर पहुँचने से मालूम हुआ कि वहा न तो कोई नाव है, न कोई मल्लाह ही। उसने दूसरे रास्ते से जाने की कोशिश की। किन्तु जनता ने पहले मे ही जितने भी सम्भव रास्ते थे उनको बन्द कर दिया था, ताकि पुलिस, फौज आदि कोई घटनास्थल पर न पहुँच सके। कई घटो तक आग जलती रही और सारा सामान जलकर खाक हो गया। इस घटना मे करीब दो लाख रुपये के नुकसान का अनुमान लगाया जाता है।

सरकारी विज्ञप्ति के अनुसार नवम्बर मास मे जहा-तहा तोड-फोड की गई, जिसमे स्त्रियो का भी हाथ था। ७ नवम्बर की बात है। कामरूप मे कुछ स्वय सेविकाओ ने महकमा तामीर की १२ गाडियो को रोक लिया। ८ और ९ की रात को उन्होने ठेके द्वारा फौज को पहुँचाये जाने वाले कुछ सामान पर छापा मारा और उसे जलाकर नष्ट कर दिया। इसी दिन बरपेटा हाई स्कूल जनता के क्रोध का शिकार बना और जलाकर भस्म कर दिया गया। १३ और १४ तारीख की रात को गोहाटी में सब डिप्टी कलेक्टर का दफ्तर तथा प्राइस कन्ट्रोल आफिस भी अग्नि देव की भेंट चढा दिये गए।

ग्वालपाड़ा जिला

ग्वालपाडे में आन्दोलन का श्रीगणेश शान्तिपूर्ण प्रदर्शनों से हुआ। विद्यार्थियो का इन प्रदर्शनो में विशेष हाथ था। यद्यपि प्रदर्शन पूर्ण रूप से अहिंसात्मक थ, पर नौकरशाही ने प्रदर्शन करने वालो पर लाठी एव किर्चों द्वारा प्रहार किया। २५ अगस्त की वात है, ग्वालपाडा में २५ विद्यार्थियो एव १५ अन्य व्यक्तियो का एक छोटा-सा जुलूस निकला। इन लोगो का उद्देश्य नेताओ की गिरफ्तारी पर विरोध प्रकट करना था। उनके पास राष्ट्रीय झडो के अतिरिक्त और कुछ न था। जुलूस थोडी दूर ही वढने पाया था कि पुलिस ने लाठियो एव किर्चों से उस पर धावा बोल दिया। परिणामस्वरूप ९ व्यक्ति घायल हुए जिनमें से ५ को सख्त चोटे आईं। ३ व्यक्ति अस्पताल भेजे गये, जिनमें से दो व्यक्ति चार महीने के बाद ठीक हुए। इससे अन्दाजा लगाया जा सकता है कि यह प्रहार कितने जोरो से किया गया था। इतना ही नही, अस्पताल में भर्ती किये गये तीनो घायल व्यक्तियो पर वाद में १४४ धारा की मातहत हुक्म न मानने का जुर्म लगाकर केस चलाया गया। प्रदर्शन करने वालो मे से चार अन्य व्यक्ति भी गिरफ्तार कर लिये गये थे।

इस प्रकार शान्तिपूर्ण प्रदर्शन करने वाले निरपराध व्यक्तियो का खून वहाकर सरकार ने कुछ लोगो को उत्तेजित कर दिया। कुछ जोशीले व्यक्तियो ने जहा-तहा तोड-फोड का काम शुरू कर दिया। सरकारी विज्ञप्ति के अनुसार यह काम नवम्बर तक चलता रहा। २ और ३ नवम्बर की रात को एक गाव में दो वास के पुल जला दिये गये तथा दूसरे स्थान पर इस्पेक्शन वगले को फूंकने को प्रयत्न किया गया। इसी प्रकार ५ नवम्बर को धूबडी के सेकेण्डरी स्कूल को तथा ११ नवम्बर को धूबडी से २८ मील दूर स्थित एक वास के पुल को जलाने की कोशिश की गई।

इस जिले में सामूहिक जुर्माना वसूल करने की कहानी बडी ही रोमाचकारी है। श्रीयुत आर० के० चौधरी द्वारा प्रान्तीय असेम्बली में पेश की गई तथा प्रधान मन्त्री द्वारा सच करार दी गई एक घटना को हम श्री चौधरी के शब्दो मे ही उद्धृत करते है जिससे पाठक पुलिस के अत्याचारो का अनुमान लगा लेगे।

"यह घटना कोकीरी नामक गाव की है। इस गाव के निधन राजवशी से सामूहिक जुर्माने के आठ रुपये वसूल करने के लिए एक कास्टेबल को नियुक्त किया गया। निधन के पास नकद रुपये नही थे। इस पर कास्टेबल ने उसके बैलो की जोडी को खोल लिया। बैलो को लेकर जब वह चलने लगा

तो निधन ने बड़ी आरजू-मिन्नत की, क्योकि उसके पास बस वही दो बैल थे। कास्टेबल उसे गाली देने लगा। बदले मे निधन ने भी खरी-खोटी सुनाई। तब कास्टेबल ने उसे लाठी से पीटा। यह कहना सरासर गलत है कि निधन ने उस पर भाला चलाया। कास्टेबल के शरीर पर भाले के आघात के कोई चिन्ह नही पाये गये। यह घटना दिन की है।

"रात में करीब ११ बजे एस० डा० ओ० दुधनाई से लौटा। उसे इस बात की खबर मिली। दो लारी सशस्त्र पुलिस और दो यूरोपियन अफसरो के साथ वह घटनास्थल पर पहुचा। निधन अपने घर में था। दरवाजे बन्द थे और अन्दर रोशनी हो रही थी। उसे बाहर निकलने को कहा गया, लेकिन उसने बाहर आने से इन्कार कर दिया। इस पर उसका घर घेर लिया गया और एस० डी० ओ० ने गोली चलाने का हुक्म दिया। एक यूरोपियन अफसर ने गोली चलाई। छ बार गोलिया छोडी गईं। कुछ गोलिया अन्दर जाकर निधन की टिहुनी के पास लगी। वह गिर गया और खून की धार फूट निकली। एक गोली दीवार को छेदती हुई दूसरी ओर पहुची और वहा खडे सिपाही के जा लगी। वह सिपाही फौरन मर गया। इस पर मकान का दरवाजा तोड़कर सैनिक अन्दर घुस गये और निधन को किर्चे भोक-भोक कर मार डाला, ठीक उसी तरह जैसे कि जगली सूअर को शिकार मे मारा जाता है।"

पाठको को यह जानकर ताज्जुब होगा कि ऐसे अमानुषिक अत्याचार करने वाले एस० डी० ओ० को बरखास्त करना तो दूर रहा, सरकार ने उसे एडीशनल डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट बना दिया। यह है कि ब्रिटिश साम्राज्यशाही के न्याय का नग्न नमूना।

: ७ :

युक्तप्रान्त में सन् बयालीस का विद्रोह

जनता एवं सरकार को हुई क्षति का विवरण

(१) सजाएँ— १५,१४२

नज़रबन्द ५,३१७

सामूहिक जुर्माना ३४,९९,३८०-८-२

(कुल ५७९ स्थानो पर)

(२) गोली-काण्ड—

कितना जगह गोली चली	कितनी वार गोली चली	राउण्ड्स की सख्या	
६८	११६	रिवाल्वर	२६६
		मस्कट	१,५८७
		१२ वोर	१४९
		राइफल	३०१

मारे जाने वालो की सख्या १३३

सख्त घायल होने वालो की सख्या २२७

(३) पुलिस की हानि—

कितने थानो पर हमले किये गये १५

कितने थाने जला दिये गये ६

कितने कर्मचारी मारे गये १८

कितने कर्मचारी सख्त घायल हुए १२

नोट—इसके अलावा १३ रिवाल्वर, ७५ मस्कट और अनगिनत कारतूसो पर कब्जा किया गया।

(४) डाक विभाग की हानि—

कितने डाकखानों पर हमले हुए ८७

कितने डाकखाने नष्ट किये गये ६

कितने लेटरबक्स नष्ट किये गये ७०

कितने डाकियो पर हमले हुए	५०
कितनी जगह टेलीग्राफ और टेलीफोन के तार काटे गये	३३७
(५) रेलवे विभाग की हानि—	
कितने स्टेशन जलाये गये	१५
कितने स्टेशनो पर हमले हुए	७२
कितनी गाडिया गिराई गई	१४
कितने कर्मचारी मारे गये	९
कितने कर्मचारी घायल हुए	१४
(७) विस्फोटक पदार्थों का प्रयोग—	
कितनी जगह बम फटे	६०
फटने से पहले पकड़े गये बम केस	१५७
(८) तोड़-फोड—	
विजली सप्लाई कम्पनियो मे	७ जगह
सडके तोडी गई	८४ ,,
नहर और सिंचाई के साधनो मे	४० ,,
अन्यत्र	३२७ ,,

सरकार की हानि	अन्य पार्टियो की हानि
लगभग ३,६३,३६६ रु०	१,०२, ७७८ रुपया

संयुक्त प्रान्त ने कई आन्दोलनो का श्री गणेश किया है और प्राय हर एक राष्ट्रीय आन्दोलन मे वह सदैव आगे रहा है। सन् १८५७ का गदर भी यही से प्रारम्भ हुआ था। सन् १९३२ के लगानबन्दी आन्दोलन का श्रेय भी युक्त प्रान्त को ही है। सभी व्यक्तिगत व सामूहिक आन्दोलनो में युक्त प्रान्त से सबसे अधिक सख्या मे लोग जेलो मे गये। यह इस बात का प्रमाण है कि यहाँ के लोग राजनैतिक कामो में विशेष रस लेते ह। यहा कई प्रमुख राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय नेता पैदा हुए। नेहरू और मालवीय यहीं की उपज हैं।

युक्त प्रान्त कृषि-प्रधान सूबा है। सन् १८५७ के पश्चात् ब्रिटिश साम्राज्यशाही ने अपने को अधिक सुदृढ बनाने के लिए युक्त प्रान्त मे जमीदारी और ताल्लुकेदारी की प्रथा को स्थापित किया। फलस्वरूप गावो की जनता दुहरी गुलामी मे पिसने लगी। सन् १९२० मे हिन्दुस्तान मे जब गाधी की आधी चली तो इसके वेग में युक्त प्रान्त के लाखो किसान उठे और उसके बाद आन्दोलन मे ग्रामीणो ने प्रमुख भाग लिया। इस प्रकार यक्त प्रान्त में कांग्रेस आन्दोलन का प्रवाह विशेषत गावो की ओर ही अधिक रहा है। युक्त प्रान्त के

अधिकाश नेताओ ने स्वय अपनी कार्य-कुशलता, लगन व सचाई से अपना स्थान बनाया है ।

८ अगस्त से पहले प्रान्तीय काग्रेस कमेटी ने युक्त प्रान्त के प्रमुख कार्य-कर्ताओ की बैठक बुलाई थी । उस समय प० जवाहरलाल नेहरू ने आने वाले सघर्ष की बाबत कुछ इशारा किया था । ९ अगस्त को बम्बई मे काग्रेस नेताओ की गिरफ्तारी के पश्चात् युक्त प्रान्त की जनता व बचे-बचाये काग्रेस नेताओ ने अपने को एक अजीब स्थिति में पाया । एक ओर नौकरशाही का तीव्र व भयकर प्रहार हो रहा था, दूसरी ओर युक्त प्रान्त के लोग कुछ करने के लिए उतारू थे । ९ अगस्त को शाम तक लगभग ५५ काग्रेस कार्यकर्ता विभिन्न जिलो में गिरफ्तार किये जा चुके थ और सर्वत्र धडा-धड गिरफ्तारियो, जब्तियो, और सैनिक-प्रदर्शनो आदि का दौर-दौरा था । युक्त प्रान्त को इसका उपयुक्त प्रत्युत्तर देना था और वही उसने दिया ।

आन्दोलन की दृष्टि से हम युक्त प्रान्त को पूर्वी और पश्चिमी दो हिस्सो मे बाट सकते है । पूर्वी हिस्से में आदोलन का पश्चिमी हिस्से की अपेक्षा कही अधिक जोर रहा । घनी बस्ती, यातायात के साधनो की कमी, शिक्षा की अधिकता और सरकारी प्रबन्ध की अपर्याप्तता आदि इसके कारण है । प्रगतिशील विचारो और पार्टियो के लिए यह उर्वर भाग है । यहा के लोग साहसी और उद्योग-शील है । क्राति के उपयुक्त सभी कारण यहाँ मौजूद थे । गाधीजी के 'करो या मरो' के नारे ने उनमे एक अजीब जान फूक दी थी । नेताओ की गिरफ्तारी ने मानो बारूद में चिनगारी लगा दी ।

आन्दोलन का व्यापक रूप युक्त प्रान्त में लम्बा न रहा । आरम्भ मे प्राय हर जगह हडतालें हुईं, जुलूस निकाले गये और १४४ दफा को भग किया गया, पर आन्दोलन का यह रूप मुश्किल से एक सप्ताह रहा । उसके बाद फौरन ही युक्त प्रान्त के पूर्वी जिलो बलिया, जौनपुर, बस्ती, आजमगढ, फैजाबाद, सुल्तान-पुर, प्रतापगढ, गोरखपुर, इलाहाबाद, बनारस, इत्यादि मे हजारो आदमी आन्दोलन के वेग मे उठे और उन्होने राज-सत्ता पर सामूहिक प्रहार प्रारम्भ किये । उन सबका ध्येय सरकारी मशीनरी को अस्त-व्यस्त करना था । इनका नेतृत्व मुख्यत विद्यार्थियो ने किया जो देहातो में फैल गये । बनारस हिन्दू-विश्वविद्यालय, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी तथा दूसरे इसी प्रकार के स्थान नेतृत्व के केन्द्र थे ।

युक्त प्रान्त मे तोड-फोड का प्रोग्राम सर्व प्रथम १२ अगस्त से प्रारम्भ हुआ जब कि मुगलसराय स्टेशन पर पहली बार रेल के तार काटने की सूचना

मिली। १२ अगस्त से इलाहाबाद, बनारस, जौनपुर, आजमगढ, बलिया आदि जिलो मे तोड-फोड के कार्य व्यापक रूप से होने लगे। १३ तारीख को शाहगज स्टेशन के निकट जौनपुर स्टेशन के पास एक गाडी गिराई गई। फिर आजमगढ जिले मे एक घटना सरायबीर के पास हुई। इस घटना की जाच करने से पता चला कि तोड़-फोड करने के लिए लोग विशेष प्रकार के औजारो का प्रयोग करते थे। इसके मजदूरो ने भी तोड-फोड़ के कार्य में विद्यार्थियो का हाथ बटाया। इलाहाबाद जिले मे मजदूरो ने सरकारी सम्पत्ति को हानि पहुचाने के काफी कार्य किए। इलाहाबाद और बनारस स्टेशन के बीच तथा उनके इर्द-गिर्द कितने ही मील तक गुरिल्ला दस्तो ने रेल-तार काटने के कार्य किए। १४ अगस्त को बनारस के विद्यार्थियो का एक दस्ता रेलवे इजन पर कांग्रेस झडा लगाकर बलिया जिले मे गया। अब आन्दोलन गावो में फैलने लगा। सरकारी सस्थाओ, थानो, कचहरियो आदि पर सामूहिक प्रहार होने लगे और बनारस, गाजीपुर, बलिया के बीच आमदो-रफ्त के रास्ते व तार आदि बिलकुल बन्द हो गए। १५ अगस्त को विद्यार्थियो के इन दस्तो ने जौनपुर जिले में जन्धाई स्टेशन जला दिया। इन प्रहारो में सैकडो और हजारो आदमी शामिल थे।

दमन-नीति अपनाने में युक्त प्रान्त की सरकार ने सारी ब्रिटिश नौकरशाही का नेतृत्व किया। यहा पर हैलेटशाही का राज्य था। सन् १९४२ मे उसने आन्दोलन को कुचलने मे क्रूरता की हद कर दी। हैलेट की अपनी एक विशेष टोली थी। नेदर सोल, होडी, मार्श स्मिथ, मूडी इत्यादि उनके मार्शल थे। 'खून और आतंक' हैलेटशाही का नारा था। सैकडो लोगो को पुलिस और फौज ने खुले आम बीच बाजारो मे कोडे लगाये। इसका उद्देश्य जनता के हृदय पर आतंक जमाना और ब्रिटिश राज्य की उखडती हुई शक्ति की पुन छाप बिठाना था बिना अदालती आज्ञा प्राप्त किये और बिना उम्र व सेहत का कोई लिहाज बरतते हुए इस प्रकार के सैकडो काड किये गए। कोई भी आदमी जो खद्दर पहने दीख पड़ता था, पकड़ बुलाया जाता था और अपने हाथो गाधी टोपी जलवाई जाती थी और उसकी पूरी पिटाई की जाती थी। इस प्रकार की घटनाए पूर्वी तथा पश्चिमी जिलो में काफी मात्रा में हुई।

पूर्वी जिलो मे गाँव-के-गाँव लूटे गये, उनमें आग लगाई गई, गांव वालो को घर से बाहर निकाला गया, उनकी सम्पत्ति लूटी गई और कही-कही तो स्त्रियो को सैनिको की पाशविक वृत्ति का शिकार बनना पड़ा। कांग्रेस वालो

के घर उनके सामने जलाये गए, बन्दूक की नोक के बल पर तुरन्त सामूहिक जुर्माने वसूल किये गए। इस लूट में सरकार-परस्तो तथा कांग्रेस-जनो में कोई भेद नहीं किया गया। सौदागर, जिमींदार तथा मध्यम श्रेणी के लोग इस लूट के शिकार बने। उसके फल स्वरूप जो क्षति हुई, उसका कोई अनुमान लगाना भी कठिन है।

बलिया

बलिया ने इस आन्दोलन के इतिहास में अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान बनाया है, जिसको कि भावी सन्तानें गर्व से पढेंगी। राजनैतिक दृष्टि से यह जिला खूब जाग्रत है। सन् १९४२ के अगस्त महीने से पहले ही लोगो में असन्तोष की लहर फैली हुई थी। वे कांग्रेस कौमी सेवा दल, और कौमी रक्षक दल में सैकडो की तादाद में शरीक हो रहे थे। बम्बई मे कांग्रेस-नेताओ की गिरफ्तारी से जनता में गहरा जोश फैला और वह कुछ करने या मरने के लिए कटिबद्ध हो गई।

विद्यार्थियो ने सर्व प्रथम आन्दोलन का श्रीगणेश किया। स्कूल कॉलेजो में एकाएक हडतालें हो गईं। हजारो की तादाद मे विद्यार्थियो को गिरफ्तार किया गया। १० अगस्त को सभायें हुईं, जुलूस निकाले गये और शहर में घूम-घूम कर दूकानो तथा विशेष स्थानो को बन्द कराया गया। यह दिन शांति पूर्वक बीत गया। दूसरे दिन यानी ११ अगस्त को १५ हजार विद्यार्थियो का एक विशाल जुलूस जिला अदालत की ओर बढा और उसने वहा का काम बन्द कराना चाहा। वहा जुलूस के कुछ विद्यार्थी पकडे गये जिससे विद्यार्थियो में और भी उत्तेजना फैल गई और उन्होने उससे भी बडा जुलूस निकालकर दफा १४४ तोडी और जिला अदालत के काम को रोकना चाहा। मिस्टर वयस, सब डिवीजनल आफिसर बलिया, इस बात की खबर पाते ही कि जुलूस अदालत की तरफ आ रहा है, सशस्त्र पुलिस लेकर आगे बढे और जुलूस को रेलवे क्रासिंग के पास रोका, जो कि स्कूल से आध मील की दूरी पर है और जो शहर और अदालत के अहाते के बीचो-बीच पडता है। जुलूस तो रुक गया पर भीड बढती गई। इसी बीच कुछ ईंट-पत्थर फेंके गये। इस पर मिस्टर वयस ने विद्यार्थियो पर लाठी-चार्ज का हुक्म दे दिया। फलस्वरूप १०० विद्यार्थी घायल हुए और एक विद्यार्थी बुरी तरह से घायल होने के कारण अस्पताल में जाकर मर गया। ५० विद्यार्थी पकडे गये। मिस्टर वयस ने ऐसे विद्यार्थियो को भी गिरफ्तार किया और जमीन पर घसीटा जिनका जुलूस से कोई लगाव नही था। वे घर से पकड़कर लाये गए और

उन्हे सड़क पर पीटा गया। उन्ही दिनो लड़कियो ने भी काग्रेस का झडा लेकर अदालत की ओर जाने की कोशिश की और डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट जे० निगम आई. सी एस. और मिस्टर बयस की अदालत वन्द करने के प्रयत्न किये। जब कि लड़कियाँ इस तरह से अदालत वन्द कराने की कोशिश कर रही थी, विद्यार्थियो का एक जत्था पुलिस स्टेशन की तरफ गया जो शहर से लगा हुआ है और वहाँ पहुँचकर विद्यार्थियो ने आग लगा दी। विद्यार्थियो के इस गिरोह ने लौटते समय अदालत मे भी कुछ हगामे किये। कुछ लडकियो को भी गिरफ्तार किया गया। जब दमन के समाचार जिले के भीतरी हिस्से मे पहुँचे तो लोगो में बडा जोश फैला और रेल की पटरियो को हटाने, टेलीग्राफ के तारो को काटने, रेलवे स्टेशनो तथा पुलिस चौकियो मे आग लगाने के काम शुरू होगये। १४ और १६ अगस्त के बीच १३ रेलवे स्टेशन फरनीचर तथा रेकार्ड सहित जला दिये गए। ५ हज़ार से लेकर १५ हज़ार तक की तादाद मे जनता इसमे शामिल थी। १३ अगस्त को जनता ने सैतवार पुलिस स्टेशन पर धावा बोल दिया। इमारत व सारे कागजात जला दिये गए और हथियारो पर कब्जा कर लिया गया। पुलिस स्टेशन के आफीसर और समस्त पुलिस वालो ने जनता के सामने आत्म-समर्पण किया। इसके बाद जनता ने नरवर, सिकन्दरपुर, उन्नाव, गहरवार और हलदारपुर की पुलिस चौकियो पर कब्जा कर लिया। १० अगस्त को जनता का बासडीह तहसील और पुलिस स्टेशन पर कब्ज़ा हो गया। यहाँ के भी सारे कागजात जला दिये गए। पुराने लोगो को ३ माह की तनख्वाह देकर अलग कर दिया गया और नये आफीसर नियुक्त किये गए।

१६ अगस्त को नवयुवको ने रसड़ा तहसील, खजाने और पुलिस स्टेशन पर धावा बोल दिया। अधिकारियो ने तुरन्त घुटने टेक दिये और राष्ट्रीय झडा इन इमारतो पर फहराने लगा। लोगो ने एक सरकारी खैरख्वाह के मकान के अहाते में घुसकर बीज गोदाम को कब्जे मे करना चाहा, किन्तु कामयाबी नही मिली। चारो तरफ से घिरी हुई भीड पर निर्दयतापूर्वक गोलियाँ चलाई गईं। जिसकी तुलना जलियान वाला बाग से ही की जा सकती है। कितने ही व्यक्ति घटनास्थल पर मर गये और सैकडो घायल हुए।

१७ अगस्त को जनता की एक टुकड़ी थाने पर काग्रेसी झडा लगाने गई। पुलिस सब इन्सपेक्टर ने काग्रेस के प्रति अपनी वफादारी दिखाने के लिए गाधी टोपी पहन ली और राष्ट्रीय नारे लगाये। जब उससे हथियार सौंपने के लिए कहा गया तो उसने अगले रोज़ अर्थात् १८ अगस्त को हथियार

देने का वादा किया। १८ तारीख को जब २५-३० हजार की तादाद में जन-समूह पुलिस स्टेशन पर गया तो सब इन्सपेक्टर ने नेताओ को थाने के अहाते के अन्दर बुलाया और शेष जनता से बाहर रुकने तथा धैर्य व सन्तोष रखने की विनती की। जैसे ही नेता अहाते के अन्दर गये, दरवाजे बन्द कर लिये गए। पुलिस के सिपाही पहले ही से थाने की इमारत के ऊपर बन्दूकें लेकर पहुच चुके थे। थानेदार ने नेताओ से, ऊपर जाने के लिए कहा और जब वे ऊपर जाने लगे तो उन्हे जीने में ही बन्द कर दिया गया। उधर लोगो पर गोली चलाने का हुक्म दे दिया गया। लोग अपने नेताओ को छोडकर जाने वाले नहीं थे अत उन्होने डटकर गोलियो का मुकाबिला किया। जब आगे के लोग गोली खाकर गिर पडे तो दूसरो ने उसकी जगह ले ली। कौशल्या कुमार नामक एक नवयुवक ने जब यह देखा कि थाने के ऊपर जो काग्रेसी झडा फहरा रहा था उसे उतार लिया गया, तो वह भीड को चीरता हुआ थाने की छत पर चढने का प्रयत्न करने लगा। ऊपर से एक गोली दागी गई और वह बहादुर नवयुवक फौरन ही मृत्यु की गोद में सो गया। इस प्रकार गोलियो की बौछारें साढे तीन बजे शाम से आठ बजे रात तक होती रही। अन्त में निहत्थी, धैर्यपूर्ण और अहिंसक जनता की ही जीत हुई। पुलिस का गोली-बारूद का सारा स्टाक समाप्त हुआ और सब इस्पेक्टर तथा थाने के अन्य कर्मचारियो ने आत्म-समर्पण किया। १९ आदमियो की घटनास्थल पर ही मृत्यु हुई और ४१ सख्त जख्मी हुए। फिर भी लोगो ने पुलिस आफिसर को नहीं मारा। हा, थाने मे निस्सन्देह आग लगा दी।

बलिया जिले मे इस प्रकार आठ पुलिस-स्टेशन पूर्णत जला दिये गए और बलिया कोतवाली और रसडा का थाना बुरी तरह बरबाद किये गए तथा उन पर काग्रेसी झडा फहराया गया। इनमें से कुछ थानो को तो इतनी क्षति पहुची कि उन्हे नये सिरे से बनवाया गया। इन आक्रमणो में थानो से १७ बन्दूकें छीनी गई और बचे बचाए पुलिस स्टेशन भी हेडक्वार्टर पर आगये। सिकनार थाने के भागे हुए पुलिस आफिसर सुखपुरा में जनता द्वारा पकडे गये और उनसे ५ बन्दूकें ले ली गई। ऐसे ही फबना पुलिस स्टेशन से भी ८ बन्दूकें लोगो के हाथ लगी।

इस प्रकार १९ तारीख तक जिले की प्राय सभी सरकारी सस्थाओ पर जब जनता का कब्जा हो गया तो एक विशाल जन-समूह जिला हेडक्वार्टर पर कब्जा करने के लिए डिस्ट्रिक्ट जेल के सामने इकट्ठा हुआ। जिले के प्रमुख सरकारी हमदर्द लोग भी जिला मजिस्ट्रेट के पास गये और उनसे काग्रेस

नेताओ को छोडने की प्रार्थना की । जिला मजिस्ट्रेट ने बडे धैर्य व होशियारी से काम लिया । वह कांग्रेस-नेताओ के पास जेल में गये और उनसे बातचीत करने के पश्चात् जिला कमेटी के प्रधान श्री चित्तू पाडे और अन्य कांग्रेस नेताओ को उन्होने छोड दिया । जेल से बाहर आने के बाद नेताओ ने जनता को शान्त और अहिंसक रहने का सन्देश सुनाया । जेल से लगभग डेढ-सौ कार्यकर्ता छूटे जिन्होने शहर में जाकर बाजार खुलवाया । निस्सन्देह कुछ ऐसे लोग भी थे जो अहिंसा की नीति मे पूरी तरह विश्वास न रखते थे । अत· जिला मजिस्ट्रेट, मुन्सिफ और खजाना अफसर तथा फौजी भर्ती के अफसर के घरो पर हमले किये गए ।

२० तारीख को सारे शहर के लोग इकट्ठे हुए और उन्होने कांग्रेस-नेताओ से प्रार्थना की कि वह शहर में शान्ति स्थापित कराये और जनता को लुटेरो व बदमाशो के हाथो से बचाए । कांग्रेसी नेता शान्ति स्थापित करने के काम में जुट गये और उन्हे काफी सफलता मिली । लेकिन दूसरे दिन खबर मिली कि दो तीन सौ आदमियो का एक गिरोह देहात से शहर मे आक्रमण करने के लिए आ रहा है । इस पर नेता घटना-स्थल पर पहुचे और उन्हे अपने घरो को वापस जाने का आदेश दिया । इस प्रकार वे लोग फौरन ही अपने घरो को वापस चले गये । ठीक ऐसे ही समय जब कि एक ओर बाजार खुल गये थे, दूसरी ओर जनता में शान्ति से रहने की प्रवृत्ति पैदा हो गई थी, सैनिको का एक दस्ता ३ बजे शाम को शहर आया और उसने बिना किसी जरूरी आदेश के गोली चलाना शुरू कर दिया ।

जनता की सरकार

१६ तारीख तक बलिया में जनता की स्वतन्त्र सरकार की स्थापना हुई और श्री चित्तू पाडे इसके प्रधान चुने गये । इसने शपथ खाई और २० तारीख को शहर के सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओ की एक सभा हनुमानगज की कोठी पर हुई । उपस्थित जनता ने अपनी सरकार को चलाने के लिए हजारो रुपये चन्दे में दिये । ब्रिटिश नौकरशाही के मुलाजिमो को नजरबन्द कर दिया गया और उनकी जगह पर नये ओहदेदार नियुक्त किये गये । नई सरकार का जनता पर गहरा प्रभाव पड़ा । कितने ही लोगो ने जिन्होने गोदाम घरो से, रेलवे स्टेशनो से व स्टीमर जहाजो से सामान उठाया था या लूटा था, उसे वापस करना प्रारम्भ कर दिया । नई सरकार ने एक तहकीकाती कमेटी भी बनाई और जनता से प्रार्थना की कि वह लूट का सारा माल सरकारी खजाने में जमा कर दे । इस

पर कितने ही लोगो ने जिनके पास लूट का सामान था सरकारी खजाने में दाखिल कर दिया। रिपोली सरकिल मे एक विधवा के ३००० रुपए के गहने चोरी चले गये थे और पुलिस उन चोरो का पता न लगा सकी थी। इस विधवा ने नई सरकार मे अपनी अर्जी दाखिल की। नई सरकार ने चोरो का पता चला लिया और इस प्रकार बुढिया के गहने वापस मिल गये।

यद्यपि नई सरकार थोडे ही दिनो तक कायम रही किन्तु इन दिनो में इसने न केवल जनता की रक्षा ही की, बल्कि सरकारी कर्मचारियो की भी देख-भाल की। किसी सरकारी कर्मचारी की जायदाद लूटी जाने या नष्ट की जाने की एक भी घटना नही मिलती। जब नई सरकार आई उस समय खजाने में डेढ लाख रुपए से ज्यादा था। उस रकम को किसी ने भी अपने निजी इस्तेमाल में लाने की बात स्वप्न में भी नही सोची।

पाशविक दमन

किंतु मार्श स्मिथ और नेदरसोल २२ अगस्त को फौज के साथ बलिया पहुचे और लूट मार करना आरम्भ कर दिया। इसके फलस्वरूप बहुत से लोग फौजी सैनिको की गोलियो के शिकार बने। लगभग १५० कांग्रेसियो के घर लूटे और जलाये गये और स्त्रियो और बच्चो को गावो से बाहर निकाल दिया गया। कुछ स्त्रियो के सिर के बाल काट दिये गये और बहुतो के वस्त्राभूषण छीनकर पुराने कपडे पहनने के लिए विवश किया गया। बहुत से लोगों को बिना अन्न-पानी के घरो मे बन्द कर दिया गया। कितने ही लोग गावो के बीच पेडो मे बाधे गये और उन्हे बडी निर्दयता से पीटा गया। बहुत से लोगो को जमीन पर पडे थूक को चाटने पर विवश किया गया। उन्हे गन्दी-गन्दी गालिया दी गई। यह भी सुना जाता है कि किसी थाने मे तो लोगो के मुह मे पेशाब तक डाला गया। कुछ लोग चौकीदारो को सलाम न करने पर पीटे गये। बहुत से आदमियो की सम्पत्ति लूट ली गई और नष्ट कर दी गई। लोगो को पीटने में लाठी, डडो, बन्दूको और जूतो का प्रयोग किया गया। यहा तक कि बदूको की किर्चो की नोको से भी छेदा गया।

कुछ रोमांचकारी कहानियां

बलिया की अनेक रोमाचकारी कहानिया है। किंतु उनका वर्णन छोड दिया गया है। यहाँ केवल कुछ ही उदाहरण दिये जाते है। ज्यो ही मिस्टर आर० एन० मार्श स्मिथ उस स्थान पर पहुचे, उन्होने सिंह इजीनियरिंग वर्क्स लूटना शुरू कर दिया और उसका सारा सामान जला दिया। फिर बाबू शिव-

प्रसाद रईस की कोठी का नम्वर आया। मि० मार्श स्मिथ ने फौजियो को इस शानदार और सुन्दर कोठी के लूटने का हुक्म दिया। उसी समय मि० मार्श ने कहा—"ओह यह वही कोठी है जहा कि काग्रेस का वादशाह रहा करता था। मैं इसको खाक में मिला दूंगा।"

अब हिन्दू दूकानदारो की वारी आई। यद्यपि वे लोग हाथ जोडकर हर एक प्रकार से विश्वास दिला रहे थे कि हम लोगो ने काग्रेस आन्दोलन में भाग नही लिया है। हमने लडाई मे काफी चन्दा दिया है और अब भी हर एक प्रकार से सरकार का सहायता देने के लिए तैयार है; किन्तु उनकी सुनवाई नही हुई। उन पर जुर्माना लगाया गया और उनसे तुरन्त वसूली का हुक्म दिया गया। एक मिनिट में जुर्माना वसूल कर लिया गया। इस प्रकार कि जो गवर्नमेंट के खैरख्वाह थे वे भी मि० मार्श और उनके सहकारियो की निर्दयता से न बच सके। वहुत से दूकानदार गिरफ्तार कर लिये गये और पीटे गये और नाना भाति से अपमानित किये गये। वाबू राजेन्द्रप्रसाद की कहानी से तो रोगटे खडे हो जाते है। उन्हे पेड पर चढने का हुक्म दिया गया। वे बेचारे पेड पर चढना नही जानते थे। किन्तु एक कास्टेविल ने उन्हे धक्का देकर जबरदस्ती पेड पर चढाया। जब कि उनका शरीर पेड से खिसक रहा था, तो सिपाही नीचे से अपनी राइफल की नोक से कौच कर कहने लगा, 'खबरदार, नीचे मत उतरना' बेचारा वृद्ध किसी प्रकार पेड पर नही चढ सका और जमीन पर आ गिरा। आखिर उसे ७ वर्ष का कारावास दिया गया और सीखचो के भीतर बन्द रखा गया।

बलिया की लूट मे मि० मार्श का काफी हाथ रहा और अपने नमूने से उन्होने पुलिस सिपाहियो के लिए भी नागरिको को लूटने का रास्ता खोल दिया। जब फौजी पुलिस किसी खास गाव मे पहुच जाती थी, तो वहा के डरे हुए ग्रमीण लोग अपनी स्त्रियो और बच्चो सहित, गिरफ्तारी और पीटे जाने के डर से, खेतो मे भाग जाया करते थे। जो लोग गाव मे रह जाया करते थे, उन्हे तुरन्त गाव खाली करने को कहा जाता था। तब एक एक करके सब को लूटा जाता था। आवश्यक बहुमूल्य वस्तुएँ तो कब्जे मे कर ली जाती और मामूली चीजें जला दी जाया करती थी। जब तक गाव मे पुलिस रुकी रहती, किसी को लगाई हुई आग बुझाने का साहस नही होता था। जब पुलिस गाव छोडकर चली जाती तब छिपे हुए ग्रामीण लोग गाव मे लौटते। उस समय तक उनकी सारी सम्पदा जलकर खाक बन चुकती थी और उन बेचारो के लिए शोकाश्रु बहाने के अतिरिक्त और कुछ न रहा जाता था। यहा तक कि

हिन्दुओं के धार्मिक स्थान भी निर्दयी लुटेरो से नहीं बच सके। बलिया से ८ या ९ मील की दूरी पर एक गाव सुखपुरा है। यहा के महन्त श्री महुनावा-गिरी की दर्दनाक कहानी है। स्टेशन अफसर के साथ मजिस्ट्रेट ने इस गाव पर धावा बोला। महन्तजी का एक बहुत बडा हाथी मठ के फाटक पर खडा हुआ था। स्टेशन अफसर ने इस बेचारे बेगुनाह जानवर पर ६ गोलिया चलाईं जिससे वह मर गया। पास ही खूबसूरत बैल बधे हुए थे, वे भी मौत के घाट उतार दिए गये और एक घोडा भी गोली से घायल हो गया। इसके बाद मठ लूटने का हुक्म दिया गया। मठ की ऊची दीवारो पर सीढिया लगाई गई और फाटक के किवाडो पर कुल्हाडे और हथौड चलने लगे। सन्दूक तोड डाले गये और उनका सामान जब्त कर लिया गया। बेचारे भयभीत महन्त और उनके चेले मठ के अन्दरूनी हिस्से में बडी मुश्किल से छिपकर बच सके। महन्तजी का केवल यही अपराध था कि उन्होने मठ पर तिरगा झण्डा फहराया था।

सुखपुरा गाव में चन्दीप्रसाद नामक का एक किसान अपने जानवरो को चारा देने जा रहा था मिस्टर मार्श स्मिथ ने उसे बुलाया और एक दो सवाल पूछने के बाद उसे चले जाने दिया। किन्तु उसी समय एक आदमी ने कहा कि वह तो काग्रेसी है। तब उसे फिर से बुलाया गया और उससे पूछा गया। उसने कई मरतबा अपने इस कथन को दुहराया कि मैंने सन् १९२१ में काग्रेस मे भाग लिया था, किन्तु उसके बाद से मेरा काग्रेस से कोई सरोकार नही रहा। किन्तु उसकी एक न सुनी गई। मार्श स्मिथ ने उससे कहा, उस तरफ घूमो। वह बेचारा ज्यो ही घूमा, पीछे से उसके धाय से गोली मार दी गई। इस प्रकार एक निरपराध प्राणी की हत्या से युक्तप्रान्त के सिविल डिफेंस के डाइरेक्टर महोदय ने अपने हाथ लाल किये।

बलिया ऐसी पाशविक घटनाओ से भरा पडा है। इनसे अच्छी तरह मालूम हो जाता है कि जनता को बढी हुई जागृति को कुचलने मे ब्रिटिश नौकरशाही ने कैसी क्रूरता का प्रदर्शन किया था।

कुछ आंकड़े

बलिया शहर में दो बार और जिले में १५ जगह गोली चली, जिसके फल स्वरूप १२१ आदमी मारे गये और २५९ घायल हुए।

बलिया के एक दर्जन नागरिको को २,६०,००० रुपये का नुकसान उठाना पडा।

बलिया जिले के ३० गाँवो में आग लगाई गई और २१५ घर जल गये।

लगभग १२ लाख रुपया सामूहिक जुर्माना किया गया, किन्तु वसूल २९ लाख से अधिक किया गया।

१९ अगस्त से लेकर करीब १,००० व्यक्ति गिरफ्तार किये गये। उनमे से लगभग २५० व्यक्ति छोड दिये गये, किन्तु इसके पहले हर एक को २० से लेकर २५ बेतो तक की मार दी गई। शेष लोगो को ५ से लेकर ७ वर्ष तक की सजाये दी गई। साथ ही उनको बेत की सजा और १००० से लेकर २००० रुपये तक जुर्माना भी किया गया।

गाजीपुर

गाजीपुर बलिया का पड़ौसी जिला है। अत वह उसकी घटनाओ से अछूता न रह सका। राष्ट्र के नेताओ की गिरफ्तारी की खबर से जनता मे जोश उमड़ पडा और वह अपना सर्वस्व बलिदान कर देने के लिए प्रस्तुत हो गई। नेताओ के अभाव मे नवयुवको ने स्वय नेतृत्व का भार अपने ऊपर ले लिया।

सर्व प्रथम यातायात के साधन नष्ट करने की कोशिश की गई। लोगो ने तार काटना शुरू कर दिया। कही खम्भे उखाडे जाने लगे तो कही डाकखाने खाक कर दिये गये। रेल के स्टेशनो मे चारो ओर धुए के बादल मडराने लगे। रेलगाड़ियो पर कब्जा कर लिया गया। कई रेल के इजिन नष्ट-भ्रष्ट कर दिये गये और लदी मालगाडिया अस्त-व्यस्त कर दी गई। बनारस के हवाई अड्डे पर आक्रमण कर दिया। सुना जाता है कि नन्दगज स्टेशन पर लोगो को सैनिको का बडा गरम सामना करना पडा। सैनिको की बन्दूको से निहत्थी जनता पर लगातार गोलियो की बौछारे होती रही। किन्तु बहादुर नवयुवको ने तनिक भी मुह नही मोडा। अनुमान है कि लगभग ७०-८० नवयुवक इस स्थल पर अमर गति को प्राप्त हुए। घायलो की सख्या तो कई सौ बतलाई जाती है। इसी प्रकार सहात और जमानिया स्टेशन पर भी जनता गोलियो की शिकार बनी। वहाँ दो नौजवानो ने अपनी जीवन की आहुति दी।

राष्ट्रीय झण्डे फहराने का विशेष रूप से प्रयत्न किया गया। थानो और अन्य सरकारी इमारतो पर १५ अगस्त को गाजीपुर नगर मे विद्यार्थियो का शानदार जुलूस निकला। वे लोग कोतवाली पर झडा लगाना चाहते थे। किन्तु पुलिस ने भीड पर लाठी-चार्ज शुरू कर दिया। सादात के थाने मे ज्यो ही जनता पहुची त्यो ही उस पर गोलियो की बारिश शुरू हो गई। जोशीली भीड ने शान्ति के साथ गोलिया खाई। किन्तु गोलिया खत्म हो जाने

पर थानेदार और सिपाही नि शस्त्र हो गए। उत्तेजित भीड ने थानेदार और सिपाहियो सहित थाना जला दिया। मैदपुर के तहसीलदार को जनता के सामने अपना सिर झुकाना पडा और कचहरी पर तिरङ्गा झडा फहराने लगा।

मुहम्मदाबाद में जनता को सैनिको से कडा मोर्चा लेना पडा। यहा एक ओर फौजी दनादन गोलिया वरसा रहे थे और दूसरी ओर निहत्थे भारत माता के सपूत 'अग्रेजो भारत छोडो' के वुलन्द नारो से गोलियो का सामना कर रहे थे। ६ वीरो ने इसी नारे के साथ अपने प्राण छोड।

शेरपुर गाव गाजीपुर नगर से लगभग २० मील की दूरी पर है। शेरपुर वास्तव में शेरो का ही गाव है। यहाँ की जनता ने आन्दोलन मे शेरो की भाति वहादुरी का परिचय दिया। १४ अगस्त को यहाँ की ग्रामीण जनता ने मुहम्मदाबाद के रेलवे स्टेशन और एक हवाई अड्डे पर हमला किया, जिसके फल स्वरूप उसे गोलियो का सामना करना पडा। फलस्वरूप भीड के नेता श्री यमुना गिरि घायल होकर वहोश हो गए और गिरफ्तार कर लिये गये। इस खवर से गाव के लोगो मे सनसनी फैल गई और लागो ने इकट्ठे होकर हवाई अड्डे पर अधिकार करने का बीडा उठाया। ठीक आधी रात को जव चारो आर काली घटा छाई हुई थी। करीव ५०० वीरो के जत्थे ने अड्डे की ओर कूच किया। किन्तु अधिकारी डर से पहले ही उस स्थान को छोडकर चले गये। शरपुर गाव के एक डाक्टर साहव थे। तहसीलदार ने उन्हे झडा फेंकने की आज्ञा दी, किन्तु उन्होने इसकी जरा भी परवाह न की। तव तहसीलदार ने गोली चलाई जो डाक्टर साहव की जाघ को चीरकर पार हो गई। दूसरी गोली उनके पेट से गुजरी। तहसीलदार की तीसरी गोली को डाक्टर साहव ने अपनी छाती मे लिया और वे तिरङ्गा झडा हाथ मे लिये हुए जमीन पर गिर पडे।

गाजीपुर में १९,२० और २१ अगस्त को तीन दिन तक ब्रिटिश शासन का कोई चिह्न शेप नही वचा। काग्रेस कार्यकर्ताओ ने जनता के सहयोग से पचायते स्थापित की जिन्होने सफलता पूर्वक लोगो के जान माल की रक्षा की।

अन्य स्थानो की तरह से यहा भी अधिकारो कथित राजद्रोहियो तथा उनके सम्वन्धियो के प्रति वडी क्रूरता से पेश आये। वनारस के समीप रेलो का मार्ग नष्ट-भ्रष्ट हो जाने के कारण गोरो ने गोमती को नावो से पार किया तथा रास्ते मे जितने भी गाव पडे उन्हे लूटा, नष्ट किया और लोगो पर तरह-तरह के अत्याचार किये। रामपुर तथा शेरपुर में वडी क्रूरता दिखाई गई।

घेरपुर के रामशकरराय और शोभनाराम नामक व्यक्ति मौत के घाट उतार दिये गये। गोली चली, १२ घटे तक लूट हुई, स्त्रियो के शरीरो पर से बलपूर्वक गहने उतारे गये तथा उन पर और भी अत्याचार किये गए। श्रीमती राधिका देवी को एक कुए में फेंक दिया गया जहा उनकी मृत्यु हो गई। प्राय ३ लाख रुपयो का नुकसान हुआ।

गमहार, करुयावाद, सदन, नन्दगज आदि गावो में भी ऐसा ही पाशविक नाटक खेला गया। गमहार को घेरकर बलोची सिपाहियो ने गोलिया चलाई। दूधनाथसिंह और दरोगासिंह शहीद होगये। गाव को लूटा गया। स्त्रियो के गहने छीन लिये गए। उन पर बलात्कार किए गए। गाव को एक लाख रुपए की क्षति पहुची।

२४ अगस्त को चार गोरे सिपाही तथा १५० अन्य सिपाही नन्दगज के थानेदार को लेकर एक गाव को घेरने चले। भारतीय सिपाही पीछे छोड दिये गए और गोरो ने इस गाव में घुसकर आग लगा दी, स्त्रियो के गहने बलपूर्वक छीनकर उनके पुरुषो के सामने ही उनके साथ बलात्कार किया तथा उन्हे पीटा और यह वह गाव था जो तोड-फोड करने वालो में सम्मिलित न हुआ था। उसी दिन, 'आज' पत्र के श्री विक्रमादित्यसिंह साइकिल से इलाके का दौरा कर रहे थे। वे नीदरसोल के सामने पकडकर लाये गए। उन्हे घन्टो तक क्रूरता के साथ पीटा गया और एक थाने में बन्द कर दिया गया, जिसमें तीस और ऐसे ही व्यक्ति बन्द थे जिनका अपराध केवल इतना था कि उनके सम्बन्धियो ने आन्दोलन में भाग लिया था।

राजनैतिक बन्दियो के साथ भयकर दुर्व्यवहार हुए। उनका नगा करके दोपहर की चिलचिलाती धूप में लिटाया जाता था। उनके हाथ-पैर बाँध दिये जाते थे तथा फिर लात-घूसो से उसकी पूजा की जाती थी। एक दिन एक व्यक्ति बेहोश हो गया। होश में आने पर उसने पानी मागा किन्तु पानी के बजाय उसे पेशाब का एक प्याला दिया गया। जले पर नमक छिडकने के लिए राजबन्दियो को जेल मे यह बतलाया जाता था कि किस प्रकार उनकी स्त्रियो को घसीट-घसीट कर हजारो व्यक्तियो के सामने बेइज्जत किया जाता है और किस तरह उनके मकानो को जलाया जाता है।

हिटलरी उपायो से सामूहिक जुर्माना वसूल किया गया। भारी जुर्माने के अलावा लोगो के मकानो में आग लगा दी जाती थी। घर जल जाने पर जब वे जुर्माना न दे सकते थे तब उनके गाय-बैल तथा बचा-बचाया सामान नीलाम किया जाता था।

दमन के आंकड़े

इस जिले में १०० व्यक्तियो का नज़रबन्द और ३००० को गिरफ्तार किया गया। लोगो को दो साल से लेकर पचास साल तक की सजायें दी गईं।

जिले में २० विभिन्न स्थानो पर गोली-काण्ड हुए, जिनमे १६७ व्यक्ति मरे और २३६ घायल हुए।

जिले में ७४ गाव अमानुषिक दमन के शिकार हुए। लोगो को लगभग ३२ लाख रुपये का नुकसान उठाना पडा। जिले में ३, २६, १६०६ रुपये ४ आ० ३ पा० सामूहिक जुर्माना किया गया।

आजमगढ जिला

नेताओ की गिरफ्तारी के विरोध स्वरूप जिले भर में स्थान-स्थान पर हडतालें हुईं तथा विशाल प्रदर्शन हुए। प्रदर्शनो में सभी वर्ग के लोगो ने खुले दिल से भाग लिया। जुलूसो का नेतृत्व विद्यार्थियो ने किया। इस प्रकार आरम्भिक काल में जनता विलकुल अहिंसक रही।

इस जिले मे आन्दोलन सच्चे अर्थ में जन-आन्दोलन था, क्योंकि कुछ सरकारी कर्मचारियो को छोडकर जिले की शत प्रतिशत जनता की सहानुभूति आन्दोलन के साथ थी और दो लाख से अधिक जनता ने आन्दोलन मे सक्रिय भाग लिया।

१० अगस्त को आजमगढ के लोगो ने एक विशाल जुलूस निकाला। अधिकारी वर्ग सशस्त्र पुलिस के साथ जुलूस को रोकने के लिए आ पहुँचा। मजिस्ट्रेट ने लोगो को कचहरी की ओर वढने से मना किया। किन्तु जव स्थिति विगडती दिखाई दी तो उसने अपनी आज्ञा वापिस ले ली। जुलूस राष्ट्रीय नारे लगाता हुआ वडी शान से कर्वला मैदान में पहुचा और वहा पर एक सभा के रूप में परिणत हो गया।

१५ अगस्त को फतहपुर आदि स्थानो के करीव एक हजार ग्रामीणो ने रामपुर चौकी पर धावा वोला और उसका सव सामान भस्म कर दिया। अधिकारी लोग पहले ही भय के मारे मधुवन को भाग गये थे। लोगो ने वहाँ के डाकखाने के सामान मे भी आग लगा दी। उस दिन डाकखाने में २५ मनी-आर्डर आये थे। लोगो ने उनके रुपये पोस्टमास्टर को सौंप दिये और अपने सामने उन्हे वटवा दिया।

लोगो का उत्साह इस सफलता से और भी वढ गया। अत वे दूसरे

गावो की ओर बढे और बस्ती नामक गाव के कच्चे पोखरे पर जा पहुचे। संयोगवश वहा पहले से ही १० हजार किसान मौजूद थे जो बेलथरा स्टेशन से ६५० बोरे चीनी लूटकर लाये थे। सबने मिलकर खूब शर्बत पिया और फिर आगे बढे। गाव-गाव से ग्रामीणो की टोलिया आ-आकर उनमें मिलने लगी। इस प्रकार मधुबन पहुचते-पहुचते करीब-करीब ६०-६५ हजार आदमी जुलूस में इकट्ठे हो गए। जुलूस थाने के सामने जाकर खडा हो गया। जुलूस के अगुआ श्री रामवृक्ष चौबे, मगलदेव शास्त्री और सुन्दरदेव पाडे थाने में गए और अधिकारियो से आत्म-समर्पण करने और थाने पर राष्ट्रीय झडा फहराने की माँग की। उनके इन्कार करने पर नेता लोग लौट आये और जुलूस थाने की ओर बढा। अधिकारी पूरा तैयारी के साथ हमला करने के लिए तैयार थे। अतएव जब उन्होंने अपार जन-समुद्र को उमडते देखा तो उस पर अन्धा-धुन्ध गोलियो की वर्षा शुरू कर दी। पर आजादी के मतवाले गोली खाकर भी आगे बढते गये। कुछ लोगो ने आगे बढकर एक सिपाही के हाथ से बन्दूक छीन ली। इतने मे सूचना मिली कि बाहर से बहुत से सैनिक मशीनगन लेकर आ पहुचे है। अतएव लोगो ने वापिस लौटना ही उचित समझा। क्योकि वहा डटे रहने पर हजारो आदमी व्यर्थ में अपनी जान से हाथ धो बैठते। इस प्रसग पर लोगो ने जिस दृढता और वीरता का परिचय दिया, उसकी घटनास्थल पर मौजूद मजिस्ट्रेट श्री न्यूटन ने भी निजी तौर पर प्रशसा की। इस घटना द्वारा आजमगढ की जनता ने दिखा दिया कि वह देश की आजादी के लिए कितना बलिदान कर सकती है। प्राप्त आँकडो के अनुसार इस घटना मे ३४ आदमी तो उसी समय मर गए और सैकडो घायल हुए। घायलो में से ४२ आदमी एक सप्ताह के भीतर शहीद हो गए। इस प्रकार कुल ७३ आदमियो के मरने की रिपोर्ट मिली है। किन्तु जिस भीषणता के साथ गोलियो की वर्षा की गई, उसको देखते हुए यह अनुमान होता है कि कम-से-कम २००-३०० आदमियो की जाने अवश्य गई होगी। रिपोर्ट न मिलन का कारण यह है कि सरकारी आतक से लोग इतने डर गये थे कि वे अपने परिवार वालो का नाम व पता बताने से हिचकते थे।

तरवा थाने की घटना भी उल्लेखनीय है। १४ अगस्त की बात है करीब ७-८ हजार आदमियो का एक झुड थाने पर झडा फहराने जा पहुचा। उसके नेता श्री तेजबहादुरसिह अपने कुछ साथियो के साथ थानेदार के पास गए और जनता को आत्म-समर्पण करने को कहा। इतने मे जनता ने पीछे से थाने पर हमला कर दिया और सिपाहियो को घेरकर उनसे बन्दूकें छीन ली।

बाद में पुलिस के सब हथियारो पर कब्जा कर लिया गया। पर एक पिस्तौल जो थानेदार की निजी थी थानेदार के कहने पर उसे वापिस कर दिया। कुछ लोग थाने के तमाम कागजात बाहर निकाल लाये और उन्हे अग्नि देवता की भेंट चढा दिया। इस प्रकार थाने पर राष्ट्रीय झडा फहराने लगा।

जनता ने इतने ही से सन्तोष नही किया। उसने बन्दी बनाये हुए अधिकारियो पर मुकदमा चलाने के लिए एक अदालत कायम की। न्यायाधीश गाव के एक बूढे सज्जन श्री जद्दूभर नायक बनाये गये। जब बन्दी के रूप में थानेदार उनके सामने लाया गया तो वह काप रहा था। श्री जद्दूभर उसे अभय देते हुए बोले, "थानेदार भैया ! तोहार कुछ न बिगरी।" उन्होने थानेदार को इलाके से बाहर निकालने का हुक्म दे दिया। आज भी उस गाव के लोग जद्दूभर के इन शब्दो को दुहराकर उस दिन की याद किया करते है।

मऊ में भी १३ अगस्त तक शान्तिपूर्ण प्रदर्शन हुए। परन्तु जब १४ अगस्त को पुलिस ने विद्यार्थियो के एक जुलूस पर लाठी-चार्ज कर दिया तो जनता उत्तेजित हो उठी और उसने क्रोध में आकर नोटिफाइड एरिया कमेटी के दफ्तर को जलाकर खाक कर दिया। दूसरे दिन एक विशाल जन-समूह थाने पर अधिकार करने तथा उस पर झडा फहराने के लिए चला। पुलिस अधिकारियो ने लोगो को आगे बढने से रोका पर उन्होने उनकी यह आज्ञा मानने से इकार कर दिया। बस, फिर क्या था। पुलिस वालो ने उन पर अधा-धुन्ध गोलियो की वर्षा करना शुरू कर दिया जिससे दो आदमी शहीद हुए और बहुत से घायल हुए।

महाराजगज थाने पर लगभग चार हजार जनता ने आक्रमण किया। थानेदार उस समय वहाँ मौजूद नही था। नीचे के अधिकारियो ने थाने की सब तालियाँ जनता को दे दी और आत्म-समर्पण कर दिया। जनता ने थाने पर राष्ट्रीय झडा फहरा दिया और जेल के सब बन्दी छोड दिए। काझा थाने में १८५७ के गदर के समय कुछ देशभक्तो की सम्पत्ति छीनकर एक अग्रेज को पुरस्कार म दे दी गई थी। अब उस पर श्रीमती स्टरमर का कब्जा है। ये स्वय तो इग्लैण्ड में रहती है पर यहाँ देख-रेख के लिए उन्होने एक मैनेजर को नियुक्त कर रखा है। मैनेजर तथा उसके कर्मचारी लोगो पर तरह-तरह के अत्याचार करते थे। जनता को उन अत्याचारो का बदला लेने का अवसर मिल गया। वह भूखे शेर की भाँति स्टरमर इस्टेट के बगले पर टूट पडी और उसके समस्त सामान को लूट लिया।

अमिला के श्री अलगूराय शास्त्री की भावज की वीरता का उल्लेख

किए बिना यहाँ का वर्णन अधूरा ही रह जायगा। इस महिला ने जिस निर्भीकता एवं साहस का परिचय दिया वह स्त्री जाति के लिए गौरव का वस्तु है। एक दिन सशस्त्र सैनिक उनके मकान पर टूट पड़े और उन्होंने घर का सारा सामान आगन में लाकर इकट्ठा कर लिया। वे उसमें आग लगाना ही चाहते थे कि यह वीर महिला आगे बढ़ी और सामान के ऊपर डटकर बैठ गई। इतना ही नही, उसने गरजकर अधिकारियो से कहा—"पहले मुझे फूको, पीछे सामान फूंकना।" अधिकारी एक स्त्री के मुंह से ऐसे निर्भीक वचन सुनकर हक्के-बक्के रह गए। उनकी हिम्मत नही हुई कि सामान मे आग लगाये। सैनिको ने कुछ सामान उठाया और जलाने की चेष्टा की। परन्तु उस वीर महिला ने उनके हाथ से सब सामान छीन लिया। बेचारे सैनिक अपना-सा मुंह लेकर चले गए।

जनता ने जहाँ-तहाँ तोड-फोड का काम भी किया। घोसी, रामपुर, दोहरी घाट, महाराजगज आदि सात डाकखानो पर हमला करके उनके सभी कागजात जला दिए। जिले भर में ७-८ जगह पक्की सडको के पुल भी तोड डाले। खुरहट, अमिला, पूलपुर आदि कई स्टेशनो पर आक्रमण किये गए और टिकट तथा अन्य कागजात फूंक डाले गए। आजमगढ के पास एक ट्रेन जिसमे फौज और माल था गिराई गई। रानी की सराय के पास एक सवारी गाडी के इजन को पत्थर मार-मार कर बेकाम कर दिया। दोहरीघाट से मऊ और मऊ से शाहगज के बीच अनेक स्थानो पर रेलवे लाइन उखाड डाली गई।

इस जिले की सरकारी दमन की कहानी बडी रोमाचकारी है। गाँवो को लूटना, आग लगाना, आदमियो को पकडकर बुरी तरह पीटना, स्त्रियो का लाकर थानो मे रखना और उनके साथ बलात्कार करना आदि मनमाने अत्याचार हुए। इन काले कारनामो की स्थान-स्थान से रिपार्टें मिली है, परन्तु स्थानाभाव से उनका उल्लेख करना कठिन है। यहाँ कुछ खास-खास घटनाओ को दिया जाता है।

रानी की सराय में मेले के लिए इकट्ठे हुए निर्दोष व्यक्तियो पर फौज ने गोली चला दी। जुडावावर देवारा गाँव के काग्रेस-कार्यकर्त्ता महादेवसिंह का घर जला दिया और दीवार खोदकर गिरा दी गई। फिर उन्हें पीटना शुरू किया। जब वे मार खाते-खाते बेहोश हो गए तो उन्हे बाँधकर पेड से लटकाया गया और उनके मुँह में पेशाब करवाया गया।

लूट और फूक का कुछ अन्दाज इससे लगाया जा सकता है कि अकेले श्री शिवबहादुरसिंह के ३२ हजार रुपये के आभूषण लूट लिये गये, २० हजार

रुपये के झाड-फानूस मिट्टी में मिला दिए गए और उनके महल सरीखे मकान को मिट्टी का तेल डालकर जला दिया गया। उनके आठ और दस वर्ष के दो बच्चो ने किसी कदर छत से कूदकर अपनी जान बचाई। मऊ के श्री राधा-रमण अग्रवाल को भी करीब एक लाख रुपये की हानि हुई।

रामनगर गाव में २० गोरे चेत नामक हरिजन के घर में घुस गए और उसकी नवयुवती स्त्री के साथ इतना भीषण बलात्कार किया कि वह बेचारी मर ही गई। इसी प्रकार मझा में भी कुछ गोरे सैनिक एक मकान मे घुस गए। घर की मालकिन अपनी दो छोटी लडकियो के साथ खाना बना रही थी। इन अत्याचारियो ने उस अबला को पकड लिया और उसके साथ बुरी तरह बलात्कार किया।

यहा की राष्ट्रीय सस्थायें भी सरकारी दमन से अछूती न रही। नवादा गाव का स्वराज्य आश्रम जलाकर नष्ट कर दिया गया। इसी प्रकार दोहरी घाट मे हरिजन गुरुकुल, खद्दर भडार के कपडे, चर्खे आदि भी अग्नि देवता के भेंट चढा दिये गए।

रानी की सराय में फौजियो ने तफरीहन भी गोली चलाई, जिससे एक आदमी मारा गया। द्वन्दारा के पास एक गाव में एक खेत पर जाती हुई स्त्री पर गोली चलाई गई जा उसकी गोद के डेढ वर्ष के बालक को लगी और वह तत्काल ही मर गया।

जेलो में भी राजनैतिक बन्दियो के साथ बडा दुर्व्यवहार किया गया। उनको न तो रहने के लिए पूरा स्थान दिया जाता था, न पूरा खाना और न बीमार पडने पर पूरी दवाईया ही। इतना ही नहीं साधारण कैदियो की भाति उन्हें बुरी तरह पीटा भी जाता था।

पटवध ग्राम के आस पास के लोगो ने आन्दोलन में काफी हिस्सा लिया। २३ अगस्त को वहा पर एक विशाल जन-समूह इकट्ठा हुआ। इतने में एक फौजी लारी उधर से आ निकली। लोगो ने लारी को चारो ओर से घेर लिया। सैनिको की हिम्मत टूट गई और उन्होने लोगो से कहा—

"हम आपको किसी प्रकार की हानि पहुचाने नही आये है। हम वापिस जाते है, आप लोग भी चले जायं।" लोगो ने कहा—"पहले आप लोग जाय तब हम हटेंगे" जब भीड वापिस जाने लगी तो इन विश्वास घाती सैनिको ने उस पर पीछे से गोली चलाना शुरू किया जिससे ९ आदमी मारे गए और काफी सख्या में घायल हुए। इसी प्रकार अतरौलिया में भी करीब ५ हजार जनता ने पुन. विरोध प्रदर्शन किया। वहा पर भी गोली चली और कई आदमी मारे

गए। नवम्बर में अचानक एक दिन रात को जनता की एक बडी भीड ने खुरहट स्टेशन पर आक्रमण किया और उसे काफी नुकसान पहुचाया।

इस जिले में ३८० व्यक्ति नजरबद किये गये। लोगो पर १,०३,६४५ रु० २ आ० ६ पा० सामूहिक जुर्माना किया गया। १०५ मकान जला दिये गये। लूट और अग्नि-दाह के फलस्वरूप लोगो को ३,५२,००० रु० के लगभग हानि पहुँची।

बनारस जिला

बनारस भारत का अत्यन्त प्राचीन नगर है। यह प्राचीन भोजपुर का एक हिस्सा है, जहा के लोगो की धमनियो मे आज भी वीरता एव स्वतन्त्रता की भावना का पवित्र खौलता हुआ खून जोश मार रहा है। जब-जब देश की आजादी की लडाई प्रारम्भ हुई तब-तब यहा निवासियो ने अजब शौर्य एव शक्ति का परिचय दिया है। सन् १९४३ में भी जब देश ने 'अग्रेजो भारत छोडो' नारे के साथ खुले विद्रोह का शखनाद किया तो बनारस जिले के लोगो ने भी प्राणो की बाजी लगा दी थी।

आन्दोलन का श्रीगणेश नेताओ की गिरफ्तारी पर हडताल से हुआ। हिन्दू विश्वविद्यालय के विद्यार्थियो का एक जुलूस यूनीवर्सिटी से चलकर दशाश्वमेध घाट पर आया और वहां से काग्रेस के अन्य कार्यकर्ताओ के साथ टाउन हाल पहुँचा, और वहा वह सभा के रूप मे परिणत होगया। विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डाक्टर के०एन०गैरोला इसके सभापति थे। जनता ने सरकारी सस्थाओ पर राष्ट्रीय झडा फहराने का निश्चय किया। शहर के प्राय सभी मोहल्लो से जुलूस निकले। उधर विश्वविद्यालय से विद्यार्थियो का एक बडा जुलूस आ पहुँचा। इस प्रकार दोनो जुलूस सम्मिलित होकर फौजदारी अदालत पर राष्ट्रीय झंडा फहराने के लिए बढने लगे। पुलिस अधिकारी पहले से ही अदालत के अहाते मे जमा थे। उन्होने जुलूस को अदालत के सामने ही रोक दिया। एक उच्च अधिकारी ने भीड का बिखर जाने के लिए कहा, किंतु जब उसने ऐसा करने से इन्कार किया तो लाठी-प्रहार का हुक्म दे दिया। मि०टीजडेल ने सर्व प्रथम निर्दोष तथा शात जनता पर प्रहार किया। फिर तो देखते-देखते लाठियो की वर्षा होने लगी। जनता बहुत देर तक डटी रही, पर आखिर उसे तितर-बितर होना ही पडा। इस लाठी-चार्ज की खबर जब शहर एव जिले में पहुँची तो लोग बडे क्षुब्ध हो गए।

दूसरे दिन सारे शहर मे छोटे-छोटे जत्थो में लोग नारे लगाते हुए घूमने लगे। उधर विश्वविद्यालय से विद्यार्थियों का एक बड़ा जुलूस सरकारी

इमारतो पर झडा फहराने के लिए चला। प्रत्येक विद्यार्थी में एक अजीव उत्साह दिखाई देता था। किसी को भी अपनी जान की परवाह न थी। आज वे नौकरशाही को दिखा देना चाहते थे कि भारत के नौजवान देश की आजादी के लिए क्या-क्या वलिदान कर सकते है। जुलूस फौजदारी अदालत पर जा पहुँचा वहा पर सशस्त्र सिपाही तैनात थे, पर किसी की हिम्मत न हुई कि जुलूस पर गोली चलाने का हुक्म दे। नौजवान अदालत की इमारत पर चढ गए और उन्होने वडी शान से उस पर तिरगा झडा फहरा दिया। झडा हवा के साथ अठखेलियाँ करने लगा। जनता ने जय घोष किया और वह दीवानी अदालत पर झडा फहराने के लिए वढी। अधिकारियो ने इमारत पर चढने के सभी रास्ते वन्द कर दिए थे, अतएव वे निश्चिन्त खडे थे। किंतु एक दुवला-पतला-स छात्र अपनी जान-जोखम मे डालकर खडी दीवार पर निकली हुई ईंटो के सहारे इमारत के शिखर पर पहुँच गया। उसने तुरन्त राष्ट्रीय झडा लिया और उसे पताका-दड पर वाध दिया। झडे को लहराता देखकर जनता के हर्ष का ठिकाना न रहा और उसने खूव जयघोष किया। इसी दिन छात्राओ ने भी अपना एक जुलूस निकाला और खादी-भडार को पुलिस के अधिकार में से छीन लिया।

इन सफलताओ से लोगो का साहस वढ गया। ११ एव १२ ता० को फिर जलूस निकाले गये, पर अधिकारी लोग इस समय तक अच्छी तरह तैयार हो गये थे। उन्होने जुलूस पर गोलियो एव लाठियो की वौछार करना प्रारम्भ कर दिया, जिससे अनेक वीर घायल हुए और मारे गए। लोगो का जोश उस दमन से दवा नही। १३ ता० को दशाश्वमेघ घाट से जुलूस निकालकर टाउन हाल मे सभा करने का निश्चय किया। लोग जूलूस की तैयारी लगे में हुए थे कि अचानक मजिस्ट्रेट सशस्त्र पुलिस को लेकर वहा आ पहुचा और लाठी-चार्ज का हुकम दे दिया। धडाधड लाठिया वरसने लगी, जिससे वहुत से व्यक्ति घायल हुए। घायल होने वालो में जुलूस के सयोजक श्री विन्घ्येश्वरी पाठक और रमाकान्त मिश्र भी थे। लोग सत्याग्रही के रूप में वीच सडक पर वैठ गए। पुलिस ने जनता पर पत्थर चलाना शुरू किया। उसके जवाव में कोई पत्थर इधर से भी फेंके गये। पुलिस ने गोलिया चला दी। २६ राउड गोलिया चलाई गई। वीसो आदमी मारे गए और सैंकडो घायल हुए।

पुलिस के दमन ने लोगो को और भी तोड-फोड के लिए प्रेरित किया। परिणाम स्वरूप वनारस शहर के तार एव टेलीफोन के तमाम खम्बे उखाड डाले गये और तार तोड डाले गये, जिससे काफी अरसे तक टेलीफोन का व्यवहार वन्द रहा। वनारस से लखनऊ तथा वनारस, इलाहावाद, गया और पटना जाने

वाली रेल्वे लाइनें उखाड़ डाली गईं। ई० आई० आर० के अनेक स्टेशन लूट-कर जला दिये गये और जो रकम हाथ आई वह गाँव के लोगो मे बाँट दी गई। ग्राड ट्रक रोड मे स्थान-स्थान पर गड्ढे खोद दिये, तथा बडे-बडे पेड काटकर डाल दिये। राजवाडी और इबतपुर के हवाई अड्डे नष्ट कर दिये गये। स्थान-स्थान पर रेलवे-गोदाम, पोस्ट-आफिस एव पुलिस-थाने लूट लिये गये और बहुतो को आग की भेंट चढा दिया गया। पुलिस चौकियो एव अन्य सरकारी इमारतो पर राष्ट्रीय झडे फहराने लगे। एक-दो स्थानो पर तो पुलिस के सब इन्सपैक्टरो ने भी अपने हाथसे झडे फहराये।

१६ अगस्त के गोली-काण्ड ने लोगो को सचेत कर दिया कि शहर मे अब अधिक प्रदर्शन करना शक्ति का अपव्यय है। अत करीब एक हजार छात्र जिले भर में फैल गये। बनारस के ये विद्यार्थी गोरखपुर जिले के देवरिया स्थान तक जा पहुचे और वहाँ के विद्यार्थियो को रेलवे स्टेशन पर हमला करने के लिए उत्तजित किया। १४ तारीख का विद्यार्थियो का एक झुण्ड बलिया पहुँचा और वहाँ पर उसने आन्दोलन की आग भडकाई। गाडी पर विद्यार्थियो का पहले से ही कब्जा हो चुका था, अतएव जिस गाडी मे विद्यार्थी लोग बलिया गये उसके इजिन पर काग्रेस का झडा लहरा रहा था। धानापुर की बात है कि करीब ५ हजार किसान राष्ट्रीय झडा फहराने के लिए थाने पर पहुँचे और उन्होने बडे नम्र शब्दो मे थानेदार से झडा फहराने की अनुमति माँगी। थाने-दार जनता की इस माँग को सुनकर आग-बबूला हो गया और उसने कास्टेबलो को बाजार लूटने का हुक्म दे दिया। जनता इससे घबराई नही। वह थाने के सामने डटी रही। इस पर थानेदार ने गोली चलाने का हुक्म दे दिया। मदान्ध-सैनिक शात जनता पर अधाधुन्ध गोलियो की वर्षा करने लगे।

इस प्रकार एक ओर तो बाजार लूटा जा रहा था और दूसरी ओर लोगो को गोलियो से भूना जा रहा था। इस दोहरी मार से लोग आपे से बाहर हो गये और पुलिस-अधिकारियो पर टूट पडे। फलत थानेदार और दो कास्टेबल मारे गए। कुछ युवक थाने का सामान बाहर निकाल लाये और मृतको के शव उसमे रखकर जला दिये।

सैयद रजा बाजार मे २८ तारीख को काग्रेस के प्रसिद्ध कार्यकर्ता श्री जगतनारायण दुबे की अध्यक्षता में जनता ने एक बडा जलूस निकाला। बाजार की सडको एव गलियो मे से होता हुआ जलूस रामलीला मैदान की ओर बढा, किन्तु अचानक बिना कुछ चेतावनी दिये सैनिको ने जलूस को चारो ओर से घेर लिया और लोगो पर गोलियो की वर्षा करने लगे। परिणाम-स्वरूप श्री

जगतनारायण दुबे एव १५ अन्य व्यक्तियो के चोटें आई। अब प० चन्द्रिका नायक नामक एक साहसी युवक ने जुलूस का नेतृत्व अपने हाथ में लिया। जुलूस बाजार के दक्षिणी में हिस्से में से होता हुआ बसाढ़ पुलिस-स्टेशन से करीब आध मील दूर जा पहुचा। अचानक सामने के पुलिस थाने से गोलिया बरसने लगीं। सैनिक लोग थाने की छतो पर छिपे हुए थे और वहीं से गोलिया चला रहे थे। रह-रह कर करीब दो घटे तक गोलिया चलती रही। जब गोलियाँ बरसती तो लोग जमीन पर लेट जाते और बन्द होती, तो उठ खडे होते और थाने की ओर बढने लगते। इस प्रकार होते-होते दिन छिप गया और पुलिस वालों को गोली चलाना बन्द करना पडा। गोली चलाना बन्द करके सैनिक लोग घायलो को हथियाने के लिए जनता की ओर बढे। किन्तु जनता पहले से ही सचेत थी। उसने पहले से ही अपने घायल साथियो को, जिनकी सख्या ४०-५० थी, अपने अधिकार में कर लिया था। इस प्रकार एक भी घायल व्यक्ति पुलिस वालो के हाथ में न पडा और जनता अपने सब साथियो को लेकर अपने घरो को चली गई। पुलिस वाले आस-पास के गाँवो में घायलो की तलाश में घूमने लगे और लोगो पर भाँति-भाँति के अत्याचार करने लगे। जब एक भी घायल व्यक्ति उनके हाथ न लगा तो उन्होने देहात वालो के घर जला दिये लोगो को पकड कर बुरी तरह से पीटा और थाने में बन्द कर दिया गया तथा डरा-धमकाकर उनसे रुपया वसूल किया। सैयद बाजार के कुछ दुकानदार तथा कुछ दूसरे लोग गाँव छोडकर दूसरे स्थानो पर चले गये।

विश्वविद्यालय पर फौजी कब्जा

सरकारी दमन-चक्र जिले भर में बडी भयानकता से चल रहा था। एक बडी सशस्त्र फौज ने विश्वविद्यालय पर धावा बोल दिया और वह वहाँ के अनेक छात्रावासो पर टूट पडी। हजारो की तादाद में विद्यार्थियो को अपने कमरे खाली करने पडे। यहाँ तक कि लडकियो के होस्टल को भी जबर्दस्ती खाली करवाया गया। लडकियो को अपना सामान तक साथ न ले जाने दिया गया। महामना मालवीय जी और वाइस चान्सलर सर राधाकृष्णन् के निवास स्थानो पर भी फौज का कडा पहरा लग गया था। इस प्रकार विद्या का यह विशाल उद्यान एक छावनी के रूप में परिणत हो गया था।

सैयद राजा के गाव में स्त्रियो पर गोली चलाई गई तथा उन्हे हवालात में बन्द रखा गया। कई अन्य स्थानो पर पर स्त्रियो को केश पकडकर घसीटा गया तथा सरे-आम नगा करके पीटा गया। जिन स्त्रियो के साथ ऐसे अपमानजनक कार्य हुए हैं वे इसकी बडी दर्दनाक कहानी सुनाती हैं।

गाँवो पर जुर्माने की भारी रकम लगाई गई तथा उनको वसूल करने मे बडी निर्दयता से काम लिया गया। एक गाँव में कुछ फौजी जुर्माना वसूल करने के लिए एक किसान के घर पहुँचे। किसान के पास फूटी कौडी न थी। इसके लिए उसने कुछ दिन की मुहलत मागी। पर मुहलत देना तो दूर रहा, फौजियो ने उसके डेढ वर्ष के बच्चे को पकड लिया और उसे माँ-बाप की आँखो के सामने आग में जला दिया। कितना कारुणिक था वह दृश्य, जब वह गरीब किसान एव उसकी स्त्री हृदय पर पत्थर रखकर अपने नन्हे-से सुकुमार बच्चे को अपनी आँखो के सामने आग में जलता हुआ देख रहे थे।

सयुक्त प्रान्त के तत्कालीन गवर्नर मॉरिस हैलेट के सलाहकार मार्श स्मिथ और नेदरसोल ने बनारस जिले की शान्त, असहाय एव निरीह जनता के खून से होली खेली। इन आततायियो ने फौज को हुक्म देकर गाव-के-गाव जलवा डाले तथा गरीब लोगो के रुपये, पैसे, गहने, यहाँ तक कि अनाज एव पहनने के कपडे भी लूटवा दिये। स्त्री-पुरुषो को भाँति-भाँति से अपमानित किया गया तथा उन्हे घोर यातनायें दी गई।

इस जिले में ३१० व्यक्ति नजरबन्द किये गये और ५६३ को दण्डित किया गया। ११७ निर्वासित कर दिये गये। ४०-५० व्यक्तियो को फासी की सजा दी गई। २३ स्थानो पर गोलियाँ चली जिसके फलस्वरूप १८ मरे और ८५ घायल हुए। जिले में २,२४,०२२ रु० ६ आना ५ पाई सामूहिक जुर्माना किया गया।

इलाहाबाद

इलाहाबाद भारतवर्ष का एक ऐतिहासिक नगर है। वर्तमान समय में यहा बडे-बडे नेता और राजनीति के विद्वान् हुए हैं। यही स्वराज्य-भवन है जिसमें अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी का मुख्य कार्यालय स्थापित है। इस कारण यहा राजनैतिक चेतना विशेष रूप से है।

नवी अगस्त को नेताओ की गिरफ्तारी का समाचार पहुचते ही सारे शहर में सनसनी फैल गई। सभी लोगो ने अपना काम-काज बन्द कर दिया। इसी दिन स्थानीय कार्यकर्त्ता बन्दी बना लिए गए और काग्रेस कमेटियो के कार्यालयो की तलाशी ली गई और उनमें सरकारी ताले लगा दिये गये। विद्यार्थी जोश से भरे हुए थे। शाम को विद्यार्थियो का आधा मील लम्बा जुलूस शहर के कोने-कोने में घूमा। १० अगस्त को पुरुषोत्तमदास पार्क और मुहम्मदअली पार्क में विराट सभाए शान्ति के साथ सम्पन्न हुई।

ता० ११ अगस्त को स्थानीय विश्वविद्यालय से छात्र-छात्राओं का एक

जुलूस निकला जो पिछले दोनो दिनो के जुलूस से बढा-चढा था। जुलूस के आगे लडकिया चल रही थी। राष्ट्रीय नारो से गगन गूंज रहा था। धीरे-धीरे जुलूस अभी होस्टल तक ही पहुच पाया था कि सामने से एक सशस्त्र पुलिस की टुकडी आ पहुची और उसने जुलूस को आगे बढने से रोक लिया। पुलिस अफसर ने इस अवसर पर तीन वार लाठी चलाने का हुक्म दिया, किंतु सिपाहियो ने लाठी-चार्ज नही किया।

११ अगस्त को विश्वविद्यालय के यूनियन हाल में एक विराट सभा हुई। उसमें यह निश्चय हुआ कि १२ अगस्त को दो रास्तो से दो प्रथम जुलूस निकाले जाय और मुहम्मदअली पार्क में एक सभा की जाय। निश्चित प्रोग्राम के अनुसार १२ अगस्त को शानदार जुलूस निकले। गवर्नमेंट हाउस के पास से जाने वाले जुलूस का नेतृत्व तीन लडकिया कर रही थी। वे श्रीमती विजयलक्ष्मी पडित, जस्टिस मुल्ला और एक पुलिस अफसर की लडकिया थी। जुलूस पूरा तरह शान्त था, फिर भी जिला मजिस्ट्रेट ने मौके पर गोली चलाने का हुक्म दे दिया। गोलियो की वर्षा होने लगी।। तीनो वीर वालाओ ने बडे साहस से गोलियो का सामना किया, किंतु वाद में वे घायल होकर भूमि पर गिर पडी। सारा जुलूस वही रुक गया। वाद में राजघराने का एक विद्यार्थी आगे वढा और छाती खोलकर वोल उठा, "लडकियों पर क्या गोली चलाते हो ? मुझे निशाना बनाओ।" उसकी खुली छाती ने गोली का आलिगन किया और उस वीर ने आजादी के इस यज्ञ में अपने प्राणो की आहुति दे दी। विद्यार्थियो ने उसके रक्त से अपने रुमाल भिगोकर आजादी के लिए कुर्वान हो जाने की दृढ प्रतिज्ञा की।

दूसरे जुलूस के नेता श्री यदुवीरसिंह थे। लगभग बारह बजे जुलूस कचहरी पहुचा। सामने पुलिस तैयार खडी थी। ज्यो ही जुलूस कुछ और आगे बढा, पुलिस वालो ने कंकड वरसाना शुरू कर दिया और लडकियो के हाथ से झडा छीनने की चेष्टा की। लडकिया एक साथ झंडे को पकडकर खडी हो गई। वे घिसटती जा रही थीं, किंतु झडा नही छोड रही थी। इतने में अचानक लाठिया वरसने लगी। जुलूस के लोग रूमाल के इशारे से लेट जाते थे और फिर उसी के इशारो से आगे बढ़ते जाते थे। उधर घुडसवार पीछे से डडे चला रहे थे। इतने में बन्दूक की धाय-धायं आवाज के साथ ही किसी ने कहा, 'विदा। इन्कलाब, जिन्दा वाद।' वह भारत का लाल रक्त-स्नान कर स्वतन्त्रता देवी की आराधना कर रहा था। पागल की तरह पूरी टोली उमड पडी। उसके रक्त में रूमाल भिगोया गया और उसी में तिरंगा।

उसी के मस्तक पर तिलक लगाए गए। और गोलियो की बौछार में भी बढना जारी रहा। एक पर एक घायल गिर रहे थे, फिर भी लोग वीरतापूर्वक बढते जा रहे थे। लडकियो ने घुडसवारो के घोडो की लगाम थाम ली। आखिर अधिकारियो को हार माननी पडी और जुलूस को अपनी इच्छानुसार जाने के लिए अनुमति दे दी गई। यह एक महान् विजय थी और इसका सम्पूर्ण श्रेय था शहीद पद्मधर को। लोग विद्यार्थियो के जुलूस में शामिल होते जा रहे थे। जुलूस पर लाठी-चार्ज किया गया। थोडी देर के लिए जुलूस भग हो गया। किंतु फिर जवाहर-चौक में जुलूस निकला। पुलिस वालो की लाठिया खाते हुए भी लोग आगे बढते जा रहे थे। आगे एक दूसरा जुलूस आ मिला और लोगो ने कोतवाली के सामने पहुचकर अपने बचाव के लिए भरे हुए ठेलों और लकडी के तख्तो की सहायता मे सडक पर एक दीवार खडी कर ली थी। बलूची सैनिको का एक जत्था आ रहा था। लोगो ने उस पर पत्थर फेंकना शुरू कर दिया। बाद में पुलिस सार्जेन्ट पुलिस सैनिको के साथ आया और भीड पर गोली चलाने का हुक्म दे दिया। जुलूस के नायक राजन् की छाती में गोली लगी और उसी समय वह जमीन पर लेट गया। इससे लोग भागने लगे। रमेश मालवीय से यह सहन न हुआ। वह आगे बढा और लोगो को भागने से रोकने लगा। सार्जेन्ट ने झट अपना रिवाल्वर दबाया और धाय -धाय करती हुई गोली रमेश की छाती के आर-पार हो गई। वह भी गिर गया और वही वीरगति को प्राप्त हुआ। उधर सिपाहियो ने भागते हुए लोगो पर गोली चलाई, जिससे कुछ मरे और बहुत से घायल हुए।

इसके बाद तो लाठी और गोली-काण्डो का ताता बध गया। मरने वालो की सख्या सैकड़ो तक पहुच गई। सारा शहर गोरी फौज के नियत्रण में दे दिया गया। फिर भी विद्यार्थियों के जुलूस निकलते रहे। तार काटे गये और मोटर लारिया जला दी गईं। किंतु उनमें बैठे लोगो, ड्राइवर आदि की पूरे तौर से रक्षा की गई।

१३ अगस्त को नवयुवको ने हवाई अड्डे पर आक्रमण किया और उसे काफी क्षति पहुचाई। शहर के डाकखाने लूट लिये गये और जला दिये गये। रामबाग में पुलिस वालो को जनता के सामने आत्म-समर्पण करना पडा। लगभग एक दर्जन फौजी लारियां फूक दी गईं। इस प्रकार तीन दिन तक ब्रिटिश शासन का नामो-निशान मिटा दिया गया। विश्वविद्यालय के सैकडो छात्र देहातो में और अन्य प्रान्तो के कालेजो एव स्कूलो में आजादी का पैगाम लेकर पहुच गये। स्थान-स्थान पर स्टेशन जला दिये गये। थानो पर कब्जा

कर लिया गया तथा सरकारी स्थानों को हानि पहुंचाई गई। इलाहाबाद, बनारस, जौनपुर, मिर्जापुर, आजमगढ आदि इलाकों में यातायात के साधनों को बेहद हानि पहुंचाई गई, जिससे कुछ गाड़ियों का आना-जाना बन्द हो गया।

अन्य स्थानों की भाँति इस जिले के दमन की कहानी भी हृदय-विदारक है। पुलिस और फौजवालों ने सैकड़ों निरपराध व्यक्तियों को अपनी गोली का शिकार बनाया। ता० १२ को पी० सी० बनर्जी होस्टल के पास कुछ विद्यार्थी बातें कर रहे थे, इतने में उधर से एक फौजी लारी गुजरी। उन लोगों ने एक छात्र के ऊपर गोली चलाई, किन्तु वह बच गया और गोली पास में एक घास-वाले के लगी जिससे वह वहीं मर गया। मुरारीमोहन भट्टाचार्य नाम के एक व्यक्ति जान्सनगंज से आ रहे थे। एक सिपाही की सनसनाती गोली उनके लगी और वह वहीं गिर गये। फिर सभलकर ज्यों ही वह उठे, उनके शरीर से दूसरी गोली पार कर गई और वह वहीं सदा के लिए सो गए। जो गान्धी टोपी लगाये चलता था, पुलिस वाले उसे पकड लेते और उसे टोपी नाली में फेंकने, उस पर थूकने तथा पेशाब करने का हुक्म देते थे। एक वीर नवयुवक दशरथलाल जायसवाल गान्धी टोपी की इस बेइज्जती की बात सुनकर जान-बूझकर गान्धी टोपी पहन कर मुट्ठीगंज चौराहे की ओर चला। पुल पर कुछ सैनिकों ने जायसवाल को रोका और टोपी पर पेशाब आदि करने के लिए कहा। उसके ऐसा न करने पर उसे गोली से उडा देने की धमकी दी। उस वीर के उनकी धमकी की कुछ भी परवाह न थी। एक पुलिस वाले ने उस पर प्रहार किया जिससे वह नीचे गिर गया। इसी अवस्था में एक सैनिक के रिवाल्वर से निकली हुई गोली धाय-धाय करती हुई जायसवाल के पेट से आर-पार हो गई और खून की धारा फूट पडी। युवक ने साहस कर एक हाथ से घाव को दबाया और दूसरे से सिर पर लगी हुई गान्धी टोपी को जीवन एवं मृत्यु के बीच में पडे हुए इस वीर को अब भी गान्धी टोपी की मान-रक्षा का ध्यान था। उसके घाव से खून की धारा बह रही थी। किन्तु युवक ने हिम्मत की और उठकर जाने लगा। उसी समय सैनिकों की एक गोली उसकी गर्दन पर लगी और दूसरी उसकी रान को चीरती हुई चली गई तथा पास से गुजरते हुए एक धोबी को लगी। बेचारा धोबी फौरन मर गया। किन्तु उस वीर का बाल-बाका न हुआ। इस जिले के कण्डिया नामक स्थान में कुछ विद्यार्थियों को पेड पर लटकाकर गोली चलाई गई थी।

डिप्टी कमिश्नर की कुर्बानी

इस प्रकार के अमानुषिक अत्याचार विद्यार्थियों के ऊपर रात-दिन

हो रहे थे एक दिन एक मुसलमान डिप्टी कमिश्नर एक घटनास्थल पर पहुचे। सरकार के निर्दयतापूर्ण अत्याचारो से उनका हृदय पसीज उठा और उन्होने तुरन्त अपने पद से इस्तीफा दे दिया। इस प्रकार उन्होने अपनी आत्मा की पुकार सुनी और अपने को हमेशा के लिए विदेशी राज की गुलामी से मुक्त कर लिया।

इस जिले मे ५८१ व्यक्ति गिरफ्तार हुए और ४५८ को सजायें दी गई, दो स्थानो पर गोला चली। ६३,०३८ रु० सामूहिक जुर्माना किया गया।

जौनपुर

दस अगस्त के प्रभात ने नेताओ की गिरफ्तारी का समाचार जिले भर मे पहुचा दिया। इस पर लोगो में चौगुना जोश पैदा हो गया। नवयुवको की कौंसिल में यह तय हुआ कि जिले भर मे राष्ट्रीय सरकार स्थापित की जाय। अलग-अलग महकमे बनाये गये और योग्यतानुसार एक-एक महकमा सौंपा गया। एक महकमे का काम यातायात के साधनो को नष्ट करना और दूसरे का जगह-जगह सभाये करके मालगुजारी आदि बन्द करा देना था। सर्व प्रथम यातायात के साधनो को नष्ट करने के लिए प्रस्ताव पास किया गया। १३ अगस्त को एक व्यक्ति शहर के बाहर पकडा गया और उसने डर के मारे नवयुवको की तैयारियो का सब हाल बता दिया फलस्वरूप पुलिस ने उसके बताये हुए गुप्त स्थान पर छापा मारा और जो कुछ भी सामान इकट्ठा किया गया था, सब ले गई। वहा से पुलिस लौट रही थी। रास्ते में सेई नदी के बरगद के बडे पुल को तोडा जा रहा था। पुलिस ने गोली चलाना शुरू कर दिया, किन्तु घायल होकर भी लोगो ने कोई परवाह नही की और पुल के टुकडे टुकडे करके ही दम लिया। घनियामऊ के पुल पर एक अग्रेज इसपैक्टर ने एक वीर विद्यार्थी को गोली से उडा दिया। बाद मे इन्सपैक्टर महोदय को अपनी करतूत का फल मिला। उन पर लाठी-प्रहार हुआ और वह चल बसे।

कही-कही जनता ने बडे-बडे पेडो को काटकर बहुत-सी सडको को बन्द कर दिया था। जिले के प्राय सभी स्टेशन व डाकखाने जला दिये गये। पर किसी की जान नही ली गई। डाकखानो के रुपये आदि लूट लिये गये। रेलवे लाइन उखाडकर फेक दी गई तथा तार और खम्भे काट डाले गये। इस प्रकार यातायात के सभी साधन नष्ट करके ब्रिटिश सत्ता को पगु बना दिया गया।

सुजानगज के थाने पर थानेदार व चौकीदार को गिरफ्तार कर लिया गया और कारतूस, राइफले आदि छीन ली गईं। थाने पर तिरगा झडा फहराने लगा। उसी रात थानेदार ने कप्तान की धमकी से डरकर आत्म-हत्या

कर ली। मड्ली तहसील पर भी झडा फहराया गया। उसी समय और पुलिस आ पहुची गोली चली और एक नवयुवक शहीद हुआ। बदलापुर थाने पर आक्रमण हुआ। वहा भी गोली चली। एक आदमी थाने के अन्दर बन्द करके बुरी तरह पीटा गया।

यहा के गावो में नवयुवको ने गुप्तचर नियुक्त कर लिए थे, जो पुलिस के आने-जाने की खबरें एक गाव से दूसरे गाव में दिया करते थे। नवयुवको ने पुलिस के दात खट्टे कर दिये। किन्तु फौज की मदद से पुलिस जगह-जगह लूट मचाने व अत्याचार करने लगी। तब जनता ने इन देश-द्रोहियो का पूरा बहिष्कार किया। इस पर बहुत से पटवारी और चौकीदारो ने इस्तीफा दे दिया। नवयुवको ने गाव-गाव मे वैतनिक फौजी चौकिया बनाई। इस प्रकार कई महीने तक जनता की आजाद सरकार नौकरशाही ताकतो से मुकाबला करती रही।

बहुत से नवयुवक पुलिस के पजे मे न फसे थे। उनको पकडने के लिए पुलिस बुरी तरह परेशान थी। गाव-गाव में पुलिस चक्कर काट रही थी। लोग निर्दयता से पीटे जा रहे थे। कहते है कि एक अफसर ने राय अम्बिका-प्रसादसिह पर बडी निर्दयता के साथ अत्याचार किया। उनकी सम्पत्ति नष्ट कर दी गई। उनका हाथी थाने में भूख से मार डाला गया। खेतो की तैयार फसलें जला दी गईं। मकान को तहस नहस कर दिया और उसी स्थान पर पुलिस-चौकी बनाई गई। सुरेश का सब माल लूट लिया गया और मकान जला दिया गया। उनके पिता को, जो एक फूस की झोपडी में रहते थे, उसे भी जलवा दिया। यहा के लगभग १५ क्रातिकारी सैनिक शहीद हुए।

जौनपुर जिले मे बघवा, दानगज और जलालपुर ये तीन स्थान ऐति-हासिक बन गए है। इन तीन जगहो पर जनता ने अत्याचारी पुलिस और फौजियो के साथ जी-जान से मोर्चा लिया। इन स्थानो मे पुलिस ने जो अत्याचार किए है उनका वर्णन सुनने से रोगटे खडे हो जाते है। हम यहाँ के तीन वीर नौजवान श्री राय अम्बिकाप्रसादसिह, प० राजाराम मिश्र और दलसिगारसिह के अतुलनीय शौर्य का उल्लेख किए बिना नही रह सकते। श्री राय अम्बिकाप्रसादसिह के नेतृत्व मे आजाद फौज सरकारी फौज से मुकाबिला करती थी। एक सघर्ष मे दोनो दलो के दो-दो व्यक्ति काम आए। प० राजाराम मिश्र के दल का काम पुलिस को लूट-मार से रोकना था। श्री दलसिगारसिह ग्राम-सैनिको का सगठन और पचायतो की स्थापना आदि काम करते थे।

जौनपुर जिले के दमन का कुछ परिचय पाठको को उपर्युक्त घटनाओ

से मिल गया होगा। यहाँ पर हम 'समाज' मे प्रकाशित श्री बलजीतसिंह के लेख का एक अश उद्धृत कर रहे हैं

"आग पर सेकना, मुर्गे बनाना, उलटी टाग कर कोडे लगाना, औरतो का नगी करके पीटना, उनके गुह्यागो में मिर्चें भरना, लाल मिर्चो की धूनी देना, पेड़ो पर बाधकर पीटना, एवं नगे बदन सडको पर घसीटना साधारण घटनाये थी। बाप के सामने बेटी की इज्जत ली गई और माँ के सामने बेटे को बाँधकर पीटा गया। खुले आम औरते नगी करके पीटी गईं और मनमाने तौर पर घसीट कर उनकी बेइज्जती की गई। इसके अलावा एक ऐसी सजा निकाली गई थी जिसके द्वारा आदमी को सीधा पैर फैलाकर बिठा दिया जाता था। दो आदमी दोनो हाथो को सीधा फैलाते थे। एक आदमी उसका सिर पकड कर घुटनो के सहारे सीधा बैठा रहता था। दो आदमी उनके दोनो पैर बलपूर्वक पीछे की ओर घुमा देते थे जिससे गुदा और मूत्रेन्द्रिय से खून निकल आता था और इस प्रकार वह या तो मर जाता था या उसका जीवन सदा के लिए नष्ट हो जाता था।"

इस जिले मे ४ जगह गोली चली और लगभग १५ आदमी मारे गये। १, ५५, ११८ रु० ३ आ० १० पा० सामूहिक जुर्माना किया गया।

गोरखपुर

नौ अगस्त के बाद जिले के प्राय सभी प्रमुख नेता नजरबद बनाकर जेलो में ठूँस दिये गये। फलस्वरूप २६ अगस्त को जनता ने एक बड़े जुलूस के द्वारा गहरा विरोध प्रदर्शित किया। मदरिया के प्राइमरी स्कूल की किताबे बाहर फेक दी गईं। नये गाव की सडक की पुलिया तोड डाली गई। गोला कस्बे मे एक विराट जुलूस निकाला गया। थाने और डाकखाने पर तिरगा झडा लहराया गया। गगही के मार्ग मे मिलन वाली एक पुलिया तोड डाली गई। डाकखाने के तार काट डाले गये। बेहली मे तार का एक खम्भा गिरा दिया गया। उसका बाजार के डाकखाने का एक लेटर बक्स चकनाचूर कर दिया गया। कुछ सिपाहियो ने इस अवसर पर श्री रामअवारसिंह को पकड लिया। उत्तेजित भीड ने चौकीदार का साफा छीन लिया। सिपाही भयभीत होकर भाग निकला। इसकी खबर सरकारी अधिकारियो को जब मिली तब वे लोग गारद के साथ निकटस्थ गाव के गुडो को लेकर उसका बाजार में आ धमके। कस्बे के प्रायः सारी दुकाने लूट ली गईं।

इसके बाद गाँवो मे छापे मारना शुरू कर दिया गया। बथुवा गाव

लूटा गया। श्री लालसा पाडे को पीटा गया और उनका घर लूट लिया गया। बाद में उन्हें जेल भेज दिया गया। सुना जाता है कि उनकी तीन दिन की प्रसूता पतोहू घर से बाहर निकाल दी गई। सोपापार पर हमला हुआ। गाव के मुखिया प० रामलखन पाडे और उनके दोनो लडको को बेंत और बन्दूक के कुन्दो से पीट-पीट कर बेहोश कर दिया गया। हिन्दी साहित्य विद्यालय की इमारत मे आग लगा दी गई। प० रामबली मिश्र की धर्मपत्नी श्रीमती कैलाशवती देवी को केश पकडकर घर से बाहर निकाल दिया गया। उन्हे नगी कर देने का हुक्म दिया गया और उनकी साडी फाड डाली गई। मकान लूट लिया गया और बाद में गिरा दिया गया। विद्यालय के लडको को पीटा गया और उनके कपडे छीन लिये गए। इस लूट में गाव का लगभग ४० हजार का नुकसान हुआ। इसके अतिरिक्त अन्य कई गाव लूटे गए। प्रसिद्ध कार्यकर्ता रामलखन शुक्ल, ककरही को गिरफ्तार कर लिया गया। उनका घर जला दिया गया, जिसमे ११९४ रुपए का नुकसान हुआ। गोपालपुर लूटा गया और वहा के घर जला दिये गए। मदरिया के रामअलखसिह का सामान लूटा और जलाया गया। श्री रामअलख और बलराम को पचास-पचास रुपए जुर्माना और १०-१० बेंत की सजा दी गई।

२८ अगस्त को तहसीलदार, कानूनगो, कुर्कअमीन आदि ने सदल-बल सामूहिक जुर्माना वसूल करने के लिए सिसई गाव पर छापा मारा। ३०० रु० जर्माना किया गया था। लोगो ने देने से इन्कार कर दिया तो जूतो की ठोकरो से जुर्माना वसूल किया जाने लगा। २-३ आदमियो के ऊपर खूब मार पडी। गाव के लोग यह अत्याचार न सह सके और सरकारी कर्मचारियो को कसकर ठीक किया। थोडी देर में बलूची फौज वहा आ पहुची और गाव को घेर लिया। ग्रामीण जनता ने बुद्धिमानी से काम लिया और तुरन्त गाव खाली कर दिया। इस मौके पर श्री राधापदजी मुख्तार ने गोली खाने के लिए अपना सीना खोल दिया था किन्तु उन्हे गोली चलाने का साहस न हुआ। लगभग ३० आदमियो को बन्दी बनाया गया और दो-साल का कठोर कारावास दिया गया। इसके पहले उन्हे बेंतो से खूब पीटा गया। बीसो मकान जला दिये गए और सामान लूट लिया गया। मशीनगन लगाकर लोगो को डराया-धमकाया गया। फौजियो ने यहा की बहुत-सी स्त्रियो का सतीत्व नष्ट किया।

दाऊघाट गाव मे २९ अगस्त को कप्तान मूर सिपाहियो के साथ आ धमके। उन्होने प० गोपीनाथ मिश्र को पकडकर ४००० रु० जुर्माना मागा और उनके दरवाजे तोडकर घर में घुस गए। स्त्रियो के करुण-क्रदन से

गाव के लोग एकत्र हो गए। फजानमिया और रामलखन तेली को गोली से उडा दिया गया।

१८ अगस्त को भाटपार की जनता को पुलिस की गोलिया खानी पडी। फलस्वरूप लालचन्द और सरवन नोनिया मारे गये। १९ अगस्त को यहा का बाजार लूटा गया। यहा का गाधी आश्रम जला दिया गया।

मालपुरी गाव मे २० अगस्त को आग लगाई गई। लगभग एक सौ आदमियो को बाध दिया गया और उन्हे बुरी तरह से पीटकर एक गड्ढे मे डाल दिया गया। घरो का सामान लूट लिया गया। बहुत से लोग जेल मे बन्द कर दिये गए।

लोगों की हानि के कुछ अंक इस प्रकार हैं :—

खोपापार गाव मे हुआ नुकसान	४०,००० रुपया
मदरिया के समीपवर्ती गावो पर सामूहिक जुर्माना	१,००० रुपया
उसवा, दुबरा, अमोडा आदि गावो मे लूट	५०,००० रुपया
और माल की बरबादी	२५ मन गेहू, चावल, घी
खोपापार तहसील मे जलाये गए घर	१२
नष्ट की गई छतो की सख्या	१०३
लूटे गए घरो की सख्या	७६
सजाए	८० आदमी
नुकसान	२,३४,९७९ रुपये के लगभग।
कुल सामूहिक जुर्माना	२७,९१,७०५

पश्चिमी जिलों में आन्दोलन

पश्चिमी जिलो मे आन्दोलन का जोर उतना अधिक नही रहा। फिर भी कानपुर, लखनऊ, आगरा, पीलीभीत, खीरी, मेरठ, बिजनौर, मुरादाबाद, हरिद्वार आदि में जनता ने उल्लेखनीय भाग लिया। इसके अलावा प्रत्येक जिले के बडे-बडे शहरो व कस्बो मे भी प्रदर्शन हुए।

कानपुर

यहा ९ अगस्त को जनता के एक विशाल समूह ने काग्रेस ऑफिस पर, जिस पर पुलिस का कब्जा हो चुका था, उसे पुन प्राप्त करने के लिए आक्रमण किया। डाकखानो की लारियो और उन सब कारो पर भी, जिनको यूरोपियन ड्राइवर चला रहे थे, आक्रमण किये गए। दस तारीख की शाम तक शहर में

तीन पुलिस चौकियों पर सामूहिक आक्रमण हुए । पुलिस ने हर जगह गोलियां चलाकर उत्तर दिया । सरकार ने जनता पर आतंक जमाने के लिए आर्डिनेन्स लागू करके फौरन जुर्माने वसूल करने शुरू कर दिये ।

कितने ही दिनों तक सरकारी इमारतों, स्कूलों आदि पर आक्रमण जारी रहे । जब आन्दोलन का बाह्य रूप धीमा पड़ने लगा तो छोटे-छोटे दस्तों द्वारा डाकखानों व अन्य सरकारी संस्थाओं पर इक्के-दुक्के हमले होते रहे और आखिर में आन्दोलन ने तोड़-फोड़ का गुप्त रूप धारण कर लिया। सारे कालेज के विद्यार्थियों ने स्कूल व कालेजों में हड़ताल रखी और डेढ़ महीने तक यह हड़ताल जारी रही । निस्सन्देह मजदूरों ने आन्दोलन में उतना हिस्सा नहीं लिया जितना कि उनसे आशा थी । मजदूरों पर उन दिनों कम्युनिस्टों का अधिक असर था । आन्दोलन के सम्बन्ध में २०३ व्यक्ति नजरबन्द हुए और ३९४ दण्डित किये गए । १,९९,२५० रु० सामूहिक जुर्माना किया गया ।

लखनऊ

९ अगस्त को सवेरे ही स्थानीय नेता पकड़ लिये गए । विरोधस्वरूप शहर में हड़तालें हुईं और जुलूस निकाले गए । विद्यार्थियों का जुलूसों में अधिक भाग रहा । लखनऊ यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों पर ११ अगस्त को जब वे यूनिवर्सिटी और शहर के बीच का गोमती पुल पार कर रहे थे, पुलिस ने गोलियां चलाईं । पुल के दूसरी ओर शहर की जनता का एक विशाल समूह इकट्ठा हो गया था जिसे भयंकर लाठी-चार्ज द्वारा तितर-बितर किया गया। जनता ने लखनऊ रेलवे स्टेशन के आफिस, डाकखाने इत्यादि पर भी आक्रमण किये । यहां लड़कियों के जुलूस ने बहुत बहादुरी दिखाई । जब लाठी-चार्ज हुआ तो लड़कियां बैठी रहीं, घायल हुईं, पर कदम पीछे नहीं हटाया, यह देखकर लोगों ने पुलिस पर ईंट-पत्थर बरसाये । इसके जवाब में पुलिस ने काफी गोलियां बरसाईं । इस प्रकार शहर में काफी अशान्ति रही । स्टेशन आफिस जलाये गए । कालेज आदि बन्द रहे । पुलिस के नौ सिपाहियों ने लाठी-चार्ज करने से इन्कार कर दिया । इस पर वे गिरफ्तार कर लिये गए । लोगों पर ५५,८३२ रु० सामूहिक जुर्माना किया गया ।

आगरा

श्रीकृष्णदत्त पालीवाल, प्रधान प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी पहले ही पकड़ लिये गए थे । एक बहुत बड़ा आम जलसा हुआ, जुलूस निकला, जिसे पुलिस ने रोका । जुलूस लाठी-प्रहारों के बावजूद भी आगे बढ़ता गया । पुलिस ने थाने से गोली चलाई । तीन दिन तक नवयुवकों और पुलिस में मुठभेड़ होती रही ।

विद्यार्थियों ने स्कूल कालेज छोडकर विरोध-प्रदर्शन मे सामूहिक रूप से भाग लिया। पहले सप्ताह मे ही एक हजार के लगभग कार्यकर्ता पकड लिये गए आन्दोलन का बाह्य रूप पाच-सात दिन बाद धीमा पड गया। पर तोड-फोड के कार्यो ने उग्र-रूप धारण कर लिया। शहर के आस-पास तक टेलीग्राफ तथा टेलीफोन के तार बड़ी मात्रा में काटे गए। ई० आई० आर० के कई स्टेशनो को भी जलाया गया। बी० बी० एण्ड सी० आई० की मालगाडियो को गिरा दिया गया, जिनमे से दो के इजन तो बिल्कुल टूट गए और चार को काफी क्षति पहुची। एक जत्थे ने इनकम टैक्स आफिसर को धमकाया। २०० आदमियो के एक जत्थे ने चदौला स्टेशन पर आक्रमण किया। पुलिस ने गोली चलाई। पाच मरे और ३५ घायल हुए। आगरे में १०० के लगभग जख्मी हुए। मालदारो से पुलिस ने मनमाना रुपया वसूल किया। जिन्होने देने से इन्कार किया, उन्हे जेल भेजने की धमकी दी गई। विद्यार्थियो का आन्दोलन में बडा भाग रहा। उन्होने कालेज तथा अदालतो पर पिकेटिंग किया और लडकियो ने भी इसमे काफी भाग लिया।

कई थानो मे आग लगाई गई। २२ सितम्बर को गवर्नमेंट कपडा फैक्टरी में भी आग लगा दी गई। अक्तूबर से आन्दोलन ने गुप्त रूप धारण किया। दिसम्बर १९४२ मे आगरा षड्यन्त्र केस चलाया गया। जिले मे १५५ नज़रबन्द किये और १००० व्यक्ति गिरफ्तार किये गए। ६८,१९५ रु० सामूहिक जुर्माना किया गया।

मथुरा

प्रारम्भ मे हडताल हुई और जुलूस निकला। १८ तारीख तक सारे कार्यकर्त्ता पकड लिये गए। जुलूस पर लाठी-चार्ज हुआ। रेल व तार को काफी नुकसान पहुचाया गया। परखम स्टेशन के पास एक इजिन गिरा दिया गया। छोटे-छोटे बच्चो को पुलिस वालो ने खदेडकर एक अहाते मे घेर लिया और उन्हे बुरी तरह से मारना-पीटना शुरू कर दिया। आसपास के रहने वालो ने ऊपर की मजिलो से रस्सिया डालकर उन्हे खीच लिया। लोगो पर ४६,७०० रु० सामूहिक जुर्माना किया गया।

वृन्दावन

जनता ने जुलूस निकाला, जिस पर पुलिस ने लाठिया चलाईं और अन्त मे गोलिया चली। २० से अधिक आदमी लाठी से घायल हुए और ६ आदमी गोलियो से जख्मी हुए।

अलीगढ

आंशिक हड़ताल हुई। धर्म समाज कालिज के विद्यार्थियों ने जुलूस निकाला और पुलिस ने लाठी-चार्ज किया। आठ या दस वर्ष के कई बच्चे मर गए। जिले में ८५० गिरफ्तारियां हुईं। अतरोली कस्बे में एक आदमी की गिरफ्तारी के समय पुलिस ने गाली-गलौज करना शुरू कर दिया। गिरफ्तार होने वाले भाई को गुस्सा आया और उसने पुलिस को बांस मारा। इस पर पुलिस के दारोगा ने बगल से पिस्तौल मारी जो आर-पार निकल गई और वह वहीं पर मर गया। दूसरे भाई के भी गोली लगी, जिससे वह घायल हो गया। पुलिस लाश को अपने साथ ले गई। यहां पर गोली के दस फायर हुए। एक रेल के पुल को काफी क्षति पहुंचाई गई। जिले में २० से अधिक स्थानों पर तार काटे गये। ई० आई० आर० रेलवे के पत्ती, हाथरस, सलेमपुर आदि स्टेशनों पर आक्रमण किये गये। हरदुआगंज का डाकखाना भी जला दिया गया।

८५०० रु० सामूहिक जुर्माना किया गया।

मुरादाबाद

११ अगस्त को ३५-४० हजार आदमियों का एक विशाल जुलूस, जिसमें हिन्दू, मुसलमान दोनों सम्मिलित थे, निकला और थाने तथा कचहरियों की ओर बढ़ने लगा। पुलिस ने इस पर गोली चलाई और अन्त में फौज को बुलाया गया। फलस्वरूप लगभग १५ व्यक्ति मरे और ५० घायल हुए। १२ ता० को जनता ने रेलवे स्टेशन और बुकिंग आफिस पर आक्रमण किये। यहां ४७ व्यक्ति गिरफ्तार हुए और ३६ को सजायें हुईं। १७,३६७ रु० सामूहिक जुर्माना किया गया।

बिजनौर

९ अगस्त को पुलिस ने स्थानीय जिला कांग्रेस कमेटी के दफ्तर पर धावा बोला और सारा सामान उठा ले गई। बिजनौर के प्रायः सभी कांग्रेस-जन बन्दी बना लिये गए। गांवों में भी लोग ढूंढ-ढूंढ कर पकड़े जा रहे थे। १२ ता० को धामपुर में विद्यार्थियों का एक जुलूस निकला। रास्ते में पड़ने वाले सरकारी स्थानों, तहसील और थानों पर राष्ट्रीय झंडा फहराया गया। डाकखानों को जलाया गया। स्टेशन पर पहुंचकर वहां के टेलीफोन के तार आदि काट डाले गए। १३-१४ अगस्त को चान्दपुर हाई स्कूल के विद्यार्थियों और वहां के नागरिकों का सम्मिलित जुलूस निकला। १३ अगस्त को हाईस्कूल पर झंडा लगाया गया। १४ ता० को भी जुलूस निकला और रेलवे स्टेशन के

शीशे तोडे गए। १६ अगस्त को नूरपुर थाने के अनेक ग्रामो की जनता का एक विशाल जुलूस निकला। भीड ने फेजपुर और गोहावर के नलदार कुए, पी० डबल्यू०डी० के बगले और रतनगढ पोस्ट ऑफिस को तोड-फोड डाला। नूरपुर थाने की पुलिस पहले से बन्दूको से सुसज्जित खड़ी थी। जूलूस अभी कस्बे तक न पहुच पाया था कि पुलिस ने लाठी-चार्ज करना शुरू कर दिया, किन्तु जुलूस बढता ही गया। थाने के पास से गुजरने पर जूलूस पर धडाधड गोली चलने लगी। एक व्यक्ति घटनास्थल पर ही अमर-गति को प्राप्त हुआ और एक बाद मे जेल मे मर गया। लगभग १० व्यक्ति लाठी-चार्ज से घायल हुए।

१७ अगस्त से ११ नवम्बर सन् १९४२ तक जिले की घटनाओ की सूची इस प्रकार है—

(१) प्रान्तीय रोड अखेडा के पास काट दी गई। हल्दौर कस्बे मे जुलूस पर गोली चली जिसमे ६ आदमी घायल हुए। (२) श्यामपुर थाने का एक सिपाही लापता होगया। (३) जाहनगर के पास मोटर जलाया गया। (४) लाम्बा खेडा गाव के पास तार काटे गए। (५) कासमपुर गढ का पुल तोडा गया। (६) नगीना हाई स्कूल का, रिकार्ड जला दिया गया। (७) दारानगर मेला मे जुलूस निकला और विभिन्न स्थानो के तार काटे गए।

(१) फीनाग्राम में ८० गोरखे सैनिको ने लोगो को पीटा और उनके घरो को तबाह किया। (२) गोहावर मे पुलिस ने लूटमार की और स्त्रियो के आभूषण उतार लिये गए। (३) गोपालपुर गाव लूटा गया। (४) ढेलीग्राम के साथ खेत की फसल भी लूट ली गई। एक आदमी को पीटते-पीटते बेहोश कर दिया गया। (५) अथाई अहीर मे एक घर लूटा गया। (६) अखेडा और मनकुआ गावो मे पुलिस ने लोगो को लूटा। (७) श्यामर मे पुलिस ने बुरी तरह लूट मचाई और लगभग ८० मवेशी ले गई, जिन्हे ७०० रुपए में नीलाम कर दिया गया।

इस जिले मे २१ नजरबन्द हुए, ६२ गिरफ्तार किये गए और १०७ दण्डित किये गए। ६ व्यक्ति गोली से मरे और १० घायल हुए। २०,८०० रु० सामूहिक जुर्माना किया गया।

गढ़वाल

अन्य स्थानो की भाति यहां भी छात्रो का आन्दोलन में प्रमुख हाथ रहा। उनका एक शानदार जुलूस निकला। उनके साथ कुछ नागरिक भी सम्मिलित थे। जुलूस मे सरकारी नौकरो के लडके भी शामिल थे। जुलूस का

नेतृत्व एक रायबहादुर महोदय के पुत्र कर रहे थे। डिप्टी कमिश्नर ने जुलूस पर गोली चलाने की आज्ञा दे दी थी, किंतु उसे वापस लेना पड़ा, कारण, लोगो ने कहा कि वे सब सरकारी कर्मचारी, जिनके लड़के जुलूस में सम्मिलित है, सरकार के खिलाफ हो जायगे। अन्त में नवयुवको ने अदालत पर झडा फहरा दिया। स्थानीय प्रमुख कार्यकर्त्ता बन्दी बन चुके थे। किंतु मडलो के कार्यकर्त्ताओं की गिरफ्तारी में पुलिस को कठिनाई पेश आई। अत बाद में जगह-जगह उनकी गिरफ्तारी के लिए फौज की सहायता की माग की गई।

आन्दोलन-काल में जनता की स्थान-स्थान पर अदालते खोली गई। आजादी के सग्राम के रगरूट तैयार करने के लिए शिक्षण-शिविर कायम हुए। पुरानी सरकार का कारोबार बिलकुल बन्द कर दिया गया। देहातो के प्राइमरी स्कूल बन्द हो गए थे, विद्यार्थी नई सरकार के कामो में हाथ बटाने लगे थे। उन्होंने बाल-सेना का सगठन किया। स्वयसेवक एक स्थान से दूसरे स्थानो में जाकर जनता को देश की घटनाओ से परिचित कराते थे। झूठी सरकारी अफवाहो को दबाते और पुलिस की भावी कार्रवाइयो से जनता को आगाह करते थे। जिले मे एक-आध जगह गोली भी चलाई गई। चार आदमी मरे और ७ घायल हुए।

इस जिले में पुलिस जनता को दबाने में प्राय असफल रही और उसे जगह-जगह फौजियो से सहायता लेनी पड़ी। किंतु हिंदुस्तानी फौज भी अपने भाइयो पर अमानुषिक दमन करने के लिए बड़ी मुश्किल से तैयार हो सकी। अत हिंदुस्तानी फौज की हर एक टुकड़ी में कुछ गोरे आफिसर रखे गए और उन्हे दमन करने के लिए बाध्य किया गया। फौजी छिपे हुए कांग्रेस के कर्मचारियो के घर जाते थे और उनके घर वालो के साथ अमानुषिक अत्याचार करते थे। घर वालो के साथ मार-पीट की जाती थी। उन्हे घर से बाहर निकाल दिया जाता था। बाद में उनका माल लूट लिया जाता था। फौजियो ने कांग्रेस कार्यकर्त्ताओ के अलावा सर्वसाधारण नागरिको को भी अपने ऐसे ही अत्याचारो का शिकार बनाया। ५,६५९ रु० सामूहिक जुर्माना किया गया।

अल्मोड़ा

९ अगस्त '४२ को, प० गोविन्दवल्लभ पत और अलमोड़ा जिले के नेता प० हरगोविन्द पत एम० एल० ए० व सभापति जिला कांग्रेस कमेटी, गिरफ्तार कर लिये गए। दूसरे नेता प० मदनमोहन उपाध्याय की गिरफ्तारी का वारण्ट जारी हुआ। पुलिस ने उन्हे पकड़ने के लिए सारी ताकत लगा दी, किन्तु जनता के विशेष सगठन के कारण वह उन्हें न पकड सकी। बाद में उन्होंने स्वय अपने

को पुलिस को सौंप दिया। किन्तु लोग झुण्ड-के-झुण्ड उन्हे छुडाने को निकल पडे। पुलिस डर गई और उसने उपाध्याय जी को मुक्त कर दिया। सरकार ने बाद में उन्हें जिन्दा या मरा गिरफ्तार कर लाने वाले को दो हजार रुपया इनाम देने की घोषणा की। एक स्पेशल अग्रेज आफिसर ५० खुफिया पुलिस वालो के साथ लखनऊ से भेजा गया, किन्तु वह भी नही पकड सका। इसी तरह यहा के अन्य कई प्रमुख नेताओ को पुलिस नही पकड सकी।

सरकारी कर्मचारियो के लिए आन्दोलन को काबू में करना एक टेढी खीर थी। देहाती जनता इतनी सगठित थी कि सरकारी कर्मचारियो को किसी बात में सहयोग नही मिलता था। यहा तक कि उनको कही-कही खाना मिलना भी मुश्किल हो गया। पूरनचन्द जोशी नामक पुलिस के एक सिपाही को एक साल की कडी सजा दी गई, क्योंकि उसने अफसरो से कह दिया था कि मै देहातों की ड्यूटी तभी बजा सकता हूं जब कि सरकार मेरे खाने का वहा प्रबन्ध करे।

सरकार ने सैंकडो की तादाद मे गोरी फौजें गावो में भेजी। उन्हे पूरी सतर्कता से काम लेना पडता था। दो गोरे फौजी बन्दूक लेकर आगे चलते थे और कुछ दूर तक जाकर पिछली फौज को रास्ता खतरनाक न होने की झडी देते, तब फौज आगे बढ़ती थी। नवयुवको को इकट्ठा करने के लिए यहा एक रणसिगा बाजा काम मे लाया जाता था।

अधिकारियो को यह खबर मिली कि उपाध्यायजी कुछ कार्यकर्ताओ के साथ सल्ट इलाके में हैं। यह सुनकर जॉन साहब एक सौ हथियारबन्द पुलिस के साथ ५ सितम्बर को खुमाड़ू गाव मे आ धमके। उनको देखते ही नवयुवको का रणसिगा बजा। 'अग्रेजो हिन्दुस्तान छोडो' का नारा बुलन्द हुआ। इस पर दनादन गोलिया चलने लगी। कारतूस खतम होने पर जॉन साहब ने अपनी रिवाल्वर से गोलिया चलाना शुरू कर दिया, जिससे ४ व्यक्ति शहीद हुए और ११ सख्त घायल। जनता उस समय बहुत उत्तेजित थी, किन्तु अपने नेताओ के आदेशानुसार ऐसी परिस्थिति मे भी वह अहिंसक ही रही। एक वृद्ध ने गुस्से मे लाठी अवश्य चलाई, किन्तु एक कांग्रेसी ने लाठी अपने हाथ में रोक ली, जिससे उसका हाथ टूट गया।

देघाट में हजारो की तादाद मे लोगो की भीड जमा थी। नेता लोग भाषण दे रहे थे। पुलिसवाले बाजार के एक मकान में छिप कर बैठ गए और भाषण सुनने के बाद ज्योंही जनता वहा से जाने लगी तो पुलिसवालो ने मकान की खिड़की से गोली चलाना शुरू कर दिया।

अल्मोड़ा शहर मे विद्यार्थियो के जुलूस पर लाठी प्रहार किया गया। विद्यार्थी हवालात में रखे गए और तेल के भिगोये हुए बेंतो से पीटे गये। एम० टी० ओ० पुलिस जत्थे के साथ देहाती इलाके में गये और देहातियो पर तरह-तरह के जुल्म किये। ६०० कांग्रेस-कार्यकर्ताओं को पकड़ लिया गया।

ता० २ सितम्बर को डिप्टी कमिश्नर ने गोरी पल्टन को लेकर गांधी आश्रम घेर लिया। ९८ व्यक्तियो को गिरफ्तार किया और ३६ कमरों के सील-मोहर लगादी।

सालम इलाके में गोरी फौज ने गोली चलाई जिससे दो आदमी मर गए। इसके बाद जाट फौज ने अनेक अत्याचार किये। घरो मे आग लगादी और फसल बरबाद कर दी।

इस जिले मे ६५० व्यक्ति गिरफ्तार हुए। ६५ व्यक्तियो को १३ से २८ साल तक की सजायें दी गई। लगभग ८० व्यक्ति नजरबन्द किये गए। ५३, ८५० रु० सामूहिक जुर्माना किया गया।

एक अंग्रेज महिला ने अपना नाम सरला बहन रखा। उन्होने सोलह महीने तक पीड़ितो की अकथनीय सेवा की। इस पर उन देवी को ३ मास की सजा हुई थी।

इन प्रधान-विविध जिलो के अतिरिक्त बाकी स्थानो पर नेताओं की गिरफ्तारी के विरोध में हड़तालें की गईं, जुलूस निकाले गए तथा विशाल सभाएं करके 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव को दुहराया गया। इसके अलावा निम्न स्थानो का और विशेष वर्णन नही मिला है। हाँ, सामूहिक जुर्मानो एवं गिरफ्तारियो की रिपोर्ट प्राप्त हुई है जिसे पाठको की जानकारी के लिए हम नीचे देते है—

स्थान	गिरफ्तार	सजाएँ	नजरबन्द	सामूहिक जुर्माना
देहरादून	—	—	—	१,००० रुपये
सहारनपुर	—	—	—	५४,६७३ ,,
मुजफ्फर नगर	४६	४४	६	६,००० ,,
मेरठ	२४८	२४८	३५९	१,६७,४३२
बुलन्दशहर	१३७	१७०	६७	३२,२५८–२–३
मैनपुरी	२३२	३७	१६	२१,२०० रु०
एटा	—	—	—	३,५६०–५–४
बरेली	—	—	१८८	७,७१२ रु०

स्थान	गिरफ्तार	सजाएँ	नजरबन्द	सामूहिक जुर्माना
बदायूं	८	४	११	४,५०० ,,
शाहजहाँपुर	—	—	—	१,२२९ ,,
पीलीभीत	१२७	८३	७	—
फर्रुखाबाद	—	—	—	११,५७५ ,,
इटावा	४४	१४	१९	८६,३३६–४–०
फतेहपुर	४३	२६	१२	१८,७५० रु०
बाँदा	—	—	—	२,००० ,,
हमीरपुर	१३	१३	२७	१,८५० ,,
झाँसी	४१	३६	१०	३,८५० ,,
जालौन	—	—	—	२,६०५ ,,
मिर्जापुर	—	—	—गोली चली	१०,१९० ,,
बस्ती	१४६	८६	१९३ गोली चली	४,४५० ,,
नैनीताल	१९	८	२८	२२,७११–२–१
उन्नाव	२८	२२	१७९	५,७५० रु०
रायबरेली	—	—	—	३,३०० रु०
सीतापुर	११७	७९	४७ गोली चली	—
हरदोई	१०७	६४	११२ गोली चली	६,६७२ रु०
खेड़ी	६७	४१	१७	३८,३२३ ,,
फैजाबाद	४३	१४	४०	२६,६५० ,,
बहराइच	४२	८७	६	—
सुल्तानपुर	—	—	—	७०० रु०
प्रतापगढ़	—	—	—	१२,४५० रु०
बाराबंकी	८३	५३	२५	७,५०० रु०

: ८ :

बंगाल प्रान्त में खुला विद्रोह

जन-प्रयास और दमन के आंकडे

आन्दोलन के पहले नजरबन्दो की सख्या	२,०००
गिरफ्तारिया	२,८७८
सजाए	३५८
हडतालें	११४
सभाए	१६८
जुलूस	२२२
लाठी-प्रहार	६८ वार
गोली चली	४४ बार और १६ जगह
अश्रु गैस का प्रयोग	११ वार
वरबाद तथा क्षतिग्रस्त डाकखाने	११८ से अधिक
वरबाद तथा क्षतिग्रस्त यूनियन बोर्ड	५७ से अधिक
वरबाद तथा क्षति ग्रस्त कर्ज समझौता बोर्ड	२१
वरबाद पचायत यूनियनें	२०
वरबाद तथा क्षतिग्रस्त डाक बगले	१४
सरकारी इमारतों पर झडे फहराये गए	२०
थानो की सख्या जिन पर हमले किये गए और जिन्हे वरबाद और क्षतिग्रस्त किया गया	११
नशीली वस्तुओ की दूकानें वरबाद तथा क्षतिग्रस्त की गई	२६
गैर कांग्रेसी संस्थाओ की गुप्त सभाएं	२१
सरकारी नौकरो के इस्तीफे	११७
सरकारी नौकर मुअत्तल किये गए	२६९१
अदालतो तथा स्टेशनो आदि पर पिकेटिंग	३२ जगह
अदालतो पर हमले	६

मजदूरो की हडतालें	४०
ट्रामो को जलाया तथा बरबाद किया गया	१८
टेलीफोन के तार काटे गए	६९ हलको के
रेल गाडियो को गिराया तथा पटडियो को उखाड़ा गया	१६ जगहो पर
पुल तथा पुलिया बरबाद किये गए	३०
रेलवे और स्टीमर स्टेशनो पर हमले	१४
सामूहिक जुर्माना	८५,००० रुपया
छीने गए घरों की सख्या	८
छीने गए सरकारी स्थान	३३
दूसरी सरकारी जगहे जहाँ हमले किये गए और क्षति पहुचाई गई	३०
खास महल आफिस बरबाद किये गए	६
सब रजिस्ट्री आफिस बरबाद किये गए	४
जमीदारी कचहरिया बरबाद की गईं	१८
सरकारी हथियारो पर कब्जा	२ तलवारें १३ बन्दूकें
काग्रेस दफ्तर जिनमें ताले लगा दिये गए	१६

बंगाल का विद्रोह

बगाल प्रात गगा के निचले भाग तथा गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियो के डेल्टे म बसा हुआ है। उत्तर मे इसके हिमालय है और दक्षिण में बगाल की खाडी। जलवायु समशीतोष्ण है। यहा पर नील, जूट, अफीम, चावल, कपास, चाय, आदि वस्तुए पैदा होती है। कोयले तथा ताबे की भी यहा पर खानें है। औद्योगिक दृष्टि से यह प्रात काफी उन्नतिशील है। शिक्षा प्रचार में भी बगाल वढा-चढा है। यहा कलकत्ता विश्वविद्यालय के अलावा सैंकडो स्कूल और कालेज है। बंगाल का ब्रह्मपुत्र वाला मैदान काफी उपजाऊ है और आबपाशी के लिए सैंकडो नहरें यहा सड़को की भाति बनी हुई है। बगाल के दक्षिणी-पश्चिमी भाग में काफी मात्रा में जगल है।

इस प्रान्त में लगभग ५३ प्रतिशत मुसलमान और ४३ प्रतिशत हिन्दू रहते है। इनकी भाषा वगला है और यह देखने, बोलने तथा रहन-सहन में सब एक ही जाति के मालूम देते है। बगाल में २८ जिले है।

वगाल कृषि प्रधान प्रान्त है। यहा की जनता गावो में घनी बसी हुई। यहा के लोग स्वभावतः भावुक और कुशाग्र बुद्धि होते है। किसी भी अप्रिय

घटना का विरोध वे तीव्रता पूर्वक करते हैं। उनमें दल बनाने व टुकड़ियों में कार्य करने की प्रवृत्ति है। इन सब बातों का वहां के आन्दोलन पर गहरा असर पड़ा है।

बंगाल को राष्ट्रीयता का पिता तथा आतंक-कारीषड्यन्त्रों का घर कहते हैं। सन् १९३० से पहले बंगाल प्रान्त हर राष्ट्रीय आन्दोलन में सबसे आगे रहा है। लेकिन इसके पश्चात् दुर्भाग्य से बंगाल की राजनीति ने पलटा खाया। कुछ तो नेताओं के आपसी संघर्षों के कारण और कुछ बढ़ते हुए मुस्लिम लीग के प्रभाव के कारण बंगाल स्वाधीनता के लिए होने वाले सामूहिक आन्दोलनों में पिछड़ता गया। सन् १९३२,४० व ४२ के आन्दोलनों में बंगाल अपने पुराने नाम को कायम न रख सका। सन् १९४२ के आन्दोलन की गति-विधि इतनी व्यापक व शक्ति-शाली न रहा, उसके हमारे विचार से निम्न-लिखित कारण हैं —

१ बंगाल में कांग्रेसी नेतृत्व अधिकांशत उच्च-श्रेणी के जमींदारों और खाते-पीते मध्यम श्रेणी के लोगों के हाथ में है। इन लोगों का जनता के साथ इतना गहरा सम्बन्ध नहीं है कि जनता उन्हें अपनी आशाओं व आकांक्षाओं का केन्द्र समझ सके।

२ बंगाल के लोगों का किसी एक नेतृत्व में पूर्णत विश्वास नहीं है। वह स्वभावत षड्यन्त्रों तथा आतंककारी प्रयत्नों की सराहना करते हैं। उनका गान्धीजी की विचार-धारा तथा सामूहिक विद्रोह की कला में दृढ़ विश्वास नहीं है। इस कारण बंगाल में कोई भी सुसंगठन व सुदृढ़ नेतृत्व स्थापित नहीं हो पाया है।

३ बंगाल में पिछले कुछ सालों से मुस्लिम लीग का प्रभाव बहुत बढ़ गया है, जिसके कारण प्रान्त की अधिकांश मुस्लिम जनता कांग्रेस आन्दोलन को अपनी आकांक्षाओं के विरुद्ध समझने लगी है।

४ प्रान्त की आबादी इस प्रकार बसी हुई है कि पश्चिम के दो डिवीजनों में हिन्दुओं की आबादी अधिक है और पूर्व की दो कमिश्नरियों में मुसलमानों की। आबादी के इस विभाजन के कारण आन्दोलन का जोर मुख्यत दो डिवीजनों तक ही रहा जहां पर कि हिन्दुओं की आबादी अधिक है।

५ बंगाल में आन्दोलन मिदनापुर में अधिक हुआ, क्योंकि यह काफी जागृत जिला है और यहां के लोगों को युद्ध के कारण अनेक कष्ट हो रहे थे। ब्रिटिश साम्राज्यशाही ने कन्टाई से लेकर रांची तक अपनी पहली रक्षा पंक्तियां बनाई थी और लोगों को विश्वास था कि जापानी लोग कन्टाई के बन्दर पर

उतरेंगे। सुन्दरवन ने भौगोलिक दृष्टि से आन्दोलन को काफी मदद दी। वीरभूमि, जलपाईगुरी और अतराई के इलाको में आन्दोलन का जोर रहा। इन इलाको मे गान्धीजी के रचनात्मक कार्यक्रम के प्रोग्राम भी हो रहे थे। पूर्वी इलाके मे आन्दोलन का रूप नोआखली, और त्रिपुरा जिलो मे अधिक रहा। इन जिलो में जमैयतुल-उलेमा का भी काफी प्रभाव है। पश्चिमी बगाल के उत्तरी भाग मे मालदा ताल्लुके मे आन्दोलन की गतिविधि अधिक व्यापक रही। यहा के किसानो मे काग्रेस नेताओ का काफी प्रभाव था।

मिदनापुर

मिदनापुर ने बगाल प्रान्त के नाम को सारे भारत मे उज्ज्वल बना दिया। यहा के लोगो ने दोनो प्रकार की विपत्तियो का साहस और बहादुरी से मकाबला किया और अपने सघर्ष को सफलतापूर्वक जारी रखा। यह कहना अत्युक्तिपूर्ण न होगा कि मिदनापुर के लोगो ने अपना आजाद प्रजातत्र कायम किया। उन्होंने एक ओर नौकरशाही ढाचे को सगठित रूप से अस्त-व्यस्त किया और दूसरी ओर ग्रामीण राज्य की स्थापना की। उन्होंने आक्रमणात्मक तथा रक्षात्मक दोनो ही प्रकार की लडाइया लडी। मिदनापुर में आन्दोलन का उग्र व व्यापक रूप तामलुक और कन्टाई सबडिवीजन मे रहा। यही इलाके हैं जहा युद्ध-काल मे लोगो पर अनेक प्रकार की कठिनाइया पडी। राची-कन्टाई एयर लाइन बनने के कारण इस इलाके म हर पाच मील पर हवाई जहाजो के अड्डे बनाये गए। उनके लिए जनता की जमीने छीनी गई और किसानो को बेदखल किया गया। फौज के लिए उपयोग की सारी सामग्रिया सबसे पहले ले ली जाती थीं। आमदोरफ्त के समस्त साधन जैसे मोटर, नौकाए इत्यादि सरकारी कार्य के लिए ले लिये गए। इन इलाको में जनता पर तरह-तरह के प्रतिबन्ध लगा दिये गए। वह इधर-उधर आसानी से जा नही सकती थी। एक ओर दुर्भिक्ष की आशका आये दिन बढती जा रही थी। दूसरी ओर किसीभी क्षण जापानियो के कन्टाई पर उतरने की आशका थी। जनता दो पाटो के बीच पिस रही थी। फिर भी नौकरशाही ने कठोर नीति अपना रखी थी। जनता को जबरदस्ती युद्ध-बॉड बेचे जाते थे। अत जनता मे भारी असन्तोष फैला हुआ था। गाधीजी के 'अग्रेजो भारत छोडो' नारे ने उसमे एक नया जीवन फूंक दिया।

९ अगस्त से पहले मिदनापुर जिले के नेता अपना सगठित सरकार चलाने की कल्पना कर रहे थे और उसके लिए काफी स्वयसेवको की भरती भी कर ली थी। उन्हे न जापानियो से आशा थी और न अग्रेजो से। इसी

कारण वह स्वय अपने पैरो पर खडे होकर दोनो का मुकाबला करने की योजना सोच रहे थे। उनका विश्वास था कि यदि ऐसा कुछ न किया गया तो जापानी-आक्रमण के समय सारे इलाके में अव्यवस्था फैल जायगी।

बम्बई में नेताओ की गिरफ्तारी की मिदनापुर जिले मे काफी व्यापक व उग्र प्रतिक्रिया हुई। हडताल, जुलूस, विरोध-प्रदर्शन जिले भर में शुरू हो गये। अपने को आजाद समझने तथा अपनी सरकार के मातहत रहने की घोषणा की गई। सरकारी अदालतो और दफ्तरो के सामने प्रदर्शन होते थे और उनमें स्वतन्त्रता की यह घोषणा की जाती थी। महिषादल थाने के सामने एक घोषणा की गई, जिसमें अग्रेजो के विरुद्ध लडाई का ऐलान किया गया। तामलुक सब डिवीजन के डिप्टी कमिश्नर पुलिस के साथ हथियारो से सुसज्जित होकर घटनास्थल पर पहुचे। उन्होने गोलिया चलाने का हुक्म दिया। पर सिपाहियो ने गोलिया चलाने से साफ इन्कार कर दिया और डिप्टी कमिश्नर जनता को थाना सौप कर वापस लौट गये। यह इस प्रकार की पहली घटना थी। यहा के लोगो ने अपने अखबार व छापेखाने स्थापित किये। इतना ही नही, डाक को इधर-उधर भेजने तथा बटवाने का प्रबन्ध भी जनता ने स्वय ही किया।

इस जिले के आन्दोलन की दूसरी मुख्य बात यह है कि यद्यपि गावो और कस्बो मे पुलिस ने बडी बेदर्दी के साथ गोलिया चलाई तथा गावो में आग लगाई और सम्पत्ति को लूटा, स्त्रियो के सतीत्व को नष्ट किया, पर फिर भी एक भी मिसाल इस बात की नही मिलती कि जनता ने किसी सरकारी नौकर को कत्ल किया हो। हा, उन्हे गिरफ्तार अवश्य किया और उनसे नई सरकार के प्रति वफादार रहने का वादा कराया। जिन लोगो को जेल मे रखा गया, उनके साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया गया।

तामलुक और कंटाई के तूफानी केन्द्र

नेताओ की गिरफ्तारी के पश्चात् मिदनापुर जिले के इन दो सब डिवी-जनो मे ऐसा कोई भी गाव न होगा जहा पर जुलूस न निकाले गए हो और जलसे न हुए हो। सारे स्कूल व कालेज बन्द हो गए। अदालतो और डाक-खानो पर पिकेटिंग हुई। टोपो की होलिया जलाई गई। आन्दोलन का यह पहला दौर था। दूसरे दौर में जनता ने सरकारी राजसत्ता के चिह्नो पर कब्जा करने की कोशिश की। जिले भर में डाकखानो की सामग्री जला दी गई और २० से ३० यूनियन बोर्डो की इमारतो को भी क्षति पहुचाई गई। कर्जा बोर्डो

के रेकार्ड भी कितनी ही जगह जला दिये गए और इन बोर्डो की इमारतो को भी जलाया गया। कितने ही डाक बगले धराशायी कर दिये गए और न जाने कितनी ताड़ी व शराब की दूकाने मटियामेट कर दी गईं। आधे दर्जन से अधिक अफीम की दूकानो के रेकार्डो को जला दिया गया और अनेक सब मजिस्ट्रेटो के दफ्तर और खास महल दफ्तरो को जला दिया गया। कई अदालतो पर जनता का सामूहिक आक्रमण हुआ और उनपर स्वतन्त्र प्रजातत्र का झडा फहराया गया। इन सब सामूहिक प्रहारो म २०, ३० हजार तक जनता शरीक होती थी। कितने ही चुगी के दफ्तर, सफाई इस्पेक्टरो के घर और पुलिस क्वार्टर जला दिये गए। कुछ सरकारी नावो को भी क्षति पहुचाई गई।

प्राय सारे ही जिले मे सडको, पुलो, पुलियो आदि को काफी क्षति पहुचाई गई। टेलीफोन और टेलीग्राफ के तार काटे गए। डाकखानो को लूटा गया और नावो को क्षति पहुचाई गई। यह ,तो सहार का काम हुआ, रचनात्मक दृष्टि से गाव-गाव में स्वराज्य पचायते कायम की गईं। कई मुख्य जगहो पर प्रजातत्र की अपनी अदालते, थाने, दफ्तर, जेल आदि स्थापित किये गए जिनमे तामलुक और कटाई मुख्य थे। इस तरह ब्रिटिश सैनिक शक्ति के बावजूद जनता ने अपनी सरकार स्थापित की, जिसकी अपनी अदालते थी और जिनका बाकायदा इजलास होता था। स्वयसेवक कौमी पुलिस का काम करते थे।

राष्ट्रीय सरकार के कार्य

तामलुक सब डिवीजन मे अगस्त सन् १९४२ से सन् १९४४ तक प्रजातत्री राष्ट्रीय सरकार ने जो काम किये, उनकी सूची इस प्रकार है —

७ पुलिस स्टेशनो पर हमले किये गए। १ पुलिस स्टेशन पर कब्जा किया गया। अधिकार करने के बाद १ पुलिस स्टेशन, २ सब रजिस्ट्री आफिस, १३ डाकखाने, १ खास महल आफिस, १७ शराब की भट्टिया, ४ डाक बगले, १४ डी० एस० बोर्ड, ९ यूनियन बोर्ड, १६ पचायत बोर्ड, २४ जमीदारी कचहरिया और ३५० चौकीदारो के कपडे जला दिये गए। १३ ब्रिटिश अफसरो को गिरफ्तार किया गया, किंतु बाद में छोड दिया गया। ६ बन्दूके और २ तलवारे छीन कर नष्ट कर दी गईं। २० स्थानो पर एल० बी० तथा डी० बी० सडको को काटा गया, ४७ जगह सडको पर पेड काट कर डाले गए और ३० पुल नष्ट किये गए। २० मील की दूरी मे तार काटे गए और १९४ पोस्टबॉक्स तोडे गए।

राष्ट्रीय सरकार ने पाच थाने और सब डिवीजन तथा ६ यूनियन

पचायतें कायम कीं। ६६ दस्तावेजो की रजिस्ट्री हुई, २९०७ मुकदमे दायर हुए और १६८१ फैसले हुए। २५१ स्थानों की तलाशिया ली गई और २७८ व्यक्ति गिरफ्तार किये गए और बाद में छोड दिये गए। ५४३ व्यक्तियो पर ३३,९३७ रु० १५ आना जुर्माना किया गया। १६३ अन्य सजाए दी गई।

३१५४ सार्वजनिक और ५०१४ बन्द स्थानो में सभाए हुई।

२९,२३३ रु० ७ आ० ३ पा० नकद और ४९,६१२ रु० वस्तुओं के रूप में इस प्रकार कुल ७८,८४५ रु० ७ आ० ३ पा० सहायता-कार्यों पर खर्च किया गया।

१ नई सरकार ने दुश्मन के वे कैम्प जिनका चलाना मुश्किल था और जिनको लम्बे काल तक कब्जे में नही रक्खा जा सकता था, अस्त-व्यस्त कर दिये।

२ ब्रिटिश सरकार के नोकरो के साथ जिन्हे गिरफ्तार किया गया, अच्छा वर्ताव किया गया और उन्हे किराया देकर अपने घर वापस जाने दिया गया।

३ छीने हुए हथियारो का प्रयोग नही किया गया, बल्कि उनको जमा रक्खा गया।

४ २८-९-४२ की रात मे दुश्मन के ९० प्रतिशत आमदोरफ्त के रास्तो—पुल आदि को और तार तथा बेतार के सारे साधनो को अस्त-व्यस्त कर दिया गया।

५ १७ १०-४२ से सब डिवीजन में जनता की सरकार की स्थापना हुई। यहा के लोगो को विश्वास था कि इस तरह भारत के अन्य भागो में भी छोटी छोटी अन्य सरकारें कायम होंगी और वे सब एक राष्ट्रीय फेडरेशन में सम्मिलित हो कर राष्ट्रीय सरकार की स्थापना करेंगी। इस सरकार का विधान प्रजातत्री था। केवल युद्ध-काल के कारण लोगो ने एक सर्वाधिकारी नियत कर दिया था। सब डिवीजन कटाई ने अपना पहला सर्वाधिकारी मुकर्रर किया। उसे अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करने का अधिकार था। इस प्रकार इस सब डिवीजन ने चार सर्वाधिकारियो की नामजदगी की। चौथे और अन्तिम सर्वाधिकारी ने बाद महात्मा गाधी के हुक्म से आत्मसमर्पण कर दिया। इस सर्वाधिकारी की मदद करने के लिए एक मत्रि-मडल था और इसके सदस्यो के पास अलग-अलग महकमे थे—जैसे शिक्षा, न्याय, अर्थ व सहायता आदि। इसी प्रकार कौमी हुकूमतो के मुख्तलिफ थाने स्थापित हो गए। यूनियन पचायतें भी बन गई।

६ इस सब डवीजन और हाईकोर्ट मे जितने पुराने मुकदमे पडे हुए थे, उनको प्रजातन्त्र की अदालत ने अपने हाथो मे लिया ।

७, इस अदालत ने कुछ लोगो को सजाए भी दी और जो जुर्माना वसूल किया, उसे सहायता के कामो मे लगा दिया ।

८ इस सब डिवीजन मे कितने ही जुलूस निकाले गए जिनमे साधारणत दो हजार से १० हजार तक लोग शरीक हुए । इनमें सब जातियो के लोग सम्मिलित होते थे । २९ सितम्बर सन् १९४२ को ४० हजार का एक विशाल समूह इकट्ठा हुआ और उसने थाने पर आक्रमण करने की योजना की ।

९ कभी इस इलाके के कुछ भागो मे हडताले की जाती थी तो दूसरे भागो में कोई अन्य सामूहिक प्रयत्न किया जाता था । इस प्रकार आन्दोलन को निरन्तर जारी रक्खा गया । इस सब डिवीजन मे जितने भी विद्यार्थी थे उन्होने अपने इम्तहानो की कुछ भी परवाह न करते हुए आन्दोलन मे हिस्सा लिया ।

१० जरूरतमन्द लोगो को कपडा, दवा, दूध तथा जरूरत की चीजे यथासम्भव सरकार की तरफ से बाटी गई । सन् १९४२ के तूफान में कितने ही लोगो की मृत्यु हुई । इस सरकार ने उन लाशो को जलवाया जो इधर-उधर बुरी तरह से पडी हुई थी । लोगो के खोए हुए जानवरो को ढुढवाया तथा सडको पर गिरे हुए पेडो को उठवाया ।

११ जब काग्रेस कार्यकर्त्ता जेलो से छूटे तो उन्होने अकाल के समय १।। लाख के करीब रुपया लोगो के सहायतार्थ बाटा ।

स्वतत्र सरकार की स्थापना का स्वाभाविक नतीजा यही होना था कि ब्रिटिश नौकरशाही अपनी पूरी ताकत से दमन करती । अत मिदनापुर जिले के अन्दर जिस प्रकार अत्याचार हुए उनके सामने कुछ जर्मनो ने अपने विजित देशो में जो किया, वह फीका दीख पडता है । अश्रु गैस छोडी गई, उसके पश्चात् लाठियो का दौर चला और अत मे गोलियो की बौछारे हुई । जमीन और आसमान दोनो पर से निहत्थी जनता पर मशीनगनो से हमले हुए । तलाशी के समय आदमियो और औरतो दोनो को निर्दयता के साथ पीटा गया । बच्चे भी अछूते न बच पाए । घरो को जलाया गया और स्त्रियो का सतीत्व नष्ट किया गया । इन सब अत्याचारो का एक ही अभिप्राय था कि जनता के हृदय मे आतक बैठा दिया जाय और उन्हे अपनी स्वतन्त्र सरकार बनाने का मजा चखाया जाय । पर मिदनापुर के बहादुर लोगो ने सब कुछ सहन किया और सघर्ष को जारी रखा ।

विद्युत-वाहिनी सेना

विद्युत वाहिनी सेना का निर्माण सर्वप्रथम महिषादल में हुआ। पीछे वह तामलुक तथा नन्दीग्राम में भी सगठित की गई। प्रत्येक विद्युतवाहिनी में एक जनरल कमाडिंग आफिसर तथा एक कमाडेंट रहते थे। यह निम्नलिखित भागो म विभक्त थी—१ युद्ध शाखा। २ समाचार शाखा। ३ सहायता शाखा। सहायता विभाग में पूर्ण शिक्षित डाक्टर, कपाउडर, सवारी ढोने तथा सेवा-सुश्रूषा करने वाले लोग थे। सरकार की ओर से प्रकाशित एक पुस्तिका मे इस सम्बन्ध में कहा गया है—

"बगाल सूबे के मिदनापुर जिले में विद्रोहियो के कार्यकलाप से प्रकट होता था कि उनके कार्य पूर्वनिश्चित योजना के अनुसार चल रहे थे। उनके पीछे गम्भीर चिन्तन तथा दीर्घदृष्टि नजर आती थी। चेतावनी भेजने के उनके तरीके सर्वथा मौलिक थे। किसी बात को फैलाने तथा किसी गुप्त योजना को कार्यान्वित करने के उनके ढग स्पष्टत पूर्व निश्चित सकेतो के अनुसार थे।"

राष्ट्रीय सरकार विद्युत वाहिनी को राष्ट्रीय सेना समझती थी। उनकी निम्नलिखित शाखाए पीछे खुली :—

१ गुरिल्ला विभाग, २ बहनो की सेवा तथा ३ शान्ति कानून विभाग। इस अन्तिम विभाग ने मशहूर डाकुओ तथा चोरो को गिरफ्तार किया, जो उत्पात मचाने के लिए स्वतत्र छोड दिये गए थे। इन डकैतो और चोरो के मामले राष्ट्रीय सरकार के समक्ष उपस्थित किये गए और कानून के अनुसार उनको दड मिला।

सब डिवीजन के प्रसिद्ध नेता श्री सतीशचन्द्र समस्त ताम्रलिप्त राष्ट्रीय सरकार के प्रथम सर्वाधिकारी थे। इनके नेतृत्व मे राष्ट्रीय सरकार काफी लोकप्रिय हो गई। दूसरे सर्वाधिकारी थे श्री अजेयकुमार मुखर्जी, श्री सतीशचन्द्र साहू और श्री वरदाकात कुटी।

मिदनापुर के जिले के लोगो को प्रकृति तथा सरकार—दोनो का प्रकोप झेलना पड़ा। एक ओर प्रकृति की ओर से भयकर तूफान आया जिसने चारो तरफ बरबादी और तबाही मचा दी और दूसरी ओर सरकार ने लोगो की मुसीबत को बढाया। बगाल गवर्नर ने बगाल असेम्बली मे 'डिनायल पालिसी' की घोषणा की। इस के अनुसार हजारो नावें और साईकिले जो लोगो के पास थी, सरकार ने छीन ली। भारत रक्षा नियमो का मनमाना प्रयोग किया गया। जिसे चाहा उसे जेल मे ठूँस दिया, जहा चाहा, वहा युद्ध प्रयास म बाधा डालने के नाम पर सामूहिक जुर्माने किए व गोलिया चलाई

ब्रिटिश सरकार के काले कृत्य

तामलुक सब डिवीजन में २२ स्थानो पर २५ बार गोलियाँ चली, जिससे ४४ आदमी मारे गए, १९९ सख्त घायल हुए और १४२ को साधारण चोटें आई ।

६३ स्त्रियो पर बलात्कार किया गया, ३१ स्त्रियो पर बलात्कार करने की चेष्टाए की गई, जिन्हे गाव वालो ने बीच मे पडकर विफल किया तथा १५० स्त्रियो को अन्य तरीको से अपमानित किया गया ।

२२६ आदमियो को चोटे आई, १८५६ व्यक्ति गिरफ्तार किये गए, ५०७६ गैर कानूनी तौर पर नजरबन्द किये गए, ६ व्यक्ति भारत रक्षा नियमो के मातहत नजर बन्द किये गये ।

४०१ स्पेशल पुलिस के सिपाही नियुक्त किये गए ।

१२४ घरो को पेट्रोल और मिट्टी का तेल छिडक कर जला दिया गया, जिससे १,३६,५०० रुपये की सम्पत्ति नष्ट हुई । ४६ घर तोड-फोड डाले गए और १०४४ घर लूट लिये गए, जिसके फलस्वरूप २,१०,८७१० रुपए की हानि हुई । २७ घरो पर कब्जा कर लिया गया । १३,७३० तलाशिया ली गई । ५६ परिवारो का सामान कुर्क किया गया, जिसकी कीमत २५,३६५ रुपया होती है ।

४१ गांवो पर १,६०,००० रुपया सामूहिक जुर्माना किया गया ।

१६ सस्थाओ को गैर कानूनी करार दिया गया ।

भयानक तूफान

मालूम पडता है प्रकृति ने सरकारी दमन को मिदनापुर के लोगो के लिए काफी नही समझा और उसकी भयकरता को बढाने के लिए अपना रौद्र-रूप दिखाया । १६ अक्तूबर को बगाल की खाडी से एक तूफान उठा जो ४६० मील फी मिनट की गति से सारे जिले पर छागया । भयानक बारिश हुई और समुद्र में प्रलयकारी ज्वार-भाटा आया । आमतौर पर पूर्वी बगाल और विशेषत मिदनापुर के लोगो पर मुसीबत का पहाड टूट पडा । ब्रिटिश प्लेटून के कन्टाई स्थित कमान्डेट का कहना है कि कन्टाई में जो तबाही हुई वह तबतक की तबाही से १० गुना बढ कर थी । पेड-के-पेड उडते हुए दिखाई पड रहे थे । आदमियो और जानवरो की मुसीबत का कोई ठिकाना न था । ८० प्रतिशत घर धराशयी हो गए और इस इलाके के ७५ प्रतिशत जानवर नष्ट हो गए । इस विपत्ति की कई दिनो तक अखबारो में कोई सूचना ही नही दी गई । लगभग ३ नवम्बर को दुनिया ने इस का कुछ हाल जान पाया । सरकार ने

पीडितो को राहत देने की जो नीति अपनाई, उसने जले पर नमक छिडकने का काम किया। ऐसा प्रतीत होता था कि सरकार इस विपत्ति के समय जनता से आन्दोलन का वदला लेना चाहती है। मिदनापुर के कलेक्टर और सब डिवीजनल अफसर का खुले शब्दो में कहना था कि लोगो को किसी प्रकार की सहायता न देनी चाहिए और न सरकारी कमेटी ही बनानी चाहिए। जिला मजिस्ट्रेट ने वगाल के चीफ सेक्रेटरी की तरफ से सूचना दी कि मिदनापुर जिले मे कोई भी आदमी, जो पीडितो को सहायता देना चाहे, न आने दिया जाय। इतना ही नही, यदि नाविकोने डूवते हुए लोगो की सहायता करने का प्रयत्न किया तो उन्हें बुरी तरह से धमकाया गया। सरकारी नौकरो को अपनी मनमानी करने का काफी मौका मिला। जो गाए दूध देती थी उनको फौज के लिए जबरन छीन लिया गया। जो चावल जनता के पास मौजूद था, वह ले लिया गया। एक ओर आदमी मर रहे थे, दूसरी ओर युद्ध-प्रयास के नाम पर उनकी सामग्री छीनी जा रही थी। यह सब जुल्म जनता पर केवल इसलिए किया गया कि उसने अपनी आजादी की आकाक्षा का प्रदर्शन किया था।

कन्टाई में गोलीकाण्ड

कन्टाई के इलाके मे कितने ही गोलीकाण्ड हुए। लाठीचार्ज तो रोजाना की घटनाए थी। लगभग १३ जगह गोलीकाण्ड हुए जिनमें ७५ आदमी मरे और २१० से अधिक जख्मी हुए। कुछ गोलीकाण्डो का विवरण यहा दिया जाता है—

(१) २२–९–४२ को सवडिवीजनल अफसर सैनिक पुलिस के साथ महीशगोट पहुचे और आसपास के कितने ही घरो को घेर लिया और वहा के लोगो को सडक पर कार्य करने के लिए विवश किया। कुछ लोगो ने जब यह बेगार करने से इनकार किया तो ओवरसियर ने उनसे वादा किया कि उन्हें मजदूरी के पैसे दिये जायगे। इस पर लोग सडको पर काम करने लगे। उसके कुछ देर बाद जबरदस्त वारिश हुई और पुलिस के सिपाहियो ने घरो में जबरदस्ती घुसकर शरण पाने के प्रयत्न किये। सब डिवीजनल अफसर को जब यह पता चला कि गाववाले मजदूरी के पैसे मागते है तो उसने लोगो को पीटना शुरू कर दिया। लोगो ने उत्तेजित होकर कुछ ईंट पत्थर फेंके होगे। इस पर पुलिस ने ३० राउण्ड गोलिया चलाईं जिसके कारण २४ आदमी घायल हुए। पुलिस ३ जख्मी आदमियो को महीशगोट से कन्टाई तक पैरो के बल घसीटकर ले गई। इसमें से दो आदमी अस्पताल जाते ही मर गए।

(२) २७–९–४२ को पुलिसकप्तान और सब डिवीजनल अफसर ने

एक फौजी जत्थे के साथ बैलवाली कैम्प पर आक्रमण किया। कैम्प के सारे सामान को जला दिया। इसके बाद पुलिस नें यही तरीका अन्यत्र भी अख्तियार किया। पर जनता के समूह ने इसका मुकाबला किया। समूह पर गोलिया चलाई गई, जिसके कारण ३ आदमी वहा पर मर गए और १४ आदमी बुरी तरह से घायल हुए। पुलिस जब लूट मचा रही थी तो जनता के एक दूसरे समूह ने उसका मुकाबला किया। उसपर गोलियाँ चलाई गई और ११ आदमी मरे तथा ७ घायल हुए।

(३) २९-९-४२ को लगभग ५ हजार आदमियो के जुलूस ने भगवानपुर थाने पर आक्रमण कर दिया। थाने का केवल एक ही रास्ता था। पुलिस ने थाने से गोलियो की बौछारे प्रारम्भ कर दी। १६ आदमी घटनास्थल पर ही मर गए। २० बुरी तरह से घायल हुए। मिमलोवरी स्कूल का हेड पडित, जो एक घायल को पानी पिला रहा था, गोली से मार दिया गया।

(४) १-१०-४२ को दोपहर को जिला मजिस्ट्रेट और सब डिवीजनल अफसर सैनिक-पुलिस के एक जत्थे को साथ लेकर मरिसादा स्थान की ओर रवाना हुए। रास्ते मे उन्हे जो कोई भी मिला उसे मजबूर किया कि वह उनके साथ टूटी हुई सडक की मरम्मत करने के लिए चले। इस तरह जबरदस्ती मार-पीटकर कुछ लोगो को पुलिस लारियो मे भरकर ले जाया गया। मरम्मत का यह कार्य करने हुए रात हो गई। जिला मजिस्ट्रेट ने रोशनी के लिए नई बनी हुई मरिसदा स्कूल की इमारत को जलवा दिया। रात को पुलिस के चले जाने के बाद लोगो ने मरम्मत किये हुए रास्ते को फिर तोड-फोड डाला। अगले दिन पुलिम के एक जत्थे ने जब रास्ते को पहले की तरह टूटा हुआ देखा तो उसके क्रोध का ठिकाना न रहा। उसने वहा के २५ मकानो में उसी समय आग लगादी और निरपराध लोगो को भी बडी बेरहमी से पीटा। टूटे हुए रास्ते की फिर से मरम्मत करवाई गई। वहा से यह जत्था जब भदनतगढ पहुंचा तो उसने वहा पर इकट्ठी जनता पर गोलिया चलाई जिससे २ आदमियो की मृत्यु हुई। उनमें से एक तो वही घटनास्थल पर मर गया।

(५) पटासपुर पुलिस थाने मे ३-१०-४२ को एस० डी० ओ०, एस० पी० और सरकिल आफिसर फौज और पुलिस के सैनिको के एक जत्थे के साथ थाने पर पहुचे। रास्ते मे उन्हे आठ हजार आदमियो का एक विशाल समूह मिला। इस जत्थे ने समूह को तितर-वितर करने के लिए गोलिया चलाई, जिसके परिणाम स्वरूप एक व्यक्ति की मृत्यु हो गई।

(६) ८-१०-४२ को एस० डी० ओ० पुलिस के एक जत्थे के साथ

तिपरापाडा पहुचा और वांध पर इकट्ठे हुए कुछ लोगो पर टॉमीगन से गोलिया चलाईं, जिससे एक व्यक्ति की मृत्यु हुई और ६ घायल हुए।

इस तरह की वेशुमार घटनाए इस इलाके में जगंह-जगह पर हुईं। कुछ मिसालें ही ऊपर दी गईं हैं।

इस प्रकार बराबर गोलियाँ चलाने पर भी जब लोग न दबे और अहिंसक विद्रोहियो ने सूटाहेरा थाने पर कब्जा कर लिया, तो हवाई जहाज से जनता की भीड पर बम फेंके गए। फिर भी थाने पर पहले ही की भाति जनता का कब्जा कायम रहा।

जनता पर आतक जमाने के लिए जिला अधिकारियो ने बहुत ही घृणित रीति से लूटने और आग लगाने की नीति को अपनाया। सिर्फ काग्रेस कार्य-कर्ताओ के ही मकान नही जलाए गए, बल्कि निर्दोष गाँव वालो के मकान तथा स्कूल भी जलाये गए। किसी ने स्वप्न में भी न सोचा था कि सरकार जिले की जनता की आजादी की भावनाओ को दबाने के लिए इस प्रकार के अत्याचार करेगी। डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने, जो उस समय बगाल सरकार के मत्री थे, बगाल सरकार को अपने एक पत्र में लिखा था कि बगाल सरकार की इस आशय की विज्ञप्ति के बावजूद कि शान्ति व व्यवस्था के सरक्षक सरकारी कर्मचारियो द्वारा मकानो के जलायेजाने की सरकारी नीति नही है, मेरे पास इस बात के काफी सुबूत हैं कि इस पर अमल नहीं किया गया।

१६ अक्तूबर के भयकर तूफान की बरबादी के १५ दिन के बाद तक इस इलाके के कुछ हिस्सो मे लूट और आग की कितनी ही घटनाए हुईं।

इस के अलावा स्थानीय मुस्लिम जनता को अपने हिन्दू पडोसियो के घरो को लूटने और आग लगाने के काम मे सहायता देने के लिए प्रोत्साहित किया गया। सरकार ने मुसलमानो को हर प्रकार की सहायता देने का ही विश्वास नही दिलाया, वरन सब दमनकारी कानूनो के पजो से उन्हे बरी कर दिया। दमन से बचने के लिए उनको इस बात का आदेश दिया कि वे अपने मकानो पर झडे लगा लें।

कंटाई के कुछ आंकड़े

कटाई सब डिवीजन में २२८ स्त्रियो के साथ बलात्कार किया गया या बलात्कार करने की चेष्टा की गई। १० हिन्दू स्त्रियो को गुण्डो के हवाले कर दिया गया। ९६५ घर जलाये गए, जिससे ५, ४१, ४२१, रुपये की हानि हुई। २०५९ घर लूटे गये, फलस्वरूप २,५५, २४६ रुपए की हानि हुई। १२, ६८१ व्यक्ति गिरफ्तार किये गए, ६७२ को सजायें दी गईं। ६,६८५ लठियो के प्रहार

से घायल हुए । ३०,००० रुपए सामूहिक जुर्माना किया गया । ४३८ स्पेशल कान्स्टेबल नियुक्त किये गए ।

स्त्रियों के साथ बलात्कार

जिले में शान्ति व व्यवस्था कायम करने के लिए जो तरीके अख्तियार किये गए, पुराने जमाने के जगली को भी मात करते है । ब्रिटिश साम्राज्यवाद के दलालो ने बाजारो, चौराहो और रास्तो मे मनादी करा दी कि यदि देश की आजादी के लिए लडने वालो को उन्हे न सौप दिया गया और लडाई बन्द न की गई तो लोगो की औरतो के साथ बाजारो म बडे पैमाने पर बलात्कार किया जायगा । यह सिर्फ कोरी धमकी नही थी, बल्कि वस्तुत बहुत बडी सख्या मे औरतो पर पाशविक हमले किये गए ।

१-९-४२ को महीपादल थाने के तीन गाव मसूरिया, दिहीमसूरिया और चडीपुर को ६ हजार फौजी सिपाहियो द्वारा घेर लिया गया । गाव के मर्द, औरत और बच्चे बडी बेरहमी से पीटे गए और उनके घरो को लूटा तथा जलाया गया । इन राक्षसो को इतने पर ही सन्तोष नही हुआ, बल्कि ४६ औरतो के साथ बलात्कार भी किये । यही नही, हर औरत के साथ दो, तीन और चार सिपाहियो तक ने बलात्कार किया और कई औरतें तो बेहोश तक हो गई ।

ऊपर की मिसाल इस प्रकार की कितनी ही घटनाओ म से एक है । यह सब घटनाएं सरकारी छानबीन द्वारा पुष्ट हो चुकी है, परन्तु फिर भी उन्हे दबा दिया गया है । मेरे पास ७२ औरतो के पते और उनके बयान मौजूद है । उनमे से कुछ बयान नीचे दिये जाते है:—

(१) "मै श्रीमती सिन्धुबाल मैती, अधरचन्द मैती की स्त्री हू और चन्डीपुर ग्राम, महिपादल थाने जिला मिदनापुर की रहने वाली हू । मेरी अवस्था १९ वर्ष की है । मै एक बच्चे की मा हू । ९-१-४३ को ६॥ बजे सुबह नलिनी राहा कुछ फौजी सिपाहियो को लेकर मेरे मकान पर आया । कुछ सिपाही मेरे पति को जबरदस्ती पकड कर ले गये और इस प्रकार घर में मैं बिल्कुल अकेली रह गई । नलिनी राहा मेरे पास आया और जबर्दस्ती मेरे साथ बलात्कार किया । मै बेहोश हो गई . ... . ।

"यह मेरे साथ दूसरा बलात्कार था"

इससे पहले इस स्त्री के साथ २७-१०-४२ को बलात्कार किया गया था । दूसरे बलात्कार के बाद जो जख्म आये, उससे आहत होकर यह स्त्री ९ दिन बाद ही मर गई ।

(२) "मैं श्रीमती क्षुदी पडित, हरीपद पडित की स्त्री हू और चडीपुर गाव, थाना महिषादल, जिला मिदनापुर की रहने वाली हू। मेरी आयु २४ वर्ष है और मेरे तीन वच्चे हैं। ९–१–४३ की सुवह नलिनी राहा कुछ सिपाहियो के साथ मेरे मकान पर आया और कुछ सिपाही जबरदस्ती मेरे पति को पकड कर लेगये। नलिनी राहा के हुक्म से दो सिपाहियो ने मुझे पकडकर मेरे मुह में कपडा ठूस दिया। मेरे शोर मचाने की कोशिश करने पर मुझे सिपाहियो और नलिनी राहा ने गोली मार देने की धमकी दी। दो आदमियो ने मेरे साथ वलात्कार किया। मैं वेहोश हो गई। जव मैं होश मे आई तो मेरे पति मेरे पास थे। उनके जख्मो से खून टपक रहा था। . . . .।"

यह स्त्री वलात्कार के समय गर्भवती थी।

(३) मैं श्रीमती सुहानी दास, मनमथनाथ दास की स्त्री तथा चडीपुर गाव, थाना महिषादल, जिला मिदनापुर की रहने वाली हू। मेरी आयु ३० वर्ष की है। मेरे एक वच्चा है। ९-१-३३ की दोपहर को नलिनी राहा कुछ फौजियो के साथ हमारे मकान पर आया। कुछ लोग मेरे पति को जवरदस्ती पकड कर ले गए। मैं भी पिछले दरवाजे से भागकर वासो की झाडियो की तरफ जा रही थी। मुझे पीछे से दो सिपाही जवरदस्ती पकडकर मेरे मकान पर ले आए। उन्होने मुझे वन्दूको के कुन्दो से मारा और जमीन पर गिरा दिया मेरे मुह को कपडे से वन्द कर दिया। फिर कई आदमियो ने लगातार मेरे साथ वलात्कार किया। परिणामस्वरूप मैं वेहोश हो गई।"

अगर गाव के मर्द और औरतें मिलकर इस पाशविक अत्याचार का मुकाविला न करते तो ऐसे वलात्कारो की तादाद वहुत अधिक होती। कुछ औरतो ने तो इन मानव शरीरधारी जानवरो को छुरे दिखाकर उनसे अपने सतीत्वकी रक्षा की।

इस प्रकार की घटनाओ मे औरतो के गाल काटने, उनके कपडे उतारकर नगा करने, उनकी छातिया काट लेने तथा निर्दयता के साथ उनको पीटने तथा घायल अवस्था में उन्हे घसीटने की घटनाए शामिल है।

लोगो पर अन्धाधुन्ध सामूहिक जुर्माने किये गये। अपराधी और निरपराध के बीच कोई भेद नही किया गया। प्राय हिन्दुओ को ही सामूहिक जुर्मानो का शिकार बनाया गया।

इसके अलावा लोगो पर कई प्रकार के अत्याचार किए गए। छोटे-छोटे बच्चो को उठाकर फेंक देने और गायो को मकानो के अन्दर ही जला देने के काफी उदाहरण मिलते हैं। एक वच्चे के ऊपर जूते पहनकर चलने से

उसका पैर टूट गया। कुछ लोगो को नगा कर उनके चूतडो मे डडे ठूसे गये। एक लडके को नगा करके कास्टिक सोडे और चूने के पानी का घोल तैयार करके उसकी मूत्रेन्द्रिय पर लगाया गया। कहने का अर्थ यह है कि मिदनापुर जिले मे अत्याचार करने मे पाशविकता और बर्बरता को भी लज्जित कर दिया गया।

बैलूर घाट सब डिवीजन

इस सब डिवीजन मे स्थानीय काग्रेस कमेटी के मन्त्री श्री सरोजरजन चटर्जी ने आन्दोलन की शुरुआत के लिए १३ सितम्बर का दिन नियत किया, १३ सितम्बर की रात को स्थानीय काग्रेस-नेताओ के नेतृत्व मे गाव वालो के १०० से अधिक जत्थे बैलूर घाट मे इकट्ठे कर लिये गए। इनमे से कुछ ३० मील से भी अधिक की दूरी से आकर बैलूर घाट कस्बे से ३ मील की दूरी पर अतिराई नदी के पश्चिमी घाट के किनारे डगीघाट पर इकट्ठे हो गए। प्रात-काल लगभग ५ हजार व्यक्ति जमा थे उन्होने नदी को पार किया और नदी के पूर्वी घाट पर तिरगे झडे का अभिवादन किया। लगभग ७ बजे सब लोग कस्बे की तरफ 'बन्दे मातरम' और 'करेंगे या मरेंगे' के नारे लगाते हुए चल दिये। रास्ते मे नदी के पूर्वी घाट के अन्य गावो के लोग भी शामिल होते गये और उनकी सख्या ७ हजार के लगभग हो गई। जुलूस बैलूर घाट कस्बे के बाजारो में होता हुआ खजाने पर पहुचा। जुलूस के नेता ने खजाने के पहरे-दारो तथा कर्मचारियो को इस्तीफा देकर जनता के आन्दोलन मे शामिल हो जाने को कहा। इसके पश्चात् वे लोग कस्बे के स्थानीय सरकारी तथा अर्ध-सरकारी दफ्तरो पर आक्रमण करने के लिए चले। इनमे सब रजिस्ट्री दफ्तर डाकघर, सिविल कोर्ट बिल्डिग, कोआपरेटिव बैक, बगाल आसाम रेलवे का आऊट एजेसी दफ्तर, जूट इस्पेक्टर आफिस, अग्रेजी शराब की दूकाने, कृषि-विभाग के दफ्तर तथा बीज गोदाम, सहायक जूट इस्पेक्टर आफिस, और यूनियन बोर्ड आफिस आदि स्थान थे। सब रजिस्ट्री दफ्तर को आग लगाकर राख कर दिया गया, सिविल कोर्ट को भी आग से काफी नुकसान पहुँचा। कोआपरेटिव बैक बिल्डिग को भी आग से हानि हुई। टेलीग्राफ के तार काट दिये गये तथा तारघर की मशीनो को तोड डाला गया। दूसरे दफ्तरो के कागजात तथा फरनीचर आदि को भी नुकसान पहुँचाया गया। इसके पश्चात् सारा जुलूस शान्ति के साथ कस्बे से लौट गया। इसमें न किसी व्यक्ति को चोट पहुचाई गई और न किसी व्यक्तिगत जायदाद को नुकसान ही पहुँचाया गया।

नदी के दूसरी ओर गवर्नमेट के बहुत से धान के गोदाम थे, उन्हे जुलूस

वालो ने लूट लिया। जिला मजिस्ट्रेट वहा पर हथियारो से सुसज्जित सिपाहियो को लेकर पहुचे, लेकिन जनता के खिलाफ कोई कार्रवाई किये विना ही वापस लौट गए। जन समूह के कुछ आदमी मिमलताल नामक स्थान पर पहुचे और वहा से भी धान लूटकर ले गए।

जिला मजिस्ट्रेट को सूचना मिली कि अगले दिन थापन थाने पर जनता का आक्रमण होगा। अत. १५ तारीख की सुवह हथियारो से सुसज्जित सिपाहियो को लेकर वह थापन पहुचे। उधर प्राय तीन सौ राजपूत, मुसलमान और सथाल धान की निकासी को रोकने के लिए तीलाघाट की ओर चले। इन दिनो प्राय गाव के सव आदमी धान को वाहर भेजने के खिलाफ थे, क्योकि वहा पर धान की कमी थी। जिला मजिस्ट्रेट भी थापन से हथियारवन्द सिपाहियो और इजारदार को लेकर वहा पहुचे। पुलिस ने जनता पर गोली चलाई। किंतु उससे कोई क्षति नही पहुची और जनता शान्तिपूर्वक वापस चली गई। जिला मजिस्ट्रेट ने ६ दर्शको को गिरफ्तार किया जो वहा पर घूम रहे थे। जनता का समूह मदनहार की तरफ चला और वहा इजारदार की दूकान को लूटा, क्योकि उसने जिला मजिस्ट्रेट को मदद दी थी।

२२-९-४२ की आधी रात के समय पुलिस के एक जत्थे ने जिसके पास वन्दूके भी थी, चौकीदार और दफेदारो को साथ लेकर मुरदगा में फूलचन्द मडल के मकान पर छापा मारा। उन के विषय में यह कहा जाता था कि वह और उनके साथी बैलूरघाट की घटना में थे। पुलिस वालो ने मकान का दरवाजा तोड डाला और अन्दर घस गए और जिस कमरे में फूलचन्द अपनी स्त्री और बच्चो के साथ सो रहे थे वहा जाकर श्री फूलचन्द की वेइज्जती की और उनका सामान लूट लिया। श्री फूलचन्द के शोर मचाने पर गाँव की जनता उनके मकान की ओर दौड पडी। इस पर पुलिस ने जनता पर गोली चलाई। पर जनता के उमडते हुए जन-समूह को देखकर पुलिस वाले भाग गए। जो वाकी वचे, जनता ने उन्हे पकड लिया और रस्सियो मे बाध दिया। दूसरे दिन जव पुलिस के गिरफ्तारशुदा सिपाहियो ने छोड देने की प्रार्थना की, तब जनता ने गाँव में एक सभा की और उसमे यह तय पाया कि यदि वे लोग कांग्रेस के प्रतिज्ञापत्र पर हस्ताक्षर कर दे और इस बात का विश्वास दिला दें कि सरकारी नौकरियाँ छोड देंगे तो उन्हे छोड दिया जायगा। विचारे पुलिस वालो ने फौरन ही कांग्रेस के प्रतिज्ञापत्र पर हस्ताक्षर कर दिए। जनता ने फौरन ही उनको छोड़ दिया, पश्चात् उनको भोजन कराया और इस प्रकार वे 'वन्देमातरम्' का गान गाते हुए तथा गान्धीजी की जय के नारो के साथ विदा किये गए।

२४।९।४२ को पुलिस इस्पेक्टर और सब इस्पेक्टर हथियारबन्द पुलिस जत्थे के साथ मुरदगा एक पुलिस के जत्थे को बचाने के लिए गए। रास्ते मे उन्होने मुरदगा से दो मील की दूरी पर दो गाव वालो को गिरफ्तार कर लिया जो श्री फूलचन्द मडल के औषधालय से दवा लेकर आ रहे थे। उनके रिश्तेदार उनको छुडाने के लिए पुलिस इस्पेक्टर के पास गए, परन्तु उसने उन्हे डाट-फटकार दिया। धीरे-धीरे वहा लगभग सौ आदमी इकट्ठे हो गए। बातचीत चल ही रही थी कि पुलिस ने जनता पर गोलिया चलानी शुरू कर दी। बन्दूको की आवाज सुनकर लगभग पाच छ सौ आदमी जमा हो गए। जनता पकडे हुए आदमियो को छोडने के लिए चिल्लाने लगी। सथालो ने पुलिस पर धनुष-बाण से आक्रमण कर दिया। इस पर पुलिस वालो ने गिरफ्तार शुदा आदमियो को तो छोड दिया और भीड पर अन्धा-धुन्ध गोली चलाते हुए थापन की तरफ भागे। पुलिस के कथनानुसार ६६ बाल गोलियो और १० बम गोलियो का प्रयोग किया। बहुत से आदमी घायल हुए और तीन आदमी घटनास्थल पर मारे गए।

यह बात ध्यान देने योग्य है कि सब स्थानो पर काग्रेस कार्यकर्त्ताओ ने अहिंसात्मक नीति का पूर्णत पालन किया। यहा तक कि पोलियाला हाट पर जहा कि पुलिस के अत्याचार सीमा को पहुच चुके थे, गाव के कार्यकर्त्ताओ ने घुटनो के बल बैठकर पुलिस की गोलियो का स्वागत किया। मेलकुरी के रहने वाले एक ७० वर्ष के बूढे श्री आधार मडल ने सर्व प्रथम अपने सीने पर गोली का स्वागत किया।

१४ सितम्बर को दोपहर के बाद जब जनता का जुलूस लौट चुका था, जिला मजिस्ट्रेट तथा डी० एस० पी० अपने हथियारबन्द स्टाफ तथा दिजापुर सदर से गोरखा फौज लेकर बैलूरघाट पहुचे। उनके आते ही गिरफ्तारियाँ शुरू हो गई। ३० आदमी गिरफ्तार किये गए जिनमें तीन मुसलमान भी थे। १७ सितम्बर की सुबह को बडे तडके फौज की सहायता से तलाशिया शुरू की गई। जिला मजिस्ट्रेट और एस० पी० स्वय इस कार्य में हाथ बटा रहे थे। तलाशी लेते समय बरतन, प्याले, प्लेट, फरनीचर, सन्दूक, अलमारी आदि लोगो का सामान तोड-फोड दिया गया। इसके बाद उत्तरी बगाल और ढाका से पुलिस के जत्थे-के-जत्थे आने शुरू हो गए। इस प्रकार तैयार होकर जिला मजिस्ट्रेट और एस० पी० इलाके के अन्दर गए। मुरदगा नामक गाव उनका विशेष निशाना बना। ढाका की ईस्टर्न फ्रेंटियर रायफल, नामक टुकडी एक अग्रेज अफसर की अध्यक्षता में मुरदगा भेज दी गई। उलकी सहायता के लिए

पुलिस भी थी। वहा के कुल ४२ मकान या तो धराशायी कर दिए गए या तोड-फोड डाले गए। मकान के रहने वाले आस-पास के जगलो में भाग गये। इस तोड-फोड के बाद जिला मजिस्ट्रेट और एस० पी० ने आस-पास के मुसलमानो की एक सभा की और उन लोगो को भडकाया कि वे मूरदगा गाव के आदमियो का सामान लूट लें और स्त्रियो का सतीत्व नष्ट करें। अग्रेज आफीसर की मेहरबानी से स्त्रियो का सतीत्व तो भ्रष्ट होने से बच गया, परन्तु अफसर के चले जाने के बाद जिला मजिस्ट्रेट और एस० पी० ने १५७ मुसलमानो को इकट्ठा किया। उनकी मदद से गाव लूट लिया गया। ३ दिन तक लूट का सामान जैसे धान, चावल, फरनीचर, बर्तन, छतो के खपरैल, जेवर, रुपया-पैसा कपडा आदि बराबर गाडियो से ढुलता रहा। एक ओर यह अन्धाधुन्ध लूट चल रही थी, दूसरी ओर गिरफ्तारिया भी जारी थी।

२ अक्टूबर सन् ४२ को मुसलमानो का गिरोह दिखाई दिया जिसका नेतृत्व एस० डी० ओ० खुद हाथ में रिवाल्वर लिए हुए कर रहे थे। और जो जिला मजिस्ट्रेट की आज्ञा के विरुद्ध लाठी और भालो से सुसज्जित था। इस जुलूस ने हिन्दुओ के बहुत से धान के गोदामो को लूट लिया। इनमें सबसे बडा गोदाम श्रीयुत तिकोरीशाह का था, जिसमें १५०७ मन धान था।

बैलूरघाट के २९ हिन्दुओ पर ७५ हजार रुपया सामूहिक जुर्माना किया गया। एक-एक आदमी पर दस-दस हजार तक जुर्माना किया गया। केवल एक मुसलमान को छोड दिया गया, हालाँकि उसका लडका बैलूरघाट की घटना के सम्बन्ध में गिरफ्तार किया गया था। यह ध्यान देने की बात है कि बैलूरघाट से अधिक-से-अधिक १५ हजार रुपए का नुकसान हुआ था। इस नुकसान को बहुत बढा-चढाकर दिखाया गया। इसके अलावा अलग-अलग व्यक्तियो से बिना किसी कानून-कायदे के, रुपया वसूल किया गया।

कलकत्ता

कलकत्ता बगाल प्रान्त की राजधानी है। यह भारत का सबसे बडा नगर है। इसमे एक ओर जहा अनेक दर्शनीय इमारतें और भव्य अट्टालिकाये है, वहा कच्ची झोपडिया उनमें रहने वालो की दरिद्रता का प्रदर्शन करती है। शिक्षा और उद्योग-धन्धो तथा व्यापार-व्यवसाय का केन्द्र होने के कारण कलकत्ता में राजनैतिक चेतना विशेष रूप से पाई जाती है। इसलिए जब सन् १९४२ का विद्रोह शुरू हुआ तो कलकत्ते में हडतालें हुईं और बडे-बडे जुलूस निकले। बडी सख्या में जनता शामिल हुई। अनेक मर्तबा जनता पर लाठीचार्ज किया गया। अश्रु-गैस का प्रयोग भी किया गया। १३, १४ और १६

अगस्त को गोलिया चली। सरकार के कथनानुसार इन गोली-काण्डो में ३९ मरे और १५ घायल हुए। हताहतो की यह सख्या सर्वथा गलत है। एक अमरीकन सवाददाता के कथनानुसार १०० आदमी तो केवल १४ अगस्त को ही गोली के शिकार बन गए थे। विद्यार्थियो ने आन्दोलन मे अच्छा हिस्सा लिया। स्कूल कालेज लम्बे अर्से तक बन्द रहे। इन्ही दिनो टेलीफोन के तार काटे गए तथा ट्रामो का आवागमन रोक दिया गया। फौजी लारियाँ लूट ली गईं और जला दी गईं। डाकखाने बरबाद किये गए तथा लेटर बक्स तोडे गए। काशीपुर की तीन जूट मिलो मे हडताल हो गई। मोटर ड्राइवरो ने भी काम बन्द कर दिया। आनन्दपुर मैटल वर्क्स तथा डन्डन एलुमोनियम वर्क्स ने भी कुछ दिनो के लिए काम बन्द कर दिया।

बगाल प्रान्तीय काग्रेस कमेटी गैर कानूनी करार दी गई। बगाल सिविल प्रोवेशन कमेटी के कागजात जब्त कर लिये गए तथा काग्रेस सिविल डिफेस बोर्ड आफिस की खिडकियो को तोड डाला गया। शक्ति प्रेस की तीन मशीनो को क्षति पहुचाई गई, टाइप इधर-उधर फेक दिये गए, पानी के पाइप तोड दिये गये और प्रेस पर कब्जा कर लिया गया। बहुत-सी दुकान भी पुलिस वालो ने लूटी। गोलिया इस तरह अन्धाधुन्ध चलाईं कि एक सात वर्ष का बच्चा जो अपने मकान के बरामदे मे टहल रहा था, तथा एक दूकानदार उनका निशाना बना। बहुत से आदमी घायल हुए जिनमे एक प्रेस का सवाददाता भी था। ६५ वर्ष के एक बुड्ढे को सगान की नोक द्वारा गन्दगी साफ करने के लिए विवश किया गया। अक्तूबर से दिसम्बर तक १५८ गिरफ्तारिया की गई जिनमे २० स्त्रिया भी थी। ९ दिसम्बर सन् १९४२ को स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष मे जुलूस निकाला गया जिसको पुलिस ने तितर-बितर कर दिया। अखिल भारतीय चर्खा सघ की दूकान तथा अखिल भारतीय ग्राम उद्योग सघ के गोदाम पर पुलिस ने कब्जा कर लिया।

१६ अक्तूबर को क्रान्तिकारियो ने विलिगडन हवाई स्टेशन और धर्मतल्ला स्टेशन पर मोटरो में आग लगा दी तथा ८-१२-४२ को नीमतल्ला म दूकानदारो पर विस्फोट बमो का प्रयोग किया गया। ९-१२-४२ को बालीगज आदि स्थानो पर दूकानदारो को रोक लिया। चार आदमियो ने सियालदा में ड्राइवर से चाबी छीनकर बस को स्टार्ट कर दिया और स्वय नीचे उतर गये। यह बस कालेज स्ट्रीट के पास किसी दूसरी कार से जाकर टकरा गई। गरियाहट्टा मे एक कार जला दी गई। ५-१०-४२ को ट्रेन का एक फर्स्ट क्लास का डिब्बा, जो सियालदा से गुलुई जा रहा था, नष्ट कर दिया गया ५-१२-४२ को १९ आद-

मियो ने बी० एन० आर० के वुसकुरिया स्टेशन पर बमो का प्रयोग किया तथा स्टेशन के सब कागजात जला दिये। ३०-१०-४२ को वहू बाजार मे एक एक्साइज की दूकान पर बम फेंका गया। २१-१२-४२ को भवानीपुर में विदेशी शराब की दूकान पर बम फेंके गये। २१-१२-४२ को कुछ बम स्टाक-एक्सचेंज पर फूटे।

मुरशिदाबाद

बलदगा और नाजीनगर के बीच टेलीग्राफ के तार काट दिये गए। अजीमगज सिटी रेलवे स्टेशन पर आक्रमण किया गया तथा उसे क्षति पहुचाई गई। इसी प्रकार की घटना को बेलडेग्स स्टेशन पर हुई। रामवारा, पटिकावेरी और रुकनपुरा के डाकखाने जला दिये गए। पटकावेरी मे टेलीग्राफ के दफ्तर को नष्ट कर दिया गया। एक गाजे की दूकान को भी बरबाद कर दिया गया। नासीपुर के बुकिंग दफ्तर को नष्ट कर दिया गया। कासिम बाजार से दहरनपुर जाने वाली गाडी का एक सेकेंड क्लास का डिब्बा जला दिया गया। दरहनपुर मिलटेकनो को जला दिया गया। जगीपुर म्युनिसिपल हाउस को नष्ट कर दिया गया। राजगज और सैदाबाद के बीच लेटरबक्स जला दिये गए।

गकर के एक काग्रेस-कार्यकर्त्ता की सब चल सम्पत्ति जब्त कर ली गई। ९ सितम्बर को जुलूस मे सम्मिलित लगभग ६० व्यक्तियो को हरिशमपुर में गिरफ्तार किया गया और जगल मे ले जाकर छोड दिया गया। बरहपुर के मकान के निवासियो को जिसमे स्त्रियाँ भी थी, घायल किया गया। बलगा मे ५,००० रु० सामूहिक जुर्माना किया गया।

नदिया

गिरफ्तारिया ९८

रामाघाट टेलीग्राफ और टेलीफोन के तार काट दिये गए। पलासी और कुश्तियाँ म भी टेलीग्राफ के तार काट दिए गए। कृष्णनगर रेलवे स्टेशन के लैम्प तोड दिये गए। कृष्णनगर की लोकल ट्रेन के चार फस्ट क्लास तथा सैकेंड क्लास के डिब्बे जला दिये गए। इसी गाडी का एक फर्स्ट क्लास का डिब्बा बाद मे और जला दिया गया। मुरगचा रेलवे स्टेशन पर आक्रमण किया गया। और उसके सब कागजात जला दिये गए। रामनाघाट इवेकुएशन रिलीफ सेन्टर की छते जलाकर राख कर दी गई। कृष्ण नगर के एक जुलूस पर तथा एक सभा पर लाठी-चार्ज किया गया जिसमें बहुत से आदमियो को चोटें आई। नवद्वीप के सात कमिश्नरो ने स्तीफे दे दिए।

ढाका

कई दिनो तक ढाका में तथा जिले के अन्य स्थानो मे हडतालें रही

बहुत-सी सभाये हुई तथा जुलूस निकाले गये। विद्यार्थियो ने स्कूल कालज छोड दिए। ढाकेश्वरी चिरजन तथा लक्ष्मीनारायण काटन मिल मे हडतालें की गईं। नारियागज की सिविल तथा क्रिमिनल कचहरियो पर पिकेटिग की गईं। ढाका सेन्टर व अखिल भारतीय चर्खा सघ और रायपुर के अखिल भारतीय चर्खा सघ पर कब्जा कर लिया गया।

ढाका की सडके रोक दी गईं। दयागज मे रेल रोक ली गईं और रेलवे के सामान को क्षति पहुचाई गई। ढाका—नरियागज की लाइन की पटरिया उखाड दी गईं तथा दोनो शहरो के बीच कुछ दिन के लिए आमदोरफ्त के साधन नष्ट कर दिये गए। कन्दरिया रेलवे स्टेशन पर आक्रमण किया गया और वहा के कागजात जला दिये गए और स्टेशन जाने वाली सडक को रोक दिया गया। ढाका के टेलीग्राफ तार काट दिये गए और टेलीफोन स्विच बोर्ड मे आग लगा दी गई। अरमीना टोला के टेलीफोन के स्विचबोर्ड को जला दिया गया। साइकलो के रजिस्ट्रशन नम्बर हटा दिए गए और मुशिया गज मे टेलीग्राफ के तारो को काट दिया गया। ओटपारा तथा केनिगसन तार काट दिये गए।

ढाका के एक भूसा गोदाम को, जिसमे फौज के लिए भूसा इकट्ठा किया गया था, नष्ट कर दिया गया। दोलिया की नहर मे एक मोटर फेक दी गई और फौज तथा जल-सेना के गोदाम को क्षति पहुचाई गई। ढाका मे एक ए० आर० पी० की इमारत को नष्ट कर दिया गया। मुसिफ की कचहरी पर आक्रमण किया गया और कागजात जला दिये गए। फौज के लिए जमा किए हुए भूसे मे आग लगा दी गई तथा गवर्नमेन्ट के कताई के कारखाने में चर्खी और सूत आदि को क्षति पहुचाई गई। ढाका के कालेजिएट स्कूल के कागजात जला दिये गए और साइस के यत्रो को क्षति पहुचाई गई। सी० आई० डी० इन्स्पेक्टर के मकान पर, एस० आई० के मकान पर, बैरक्स पर, काजीताला पर ढाका के कोतवाली थानो पर, सुतरापुर के एस० आई० के क्वार्टर पर, गन्धरिया हवलदार के क्वार्टर पर, ढाका के नरेगदी थाने पर, जोनरुन रोड के एक रेस्टरा पर बम विस्फोट हुए।

१३ अगस्त को सखारी बाजार मे कई जगह गोलिया चली, जिससे एक मरा, कई घायल, मुसिफ की अदालत के सामने दो सिपाही घायल, ६ बार गोलियाँ चली, बहुत से घायल हुए, एक मरा। १५ अगस्त को सादरघाट पर एक मरा। अग्रेडहेड मे एक मरा, ७ घायल जिनमे तीन मरे। १५ सितम्बर तालटोला मे तीन मरे और एक घायल। २२ सितम्बर को नवाबगज मे ५ बार

गोली चली जिससे दो मरे और ६ घायल हुए। एक सिपाही फौरन ही मर गया और एक बाद में मरा।

तिपरा

गिरफ्तारियां १७०, जिनमें १६ स्त्रियां भी सम्मिलित थीं।

तिपरा म्युनिसिपैलिटी को गवर्नमेन्ट ने अपने हाथ में ले लिया। चान्दपुर में दो ए० आर० पी० पोस्ट नष्ट कर दिये गए। कोमाइल इनकम टैक्स दफ्तर पर आक्रमण किया गया तथा इब्राहीमपुर डेट सेटिलमेन्ट बोर्ड और नरसिंह पोस्ट आफिस आदि के भी कागजात जला दिये गए। इब्राहीम यूनियन बोर्ड और बुरचगा पोस्ट आफिस के कागजात जला दिये गए। राजपुर पोस्ट आफिस में भी यही नाटक खेला गया। पगमर, लक्ष्मी और लमाई के बीच टेलीग्राफ के तार काट दिये गए। कालीताला और दुर्गापुरा पोस्ट आफिस भी नष्ट कर दिया गया। खेरा पोस्ट आफिस का एक लेटर बाक्स गायब कर दिया गया। दुर्गापुर यूनियन बोर्ड, आफिस को नष्ट कर दिया गया। १४ नवम्बर को पुलिस स्टेशन चान्दाग्राम के निलाम्बी फौजी हवाई अड्डे को भी नष्ट कर दिया गया। इस जगह की जनता पर छ सौ रुपया सामूहिक जुर्माना किया गया।

सिलहट

२५ अगस्त से १५ सितम्बर तक ६९७ मुख्तार और वकीलों ने अपना काम बन्द कर दिया। इसके पश्चात् दो हज़ार मुहर्रिरों ने भी मुख्तारों और वकीलों का साथ दिया। ३१ अगस्त को सिलहट के पोस्ट तथा इनकम टैक्स आफिस और इक्जीक्यूटिव इंजीनियरिंग आफिस पर आक्रमण किया गया और उसके कागज़ात जला दिये गए। सुभानगंज की कचहरी में भी ऐसा ही किया गया। कुलौरा थाने और विश्वनाथ थाने में सब इन्स्पेक्टर के मकान के तथा बेनी बाजार के पोस्ट आफिस में आग लगा दी गई। कितनी ही जगह के लेटरबक्स भी जला दिये गए। टेलीग्राफ के तार काट दिये गए। तार के खम्बे गिरा दिए गए। सिलहट रेलवे प्लेटफार्म पर एक पेट्रोल का तथा दूसरा फौज के लिए खाद्य-पदार्थों से भरा रेल का डिब्बा जला दिया गया। एक गोरे सिपाही को भी जो वहाँ पर तैनात था जला दिया गया। रेलवे पटरियों के हट जाने से ९ डिब्बे गिर पड़े। फौज के लिए जमा भूसे में और एक बाँस के पुल में आग लगा दी गई। तमाम जिले में 'भारत छोड़ो' आदि के २० हज़ार इश्तहार बाँटे गए। लगभग १०० मौलवी जनता में हिन्दू-मुस्लिम एकता का प्रचार करने के लिए नियुक्त किये गए। इस कार्य में सिलहट की जमैयतुल-

उलमा काफी हाथ बटा रही थी। ६० स्वराज्य पचायतें स्थापित की गई। इन पचायतो मे सब आपसी झगडे और मुकदमे तय होते थे।

फरीदपुर

पलास से वुदरानगर तक सब टेलीग्राफ के तार काट दिए गए। बसन्तपुर रेलवे स्टेशन नष्ट कर दिया गया। राधागज और बीजापुर के स्टेशन पर आक्रमण किया गया और वहा के कागजात जला दिए। मगा मे कुछ आफिसरो ने मुसलमानो को काग्रेस कार्यकर्त्ताओ के खिलाफ भडका कर हिन्दुओ के मकान लुटवा दिए। बोलीताला के पास दादाई रेलवे स्टेशन के कुछ भाग में आग लगा दी गई। जिलास्कूल फरीदपुर के हेड मास्टर के आफिस मे आग लगा दी गई तथा सेटिलमेन्ट आफिस के कागजात भी जला दिये गए।

मेमनसिंह

गिरफ्तारियाँ १४१

मेमनसिंह के टेलीग्राफ के तार काट दिये गए। रेल की पटरी उखाड दी गई तथा नीलगज में रेल के स्लीपर जला दिये गए। नेत्रकोण के रेलवे टेलीग्राफ के तार काट दिये गए। किशोरीगज मे भी ऐसा ही किया गया। नीलगज डाकखाने के डाक के थैले छीन लिये गए। एक एक्साइज की दूकान पर कब्जा कर लिया गया और मेमनसिंह मे भूसे के गोदाम मे आग लगा दी गई। सेल्स टैक्स तथा इनकम टैक्स के दफ्तरो पर भी आक्रमण किया गया। तागिल सिविल कोर्ट तथा सब इस्पेक्टर के मकान मे आग लगा दी गई। रायर बाजार तथा अथरबरी के बाजार लूट लिये गए। म्यूनिसिपल बोर्ड आठ कमिश्नरो ने इस्तीफे दे दिए और कई वकीलो ने अपनी वकालत बन्द कर दी।

रायर बाज़ार के सरकारी बाज़ार की लूट के परिणामस्वरूप जब पुलिस ने गोलियाँ चलाईं तो तीन आदमी मारे गये तथा अथरावरी बाज़ार की लूट के सिलसिले मे पुलिस की अधाधुन्ध गोलियो से सौ आदमी घायल हुए।

राजशाही

नौगाव पोस्ट आफिस जला दिया गया और बोलिया थाने पर आक्रमण किया गया। एक चावल के गोदाम मे आग लगा दी गई। अबादपुर सरकारी बाज़ार तथा गजलीबाजार लूट लिये गए। कासिबबरी पर आक्रमण किया गया।

राजेश म्युनिसिपैलिटी के ७ कमिश्नरो ने इस्तीफा दे दिया।

दीनापुर

बेलूरघाट मे टेलीग्राफ के तार काटे गये। यूनियन बोर्ड, सिविल कोर्ट, बहुत सी एक्ससाइज की दूकाने, सब रजिस्ट्री आफिस, सेंट्रल कोआपरेटिव बैंक आदि स्थान जला दिये गए तथा नष्ट कर दिये गए।

नोट —इसका विस्तृत वर्णन एक दूसरे स्थान पर दिया गया है। वहा की रहने वाली जनता ने सब रजिस्ट्रार पर एक हजार रुपया तथा ऑनरेरी मस्जिस्ट्रेट पर दो सौ रुपया जुर्माना किया।

रंगपुर

पारवतीपुर-कठियार रेलवे की पटरिया उखाड दी गई जिससे कि एक रेलगाडी उलट गई। पारवतीपुर में मीलो तक रेल की पटरिया उखाड दी गई। स्टेशन पर आक्रमण किया गया और सिलीपर जला दिये गए। रंगिया-पुर स्टेशन की इमारत तथा क्वार्टर मय सामान के जला दिए गए और दो जोडी रेल की पटरिया उखाड दी गई। माईहाटे पर चौथाई मील रेल की पटरी उखाड दी गई। सहसपुर से चन्दाई कोना तक तथा धूपचासी तथा सर-पुर के टेलीग्राफ के तार काट दिये गए। मौलपुर पर की रेलवे स्टेशन पर फर्स्ट तथा सेकेंड क्लास के डिब्बे जला दिये गए।

जलपाईगुरी

कुमार ग्रामदुआर पोस्ट आफिस और तहसील आफिस पर हुए आक्रमण के सिलसिले मे मारवाडियो की बन्दूको का लाइसेन्स जब्त कर लिया गया।

दारजिलिंग

गिरफ्तारिया ४६

८ सितम्बर को सिलीगुरी मे गोलीकाड हुए।

वर्द्धमान

गिरफ्तारिया १७४ सामूहिक जुर्माना ४५,५००

कालस रेलवे स्टेशन और जमालुरगज रेलवे स्टेशन, जमालपुर की देशी शराब और गाजे की दूकानें, वमनी की देशी शराब तथा एक्साइज की दूकानें, कलना सिविलकोर्ट, बेगराई इवेकुएशन के दो मकान तथा वर्दवान का डाक बगला, जमालपुर थाने के कागजात और सामान, सागरी के इवेकुएशन कैम्प की सात छते, कुसुमग्राम का डाक बगला, बकापुर का डी० एस० आफिस और उर्कारद डी० एस० वी० आफिस आदि को लूट लिया गया, नष्ट

कर दिया गया अथवा जलाकर खाक कर दिया गया। जमालपुर मे एक बन्दूक पकड़ी गई। बकपुरी और उरीद यूनियनबोर्डो के दफ्तरो तथा मल्दानागर और सेठपुर की एक्साइज की दूकानो और कनीपुर मे देशी शराब की दूकानो को जला दिया गया।

६।१०।४२ को गुसखुरा रेलवे स्टेशन के पास एक अग्रेज टामी ने एक किसान को गोली से मार दिया जो कि सीर लेने जा रहा था।

हावड़ा

बन्तरा के टेलीफोन और बिजली के तार काटे गए और हावडा बस-घाट के ट्राम रोक दिये गए। बेमगची और बेवघचिया रेलवे स्टेशनो पर टेलीग्राफके तारो को कई जगह से काट दिया गया। कोलवरी मे ट्रमट्रोली नष्ट कर दी गई और पचनताली सडक रोक दी गई। शानपुर पोस्ट आफिस थ्रस्टरोड पोस्ट आफिस तथा जिगार पोस्ट आफिस के कागजात स्टैम्प सहित जला दिये गए।

भौसागर रेलवे लाईन की पटरिया उखाडदी गईं और यह कोशिश की गई कि वृन्दावन पुर की बी० डी० रेलवे की पटरिया उखाड दी जाय। कन्जाकुर और मनोवर यूनियन बोर्डो के कागजात, रशनावाद यूनियन बोर्ड आफिस, बिलिसतोर का डाक बगला, चन्द्र और अलुनी के मिलिट्री आवजर-वेशन कैम्प और कचकी वायुदर्शक यत्र, विशनपुर हवाई अड्डे की दो छत, सोनामुखी, चन्द्रा और गगाजल हाटी मे एक्साइज की दूकान तथा सेलबोनी, केदामघाटी और कनोहापुर आदि जगहो मे एक्साइज की दूकाने, दोबीपुर, तोतालचिटी, ज्योडा, बिनू, करासाल, सिलमपुर, विवरद का वनूनिया आदि जगहो में एक्साइज़ की दूकाने, बेनूनिया का डाक बगला और अकुई का डाक का थैला आदि जला दिये गए, नष्ट कर दिये गए अथवा लूट लिये गए।

२१ अगस्त को उलूबरिया मे एक सभा पर गोली चलाई गई।

हावडा की जूट मिल और अनेक कम्पनियो मे हडताले हुईं।

बिठूर और वादलनरियापुर की यूनियन बोर्डो को सरकार ने अपने हाथ मे ले लिया।

हुगली

गिरफ्तारिया ५६५

कई जगह टेलीग्राफ के तार काट दिए गए। मार्टिन एन्ड को० तथा एन्ड को रेलवे के चम्पादगा और सोमडा और हेवान के बीच रेल की पटरिया उखाड दी गई जिससे दो दिन तक रेलो का चलना वन्द होगया।

ई० आई० आर० की कुछ लाइनों पर के लकड़ी के तख्ते आदि हटा दिये गए। दो डिब्बे बिलकुल जला दिये गए और कई रेल के डिब्बों को बड़ी क्षति पहुंचाई गई। स्टेशनों पर लैम्प तोड़ दिये गए और पटरियां उखाड़ दी गईं। बोनेही-कटवा के तीन पुल तोड़ दिये गए। आरामबाग खासमहल और बालीखास महल के दफ्तर जिसमें जिले के सब खास महलों के कागजात रखे थे, नष्ट कर दिये गए।

शिरोफुल के बाजार से सिपाहियों के लिए खाने का जो सामान जा रहा था, रोक दिया गया। चान्दीताल और भड़रीहाटी तथा कमर पुकारी में इवक्युएशन कम्प और कुली का मिलिट्री आवजरवेशन पोस्ट नष्ट कर दिये गए।

बादा गंज कृष्णनगर तथा गोहाटी, आरामबाग, परसराम, पुरसराम-पुर की एक्साइज की दूकानों का समस्त सामान जला दिया गया। कुमारपुकार और अहमदपुर के डाकबंगले को सब सामान सहित नष्ट कर दिया गया। देवखादा और धनियाकादा पोस्ट आफिस जला दिया गया। पटुल पोस्ट आफिस भी बरबाद कर दिया गया। १६ बार टेलीग्राफ के तार काटे गए। अनेक स्थानों पर डाक के थैले नष्ट कर दिये गए।

बेंची में यूनियन बोर्ड के कागजात और आफिस को नष्ट कर दिया गया। इसी प्रकार लगभग एक दर्जन यूनियन बोर्डों के कागजात जला दिये गए। एक दर्जन से अधिक स्थानों के पोस्ट आफिसों को बड़ी क्षति पहुंचाई गई और उनके कागजात नष्ट कर दिये गए।

हुगली जिला कांग्रेस कमेटी आफिस, सिरामपुर और एक प्रमुख कांग्रेस कार्यकर्त्ता के मकान पर, जिनको गवर्नमेंट ने अपने अधिकार में कर लिया था, जनता ने पुनः कब्जा कर लिया। आरामबाग की पुलिस ने बारो दगल के सागर कुटीर, कांग्रेस कैम्प में ताला लगा दिया था। जुलूस ने तालों को तोड़ दिया और अपनी राष्ट्रीय संस्था पर कब्जा कर लिया। एक लारी, को जिसमें चावल भरा हुआ था, जनता ने गंगा कटवा रोड पर पकड़ लिया।

नयापुर के ४० मकान-मालिकों को पुलिस ने बहुत अपमानित किया तथा ३५ को बड़ी बेरहमी के साथ पीटा।

कई म्युनिसिपल कमेटियों के सदस्यों ने इस्तीफे दे दिये। यूनियन बोर्डों के सदस्यों ने भी इस्तीफे दे दिये।

३०–१०–४२ को जनता ने चम्पाडांगा बाजार पर आक्रमण किया। कुछ सामान लूट लिया और कुछ नष्ट कर दिया। सूचना मिलने पर फौरन ही वहाँ पुलिस आई और उसने जन-समूह पर गोली चलाना शुरू कर दिया जिससे तीन व्यक्ति मारे गए तथा बहुत से जख्मी हुए।

: ९ :

मद्रास में विद्रोह

मद्रास प्रान्त में दक्षिण भारतीय प्रायद्वीप का करीब करीब सारा ही दक्षिणी हिस्सा शामिल है और देशी रियासतो को छोडकर इसका क्षेत्रफल १,२४,३६३ वर्गमील है। काफी अर्से से इस प्रान्त की जनसख्या लगातार बढ रही है। इसमें करीब ८८ प्रतिशत हिन्दू, ७ प्रतिशत मुसलमान तथा ३८ प्रतिशत ईसाई है। अन्य जातियो की तादाद बहुत थोडी है। आबादी का ज्यादातर हिस्सा द्राविड नस्ल का है और यहा द्राविड भाषाएँ ही बोली जाती है। करीब १,९०,००,००० आदमी तामिल बोलते है और १,८०,००,००० आदमी तैलगू। कुल आबादी मे से करीब ४० प्रतिशत मलयालम। इस प्रकार हम देखते हैं कि मद्रास प्रान्त मे न केवल बहुत सी भाषाएँ प्रचलित है, बल्कि वहा अनेक जातियाँ भी बसी हुई हैं। इस कारण प्रान्त मे तरह तरह की सामाजिक और आर्थिक समस्याएँ पैदा हो गई है। यहा दो भिन्न सस्कृतियो का सम्मिश्रण हुआ और उसके फलस्वरूप एक नई सस्कृति पैदा हुई। द्राविडो की प्राचीन सस्कृति ने आर्य-सस्कृति की बहुत-सी बातो को अपना लिया है, लेकिन उसमे अपनी विशेषताए काफी मात्रा मे मौजूद है। हम बिना किसी सकोच के यह कह सकते है कि सस्कृति के मामले मे मद्रास सारे हिन्दुस्तान का अगुआ है।

इस प्रान्त के लोग आम तौर पर हमेशा हुकूमत के वफादार रहे है। गोरखो के समान ही मद्रासियों ने अग्रेजी सरकार को मदद दी है, किन्तु मद्रासियो को हम दुनिया के नागरिक भी कह सकते हैं। उनमें प्रान्तीयता की सकुचित भावनाएँ नहीं पाई जाती। यही कारण है कि मद्रासी लोग दुनिया के हर हिस्से मे फैले हुए है। वे कही भी अपने-आपको अजनबी-सा महसूस नही करते तथा अपने को सभी प्रकार की परिस्थितियो के अनुकूल बना लेते है। वे पक्के व्यक्तिवादी होते है। भावना-प्रधान होने के बजाय वे बुद्धिवादी अधिक है। यह उनका बडा गुण है, क्योकि इसकी वजह से उनमे अपने विचारो और विश्वासो के लिए लडने की ताकत, हिम्मत और दृढता आती है। जब कभी राष्ट्र ने आजादी की लड़ाई शुरू की है, मद्रास ने उसमें काफी शानदार हिस्सा

लिया है। समय-समय पर उन्होने अंग्रेजी हुकूमत को काफी जोर का धक्का पहुचाया है।

काग्रेस के नेताओ की गिरफ्तारी की खबर पहुचते ही सारे मद्रास प्रात में तहलका मच गया। लोगो के दिल रोष से भर गये। लेकिन मद्रासी उतावले नही होते, अहिंसा के सिद्धान्त पर बडी दृढता के साथ वे टिके रहे। जगह-जगह हडतालें की गईं और जुलूस निकाले गए और जनता ने बडी हिम्मत के साथ शान्तिपूण तरीके से अपना विरोध प्रदर्शित किया। अवश्य ही कुछ जोशीले नौजवानो ने लूट और विध्वस क काम भी कई जगह कर डाले।

अन्य सूबो की तरह मद्रास मे भी नौकरशाही ने कठोर दमन-चक्र चलाया। **रामनद और देवकोट** मे निरपराध जनता पर नृशस अत्याचार किए गए। मलाबार की पुलिस ने इस दिशा में खूब नाम कमाया। शायद इसीलिए सूबे मे अनेक स्थानो पर आन्दोलन का दमन करने के लिए उसे भेजा गया।

आजाद खयालात के बहुत-से न्यायाधीशो ने पुलिस की ज्यादतियो की कठोर शब्दो में निन्दा की। चित्तूर के डिस्ट्रिक्ट तथा सेशनजज ने भारत-रक्षा नियम ५६ के मातहत जारी किया। मजिस्ट्रेट का हुक्म नाजायज करार दिया। इसी प्रकार हाईकोर्ट के जजो ने उन बहुत-से आदमियो को रिहा कर दिया जिनको स्थानीय अधिकारियो ने झूठ-मूठ गिरफ्तार कर लिया था। मदुरा के डिस्ट्रिक्ट जज ने १३ मार्च १९४३ को सिटी मजिस्ट्रेट के ८ महीने की सख्त सज़ा के हुक्म को रद्द करके श्री के० एस० सकरन को रिहा कर दिया। ऐसे और भी अनेक उदाहरण दिए जा सकते है। इनसे पता चलता है कि नौकर-शाही ने उन दिनो अपने अधिकारो का मनमाना दुरुपयोग किया। लेकिन आज़ादी की दीवानी जनता भला ऐसे जुल्मो से कभी दब सकती थी? बाव-जूद सब अत्याचारो के उसने हिम्मत न हारी और लगातार कई महीनो तक भी आजादी की बहादुराना लडाई को जारी रखा।

मद्रास प्रान्त को काग्रेस-विधान मे तीन भागो में विभाजित किया गया है। उसके अनुसार आन्ध्र, केरल और तामिलनाड अलग प्रान्त माने जाते है। सन् १९४२ के विद्रोह में इन प्रान्तो ने क्या हिस्सा लिया, इसका अलग-अलग विवरण आगे दिया जाता है।

आंध्र

आध्र के लोग स्वभाव से ही बडे स्वतत्रता-प्रिय और देश-भक्त है। यहाँ के किसानो के दिलो में अपनी मातृभूमि के प्रति विशेष अनुराग है। दूसरे आध्र के काग्रेसी कार्यकर्त्ता सगठन कार्य में बहुत कुशल है, उन्होने सारी जनता

को कांग्रेस तथा महात्मा गांधी की पुकार पर सब कुछ बलिदान कर देने को तैयार किया है। उन दिनो शत्रु के आक्रमण का खतरा भी आंध्र वालो के लिए कम न था। १९४२ की अप्रैल के शुरू मे ही कोकनाडा और विजगापट्टम जापानी बमबारी के शिकार बने। खतरे की उस घडी मे सरकारी अफसरो तथा राव बहादुरो और खाँ साहिबो का सारा मजमा जनता को अरक्षित और असहाय अवस्था मे छोडकर भाग खडा हुआ था। जनता ने उस समय यह साफ तौर पर महसूस किया कि केवल राष्ट्रीय सरकार ही शत्रु के आक्रमणो से अपनी रक्षा का इन्तजाम कर सकती है। इस कारण भी अगस्त-आन्दोलन सारे आंध्र प्रान्त मे बडे जोरो के साथ चला।

यू० पी० की हैलेट सरकार का तरह मद्रास की रूथरफोर्ड हुकूमत भी दमन की जबरदस्त हामी थी। वह आजादी की मॉंग करने वाले हिन्दुस्तानियो को कुचल डालना चाहती थी। सारे मद्रास मे भयकर दमन का बोल-बाला रहा, हालाकि सर टॉमस रूथरफोर्ड के बिहार चले जाने की वजह से वहाँ युक्तप्रान्त जैसे नृशस और पाशविक जुल्म शायद न हो सके। किंतु दमन अपना मकसद पूरा न कर सका। जनता का उत्साह और जोश दिन-पर-दिन बढता गया। किसानो, मजदूरो, विद्यार्थियो, महिलाओ आदि सभी ने देश की पुकार पर अपनी बहादुराना लडाई जारी रखी। आंध्र के वीर सपूतो और देवियो की साहस-भरी कहानी अगस्त सन् ४२ की अनेक अमर घटनाओ मे अपना खास स्थान रखती है। यद्यपि आंध्र मे डा० पट्टाभिसीतारामैया को छोड कर कोई चोटी का नेता नही है। किन्तु, जैसा कि पहले लिखा जा चुका है, आंध्र के कांग्रेस-कार्यकर्त्ता सगठन-शक्ति और आपसी सहयोग के लिए सारे देश में प्रसिद्ध है। गतूर जिले के निदवरोलू स्थान मे प्रो० रगा का 'समर स्कूल' है, जो हर साल कम-से-कम २०० उत्साही नौजवानो को देश की आजादी की लडाई के लिए मैदानेजग मे भेजता है। आंध्र मे किसानो का जबरदस्त सगठन है। यही कारण है कि बम्बई में देश के पूज्य नेताओ के गिरफ्तार होते ही आंध्र में वह विशाल तूफान उठा जिसने नौकरशाही को जड से हिला दिया। अनेक दिन तक, बल्कि यो कहिए, कई महीनो तक, जनता के उस जोशीले आन्दोलन की बदौलत सूबे के कई हिस्सो मे अग्रेजी सत्ता चूर-चूर होकर बिलकुल खत्म हो गई।

आंध्र मे विशाल जलूस निकाले गए, जगह-जगह आम सभाएँ हुईं और तरह-तरह के जोशीले प्रदर्शन हुए। किंतु जब समझाने-बुझाने के लिए कोई नेता बाहर नही रहा तो कुछ हिस्सो मे दमन का जवाब जनता ने हिंसात्मक

तरीको मे दिया। मि० चर्चिल यूरोप मे शत्रु के युद्ध-प्रयत्नो को तहस-नहस कर डालने को भडका रहे थे। जनता ने अपने देश के अन्दर ठीक वही काम शुरू कर दिया। फौजी भर्ती का विरोध किया गया, करबन्दी आन्दोलन चलाया गया और हुकूमत द्वारा लगाई पाबन्दियो को खुले रूप में तोडा गया। इसके अलावा टेलीग्राफ और टेलीफोन के तार काट डाले गए, रेलवे स्टेशनो को फूँक दिया गया, पटरियाँ उखाड डाली गई, तथा डाकखानो, आरामगृहो आदि में भी आग लगा दी गई। तीन महीनो की सरगर्मियो के बाद तोड-फोड की कार्रवाइयाँ धीमी पड गई। सन् १९४३ में पिकेटिंग का बोल-बाला रहा। खुशी की बात यह है कि कोई सरकारी अफसर या जनता का आदमी हिंसा का शिकार नही हुआ।

कोकनाडा, राजामुन्द्री, भीमावरम् आदि शहरो मे कई दिनो तक पुलिस राज्य रहा। गिरफ्तारियो तथा तमाम नागरिक अधिकारो के दमन का बोल-बाला रहा। बेजवाडा तथा अन्य कई स्थानो पर शान्ति कायम रखने तथा रेलवे लाइनो की रक्षा करने के लिए फौज बुला ली गई। सरकार ने नए नए आर्डिनेंस जारी किए तथा खास अदालते कायम की। भीमावरम सचमुच आंध्र का 'चीमूर' बन गया। ७० आदमियो पर सामूहिक हिंसा का अभियोग लगाया गया जिनमे १६ को फाँसी की सजा दी गई। लेकिन जुल्मो का प्रहार जनता की ताकत और भावनाओ को नही कुचल सका। अनेक होनहार सपूत देश के लिए अपने प्राणो पर खेल गए। ऐलोर के श्री डी० नारायण विराजू जेल के सख्त जीवन के फलस्वरूप अपना सारा स्वास्थ्य ही खो बैठे। रिहाई के समय वे बिलकुल मृत्यु-शय्या पर ही थे और हफ्ते भर के अन्दर ही ससार से चल बसे। २१ आदमी पुलिस की अधा-धुध गोलियो के शिकार हुए तथा १३७ व्यक्तियो के कोडे लगाए गए, जिनमे से कइयो को तो ४६ कोडो तक का प्रहार बर्दाश्त करना पड़ा। लोगो पर ९ लाख से ऊपर सामूहिक जुर्माना थोपा गया।

आन्ध्र मे तोड-फोड के काम व्यापक रूप में हुए। १७ से अधिक रेलवे स्टेशन फूक दिए गये। कई स्थानो पर रेल की पटरियाँ उखाड दी गई। किन्तु इससे किसी की जान का नुकसान नही हुआ। मद्रास और बेजवाडा के बीच करीब हफ्ते भर तक तथा नरसापुर और नीडदवोल के बीच करीब दस-बारह रोज तक गाडी बन्द रही। अकीड् और भीमावरम के बीच खुले तौर से करीब १ मील तक पटरी भी उखाड डाली गई थी। फौजी गाडियाँ भी गिराई गई। तार काटने का काम सभी जिलो मे करीब १५०० जगह हुआ। ऐलोर मे आम सभा मे पहले नोटिस देकर स्वय सेवको ने तार काटे। कई जगह डाक-

घर आरामगृह तथा पुलिस के रेकार्ड आदि फूंक दिए गए। भीमावरम् में सब-रजिस्ट्रार का दफ्तर, पुलिस लाइन, तथा डी० एस० पी० का दफ्तर जला दिया गया तथा तनकू में डिस्ट्रिक्ट मुन्सिफ कोर्ट के रेकार्ड जलाए गए। गतूर जिले के अगोल हालुके मे कनुपर्ती के नमक क्षेत्र पर हमला बोला गया। अनत में सरकारी कालिज की लेबोरेटरी मे आग लगा दी गई जिससे करीब ५००००) रु० का नुकसान हुआ।

आजादी के इस जग में आन्ध्र के विद्यार्थियो ने बडे उसाह के साथ हिस्सा लिया। करीब-करीब सभी कालेजो में मुकम्मिल हडताल रखी गई। कई जगह तो लगातार महीनो तक सस्थाए बन्द कर देनी पड़ी। १०० से ऊपर विद्यार्थियो ने कालेजो का हमेशा के लिए बहिष्कार कर दिया।

पश्चिमी गोदावरी और गतूर के जिलो मे आन्दोलन का जोर सबसे अधिक रहा। गतूर में प्रतिबन्धो के बावजूद हडताल, जुलूस और सभाओ का आयोजन किया गया तथा कचहरी, थाने आदि सरकारी इमारतो पर हमले किये गए। मुन्सफी, पुलिस-स्टेशन और तमाम सरकारी दफ्तरो पर जनता का कब्जा हो गया। १२ अगस्त को देहाती इलाके मे सरकारी हुकूमत का बिलकुल खातमा ही हो गया और वहाँ राष्ट्रीय सरकार कायम करने की कोशिशे की गई।

जनता के विशाल समूह ने बयात तालुक के सदर मुकाम और सबोर्डिनेट जज के दफ्तर पर कब्जा कर लिया, लेकिन जल्दी ही रिजर्व पुलिस बुला ली गई और उसने इन मुकामो को वापस छीन लिया।

आध्र यूनिवर्सिटी के पदवी दान-समारोह के मौके पर गवर्नर खुद गन्तूर आने वाले थे। इस सिलसिले में सावधानी के तौर पर पुलिस ने १० दिसम्बर की रात को ही जनता के खास-खास नेताओ को गिरफ्तार कर लिया था। लेकिन जनता की भावना इस प्रकार दबने वाली नही थी। उसने तिनवेली-गन्तूर रेलवे लाइन को कई जगह से उखाड डाला, जिससे गवर्नर को मजबूर होकर बेजवाडा गन्तूर लाइन से आना पडा। जगह-जगह काले झडे लगाए गए। स्टेशन पर यूनिवर्सिटी में भी काले झडो का प्रदर्शन किया गया। त्रावणकोर की महारानी को इस अवसर पर भाषण देने के लिए खास अनुरोध करके बुलाया गया था, लेकिन गवर्नर का जैसा स्वागत हुआ, उसको देखते हुए ऐन मौके पर महारानी का प्रोग्राम बदल दिया गया। इस चान्सलर ने ही महारानी का भाषण पढकर सुनाया। इससे नौजवानो मे भारी रोष फैल गया। गन्तूर की कुछ फौजी इमारतें तथा राष्ट्रीय युद्ध मोर्चे का कुछ

हिस्सा लोगो ने जलाकर खाक कर डाला। आन्ध्र के लोगो पर ५॥ लाख रुपए से भी ज्यादा सामूहिक जुर्माना थोपा गया। इसका तीन चौथाई हिस्सा अकेले गन्तूर जिले पर पड़ा।

पश्चिम गोदावरी के जिलो में ४५५ लोगो को गिरफ्तार किया गया। उनमें से १०० को तो रिहा कर दिया गया, ४५ नजरबन्द रहे तथा ३१० को सजाएँ मिली। कम्युनिस्टो की सख्या दण्डितो में २० तथा नजरबन्दो में ६ थी। दो व्यक्तियो ने जेल में और ४ ने जेल से बाहर अपने प्राणो की आहुति दी। २ फरार हो गए। करीब ४० मनुष्यो के बेंतें लगी जिनमें से कइयो को तो ४६ प्रहार तक सहने पडे। एक हरिजन विद्यार्थी कोडो की मार से बेहोश होकर गिर पडा। ८६५०) रु० व्यक्तिगत और २९४५००) रु० सामूहिक जुर्माना किया गया। ९ रेलवे स्टेशन, ५ सरकारी दफ्तर, १ शराब की भट्टी तथा १ जमींदार का थाना फूँक दिए गए।

ऐलोर में कई स्थानो पर खुले आम आज्ञ सरकुलर पढा गया। टेलीग्राफ और टेलीफोन के तार काट डाले गए, दफा १४४ और ५६ को बेधडक तोडा गया तथा फौज की हजार कोशिशो के बावजूद राष्ट्रीय झडा फहराया गया। भीमावरम् में रेवेन्यू डिवीजनल ऑफिस पर तिरगा लहराया गया और अफसर को झडे की सलामी देने तथा जनता के साथ आम जुलूस में शामिल होने को मजबूर किया गया।

नेताओ की गिरफ्तारी के खिलाफ प्रदर्शन करने के लिए देहातियो के एक मजमे ने रेवेन्यू डिवीजनल ऑफिस को घेर लिया और पुलिस की धमकियो के बावजूद वहाँ से हटने से इन्कार कर दिया। पुलिस ने गोलियाँ चलाईं और ४ होनहार सपूतो ने हँसते-हँसते अपने प्राणो की आहुति दे दी। बहुत से लोग घायल हो गए। जिस डाक्टर ने उनका इलाज करके अपना नैतिक फर्ज अदा करने की हिम्मत की, उस पर अदालत में मुकदमा चलाया गया।

अनेको कस्बो में मुकम्मिल हडताल रखी गई और विद्यार्थियो ने स्कूल कालेजो से मुँह मोड लिया। ऐलोर में हडतालियो को गिरफ्तार करके ५०) रु० हरेक पर जुर्माना किया गया। विद्यार्थियो ने जजीरें खीच-खीच कर गाडियो का चलना मुश्किल कर दिया, जिसके फल स्वरूप उन्हे बेंतो और जुर्माने की सजा भुगतनी पडी।

पलाकल म्यूनिसपैलिटी तथा डिस्ट्रिक्ट बोर्ड ने 'भारत छोडो' के समर्थन में प्रस्ताव पास किए। उनके खिलाफ नौकरशाही ने काफी सख्त कदम उठाए।

कवूर सव-जेल में ४ सत्यग्रहियो को बडी बेरहमी के साथ पीटा गया तथा एक अन्य सत्याग्रही पर जेल से बाहर लाठी के निर्दय प्रहार किए गए। करीब २ महीने तक पुलिस ने भीमावरम् तालुक के अनेक गाँवो पर हमले बोले और देहातियो के साथ पाशविक मार-पीट की।

आन्ध्र में १३० व्यक्ति नजरबन्द किये गए और १७०० को सजायें दी गई। तीन जगह गोली-काण्ड हुए, जिनमे २१ आदमी मरे। १३७ व्यक्तियो को कोडों की सजा दी गई। ८ लाख से अधिक रुपया सामूहिक जुर्माना किया गया। १५०० जगह तार काटे गये, १८ रेलवे स्टेशन जलाये गये और ७ जगह रेल की पटरियाँ उखाडी गई। १० जगह पुलिस के रेकार्ड और डाकखाने आदि जलाये गये।

: १० :

केरल भी पीछे न रहा

केरल प्रान्त मे मलावार जिला, कनाडा जिले का दक्षिणी भाग तथा कोचीन एव त्रावनकोर की रियासते—ये चार प्रदेश सम्मिलित है। केरल प्रान्त को श्री शकराचार्य जैसे ससार प्रसिद्ध धार्मिक तत्वज्ञ, श्री नारायण गुरु जैसे समाज-सुधारक तथा सर सी० सकरन नायर जैसे महान् राजनैतिक कार्य-कर्त्ता को जन्म देने का सौभाग्य प्राप्त है। यह प्रान्त सदा से ही राजनीतिक आन्दोलनो में आगे रहा है। सन् १९२१ के असहयोग और खिलाफत आन्दोलन के समय यहा छ महीने तक ब्रिटिश हुकूमत का प्रभाव नष्ट-प्राय हो गया था। मलावार के दक्षिणी जिले मे तो सरकारी शासन एकदम पगु वन गया था। मोपलो ने अपनी स्वतन्त्र सरकार कायम कर ली थी। यही कारण है कि जव सन् १९४२ मे आन्दोलन का विगुल वजा तो यहा के निवासियो ने प्राणो की वाजी लगाकर ब्रिटिश हुकूमत को उखाड फेंकने में सहयोग दिया।

वम्बई मे नेताओ की गिरफ्तारी के साथ ही इस प्रान्त के प्रसिद्ध काग्रेस कार्य-कर्त्ताओ पर भी सरकार का प्रहार हुआ और ६ घटे के अन्दर-अन्दर सर्व श्री केलप्पन, के माधव मेनन तथा के० ए० दामोदर मेनन आदि मुख्य-मुख्य नेता गिरफ्तार करके जेल के सीखचो में डाल दिये गये। नौकर शाही के इस प्रहार के विरुद्ध लोगो ने हडताल, जुलूस, सभा आदि के रूप में अपना विरोध प्रदर्शित किया। स्कूलो एव कालेजो मे काफी अर्से तक हडताल चलती रही स्थान-स्थान पर वडे-वडे प्रदर्शन किये गये। प्रत्येक मुख्य काग्रेस-कार्यकर्त्ता और विद्यार्थी नेता पहले १० दिन के अन्दर-अन्दर गिरफ्तार कर लिये गये।

वहुत से स्थानो पर हजारो की सख्या मे लोगो ने स्थानीय अदालतो और रजिस्ट्री आफिसो पर धावा वोला जिससे अधिकारियो को वाध्य होकर काम वन्द कर देना पडा। कुसम वाण्ड तालुका इस प्रकार प्रदर्शनो का प्रधान केन्द्र था। पयोली मे करीव एक हजार व्यापारियो की भीड ने मुन्सफी, पुलिस थाने तथा सव मजिस्ट्रेट के ऑफिस पर हमला किया और उन्हे वन्द करवा

दिया। इसके वाद भीड जाकोली गाँव की ओर बढी और वहाँ जाकर सभा के रूप मे परिणत हो गई। सभा की कार्रवाई समाप्त होने पर लोग घर जाने लगे तो पुलिस ने उन पर छापा मारा और १७ व्यक्तियो को गिरफ्तार कर लिया। इससे लोगो का उत्साह और भी बढ गया और उन्होने दूने जोश मे सभाए करना तथा जुलूस निकालना प्रारम्भ कर दिया। पुलिस ने बार-बार लाठी-चार्ज किया जिससे सैकडो व्यक्ति सख्त घायल हुए। लोगो ने सरकारी अदालतो पर पिकेटिंग की और उन्हे बन्द करवा दिया। उत्तरी मलाबार कोर्ट तालीचरी की सबोर्डीनेट जज की अदालत तथा पयोली, कालीकट, पालघाट आदि स्थानो की मुन्सफियाँ काफी समय तक बिलकुल बन्द रही तथा सरकारी शासन पगु बन गया।

चेमनचरी की छोटी अदालत पर हमला किया गया तथा उसकी इमारत को ताड-फोड दिया गया और सारा रेकार्ड जलाकर नष्ट कर दिया गया। कलाई के सरकारी लकडी के गोले मे आग लगा दी गई। जिससे हजारो रुपये का सामान जलकर भस्म हो गया। तालीचरी अदालत मे एक विस्फोट हुआ जिससे इमारत का कुछ हिस्सा नष्ट हो गया। कनोडा के सब-पोस्ट आफिस पर बम फेंका गया, जिससे मकान को काफी क्षति पहुँची और दिवालो के पत्थर ६३४ वर्ग गज मे फैल गये गवर्नमेन्ट हाई स्कूल का शेड, जिसमे कुछ क्लासे लगती थी, फूंक दिया गया। करीब आध मील तक के टेलीग्राम के तार बिलकुल नष्ट कर दिये गये जिससे तारो का आना-जाना कुछ समय तक बन्द रहा।

कोटायन मे पाच देहाती पटेल-आफिसो के रेकार्ड जला दिये गये। कुथुपरम्बा के पास एक छोटी अदालत का दफ्तर भी अग्नि देवता के भेंट चढा दिया गया। तालीचरी और माही के बीच मे एक रेलवे पुल बम से उडा दिया गया।

माही और नादपुरम् लाइन के रेलवे-स्टेशनो को जलाने का प्रयत्न किया गया तथा कुछ स्टेशनो के कागज-पत्र जला भी दिये गये। माही के मुकाली स्थान का नमक डिपो तोड-फोड कर नष्ट कर दिया गया। माही एव नादपुरम् सडक के एक रेलवे पुल पर विस्फोट हुआ जिससे उसकी दीवारो एव खम्भो को बहुत क्षति पहुँची। नादपुरम् की मुन्सफी मे भी बम फटा।

कालीकट और कलाई के बीच मे एक रेलवे पुल पर विस्फोट हुआ, किन्तु अधिक क्षति न हो सकी। २१ अगस्त की रात को यूरोपियन गोल्फ क्लब का मकान तथा कालीकट के पास मयारम्वा का मोटर-शेड जला दिये गये।

मन्चारी के पास एक सडक का पुल वम से उडा दिया गया। हाईकोक मेमोरियल मोपला विद्रोह स्मारक को जलाने की कोशिश की गई, जिससे काफी क्षति पहुँची।

उत्तरी मालावार के चिमननचेरी स्थान में जनता की भीड ने रेलवे स्टेशन एव सब रजिस्ट्री ग्राफिस पर हमला किया और उसे जलाकर भस्म कर दिया। मलावार के कई जिलो में टेलीग्राफ तथा टेलीफोन के तार काटने का काम तो रोजमर्रा की चीज वन गई थी। कनानोर के पास पल्लीकुन्नू स्थान पर विस्फोट हुग्रा जिससे वहाँ का डाकखाना विलकुल तहस-नहस हो गया। कुछ रेलवे स्टेशनो तथा पुलो को भी तोडा-फोडा गया।

एक दिन की वात है कि गवर्नर कानानोर कालीकट जा रहे थे। लोगो ने चम्वल स्थान के पास रास्ते में भयकर आग लगा दी जिससे गवर्नर की स्पेशल कार आगे न बढ पाई और उन्हे बाध्य होकर रात चम्वल में ही वितानी पडी। इसी प्रकार एक वार इरनाकुलम में गवर्नर का भाषण होने वाला था। सभा के लिए एक विशाल पण्डाल वनाया गया था। उत्तेजित जनता इसे सहन न कर सकी और गवर्नर के आने के कुछ मिनट पहले वह पण्डाल पर टूट पडी तथा उसमे चारो तरफ आग लगा दी। गवर्नर महोदय को निराश लौट जाना पडा।

पुलिस अवा-धुध लोगो को जेल में ठूंस रही थी। किन्तु सरकारी दमन से लोगो का उत्साह मद होने की अपेक्षा और भी वढ रहा था। यही कारण है कि दमन के वावजूद लोग नेताओ की जयतियो आदि उत्सव बडे समारोह से मनाते थे। १९४२ मे गाँधी-जयन्ती के दिन कालेजो, स्कूलो एव वाजारो मे इतनी जोर की हडताल रही कि चारो ओर विलकुल सुनसान छा गया। उस समय के वातावरण को देखकर यह अच्छी तरह से अनुमान लगाया जा सकता था कि जनता कितनी क्षुब्ध है। जव नेताओ की गिरफ्तारी की खवर पहुँची तो गणपति हाईस्कूल तथा दो कालेजो के विद्यार्थी वाहर आगये और अपने विद्यालयो के सामने प्रदर्शन करने लगे। शिक्षा-अधिकारियो के समझाने-बुझाने और पुलिस की लाठी-चार्ज की धमकियो का भी उन पर कोई असर नही हुआ।

कोलनगडे के विद्यार्थियो ने तो काफी वहादुरी का परिचय दिया। जव पुलिस वाले रिवाल्वर निकालकर खडे हो गये तो भी विद्यार्थी भयभीत न हुए, प्रत्युत उनमें से कुछ उत्साही एव जोशीले विद्यार्थी आगे आये और एक अहिंसक सिपाही की भाँति उन्होने अपने कुर्ते हाथो से फाडकर अपनी खुली छाती को रिवाल्वर के आगे कर दिया।

पुलिस के दमन की कहानी सुनकर बाईपुर की जनता उत्तेजित हो गई तथा उसने नदी मे खडे हुए कुछ मोटर बोटो एव देहाती नावो को जला दिया।

तालीचरी सेशन कोर्ट मे एक विस्फोट हुआ जिससे कोर्ट की इमारत को काफी क्षति पहुची।

फिरोक के कुछ व्यक्तियो ने रेलवे-पुल पर तीन बम रख दिये। गाडी की घडघडाहट से दो बम स्वत ही पटरी से नीचे गिर गये। तीसरा गाडी के नीचे आने से फटा, किंतु उससे कुछ नुकसान न हो सका।

सरकार का दमन-चक्र बडी उग्रता से चला। लोगो को पीटना, उनके घर जला देना, उनसे मनमाने पैसे वसूल करना, उनकी बहन-बेटियो को बेइज्जत करना, आदि तरह-तरह के अत्याचार हुए। लोगो ने सरकारी दमन का काफी अर्से तक मुकाबला किया, किंतु मुख्य-मुख्य कार्यकर्त्ताओ के जेल भेज दिये जाने से आन्दोलन का बाह्यरूप बहुत अशो तक धीमा पड गया। किंतु क्राति की आग लोगो के हृदयो मे अन्त तक धधकती रही।

एक ओर तो लोग सरकारी दमन की चक्की मे पिस रहे थे, तो दूसरी ओर अकाल अपनी भयावनी आखो से समूचे प्रदेश को घूरने लगा। बर्मा के पतन के साथ यहा की भोजन-समस्या विकट हो गई, क्योकि वहा से आने वाला चावल बन्द हो गया। लोग भूखो मरने लगे। सरकार ने लोगो की सहायता करने मे कुछ उपेक्षा दिखाई। किंतु काग्रेस-कार्यकर्त्ताओ ने ग्राम-सेवा-सघो का पुनरुद्धार किया, उन्होने अन्य प्रान्तो से भी अन्न प्राप्त करने की कोशिश की। किंतु सरकार का पूरा सहयोग न मिलने के कारण अन्न प्राप्त करने एव प्राप्त किये हुए अन्न को लाने मे पूरी सफलता नही मिल सकी। परिणामस्वरूप काफी लोग भूखो मरने लगे तथा काल के अनिवार्य साथी हैजे एव चेचक ने लोगो को धर दबाया। सरकारी विज्ञप्ति के अनुसार भूख एव बीमारी से करीब ४० हजार व्यक्तियो की जाने गईं।

मुख्य-मुख्य काग्रेस नेता जेलो में बन्द थे, अतएव सहायता-काय जितना हो सकता था उतना नही हो पाया। फिर भी अन्य प्रान्तो के कार्यकर्त्ताओ के सहयोग से 'कोलेरा रिलीफ कमेटी' स्थापित की गई। अखिल भारतीय हरिजन सेवक सघ के प्रधान श्री ठक्कर बापा एव श्रीमती कमलादेवी ने अकाल एव बीमारी से आक्रान्त प्रदेशो का निरीक्षण किया। उधर श्री के० बी० गोपाल मेनन तथा श्रीमती जी० सुशीला ने काग्रेस स्वय सेवको की सहायता से उपचार का कार्य प्रारम्भ किया। कमेटी की ओर से विभिन्न स्थानो पर १२०

सहायता-केन्द्र स्थापित किये गये । इन केन्द्रो में कुल मिलाकर १२,१९२ मरीजो का इलाज हुआ, जिसमें ९,४१२ व्यक्ति ठीक हुए । महामारी एव अकाल के कारण बहुत से घर बरबाद हो गये, जिससे छोटे-छोटे अनाथ बच्चे सडको पर घूमने लगे । ग्राम-सेवा-सघ ने इनकी रक्षा का भार अपने हाथो में लिया और भारत सेवक समिति के स्वर्गीय श्रीयत वी० आर० नैयर की सहायता एव सहयोग से कई स्थानो पर अनाथालय खोले । आज भी उस प्रदेश में चार अनाथालय काम कर रहे है ।

सहायता कार्य के साथ-साथ कमेटी ने रचनात्मक कार्यक्रम को भी पूरे तौर से अपनाया । उसने 'देशीय महिला समाज' की सहायता से २० स्थानो पर कताई के केन्द्र स्थापित किये । इसी प्रकार दूसरे कार्य भी प्रारम्भ हुए । पर सरकार इन रचनात्मक कार्यों को भी सहन न कर सकी । उसने ग्राम-सेवा-सघ के मुख्य-मुख्य स्वयसेवक गिरफ्तार करके नजरबन्द कर दिये गये, सघ के दफ्तरो पर से झडे एव साइनबोर्ड जब्त कर लिये गये तथा सघ की बैठक को गैरकानूनी घोषित कर दिया गया । इतना ही नही, सघ के प्राय सभी दफ्तरो की तलाशिया ली गई और खास-खास कागज जब्त कर लिये गये ।

अकाल एव महामारी के बावजूद भी लोग लगातार सभाए करते रहे । सरकारी पाबन्दी को तोडकर लोगो ने कालाकट एव वदगडा में विशाल सभाए की । पुलिस ने लाठी-चार्ज किया, पर लोग कार्रवाई खत्म करके ही हटे । गाधीजी ने जब जेल मे उपवास किया तो यहा के कुछ स्वय सेवक पैदल पूना की ओर चल पडे । थोडी दूर जाने के बाद ही पुलिस ने उन्हे गिरफ्तार कर लिया और जेल के सीकचो मे बन्द कर दिया ।

शात एव अहिंसक प्रदर्शनो पर अधा-धुध लाठी-चार्ज किये गये । तोड-फोड के कामो मे भाग लेने वाले व्यक्तियो का पता लगाने मे बडी सख्ती एव बर्बरता से काम लिया गया । निर्दोष व्यक्ति बिना वारण्ट के गिरफ्तार कर लिये जाते थे तथा जेल मे उनके साथ बडा अनुचित व्यवहार किया जाता जाता था । प्रधान नेताओ को भी खाने, पीने, पहनने, सोने आदि की पूरी सुविधाये नही थी, फिर बेचारे छोटे कार्य-कर्त्ताओ का तो जिक्र ही क्या ? पुलिस वाले अपनी इच्छानुसार रात को लोगो के घरो मे घुस जाते थे और उनकी तलाशी लेते थे । इस प्रान्त की पुलिस झूठे केस बनाकर निर्दोष लोगो को फाँसने के निंदनीय कार्य मे भी पीछे न रही । नारायनन् के मुख्य काग्रेस नेताओ एव कार्यकर्त्ताओ को पुलिसवालो ने तालीचरी षड्यन्त्र केस मे फँसा लिया । उन पर उत्तरी मलाबार के तोड-फोड के कामो का अभियोग लगाया गया ।

परिणाम स्वरूप बालन नामक व्यक्ति को १० वर्ष की तथा ५ अन्य व्यक्तियो को ७-७ वर्ष की सजाए हुई। इसी प्रकार डाक्टर के० वी० मेनन आदि को कम्युनिस्टो की सहायता से कीझारियर बम केस फँसाया गया। फलत डाक्टर महोदय एव उनके १०-१५ साथियो को ७ से १० वर्ष तक की सख्त सजाये दी गई। केरल प्रान्त की जनता को इस आन्दोलन मे दो पार्टियो के विरुद्ध लडना पडा—एक अग्रेजी सरकार और दूसरी कम्युनिस्ट पार्टी। कम्युनिस्टो ने अपने 'जन-युद्ध' नारे के साथ राष्ट्रीय आन्दोलन-कर्ताओ के विरुद्ध हरेक सम्भव तरीके से पुलिस की मदद की। तालीचरी की घटना है कि वहाँ के हाई स्कूल में हेड मास्टर ने एक विद्यार्थी को 'महात्मा गाधी की जय' का नारा लगाने के अपराध में जूते से पीटा। विद्यार्थियो ने इसके विरोध मे हडताल कर दी। कम्युनिस्टो ने विद्यार्थियो का पक्ष लेने के बजाय अधिकारियो की सहायता की।

इस प्रकार सरकार ने इस आन्दोलन के सिलसिले में ७३० व्यक्तियो को विभिन्न प्रकार की सजाएँ दी तथा ३३ को नजरबन्द रखा। देश की आजादी की लडाई मे शहीद होने का सर्व प्रथम सौभाग्य श्री नवीनचन्द ईश्वरलाल सराफ को प्राप्त हुआ। यह १९ वर्षीय छात्र था और कालीकट के जमोरिन कालेज की इटरमीजियेट कक्षा में अध्ययन कर रहा था। वह विद्यार्थियो का नेतृत्व कर रहा था। अत इस पर केस चला और उसे ७५) रु० जुर्माना या तीन महीना कैद की सजा दी गई। लडके की गरीब माता जैसे-तैसे रुपये जुटाकर अदालत मे पहुँची, परन्तु वीर लडके ने जुर्माना देकर छूटने के बजाय जेल जाना अधिक ठीक समझा। उसने कहा, 'माँ, यदि तुम जुर्माना अदा करोगी तो मुझे जिन्दा न पाओगी।' जुर्माना अदा न करने के कारण लडके को ३ माह के लिए अलीपुरम् जेल मे भेज दिया गया। जेल मे अस्वच्छ भोजन एव रहने सहने आदि की तकलीफ के कारण कुछ ही दिनो के बाद वह बीमार पड गया। डाक्टरो ने उसके इलाज में लापरवाही दिखाई। और एक महीने की बीमारी के बाद यह रिपोर्ट दी कि उसे मलेरिया नही, टाइफाइड है। जब उसकी हालत बहुत ही शोचनीय हो गई और अधिकारियो को बदियो और बाहर वालो ने काफी दबाया तो अन्त मे मेडिकल अफसर ने उसे बेलारी हैडक्वार्टर के अस्पताल में भेज दिया। दुर्भाग्य से वहाँ पर भी उसका ठीक उपचार नही हुआ और इस प्रकार छूटने की अवधि के चार दिन पूर्व—३१ दिसम्बर १९४२ को वह वीर अपनी बूढी माँ एव भारत-माता को बिलखती हुई छोड बन्दी की हालत में ही इस ससार से विदा होगया। आज नवीन इस ससार मे नही है, किन्तु उसका बलिदान सदियो तक

देश के बच्चो में अपनी मातृ-भूमि की आन के लिए प्राय-न्योछावर करने की पवित्र भावना जाग्रत करता रहेगा।

इसी प्रकार श्री कोम्बीकुट्टी मेनन तथा कुन्शीरमन ने भी जेल में ही तिल-तिलकर कपने प्राण गवा दिये, किन्तु मातृभूमि की आन पर किसी प्रकार का धब्बा नही आने दिया। केरल प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के भूतपूर्व सभापति सर आई० एस० प्रभू भी जेल में बडे बीमार रहे। जब वे स्वास्थ्य की खराबी के कारण छोडे गये ता बिलकुल अस्थि-पञ्जर बने हुए थे। छूटने के कुछ ही दिन बाद उनकी मृत्यु हो गई। प्रसिद्ध कांग्रेस कार्यकर्त्ता सर पी० के० कुन्शीशकर मेनन की मृत्यु भी इसी प्रकार हुई।

त्रावणकोर की सरकार ने शुरू से ही बडी सख्ती से काम लिया। अभी तक जो रिपोर्ट मिल सकी है उसके अनुसार यहाँ पर कुल एक सौ व्यक्तियो को विभिन्न समय के लिए जेल हुई।

कोचीन रियासत की जनता ने भी बडी दृढता के साथ 'भारत छोडो' प्रस्ताव का समर्थन किया। त्रिपुर एव एरना कुलम (कोचीन) के विद्यार्थियो ने उल्लेखनीय भाग लिया। पुलिस ने भी यहाँ खूब जोरो से दमन किया। उसने छात्राओ तक को स्कूल के अदर घुसकर पीटा। इस इलाके में कुल १५ व्यक्तियो को जेल की सजा हुई।

तामिलनाड

तामिलनाड के निवासियो की प्रकृति आन्ध्र निवासियो की प्रकृति से बिलकुल भिन्न है। उनकी बुद्धि तीव्र है। वे प्रत्येक वस्तु को तर्क की कसौटी पर कसकर ग्रहण करते हैं। तामिलनाड की सस्कृति उच्च कोटि की है तथा उनका अतीत बहुत उज्ज्वल है। तामिलनाड के निवासी एक प्रधान नेता के पीछे जीवन देने वाले है। महात्मा गान्धी के प्रति विशेष श्रद्धा होने के कारण रचनात्मक कार्य-क्रम की ओर इनका खास झुकाव है। एक सच्चे राष्ट्रीय सैनिक का भाति यहा के निवासियो ने सदा से ही देश की आजादी की लडाई में हिस्सा बटाया है। तामिलनाडो अपनी शक्ति को एक स्थान पर केन्द्रित करके आगे बढते है' अतएव १९४२ में अन्य स्थानो की अपेक्षा यहाँ आन्दोलन अधिक सफल रहा। मद्रास, तजोर, त्रिचनापल्ली, कुम्बाकनम एव मदुरा आदि कई स्थानो पर आन्दोलन की गति बहुत तीव्र एव सुव्यवस्थित रही। आन्दोलन का रूप पूर्ण रूप से अहिंसक रहा।

नेताओ की गिरफ्तारी का समाचार पाकर तामिलनाडी तिलमिला

उठे । ९ अगस्त से समूचे प्रान्त में आम हडताल प्रारम्भ हो गई । स्थान-स्थान पर विशाल जुलूस निकाले गये, बडी-बडी सभाये की गई तथा अन्य तरीको से विरोध प्रदर्शित किया गया । कई स्थानो पर शातिपूर्ण प्रदर्शनो पर पुलिस ने लाठी-चार्ज किया तथा अश्रु गैस छोडी । किन्तु लोगो का साहस कम नही हुआ । इस प्रकार समूचे तामिलनाड मे अग्रेज विरोधी लहर प्रवाहित हो उठी ।

अन्य प्रान्तो की भाँति तामिलनाड के विद्यार्थियो ने भी आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया । लाठी खाने या गिरफ्तार होने मे सबसे आगे विद्यार्थी ही थे । विद्यार्थियो ने तोड-फोड के कार्यों में भी भाग लिया, किन्तु अधिकाश मे उनके कार्य महात्मा गाधीजी की नीति के अनुसार थे । नेताओ की गिरफ्तारी की सूचना पाते ही मद्रास के सभी विद्यार्थी विद्यालयो से बाहर निकल आये । मेडिकल एव इजीनियरिंग कालेजो तथा अन्य कालेजो के होस्टलो पर झण्डे फहराये गये । एक दो होस्टलो के अधिकारियो ने जबरन झण्डे उतार लिये । विद्यार्थी इस अपमान को सहन न कर सके । वे होस्टल छोडकर बाहर निकल आये । स्कूलो मे करीब एक-डेढ सप्ताह हडताल रही । विद्यार्थियो के जुलूसो पर बुरी तरह से लाठी-चार्ज किये गये तथा २ सितम्बर को लोयल्ला कालेज के दो विद्यार्थियो को बैंतो एव कोडो से भी पीटा गया । एक इजीनियरिंग कालेज के विद्यार्थी, जिन्होने अभी तक हडताल मे भाग नही लिया था, इस घटना से उत्तेजित होकर आन्दोलन की आग मे कूद पडे । जब लाठी-चार्ज से सरकार को सफलता न मिली तो उसने एक हिदायत जारी की कि अमुक तारीख तक जो विद्यार्थी अपनी कक्षाओ मे हाजिर न होगे उनका नाम काट दिया जायेगा । किन्तु एक भी विद्यार्थी स्कूल मे उपस्थित न हुआ । परिणाम-स्वरूप अधिकारियो को कुछ समय के लिए स्कूल एव कालेज बन्द कर देने पडे । आन्दोलन मे भाग लेने के कारण विद्यार्थी गिरफ्तार करके जेल के सीखचो मे बन्द किये गये ।

तामिलनाड के मजदूर भी देश की आजादी की इस लडाई में पीछे न रहे । हजारो मजदूरो ने भी आन्दोलन मे सक्रिय भाग लिया मद्रास मिल्स हडताल के कारण बन्द कर देनी पडी । इसी प्रकार बकिंघम कर्नाटिक मिल्स, जो विदेशियो के हाथ मे थी तथा जिसमे युद्ध के लिये खाकी कपडा तैयार होता था, काफी अर्से तक बन्द रही । इससे सरकार के युद्ध-प्रयास मे काफी क्षति पहुँची ।

प्रान्त की अन्य औद्योगिक मिलो एव फैक्टरियो मे भी काफी अर्से तक हडतालें चलती रही । कोयम्बटूर ऐसी हडतालो का प्रधान अड्डा था ।

रेलवे कर्मचारियो ने भी हड़ताल मे भाग लिया। जिससे बहुत-सी 'थ्रू' गाडियाँ बन्द होगईं। मद्रास से कलकत्ता जाने वाली गाडी करीब २ सप्ताह तक बन्द रही। बेजवाडा के पास हडताल करने वालो ने "गैङ्गमैनो" की सहायता से लगभग २० मील की पटरी बिलकुल उखाड कर फेंक दी।

जिलों में आन्दोलन

त्रिची जिला—इस जिले में दो स्थानो पर रेल-गाडिया गिराई गईं—एक त्रिची-इरोड लाइन पर करूर के पास तथा दूसरी त्रिची मदुरा लाइन पर त्रिची स्टेशन से थोडी दूर। रेल के स्लीपरो तथा पटरियो को हटाने का कार्य तो बहुत स्थानो पर और काफी अर्से तक हुआ। तोड-फोड के इन कार्यो को रोकने के लिए मद्रास से जाने वाली प्रत्येक गाडी मे दो डिब्बे सशस्त्र सिपाहियो से भरे हुए जाते थे। यही नही, स्थानीय सरकार ने गाँवो के अफसरो को यह हिदायत दे दी थी कि वे रात-दिन गाँव वालो को रेल की पटरियो की निगरानी रखने के लिए तैनात रखे। मनीयाची जकशन से जाने वाली सब ब्राच लाइनें उखाड दी गईं। अधिकारी गाँव वालो को पकड पकड कर पहरा देने के लिए तैनात करते, किन्तु इससे कुछ लाभ नही हुआ। आखिर १०० पजाबी सैनिको को घटनास्थल पर तैनात किया गया, तब तोड-फोड का काम रुका। मन्नारगुडी स्टेशन पर जनता की एक भीड ने हमला किया और उसमें आग लगा दी। जब स्टेशन जल रहा था तो निदमगलम् से एक गाडी वहा पहुँची। भीड ने गाडी को घेर लिया और अधिकारियो को गाडी वापस निदमगलम् लेजाने के लिये बाध्य किया।

रामनद जिला—तिरूवदनी इस जिले का सदर मुकाम है। अतएव जिले के लोगो ने यह निश्चय किया कि तिरूवदनी की ओर प्रस्थान किया जाय और रास्ते में अंग्रेजी सरकार का जो भी चिह्न दिखाई दे उसे या तो नष्ट कर दिया जाय या अपने अधिकार मे कर लिया जाय। लोगो ने पुलिस सब-इन्स्पेक्टर के पास भी हुक्म भेजा कि जनता का राज्य कायम होचुका है, अत उसे जनता के सामने आत्म-समर्पण कर देना चाहिए। इन्सपेक्टर लोगो के उत्साह को जानता था। इसलिए उसने समझ लिया कि लोगो की माँग का विरोध करना खतरे से खाली नहीं। परिणाम स्वरूप उसने अपने सब कर्मचारियो को आज्ञा दे दी कि सरकारी वर्दी उतार कर फेंक दें और किसी सुरक्षित स्थान में जाकर छिप जाय। सबने वैसा ही किया। परिणाम स्वरूप पुलिस स्टेशन बिलकुल खाली हो गया और लोगो को उस पर अधिकार करने में कुछ भी अड़चनें न हुईं। लोगो ने थाने की सब चीजे अपने अधिकार में कर ली, सब

जेल तोडकर कैदियो को बाहर निकाल लिया तथा बाद में तमाम सरकारी दफ्तरो मे आग लगा दी।

इस घटना से लोगो का उत्साह बढ गया और वे बडे जोश के साथ तोड-फोड के कामो में जुट गये। यातायात के सब साधन नष्ट कर दिये गये। सडकें तोड डाली गईं। सयोगवश एक ब्राच रोड तोडने से बच गई। फौज वाले उस रोड से काफी मात्रा में शहर के अन्दर आ धमके। पुलिस वाले जो अब तक डर के मारे छिप गये थे, फौज की सहायता पाकर मैदान मे आ खडे हुए। फौज एव पुलिस वालो ने लोगो पर अधाधुध अत्याचार किये। स्त्रियो के साथ बलात्कार किया गया, लोगो के घर लूट लिये गये तथा गाँव के गॉव जलाकर नष्ट कर दिये गये। लोग अधा-धुध जेल के अन्दर ठूँस दिये गये तथा उनको बुरी तरह से पीटा गया।

कोयम्बटूर जिला—इस जिले के लोग पुलिस की ज्यादतियो का हाल सुनकर उत्तेजित हो उठे और उन्होने चहरँ के एक प्रसिद्ध हवाई अड्डे को जलाकर नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। पुलिस एव फौज काफी सख्या मे घटना-स्थल पर पहुँच गई और आस-पास के २२ गाँवो को खतरे का स्थान घोषित कर बाहर वालो को अन्दर नही घुसने दिया। इस प्रकार चारो ओर से रास्ता रोककर मलाबार की स्पेशल पुलिस ने तरह-तरह के अत्याचार किये। गावो के तमाम पुरुषो को गिरफ्तार करके एक अत्यन्त तग स्थान मे बन्द कर दिया, जहा पर कि लोगो को एक दूसरे से बिलकुल चिपककर खडा रहना पडा। इस दर्दनाक स्थिति मे लोगो को एक सप्ताह से ज्यादा वक्त न बिताना पडा। बन्दियो के भोजन का प्रबन्ध सरकार ने स्वय करने के बजाय उनके घर वालो से करवाया वदियो का बाहर से आया हुआ भोजन तक चुरा लिया जाता था। सम्पन्न घरो को रात मे हमला करके लूटा गया। जिस स्थान पर लोगो को बन्दी बनाकर रखा गया था, वह मजिस्ट्रेट के कैम्प के सामने ३९-४० गज की दूरी पर ही था। किन्तु अपनी आँखो के सामने लोगो पर अत्याचार होते देखकर भी कानून के उस ठेकेदार ने कुछ कार्रवाई नही की।

तजौर जिला—१४ अगस्त १९४२ को मद्रास सरकार द्वारा प्रकाशित एक प्रेस नोट के अनुसार १३ अगस्त को इस जिले के तीरूवाडी स्थान पर जनता की एक बडी भीड ने डिस्ट्रिक्ट मुन्सिफ-कोर्ट तथा सब-रजिस्ट्रार आफिस पर धावा किया और तिजोरियाँ तोडकर सब रुपये-पैसे लूट लिये। उसने दूसरे आफिसो मे भी तोड-फोड़ की तथा कुछ जरूरी कागजात जला दिये।

आन्दोलन के तूफानी केन्द्र

कोयम्बटूर—कोयम्बटूर का इलाका अपने उद्योग और व्यवसायो की बदौलत 'मद्रास प्रान्त का अहमदाबाद' कहलाता है। यहाँ करीब ४० मिलें, कई बडे-बडे आटोमोबाइल वर्कशाप, दो टैकनिकल इन्स्टीटयूट तथा एक इजीनियरिंग कालेज हैं। ६ अगस्त को सारे शहर मे मुकम्मिल हडताल रही और एक विराट सभा का आयोजन किया गया। पोदनूर से सिंगनालूर जाती हुई एक मालगाडी गिरा दी गई जिसमें गोला-बारूद भरा हुआ था। कोयम्बटूर के फौजी हवाई अड्डे को फूंककर राख कर दिया गया। अनेक शराब की दुकानें जला दी गईं तथा कचहरियो पर पिकेटिंग का जोर रहा।

मद्रास—देशप्रिय नेताओ की गिरफ्तारी की सनसनीखेज़ खबर सारे मद्रास शहर में बिजली की तरह दौड गई। मुकम्मिल हडताल के अलावा लम्बे-लम्बे जुलूस निकले, जिसमें विद्यार्थी और मजदूर भारी तादाद मे शरीक हुए। ११ अगस्त को चेतपुर में कॉलेज के विद्यार्थियो के जुलूस पर लाठी-चार्ज किया गया, जिसमें कई नौजवानो के चोटें आई। उत्तेजित भीड ने ईंट और पत्थरो से एक सब इन्स्पेक्टर तथा ४ कान्स्टेबलो की मरम्मत कर डाली। १२ ता० को टेक्नोलोजी स्कूल के जुलूस पर भी ब्रोडवे में लाठी-चार्ज किया गया। जनता ने रेलवे स्टेशनो पर हमला बोल दिया, तार काट डाले, रेकार्ड जला दिए, पटरियाँ उखाड दी तथा स्टेशनो को फूंक दिया।

मदुरा—आर्य सस्कृति के पुराने केन्द्र में जगह-जगह जुलूस और प्रदर्शनो का बोल-बाला रहा। ११ ता० को जिला मजिस्ट्रेट की मौजूदगी में आन्दोलनकारियो की पुलिस से मुठभेड हो गई, जिसमे ३ व्यक्ति धराशायी हो गए, १२ सख्त घायल हुए तथा २२ के हल्की चोटें आईं।

कुम्बकोनम—१६ अगस्त को सुबह ७ बजे करीब १०००० की भीड ने विराट् जुलूस निकाल कर दफा १४४ को खुले तौर पर तोडा। उत्तेजित भीड ने ईंट-पत्थर फेंके, जिससे कुछ जिला एव पुलिस अधिकारियो के चोटें आईं। लाठी-चार्ज तथा गोलियो के १६ राउण्ड दागे जाने पर भी जनता टस-से-मस न हुई।

विध्वंस के अन्य कार्य—सूबे में कम-से-कम १०० जगहो पर रेलवे-स्टेशनो और पुलिस-स्टेशनो को फूंका गया। जगह-जगह पटरियाँ उखाडी गईं तथा टेलीग्राफ और टेलीफोन के तार काटे गए। मलाबार-कोचीन एक्सप्रेस को तिरपुर में पूरे हफ्ते भर तक पडे रहना पड़ा। कोयम्बटूर से करीब

९ मील दूर एक घाटी मे फौजी कैम्प को गहरा नुकसान पहुँचाया गया। लोगो की भीड पहाडी पर जमा हो गई और पत्थरो की वर्षा करने लगी। २०० टैक जलकर बरबाद हो गए तथा और भी काफी सामान नष्ट कर दिया गया। फौज ने भी २०-३० मनुष्यो को गोली का शिकार बनाया। देहाती इलाको में भी सामूहिक रूप से विध्वस और विनाश के काम किये गए। कोयम्बटूर से करीब २० मील की दूरी पर सभी सरकारी दफ्तर फूंक दिए गए। रामनद मे स्टेशन जलाए गए तथा पटरियाँ उखाडी गईं। दिसम्बर के महीने मे कचहरी के अन्दर बमो का विस्फोट होते-होते बचा। ऐसे ही एक रोज मद्रास हाईकोर्ट के गालियारे मे भी एक बम ऐन मौके पर फटने से बचा।

दमन—सरकारी और रेलवे की जायदाद को नुकसान पहुँचाने के अपराध मे मनागगट्टी गॉव पर ५०,०००)रु०, त्रिवेली (जि० तजौर) २० ०००) रु०, करायकुमी ५०,०००) रु० और पुलकुरीची (जि० रामनद) पर ५०००) रु० सामूहिक जुर्माना किया गया। दफा १४४ तथा भारत रक्षा नियम ५६ और ३९ का पुलिस ने जिस मनमाने ढग से इस्तेमाल किया उसकी हाई कोर्ट जजो तथा सेशन जजो ने बडी सख्त आलोचना की। छोटे-छोटे अपराधो के लिए बूढो बालको और स्त्रियो तक के साथ भयकर मार-पीट की गई। गाधी-जयन्ती का कार्यक्रम रोक देने के लिए झूठ-मूठ हवाई हमले की खतरे की घटी का भी इस्तेमाल किया गया।

मदुरा मे कर्फ्यू तोडने वाले अनेक व्यक्तियो को एक दम गोली से उडा दिया गया। एक आदमी जो अपनी बीमार पत्नी के लिए दवा लेने किसी डाक्टर के यहाँ जा रहा था गोली का शिकार हो गया। इस समाचार को सुनकर बीमार पत्नी भी चल बसी।

देवकोटा-काण्ड—नौकरशाही से देवकोटा में जो जुल्म ढाये वे रोंगटे खडे करने वाले है। हिन्दुस्तान के बिलकुल दक्षिणी किनारे पर स्थित इस कस्बे में तथा आस-पास के देहातो में पूरे अगस्त और सितम्बर के महीनो मे मार-पीट, लूट, स्त्रियो के अपमान आदि अत्याचारो का बाजार गर्म रहा। मलाबार पुलिस और ब्रिटिश फौज ने लोगो की जिन्दगी दुश्वार बना दी। खद्दर पहनना तक भारी जुर्म समझा जाने लगा तथा प्रतिष्ठित घराने के भले व्यक्तियो को भी तरह-तरह के अपशब्द सुनने पडे और मार-पीट तक सहनी पडी। बहुत से नौजवानो को हवालात मे भी सख्त वेदनाए भुगतनी पडी। कइयो के तो नाखून भी उखाड डाले गये।

मशहूर सरस्वती पुस्तकालय का सारा सामान पुलिस लूट कर ले गई।

कुछ गुडो के साथ वे एक शादी के उत्सव में जा घुसे। दूल्हे के साथ मार-पीट की और रग मे भग कर डाला। वचारा, भोली-भाली ग्रामीण जनता सब कुछ छोड-छाड कर जगलो मे भाग जाने को मजबूर हुई।

जुल्म और अत्याचारो के जो बयानात मिले हैं उन्हे सुनकर कोई भी इन्सान अपने-आपको काबू में नही रख सकता। दिन-दहाडे स्त्री जाति का भयकर अपमान किया गया। २५ अगस्त को आवीकयल मे श्री कायव मुदालियर की धर्मपत्नी का पुलिस ने घोर अपमान करने का घोर पाप किया। २६ अगस्त को जब श्री गोपाल केशवन तलाश न किये जा सके, तो उनकी असहाय स्त्री को खौफनाक यातनाओ का शिकार बनाया गया। १३ सितम्बर को विलकतूर गाव मे श्री मुलीरुल्लेपा सरवई की स्त्री तथा ३ अन्य औरतो को बस में बैठाकर सब-जेल ले आये। उन्हे नग्न अवस्था मे पेड से जकड दिया गया और ४ गोरे सार्जेन्टो ने तथा पुलिस मैनो ने वह निर्लज्ज और वहशियाना काण्ड रचा कि वेचारी असहाय महिलाओ ने अपने सिर पेड से दे मारे और नौकरशाही को अभिशाप देती हुई इस दुनिया से चल बसी। उनके शव के साथ भी न जाने क्या-क्या किया गया? अगले ही रोज श्री मुथीरुल्लेपा सरवई भी जिनकी उम्र ५५ साल थी, पुलिस की गोली के शिकार बना दिये गए। और भी अनेक निरपराध लोगो के मकान जला कर खाक कर दिये गए। १५ सितम्बर को श्री नगादी नायक सताये गए और आखिर में कत्ल कर दिये गए।

२९ अगस्त को थिरुकदनाय में श्री रामास्वामी सरवई का मकान फूंक दिया गया और उनके वहा न मिलने पर उनके दोनो लडको को गिरफ्तार कर लिया गया। इसी प्रकार और भी कई व्यक्तियो के मकान और धान के भडार जलाकर नष्ट कर दिये गए। वेनीयर गाव के लोगो को भी ऐसी ही विपत्तियो का सामना करना पडा। धान के तीन सौ बोरे लूट लिये गये तथा बाकी के अग्नि देवता के भेंट चढा दिये गए। एक व्यक्ति के खेत, जो इस समय वर्मा मे था, लूट लिये गए तथा जला दिये गए। उसके पशु भी गोली के शिकार हुए। गाव की पाच स्त्रियो के साथ बलात्कार किया गया। अथनगुडी स्थान पर तीन व्यक्तियो को पुलिस वालो ने हाथ-पाँव बाध कर जूतो से खूब पीटा तथा उनके मुह में जबरन पेशाब किया। कवायूकुडी मोनाई आदि कई गावो के प्राय घर और धान के भण्डार या तो लूट लिये गये या जला दिये गए। कराईकुडी पुलिस स्टेशन पर प्रति दिन सैकडो व्यक्ति गिरफ्तार करके लाये जाते थे तथा उन्हें बुरी तरह तकलीफ दी जाती थी। देवकोटा शहर में एक मोहल्ले के व्यक्तियो को जबरदस्ती उनके घरो से निकाल कर बाहर कर दिया गया।

बेचारो को कुछ भी सामान साथ नही ले जाने दिया गया । उन्हे कितनी मुसीबतें सहनी पड़ी होगी इसका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है ।

मदुरा की पुलिस ने सत्याग्रहियो को तकलीफ देने का एक नया राक्षसी तरीका निकाला । वह सत्याग्रहियो को गिरफ्तार करके शहर से मीलो बाहर जगल में ले जाती थी । वहा उनके शरीर में निर्दयतापूर्वक गरमी बढाई जाती थी तथा बेहोशी की हालत में उनके तमाम कपडे जला कर उन्हे बिलकुल नगा करके छोड दिया जाता था ।

: ११ :

उड़ीसा प्रान्त

उडीसा १ अप्रैल सन् १९३६ से एक पृथक् प्रान्त वनाया गया है। यह नवीन प्रान्त उन भागो के मिश्रण से बना है जहा पर उडिया भाषी लोग वहुतायत से रहते है। उडिया लोगो मे देशभक्ति की भावना विशेष रूप से पाई जाती है। इनका अपनी सस्कृति एव भाषा के प्रति विशेष अनुराग है। अतएव जब कभी भी उडिया भाषी प्रदेश को बाटने का प्रयत्न किया गया है तो उडिया लोगो ने उसका तीव्र विरोध किया है। उनका कहना है कि आजकल उडीसा कहलाने वाले प्रदेश मे उनके पूर्वजो का महाभारत-काल में उत्कल साम्राज्य के नाम से एक विस्तृत राज्य कायम था।

उडिया लोगो में आन्ध्र-निवासियो की तमाम खूबिया तथा बगालियो की सारी कमिया एक साथ पाई जाती है। इस प्रकार उनमें दो परस्पर विरोधी सास्कृतिक भावनाओ का मिश्रण हुआ है, जिसका प्रान्त के और विशेष कर बालासोर के उत्तरी जिलो तथा गजम के दक्षिणी जिलो के राजनैतिक एव सामाजिक जीवन पर काफी प्रभाव पडा है। प्रान्त मे परम्परागत जमीदारो की सख्या काफी है, जिन्होने अग्रेजो के साथ मिलकर जनता का खूब शोषण किया है। यहा पर किसान सगठनो का भी ज़ोर है। सन १९२२ से यहा कई बार जमीदार-विरोधी आन्दोलन चले है।

उडीसा के पूर्वी समुद्र-तट पर अप्रैल सन् १९४२ मे जापान ने कई ब्रिटिश जहाज डुबो दिए। इससे जापान के आक्रमण का भय बहुत अधिक बढ गया। सरकार ने अपना सदर मुकाम कटक से उठाकर भीतर की ओर १६० मील दूर सम्भलपुर में बदल दिया। यही नही, उसने यातायात एव आवागमन के सभी साधनो को अपने हाथ में ले लिया। साइकिलो एव देहाती नावो पर भी उसका अधिकार हो गया। उसने यह हुक्म जारी किया कि समुद्री तट के स्थानो का तमाम धान एव चावल तट से २० मील भीतर भेज दिया जाय। इस प्रकार नित्य नई मुसीबतो के कारण अग्रेजी सरकार के प्रति लोगो के हृदय

में तीव्र कटुता के भाव उत्पन्न हो गए। कांग्रेस नेताओं ने समुद्री तट के देहातों का दौरा किया और लोगों की रक्षा के लिए जगह-जगह चुने हुए स्वयसेवक तैनात कर दिये। उनका काम लोगों की हर तरह से मदद करना था। किन्तु सरकार को यह सहन नहीं हुआ। उसने उनके काम में हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया। फलस्वरूप सहायता कार्य बन्द कर देना पड़ा।

इतने में ९ अगस्त को बम्बई में राष्ट्रीय नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। समूचे प्रान्त में एक साथ क्रान्ति की आग भड़क उठी। चारों ओर से आवाज़ आने लगी, "अंग्रेज सरकार न केवल विदेशी शक्ति से हमारी रक्षा करने में असमर्थ है, बल्कि वह महात्मा गांधी, प० जवाहर लाल नेहरू आदि राष्ट्र के नेताओं को देश की आजादी की मांग करने पर गिरफ्तार कर जेल के सीखचों में बन्द करने को तैयार है। अतएव ऐसी सरकार को, जो लोगों की स्वतन्त्रता का अपहरण करने में जरा भी आगा-पीछा नहीं सोचती, जितनी जल्दी उखाड़कर फेंक दिया जाय उतना ही अच्छा है।" इस प्रकार प्रान्त के लोग अंग्रेजी सरकार को मटिया-मेट कर देने में जी-जान से लग गए।

उड़ीसा में आन्दोलन का रूप सुव्यवस्थित नहीं रहा। जो कुछ लोगों ने किया वह इधर-उधर बिखरे हुए रूप में ही। अन्य प्रान्तों की भांति यहाँ भी आन्दोलन का श्रीगणेश हड़तालों एवं सभाओं के रूप में हुआ। बाद में लोगों ने संगठित तथा असंगठित रूप में सरकारी इमारतों पर कब्जा करने का प्रयत्न भी किया। किन्तु आन्दोलन अधिक नहीं चल सका, क्योंकि प्रधान-प्रधान नेता गिरफ्तार करके जेलों में बन्द कर दिये गए थे।

इस प्रान्त के ज़मीदारों का खास तौर पर विरोध किया गया। जनता सदियों से जमीदारों द्वारा पिसती आ रही थी। अतएव उसने इस आन्दोलन से लाभ उठाया और वह जमीदारी प्रथा के तमाम बन्धनों को तोड़ फेंकने के लिए प्रस्तुत हो गई। जमीदार लोगों ने मुस्लिम गुंडों से सहायता ली। सर-कार भी अपने पिट्ठुओं की मदद करने से भला कब चूकती? उसने मुसल-मानों को सामूहिक जुर्माना देने से मुक्त कर दिया। कई स्थानों में सरकार ने भी मुस्लिम गुंडों को आन्दोलन-कर्ताओं को कुचलने एवं उन पर आतंक का साम्राज्य स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया।

यों तो समूचे प्रांत में आन्दोलन का दौर-दौरा रहा, किन्तु बालासोर, कटक और कोरापुर जिले इसके प्रधान केन्द्र थे। कोरापुर की प्रायः शत-प्रति-शत जनता ने, बालासोर के तीन-चौथाई व्यक्तियों ने तथा कटक के आधे लोगों ने आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया।

अन्य स्थानो की भाति उडीसा के विद्यार्थियो ने भी देश की आजादी की इस लडाई मे प्राणो की बाजी लगा दी । उनके त्याग एव बलिदान का पता इसी से लग सकता है कि आन्दोलन-काल मे प्रकाशित होने वाली प्रत्येक सरकारी विज्ञप्ति में आन्दोलन को "अधिकारियो के प्रति विद्यार्थियो का विद्रोह" नाम दिया जाता था । जनता को आन्दोलन-सम्बन्धी शिक्षा देने, हडताल करवाने, विरोध-सभाओ का सगठन करने तथा सरकारी शासन को पगु बनाने के लिए आतकपूर्ण कार्य करने वाले ये विद्यार्थी ही थे । विद्यार्थियो की इन सरगरमियो का यह प्रभाव पडा कि अधिकारियो को शिक्षा सस्थाए काफी अरसे तक बन्द कर देनी पडी । विद्यार्थियो ने पब्लिक सस्थाओ पर भी अधिकार जमाने का प्रयत्न किया । कई स्थानो पर तो उन्हे इस काय मे बडी सफलता मिली । उन्होने सरकारी अफसरो को इस्तीफे देने के लिए भी प्रेरित किया । उडीसा की छात्राओ ने भी अपने भाइयो क साथ कन्धे-से-कन्धा मिलाकर इस आन्दालन मे भाग लिया । कटक जिले के रावनशा गर्ल्स कालेज की छात्राओ का विशेष रूप से उल्लेख करना पडेगा ।

उडीसा की स्त्रियो ने भी देश की आजादी की इस लडाई में पुरुषो से किसी प्रकार कम भाग नही लिया । एरम की बात है कि पुलिस ने प्रदर्शन-कर्ताओ पर गोलिया चलाई । उस समय करीब २०० की सख्या मे स्त्रिया आगे बढी और गालियो की बौछार में पुलिस के सामने जा खडी हुई । उन्होने आजादी के पैगाम को मोहल्ले-मोहल्ले में पहुचाया तथा धान छिपाकर रखने वाले व्यक्तियो को अपना अन्न गरीब लोगो को बाट डालने के लिए प्ररित किया । ग्राम पचायत के पुलिस अधिकारी को भी अपने तमाम कागजात सौंप देने के लिए मजबूर किया ।

काग्रेस-मिनिस्टरी के इस्तीफा दने के बाद उडीसा में पार्ल की मेडी के महाराजा की अध्यक्षता म दूसरा मिनिस्टरी कायम हो गई थी । अतएव गवर्नर को अन्य प्रान्तो की भाति खुलकर खलन का अधिक अवसर प्राप्त नही हो सका । यहा के लोगो ने अन्य स्थानो की अपेक्षा अधिक उत्तेजना एव प्रतिहिसा से काम लिया, किन्तु इतना होते हुए भी यहाँ दमन-चक्र की गति कुछ धीमी रही, इसके कई कारण थे । जापानी आक्रमण का भय मूर्तिमान होकर समूचे प्रान्त को निगल रहा था । अतएव प्रान्तीय सरकार का ध्यान इस तात्कालिक खतरे की ओर लगा हुआ था और वह किसी जन-आन्दोलन का मुकाबला करन के लिए तैयार नही थी । फिर भी अन्य स्थानो की भाँति यहाँ भी आन्दोलन में भाग लेने वालो पर गोलिया चलाई गई तथा लाठी-चार्ज किये गए जिसस

काफी लोग मारे गए तथा सैकडो बुरी तरह से घायल हुए। बहुत से गाव लूट लिये गए तथा जलाकर नष्ट कर दिये गए। स्त्रियो पर बलात्कार भी हुए। साधारण जनता को भाँति-भाँति की यातनाए दी गई। नेता लोग पकडकर जेलो मे ठूँस दिये गए। उनकी सम्पत्ति जब्त कर ली गई। रचनात्मक कार्य करने वाली सस्थाओ—जैसे खादी आश्रम आदि पर भी कब्जा कर लिया गया एव बहुत से गावो पर सामूहिक जुर्माना लगाया गया।

उडीसा मे ६ बार गोली-क़ाण्ड हुए और २५ जगह लाठी-चार्ज हुए। ७६ आदमी जान से मारे गए और २२४३ घायल हुए। कुल १,१६००० रुपया सामूहिक जुर्माना किया गया।

अब हम उड़ीसा के आन्दोलन पर जिले वार प्रकाश डालेगे।

कोरापट

सन् १९३५ के विधान से कोरापट मे दो अमली कायम हो गई है। सम्पूर्ण जिले मे जयपुर के महाराजा की जमीदारी है, किन्तु साथ मे अग्रेजी सरकार का भी आधिपत्य है। अतएव इसका शासन बहुत ही अव्यवस्थित है, जिससे यहा की जनता को बडी मुसीबतो का सामना करना पडता है। जमीदार महोदय २० लाख रुपये की आमदनी मे से पेशकश के रूप मे सरकार को 'केवल' १६ हजार रुपए देते है।

नेताओ की गिरफ्तारी की खबर पाते ही कोरापट की जनता क्षुब्ध हो उठी। विरोध-स्वरूप जिले भर में स्थान-स्थान पर हडतालें की गईं तथा जुलूस निकाले गए और सजाए दी गईं। लोगो ने उत्तेजना में आकर तोड-फोड करना प्रारम्भ कर दिया। टेलीफोन एव टेलीग्राफ के तार काट डाले गए। रेल की पटरिया उखाडकर फेक दी गईं। बहुत से स्थानो पर सरक्षित जगलो के पेड काट डाले गए। रेल के स्लीपर नष्ट कर दिये गए। पुल तोड-फोड डाले गए। इस्पेक्शन बगले तथा फॉरेस्ट डिपार्टमेन्ट के अधीन अन्य इमारतें जलाकर खाक कर दी गई। पुलिस थानो पर धावा किया गया तथा सरकारी रेकार्ड फूक दिये गए। स्कूलो, कालेजो एव शराब की भट्टियो पर पिकेटिंग किया गया।

२८ अगस्त की बात है कि प्रान्त के प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता श्री लक्ष्मण नायक के नेतृत्व मे करीब २००० व्यक्ति मल्कनगिरि तालुका के मठीली गाँव मे पहुचे। उन्होने गाव वालो के सहयोग से एक विशाल सभा की। श्री नायक महोदय ने अपने भाषण मे लोगो को अग्रेजी सरकार से असहयोग करने के लिए उकसाया। पुलिस घटनास्थल पर मौजूद थी। पुलिस इस्पेक्टर श्री

नायक को गिरफ्तार करके थाने की ओर ले जाने लगा। लोग अपने नेता के पीछे-पीछे थाने की ओर जाने लगे। थाने पर पहुचने पर अधिकारियो ने लोगो को अपने घर लौट जाने की आज्ञा दी। किंतु आजादी के दीवाने वडी मस्ती के साथ राष्ट्रीय नारे लगाते रहे। इस पर पुलिस वालो ने विना किसी पूर्व सूचना के गोली वरसाना शुरू कर दिया। परिणामस्वरूप ६ व्यक्ति मारे गए तथा वहुत से घायल हुए। पुलिस वालो की रक्त-पिपासा इतने से ही शान्त नही हुई और उन्होने वन्दी हालत मे ही श्री नायक पर किर्चो एव भालो से वार किया। कई अन्य व्यक्तियो पर भी ऐसे ही प्रहार किये गए। पर इतना होने पर भी लोगो ने वडे साहस से काम लिया। उन्होने जैसे-तैसे अपने-आपको पुलिस वालो के चगुल से वचा लिया और इस प्रकार एक भी व्यक्ति गिरफ्तार नही किया जा सका। इस भिडन्त में जयपुर स्टेट का एक फॉरेस्ट गार्ड, जो उस समय शराव के नशे मे चूर था, भीड की भाग-दौड के कारण पुलिस स्टेशन के पास वहने वाली नहर मे जा गिरा। सयोगवश पुलिस द्वारा चलाई गई लाठियो से उसका सिर पहले से ही जख्मी हो चुका था। अतएव नहर मे गिरते ही उसके प्राण-पखेरू उड गए और मृत शरीर पानी पर तैरने लगा।

इस घटना के ८ या १० दिन के वाद कलक्टर और पुलिस सुपरिन्टेन्डेंट उसी गाव में पहुचे और काग्रेसियो एव उनसे सहानुभूति रखने वाले व्यक्तियो पर झूठे केस वनाये गए। श्री नायक तथा उनके साथियो पर फॉरेस्ट गार्ड की हत्या का अभियोग लगाकर केस चलाया गया। श्री नायक को फांसी की सजा तथा उनके १० साथियो को आजन्म कारावास का हुक्म सुनाया गया। इस पर हाईकोर्ट में अपील की गई। वहा श्री नायक और उनके साथी विलकुल निर्दोष सिद्ध हुए और सजाए रद्द कर दी गईं।

आन्दोलन के प्रारम्भ के दिनो की वात है कि ६-७ हजार व्यक्तियो का एक जुलूस श्री माधव प्रधानी और दूसरे काग्रेस कार्यकर्त्ताओ के नेतृत्व मे दवू-ग्राम की ओर जा रहा था। जुलूस जव पप्पाडहाडी नदी के सकरे पुल पर पहुचा तो पुलिस वालो के दो दल, जो वहा पहले से ही तैयार थे, लोगो पर टूट पडे और एक साथ लाठियो एव गोलियो की वौछार करने लगे। परिणाम-स्वरूप १९ व्यक्ति शहीद हुए और सौ से अधिक के वुरी तरह चोटे आईं। १४० व्यक्तियो को पुलिस गिरफ्तार करके ले गई और कइयो पर षड्यन्त्र-केस चलाया।

जेल में भी राजनैतिक वन्दियो के साथ वड़ा पैशाचिक व्यवहार किया

गया। बन्दियो पर लाठिया एव गोलिया चलाई गई। कोरापट जेल मे करीब ५० राजनैतिक बन्दी पिंजडो मे ही भून दिये गए। बहुत से बन्दियो को एक अत्यन्त छोटी अन्धेरी कोठरी मे ठूस दिया गया, जिससे कई दम घुटन के कारण मर गए। तीन व्यक्तियो को टागे बॉध कर पेड से लटका दिया और बेतो और लाठियो से बुरी तरह पीटा। इस प्रकार हम देखते है कि नौकर-शाही ने अत्याचार करने मे नाजियो को भी कोसो पीछे छोड दिया था।

इस जिले मे १९७० व्यक्ति गिरफ्तार किये गए और ५६० दण्डित किये गए। नजरबन्दो की सख्या ११ थी। २ जगह गोली-काण्ड और २४ जगह लाठी-चार्ज हुए। २८ आदमी मारे गए और २१४७ सख्त घायल हुए। अदालतो मे ११,२०० रु० जुर्माना किया गया, जिसमे से ९३७१ रु० वसूल किया गया। ९००० की सम्पत्ति जब्त की गई, पुलिस ने ४ घर जला दिये। जिले मे स्त्रियो के साथ १२ बलात्कार की घटनाए हुई।

बालासार

इस जिले मे आन्दोलन की गति काफी तीव्र रही। करीब तीन चौथाई जनता ने आन्दोलन मे सक्रिय भाग लिया। नेताओ की गिरफ्तारी की सूचना पाते ही स्कूलो एव कालेजो के विद्यार्थी बाहर निकल आये। परिणाम-स्वरूप अधिकारियो को काफी अर्से तक विद्यालय बन्द कर देने पडे। शहरो एव गाँवो मे भी हडताले चलती रही। बडे-बडे जुलूस निकाले गए। शराब की भट्टियो और अदालतो पर पिकेटिंग किया गया। इस जिले के आन्दोलन की यह विशेषता थी कि लोगो ने अग्रेजी सरकार के साथ-साथ उसके पिट्ठू जमीदारो का भी विरोध किया। किन्तु जमीदारो ने आन्दोलन को कुचलने के लिए भाडे के टट्टू मुस्लिम गुण्डो से काम लिया।

इस जिले मे सितम्बर के पिछले दिनो मे आन्दोलन खूब जोरो से चला। स्थान-स्थान पर तार काटे गए, सरकारी सस्थाओ पर धावा बोला गया, सरकारी बगले फूँक दिये गए तथा कितने ही पुल तोड-फोड डाले गए। कई स्थानो पर लोगो ने सरकारी कर्मचारियो एव जमीदारो के विरुद्ध बल-प्रयोग भी किया। धामनगर और खडिया थानो की हद मे इस प्रकार के काड अधिक हुए। बालासोर के सब डिवीजनल-ऑफिसर की अदालत मे ६ व्यक्ति घुस गए और अधिकारियो के देखते-देखते सरकारी रेकार्ड नष्ट कर डाले गए। चौकीदारो की वर्दियो को भी अग्नि देवता की भेंट चढा दिया गया।

श्री मुरलीधर पडा के नेतृत्व मे एक गिरोह इस प्रकार के कामो में बड़ी तत्परता से भाग ले रहा था। इस गिरोह के लोग खुल्लमखुल्ला सरकारी

कर्मचारियों पर हमले करते थे तथा महाजनों को अपना धान का स्टाक, जो उन्होंने छिपाकर रख रखा था, भूखे लोगों को बाँटने के लिए बाध्य करते थे। पुलिस वालों की एक मजबूत पार्टी श्री मुरलीधर और उनके सहयोगियों को गिरफ्तार करने पहुँची। २२ सितम्बर की सुबह कटशाही स्थान पर उसका मुरलीधर तथा उनके ४ हजार साथियों से आमना-सामना हुआ। श्री मुरलीधर के साथी पुलिस वालों के हमला करने के पहले ही उन पर टूट पड़े। सब-इन्स्पेक्टर और कुछ कान्स्टेबल बुरी तरह से घायल हुए। पुलिस ने ३५ राउंड गोली चलाई जिससे जनता के ६ व्यक्ति मारे गये और पांच बुरी तरह से घायल हुए। घायलों में से २ व्यक्तियों ने अस्पताल में प्राण त्याग दिए। इस घटना से सरकार दमन पर तुल गई और उसने सशस्त्र पुलिस एवं फौज को बुला लिया। श्री मुरलीधर ने देखा कि यदि मैं गिरफ्तार न हुआ तो सरकार मेरे लिए गांव वालों को परेशान करेगी। अतएव गांव वालों को बचाने के लिए उन्होंने अपने-आपको पुलिस के हाथों सौंप दिया।

२३ सितम्बर को खड़िया पुलिस स्टेशन पर जनता की एक भीड ने हमला किया और अपने प्रसिद्ध क्रान्तिकारी कार्यकर्त्ता को, जिसे पुलिस ने गिरफ्तार कर रखा था, छुडा लिया। जनता एवं पुलिस की इस भिडन्त में पुलिस के कुछ कर्मचारी घायल हुए। २५ तारीख को पुलिस का एक दल २३ तारीख को हमला करने वाली भीड के नेताओं को पकड़ने के लिए आया। लोगों को जब इसकी सूचना मिली तो वे पांच सौ की तादाद में लैंडाडीह स्थान पर इकट्ठे हो गये। उन्होंने पुलिस अधिकारियों को साफ कह दिया कि हम अपने नेताओं को गिरफ्तार नहीं होने देंगे। यहां लोगों ने पुलिस वालों को चारों ओर से घेर लिया, किंतु उन्होंने गोली खाकर जैसे तैसे अपनी जान बचाई।

आन्दोलनकर्त्ताओं की एक भीड ने एराम के जमींदार के मालगोदाम को घेर लिया। जमींदार ने पुलिस में सहायता की प्रार्थना की। २८ सितम्बर को वासुदेवपुर के थाने से पुलिस अधिकारी १८ सशस्त्र कान्स्टेबलों के साथ एराम के लिए रवाना हुए। चौकीदारों के पास सिपाहियों के थैले थे, जिनमें उनका सब सामान था। भीड ने चौकीदारों पर हमला किया और हथियारों से भरे थैलों को छीन लिया सिपाहियों ने भीड से थैले छीनने की कोशिश की। भीड में उस समय करीब चार-पांच हजार व्यक्ति थे। पुलिस वालों की संख्या इसके सामने बिलकुल नगण्य थी। अतएव भीड ने बडी आसानी से पुलिस वालों को एक खुले मैदान में घेर लिया। किंतु पुलिस वालों ने गोली चलाई और जैसे-तैसे स्थानीय जमींदार के एक निकटवर्ती पक्के मकान में शरण ली।

रात अधिक हो जाने के कारण लोग भी अपने घरो को चले गये। दूसरे दिन घटनास्थल पर १५ लाशे मिली। भीड रात को ही अपने तमाम घायल एव अनेक मरे हुए साथियो को उठा ले गई थी। अतएव यह बताना कठिन है कि इस घटना मे कितने व्यक्तियो की जाने गईं तथा कितने बुरी तरह घायल हुए। हा, सरकारी रिपोर्ट मे बताया गया है कि २५-३० व्यक्ति मारे गये तथा ४०-५० घायल हुए।

दामनगर मे पुलिस ने बिलकुल शान्त एव निर्दोष व्यक्तियो की एक भीड पर गोली चलाई, जिससे ८ व्यक्ति मारे गये तथा ४० घायल हुए। ४० व्यक्ति गिरफ्तार भी किये गए। इस घटना के प्रसग मे श्री कल्लीमहालिक का नाम विशेष उल्लेखनीय है। यह वह वीर था जिसने देश की आजादी के लिए सबसे आगे बढकर गोली खाई थी। उसके मुह पर तीन घातक गोलिया लगी थी।

सरकारी कर्मचारी जापानी आक्रमण के भय से काप रहे थे। नित्य नई अफवाहो के कारण उनका खाना-पीना सब छूट गया था। एक दिन की बात है कि कुछ नटखट व्यक्तियो ने अधिकारियो को चकमा देने की नीयत से विवाह के मौके पर कुछ विस्फोटक पदार्थ छोडे। आफिसरो ने सोचा जापानी बम फटा है, बेचारा पुलिस सुपरिन्टेन्डेट भय के मारे थर-थर कापने लगा। उसने तुरन्त अपनी यूरोपीय पोशाक उतार कर फेक दी और धोती-कुर्ता पहन लिया। इतने पर भी उसका भय शान्त न हुआ। उसने डाक विभाग के एक अफसर के साथ एक नाव किराये पर ली और वैतरणी नदी के इस पार आ गया। अन्त मे कुछ काग्रेस वालो ने उन्हे समझा-बुझाकर वापस भेजा।

बालासोर जिले मे ३०० से अधिक व्यक्ति गिरफ्तार किये गए और २५० नजरबन्द। ३ जगह गोली-काड हुए। ४२ आदमी मरे २७० घायल हुए। ६००० रु० सामूहिक जुर्माना किया गया।

कटक

कटक उडीसा प्रान्त का सदर मुकाम है। प्रान्त की राजधानी भी यहा है। अतएव यहा की जनता में राजनीतिक जागृति विशेष रूप से है। अखिल भारतीय नेताओ की गिरफ्तारी के साथ कटक जिले के नेता भी गिरफ्तार करके जेल में बन्द कर दिये गए तो यहा की जनता भी अन्य स्थानो की भाति क्षुब्ध हो उठी और उसने अपने विरोध को विभिन्न रूपो में प्रकट करना शुरू कर दिया। जिले भर मे हडतालो का ताता बध गया और स्थान-स्थान पर विरोध-सभाये की जाने लगी।

अन्य स्थानो की भाति यहा के विद्यार्थियो ने भी आजादी की इस लड़ाई मे उत्साहपूर्वक भाग लिया। कटक शहर के तमाम हाई स्कूलो तथा कालेजो के छात्र एव छात्राओ ने अपनी पढाई का त्याग कर दिया और आन्दोलन में जुट गये। परिणाम-स्वरूप अधिकारियो को स्कूल और कालेज काफी अर्से तक वन्द रखने पडे। सरकारी शासन को पगु बनाने के लिए इन विद्यार्थियो ने सरकारी अफसरो को अपनी नौकरी से इस्तीफा देने के लिए वाध्य किया। खेनशा कालेज के एक क्लर्क ने सरकारी नौकरी से इस्तीफा दे दिया और आन्दोलन में शरीक हो गया। इस कालेज की हडताल तुडवाने के लिए अधिकारियो ने काफी प्रयत्न किया, किंतु कुछ सफलता न हुई। उन्होने छात्राओ को यह धमकी दी कि यदि तीन दिन के अन्दर वे कालेज में हाजिर न होगी तो उनका नाम काट दिया जायगा तथा फीस आदि की माफी की रियायतें बंद कर दी जायगी। किंतु आजादी की दीवानी लडकियो पर अधिकारियो की इस चेतावनी का कुछ भी असर न हुआ। कुछ उत्तेजित लडकियो ने कालेज के दफ्तर पर हमला किया और तमाम कागजात जला डाले।

विद्यार्थियो की हडताल की यह खूबी थी कि मुसलमानो ने भी अपने हिन्दू भाइयो के साथ इसमें पूरा भाग लिया। कटक का मुस्लिम हाई स्कूल बहुत दिनो तक वन्द रहा।

नवयुवको द्वारा उत्तेजना पाकर लोगो ने पुलिस-थानो और अन्य सरकारी सस्थाओ पर आक्रमण करना शुरू कर दिया। वहुत-सी सरकारी इमारतें जला दी गईं, जिनमे अरसमा का डाकखाना, इन्सपैक्शन हाउस, जगतसिंहपुर की तहसील तथा महौरा का रैस्ट हाउस, रेवेन्यू दफ्तर और सिपाहियो के वेरक विशेष उल्लेखनीय है। स्थान-स्थान पर टेलीग्राफ और टेलीफोन के तार काट डाले गये। ८ सितम्बर को कटक के जनरल हास्पिटल पर धावा किया गया और चौकीदारो की वर्दियो को फूक दिया गया। १६ अगस्त की वात है कि कुछ कान्स्टेबल राजनैतिक वन्दियो को जयपुर सब डिवीजन ले जा रहे थे। ३ हजार नवयुवको के एक झुड ने पुलिस वालो को रोक लिया। पुलिस के कुछ आदमी जख्मी हुए। उधर मजिस्ट्रेट ने गोली चलाने का हुक्म दे दिया। २८ राउड गोली चली जिससे १ व्यक्ति मारा गया तथा १२ घायल हुए।

पुलिस का दमन-चक्र काफी तीव्र रहा। श्री गोपवन्धुदास, आचार्य हरिहर आदि जिले के सभी प्रमुख काग्रेस-कार्यकर्त्ता गिरफ्तार कर लिये गए। तमाम काग्रेस सस्थायें गैरकानूनी करार दे दी गईं। काग्रेस दफ्तरो को पुलिस ने मोहर चपडी लगाकर अपने कब्जे में कर लिया। मुख्य-मुख्य काग्रेसियो के घरो

की तलाशिया ली गई तथा उनकी सब सम्पत्ति जब्त कर ली गई। १० अगस्त से ही कटक शहर मे १४४ धारा लगा दी गई। भोलानन्द बाल सेवाश्रम जबरन बन्द करवा दिया गया। गाधी-आश्रम के मैनेजर गिरफ्तार कर लिये गए और रहुना साधना-कुटीर को सरकार ने अपने कब्जे में कर लिया। एरसमा और तिरतोल थानो के बहुत-से गावो मे क्रमशः पाच हजार और तीन हजार रुपया सामूहिक जुर्माना लगाया गया। गवर्नर के स्पेशल आर्डर के मुताबिक इन गावो की मुस्लिम जनता जुर्माना देने से बरी कर दी गई। यही नही, सरकार ने मुसलमानो को आन्दोलनकारियो के विरुद्ध खड़ा करने के भी प्रयत्न किये।

पुरी

पुरी के सस्कृत कालेज और देलाग थाने के विद्यार्थियो ने आन्दोलन में प्रमुख भाग लिया। पुरी कालेज के २५० विद्यार्थियो मे से सिर्फ ६ विद्यार्थी कालेज मे उपस्थित हुए, इन ६ ने भी बाद मे हडताल मे भाग लिया। इस प्रकार कई सप्ताह तक कालेज बिलकुल बन्द रहा। पुरी के एडवर्ड हाईस्कूल आदि दूसरे विद्यालयो मे भी काफी अर्से तक हडतालें चलती रही। १७ अगस्त को विद्यार्थियो ने एक विशाल सभा की जिसमे अग्रेजी सरकार की कडी आलोचना की गई।

पुरी की जनता अन्य जिलो की अपेक्षा कुछ शान्त रही। सरकारी इमारतो पर इक्के-दुक्के ही हमले हुए। १६ सितम्बर को ५०० व्यक्तियो की एक सभा हुई। यह निश्चय किया गया कि नीमपाडा के सरकारी कर्मचारियो को इस्तीफा देने के लिए बाध्य किया जाय। लोग थाने पर पहुचे और उन्होने बलपूर्वक उस पर कब्जा करने का प्रयत्न किया। उन्होने पुलिस-कर्मचारियो पर ईंट और पत्थर फेंके जिससे कुछ व्यक्ति घायल हुए। पुलिस ने इस पर ११ राउड गोलिया चलाईं, जिससे जनता का एक व्यक्ति मारा गया और ११ घायल हुए।

गंजम

इस जिले की जनता अन्त तक शान्त रही। उसने अपना विरोध शान्तिपूर्ण एव सगठित तरीको से जाहिर किया। पारला की मेडी के महाराजा-कालेज के छात्रो ने अपनी कक्षाओ का बहिष्कार कर दिया। पुलिस ने ६ विद्यार्थियो को गिरफ्तार किया। १४ अगस्त को इस इलाके के बार-बोर्ड के मेम्बरो ने इस्तीफा दे दिया। १५ तारीख को छत्रपुर हाईस्कूल के ५०० विद्यार्थियो ने हड़ताल की।

मठोली मे करीब एक हजार व्यक्तियो की भीड ने शराब की भट्ठी पर हमला किया। इसके बाद उसने स्टेट आफिस पर धावा किया। मैजिस्ट्रेट ने लोगो को काफी चेतावनी दी, किन्तु उन्होने उनकी एक भी न सुनी। वे वहा से थाने की ओर झपटे। उन्होने अधिकारियो को धमकी दी कि या तो थाना खाली कर दीजिये नही तो हम इसे नष्ट कर देंगे। अधिकारियो ने लोगो की बात मानने से इन्कार कर दिया। इसमे लोग उत्तेजित हो गये और वे अधिकारियो पर टूट पडे। कई पुलिस कास्टेबलो को चोट आई। मजिस्ट्रेट के आर्डर मे गोली चलाई गई। १८ राउड गोली चली, ४ व्यक्ति मारे गये और ३ जख्मी हुए।

सम्भलपुर

गजम जिले की भाति यहा की जनता ने भी अपना रोष शान्तिपूर्ण तरीके से प्रदर्शित किया। अतएव कोई घातक घटना नही घटी। कई व्यक्ति गिरफ्तार कर लिये गए। पुलिस ने काग्रेस दफ्तर पर छापा मारा और उस पर मोहर चपडी लगा दी। वह दफ्तर की साइक्लोस्टाइल मशीन भी उठा ले गई।

: १२ :

मध्यप्रान्त का कौशल

बगाल तथा बम्बई प्रान्त के बीच के एक बृहन् त्रिभुजाकार भू-भाग को मध्यप्रान्त और बरार कहते है। इसका कुल क्षेत्रफल १,३१,५५७ वर्गमील और जन सख्या १६,८२२,५८४ है। काग्रेस ने भाषा के आधार पर सूबे को तीन भागो में विभाजित कर दिया है। इनमें एक महाकौशल, दूसरा मराठी मध्यप्रान्त और तीसरा विदर्भ कहलाता है।

और स्थानो की तरह इस प्रान्त मे भी नेताओ की गिरफ्तारियो पर जुलूसो तथा अग्रेज-विरोधी प्रदर्शनो से आन्दोलन शुरू हुआ। पुलिस के अत्याचारो के बावजूद लोग अहिसात्मक रहे। बहुत कम स्थानो पर हिंसात्मक कार्य हुए। लोगो ने गुरिला ढग की लडाई लडी और गुप्त रूप से काम किया। इस सूबे के लोगो ने सन् १९४२ के आन्दोलन में चाहे कुछ भी किया हो, आष्टी और चिमूर के रहने वालो के कार्य कभी भी नही भुलाए जा सकते। नागपुर के १८ वर्षीय बालम शकर को, जो सबसे पहले फाँसी पर चढ़ा, हमारा इतिहास सदा पूजेगा।

आष्टी और चिमूर आदि स्थानो मे जो अत्याचार हुए, उनकी खुद सरकार के न्यायालयो को निन्दा करनी पडी। सब डिवीजनल मजिस्ट्रेट ने अपने फैसले मे लिखा कि पुलिस ने वे कार्य किये है जो उसे न करने चाहिए थे और जिन्हे करने का उसे कोई अधिकार न था। हाईकोर्ट के जज ने चिमूर केस में कहा कि चिमूर के रहने वालो ने कोई ऐसा शोचनीय कार्य नही किया। हा, जो अत्याचार सरकार ने वहा किये उनके लिए उसे पूर्ण रूप से कभी दण्ड नही मिला और न उसकी निन्दा ही हुई। जज ने कहा कि उसे दु खपूर्वक यह कहना पडता है कि जब सरकिल इन्स्पेक्टर को मारा गया तब जनता उसके अत्याचारो से अत्यन्त दुखी थी। चिमूर और आष्टी मे स्त्रियो तक को अपमानित और बेइज्जत किया गया। इसके विरोध मे प्रोफेसर भसाली ने अनशन किया और सरकार के सामने अत्याचारो की जाँच करवाने की माँग पेश की।

वायसराय की कौंसिल के तत्कालीन सदस्य श्री अणे इस मामले मे बीच में पडे थे।

अन्य सूबो के विद्यार्थियो की तरह यहाँ पर भी विद्यार्थियो ने आन्दोलन में प्रमुख भाग लिया। जुलूस निकाले, थानो और कचहरियो पर तिरगे झडे फहराए, आन्दोलन के इश्तिहार बाँटे और गाँवो में 'करो या मरो' का सदेश दिया। नागपुर यूनिवर्सिटी तथा सेकसरिया कॉमर्स कालेज वर्धा के विद्यार्थियो ने आन्दोलन में प्रमुख भाग लिया।

नेताओ की गिरफ्तारियो के बाद सूबे के कितने ही स्थानो में कठोरता और भयानकता का राज्य हो गया। कार्यकर्त्ता जेलो में सडते रहे और उनके मुकदमे भी पेश न किये गए। सूबे के बहुत से भागो में आवागमन पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। जनता की ओर से कही हिंसा हुई तो वह केवल अचानक बिना किसी पूर्ण योजना के। इसके विरुद्ध सरकार ने व्यवस्थापूर्वक अत्याचार किये। आदमी अन्धाधुन्ध गिरफ्तार कर लिये गए। स्त्रियो पर बलात्कार हुए। गाँव के गाँव जला दिये गए। भारी सामूहिक जुर्माने हुए। जो लोग सामूहिक जुर्माने न दे सके उन पर घोर अत्याचार किये गए तथा उनका सब कुछ छीन लिया गया।

मध्यप्रान्त में खुले विद्रोह के सिलसिले में ३२२६ व्यक्ति नजरबन्द किये गए और ५०१० व्यक्तियो को सजायें दी गईं। ३० जगह गोली-काण्ड हुए, जिनमें ३४५ व्यक्ति मारे गये और करीब १६० सख्त घायल हुए। २,१८,१०० रु० सामूहिक जुर्माना किया गया। जनता ने ६२ सरकारी इमारतो पर हमले किये।

मराठी मध्य प्रान्त

नागपुर प्रान्त के अन्तर्गत मध्यप्रान्त के भडारा, नागपुर, वर्धा तथा चादा ये चार जिले आते है। इन चारो जिलो के लोगो की मुख्य भाषा मराठी है। अब हम इन जिलो में हुए आन्दोलन का पृथक्-पृथक् वर्णन करते है।

भण्डारा जिला

इस जिले में ९ अगस्त से ही आम हडताल प्रारम्भ हो गई जो १४ अगस्त तक चलती रही। १४ तारीख को झडा अभिवादन के बाद चौधरी ताँबाजी नायक तथा चार अन्य व्यक्ति गिरफ्तार कर लिये गए। पुलिस ने प्रदर्शन-कर्ताओ पर गोली चलाई जिससे जनता भी उत्तेजित हो गई और उसने गोली का जवाब पत्थरो एव ईंटो से दिया। इस घटना में ६ व्यक्ति मारे गए

तथा २५, ३० घायल हुए। उत्तेजित जनता ने टेलीफोन एव टेलीग्राफ के तार काट डाले तथा सरकारी इमारतो पर धावे किये। १५ ता० को तुमसर में १४४ धारा लगा दी गई और अधिकारियो ने काग्रेस-दफ्तर तथा कार्यकर्त्ताओ के मकानो की तलाशी ली।

भडारा मे १४ अगस्त का नेताओ की गिरफ्तारी के विरोध में श्री प्रभावती के सभापतित्व में एक विशाल सभा हुई। लोग पूर्ण रूप से अहिंसात्मक एव शान्त थे, परन्तु अधिकारियो ने गोली चलाई जिससे २ व्यक्ति मारे गए। पास में खडी हुई एक गाय भी मारी गई दूसरे दिन विद्यार्थियो ने एक बडा जुलूस निकाला और इस प्रकार पुलिस के अत्याचारो के प्रति अपनी हार्दिक घृणा प्रकट की।

मुहारा की जनता ने भी हडताल, जुलूस एव सभा आदि करके अपना विरोध प्रदर्शित किया। कुछ उत्तेजित लोगो ने एक पुलिसमैन को अपने क्रोध का शिकार बनाया।

सिरोहा में ६ अगस्त को एक आम सभा की गई तथा दूसरे दिन से सब स्कूल कालेज बन्द हो गये। आन्दोलन के विषय में लोगो को हिदायते देने के लिये कई प्रकार के बुलेटिन बाटे गए। २० ता० को पुलिस अधिकारियो ने काग्रेस दफ्तर पर धावा किया और उस पर मोहर चपडी लगा दी। प्रसिद्ध काग्रेस कार्यकर्ता शेर मोहम्मद भाई को गिरफ्तार कर लिया गया। कर्मवीर चौक मे राष्ट्रीय झडे का अपमान किया गया तथा उसे जलाकर नष्ट कर दिया गया। काँग्रेस के कार्यकर्ता गिरफ्तार किये गए और उन्हे अपमानित किया गया।

गोदिया मे आन्दोलन का श्रीगणेश हडताल से हुआ। एक बडा जुलूस निकाला गया। गान्धीजी का सन्देश लोगो को पढकर सुनाया गया। १० अगस्त को सर्व श्री केशवराव इन्जल, पन्नालाल दुवे, सुखदेव अग्रवाल, आदि सभी मुख्य-मुख्य काँग्रेस कार्यकर्ता गिरफ्तार कर लिये गए। पुलिस ने काग्रेस दफ्तर पर धावा किया और उसमे ताला लगा दिया। शाम को जनता की एक सभा हुई जिसमें १७ व्यक्ति गिरफ्तार कर लिये गए। इसके बाद चार दिन तक लगातार बडे-बडे जुलूस निकाले गए। शहर के मुख्य-मुख्य स्थानो पर कांग्रेस के पोस्टर चिपकाये गए। आन्दोलन को कुचलने के लिए फौज की सहायता भी ली गई। इस आन्दोलन मे यहाँ के २९३ व्यक्तियो को सजाए हुईं तथा १९४ व्यक्ति नजरबन्द किए गए। १५००) रु० सामूहिक जुर्माना किया गया।

नागपुर जिला

तालुका—१२ अगस्त को कई स्थानो पर सभाए हुईं, जिनमें काग्रेस

का आदेश पढ़कर सुनाया गया। १५ ता० को केलोथ में रेलवे पटरी उखाड़ डाली गई तथा स्टेशन जलाकर भस्म कर दिया गया। पुलिस वालो ने गाव-गाव मे घूम-घूमकर लोगो को मारा-पीटा और उन्हें विभिन्न तरीको से अप-मानित किया तथा स्त्रियो को वेइज्जत किया।

खाया—यहा की जनता ने पोस्ट आफिस, थाना, रेवेन्यू दफ्तर आदि सरकारी महकमो पर धावा बोला और उनके सब रेकार्ड अग्निदेवता की भेंट चढ़ा दिए। म्युनिसिपल दफ्तर तथा रेन्जर आफिस को भी काफी क्षति पहु-चाई। रेल की पटरिया उखाडकर फेंक दी गई तथा तार काट डाले गए। पुल तोड-फोड दिये गए। यूरोपियनो के बगले तहस नहस कर दिये गए। परि-णामस्वरूप फौजियो ने दुकानें लूट ली। बच्चो एव स्त्रियो तक को भाँति-भाँति का असहनीय यातनायें दी गईं तथा लोगो से १० हजार रुपये सामूहिक जुर्माने के रूप में बडी निर्दयता से वसूल किये गए।

शावेनर—रेलवे स्टेशन, रेलवे वर्कशाप तथा किरोसिन आयल डिपो का तमाम फर्नीचर लूट लिया गया एव डाक बगलो को जलाकर नष्ट कर दिया गया। दो व्यक्ति बुरा तरह से घायल हुए एक-दो स्थानो पर लोगो का बेंतो से पीटा गया।

अमरेड़ ताल्लुका—९ और १० अगस्त को पुलिस-अधिकारियो ने काग्रेस आफिस तथा हिन्दुस्तान रेड आर्मी के दफ्तर की तलाशिया ली तथा शहर के कई प्रसिद्ध व्यक्ति गिरफ्तार कर लिये। जनता ने भी उत्तेजित होकर पचगाव का डाक बगला और कॉजी हाउस जला डाला। वेला थाना में सरकारी मुलाजिमो का वहिष्कार किया गया तथा पोस्ट आफिस और थाने के सब रेकार्ड भस्म कर दिए। फौजियो से वन्दूके छीन ली। रेवेन्यू दफ्तर फूंक दिया। समूचे अम-रेड ताल्लुके के में ११ व्यक्ति गिरफ्तार किये गए तथा एक हजार रुपया सामूहिक जुर्माना वसूल किया गया।

रामलेट ताल्लुका—इस इलाके में जनता का जोश अधिक रहा। रेलवे स्टेशन जला दिया गया, इजन नष्ट-भ्रष्ट कर दिया गया, पुलिस वालो को खद्दर पहनने के लिए वाध्य किया गया तथा कचहरी पर बडी शान से राष्ट्रीय झडा फहराया गया। फौजदारी के तमाम रेकार्ड जला दिये गए। तहसील पर धावा किया गया। खजाना लूट लियो गया और १० लाख ७० हजार रुपये लोगो के हाथ लगे। १६ अगस्त को आन्दोलन को कुचलने के लिए काफी सख्या में फौज वहा पहुची और उसने गाव को चारो ओर से घेर लिया। आम जनता को बेंतो का शिकार बनाया गया। स्त्रियाँ वेइज्जती के डर से घर से बाहर

न निकल सकी। १७५ व्यक्ति गिरफ्तार किए तथा ३० हजार रुपया सामूहिक जुर्माना वसूल किया गया। जेल की सख्तियों के कारण एक व्यक्ति बन्दी अवस्था में ही मर गया।

थरसा, गरेगाँव, चिचडा मनुघा एव महातुला के पटवारी एव रेवेन्यू आफिस तथा ग्रामपचायत के सब रेकार्ड नष्ट कर दिये गए। इन स्थानो के प्रमुख-प्रमुख कार्यकर्ता गिरफ्तार कर लिये गए। मउद्दा मे जनता ने पुलिस थाने पर हमला किया और उसे जलाकर नष्ट कर दिया हिन्दुस्तान रेड आर्मी के नेताओ ने एक पुलिस कास्टेबल को पकड लिया तथा कई अन्य कास्टेबलो को गोली का शिकार बनाया। यही नही, उन्होने ८० कारतूस, कुछ पुलिस-वर्दिया तथा बहुत-सा हथकडिया भी पुलिस थाने से छीनकर अपने अधिकार मे कर ला।

गुमगाव ताल्लुका—१३ अगस्त को स्थानीय काग्रेस कमेटी के उप सभापति एव मत्री गिरफ्तार कर लिये गए। जनता के ३००० व्यक्तियो ने अपने नेताओ को छुडाने के लिए पुलिस-थाने पर हमला बोल दिया। दारोगा डर के मारे थाना छोडकर भाग निकला, किन्तु थाने के दो कास्टेबल बुरी तरह घायल हुए। लोगो का विचार किसी सरकारी कर्मचारी को हानि पहुँचाने का न था। अतएव उन्होने दोनो कास्टेबलो का बडी तत्परता से इलाज करवाया और ठीक होने पर उन्हे पुन थाने मे भेज दिया। शहर के पोस्ट आफिस और काजी हाउस भी जनता के क्रोध के शिकार बने और जलाकर नष्ट कर दिये गए। हिंगना म जनता को आन्दोलन सम्बन्धी हिदायते देने के उद्देश्य से स्थान स्थान पर पोस्टर चिपकाए गए।

बडौदा में पटवारी दफ्तर के कागजात जला दिये गए तथा पुल तोड डाला गया। लोगो ने मिलिटरी की लारियो पर हमला करके उन्हे लूट लिया। खरसौली में दारोगा को बुरी तरह पीटा गया तथा उसे अपनी सरकारी वर्दी उतार फेकने के लिए बाध्य किया गया। ताल्लुका में जनता पर गोली चलाई, जिससे एक व्यक्ति मारा गया। समूचे ताल्लुके में १६० व्यक्तियो को सजाए हुईं तथा १३ व्यक्ति नजरबन्द किये गए। सामूहिक जुर्माने के रूप में लोगो से ५००० रुपया वसूल किया गया।

नागपुर शहर—सन् १६४२ के आन्दोलन मे नागपुर शहर ने अपना एक इतिहास बनाया है। यहा के लोगो ने अभूतपूर्व उत्साह का परिचय दिया। ९ और १० अगस्त को बडी-बडी सभाए हुईं जिनमें आजादी की लडाई को जी-जान से आगे बढाने की प्रतिज्ञा की गई। स्वय मध्य प्रान्त के गवर्नर के ही शब्दो में नागपुर पर ७२ घण्टे तक जनता का राज्य रहा।

११ अगस्त को हिन्दू महासभा के तत्त्वावधान में क्न्वेंटेश थियेटर में एक विशाल सभा हुई जिसमें स्कूलो, कालेजो एव मिलो मे हड़ताल चालू रखने का निर्णय किया गया। १२ अगस्त को विद्यार्थियो का एक विशाल जुलूस निकला जो शहर की प्रसिद्ध-प्रसिद्ध सडको पर से होता हुआ अदालत पहुचा और लोगो को काम बन्द करने के लिए बाध्य किया। अदालत पर झडा लहराया गया। पुलिस ने प्रदर्शन-कर्त्ताओ पर गोलियां चलाई तथा अश्रु-गैस का प्रयोग किया। दो व्यक्तियो के सख्त चोटे आई। मामूली घायल होने वालो की सख्या तो अनगिनत थी।

नागपुर का जनरल पोस्ट आफिस जला दिया गया। गवर्नमेंट के राशन के गोदाम तथा कपडे के स्टाक लूट लिये गए। प्राय सभी सरकारी इमारतो पर धावा बोला गया। खजाने लूट लिये गए। बिजली के बल्व तोड दिये गए। टेलीफोन तथा टेलीग्राफ के तार काट दिये गए। शराब की भट्टिया तथा फायर ब्रिगेड जलाकर नष्ट कर दिये गए। शहर के सभी पुलिस-स्टेशन या तो जला दिये गए या उन पर अधिकार कर लिया गया।

१४ अगस्त को शहर भर में करफ्यू आर्डर लगा दिया गया। फौजियो के जत्थे शहर में चक्कर लगाने लगे और जो भी व्यक्ति, दोषी हो या निर्दोष, दिखाई पडता था गोली से उडा दिया जाता था। जो कौतूहलवश अपने मकानो की खिडकियो से झाकते थे वे भी फौजियो द्वारा गोली के शिकार बना दिये जाते थे। वास्तव मे फौजियो ने नागपुर की निर्दोष जनता के खून से जी भर-कर फाग खेला। लोगो के घरो मे जबरन घुस जाते थे, उनका सामान लूट लेते थे तथा उनकी बहन-बेटियो को बेइज्जत करते थे। बडे बडे घरो के लोगो से जबर्दस्ती गन्दी नालियो को साफ करवाया गया। नवाबपुरा सर्किल के श्रीशकर कुनबी को बिना किसी कुसूर के फासी पर लटका दिया गया। इस इलाके में कुल ३२ आदमी गोली के शिकार हुए, तीन सौ से ज्यादा घायल हुए तथा करीब एक हजार गिरफ्तार किये गए, जिनमे से बहुत से मुंह मागी घूस मिलने पर छोड दिये गए।

लोगो ने झडा सत्याग्रह प्रारम्भ किया। वे राष्ट्रीय झडा लेकर शहर में प्रदर्शन करने लगे। पुलिस वाले उन पर लाठी चलाते थे तथा प्रधान-प्रधान व्यक्तियो को जेल में ठूस देते थे। किन्तु फिर भी लोगो का उत्साह कम नही हुआ और यह सत्याग्रह कई दिनो तक चलता रहा।

नागपुर शहर मे अनगिनत बार गोलियाँ चली और अनुमान किया

जाता है कि कुल ३०० व्यक्ति मारे गये होगे। १५३ व्यक्ति नजरबन्द और १९४ दण्डित किये गए।

वर्धा जिला

वर्धा भारत की गैर सरकारी राजधानी है, क्योकि इसी के पास सेवाग्राम में भारत के कर्णधार महात्मा गाधी रहते है। महात्मा गाधी की गिरफ्तारी की खबर पाते ही वर्धा के लोग अधीर हो उठे। पर वे पूर्णरूप से शान्त रहे और उन्होने कोई तोड-फोड नही की। जब श्री दीनदयाल चूडी-वाले बम्बई से लौटे तो लोग यह सुनने के लिए कि महात्मा जी ने भारत छोडो प्रस्ताव पर क्या-क्या हिदायते दी है, हजारो की सख्या मे गान्धी चौक में इकट्ठे हो गए। श्री दीनदयाल अपना भाषण दे ही रहे थे कि पुलिस सभा-स्थल पर आ धमकी और उसने एकत्रित जनता को आज्ञा दी कि या तो वह तुरन्त शान्तिपूर्वक तितर-बितर हो जाय वरना उस पर लाठी-चार्ज किया जायगा तथा गोलिया चलाई जायगी। जनता ने पुलिस की इस धमकी का जवाब 'भारत छोडो' तथा 'इन्कलाब जिन्दावाद' के गगन-भेदी नारो से दिया। इतना ही नही लोगो ने एक स्वर से कहा। 'हम पूर्णरूप से स्वतत्र है, हम ब्रिटिश शासन को नही मानते। पुलिस हमारे कार्यों मे विघ्न डालने वाली कौन होती है ?', पुलिस ने गोली चला दी, जिसके परिणाम स्वरूप जगलू नामक एक २८ वर्षीय नवयुवक शहीद हुआ और बहुत से व्यक्ति घायल हुए। लोग पुलिस की मार खाकर भी पूर्ण रूप से अहिंसक बने रहे। वर्धा वापिस लौटने पर महात्मा गाधी उस स्थान पर गये जहा जगलू का दाह-सस्कार किया गया था और उन्होने बडी श्रद्धा एव भक्ति के साथ उसकी चिता पर पूजा के फूल चढाए।

श्री विनोबा भावे, दादा धर्माधिकारी, किशोरीलाल मशरूवाला, दीनदयाल चूडीवाला आदि प्रधान काग्रेस-कार्यकर्त्ता गिरफ्तार कर लिये गए। किन्तु विद्यार्थियो ने स्थान-स्थान पर दीवारो पर उत्साहवर्द्धक बाते लिखी तथा छपे हुए बुलेटिन घरो मे जा-जाकर लोगो को देने लगे। परिणाम-स्वरूप 'करो या मरो' का सन्देश हर व्यक्ति के पास पहुच गया। अधिकारियो ने जनता के बढते हुए जोश को कुचलने के लिए समूचे प्रदेश में १४४ धारा लगा दी तथा वर्धा शहर को फौज के अधिकार मे सौंप दिया। जो भी व्यक्ति, चाहे वह दोषी हो या निर्दोषी, अपने घर से निकलता था तो बुरी तरह से पीटा जाता था। एक दिन की बात है कि लाठियो से सुसज्जित सिपाहियो की एक लारी वर्धा पहुची। पुलिस के आतक से समूचा शहर स्मशान-सा बना

हुआ था। कुछ व्यक्ति जो ज़रूरी कामो मे इधर-उधर जा रहे थे पुलिस वालो के द्वारा पकड लिये गए और राक्षसी तरीके से पीटे गए। उनमें से कई वेहोश भी हो गए।

देवली—यहा पर भी लोगो ने नेताओ की गिरफ्तारी के विरोध मे जुलूस निकाला। पुलिस वालो ने उस पर लाठी-चार्ज किया। जनता उत्तेजित हो गई और उसने पोस्ट आफिस जला दिया तथा थाने पर धावा बोल दिया जिससे कुछ कास्टेवल घायल हुए। शहर से उठी हुई क्रांति की आग शीघ्र ही पौनार, वारवरी, वरुवर, सरगना आदि स्थानो पर भी फैल गई और लोगो ने स्थानीय डाकखानो एव थानो एव थानो के रेकार्ड भस्म कर दिये तथा लेटर वक्स तोड-फोड डाले। वारवरी में एक रेलगाडी को गिराने का प्रयत्न किया गया, किन्तु वह सफल न होसका। देवली इलाके से सामूहिक जुर्माने के रूप मे ४ हजार रुपये वसूल किये गए।

हिंगनघाट—इस इलाके के विद्यार्थियो ने भी जनता के साथ मिलकर नेताओ की गिरफ्तारी के विरोध मे वडे-वड जुलूस निकाले, सभाए की तथा अन्य प्रकार के प्रदर्शन किये। यहा पर कुल १२ व्यक्ति गिरफ्तार किये गए।

आरवी तालुका—१० अगस्त को एक विशाल जुलूस निकाला गया तथा आम हडताल रखी गई। पुलिस वालो ने काग्रेस के दफ्तर पर ताला लगा दिया। १६ मुख्य कार्यकर्त्ताओ को गिरफ्तार कर लिया तथा कुछ व्यक्तियो को वेंतो से पीटा।

आष्टी—१२ अगस्त को जब आष्टी के लोगो को नेताओ का गिरफ्तारी का समाचार मिला तो वे एक वडा जुलूस वनाकर थाने पर राष्ट्रीय झडा फहराने के लिए गए। जुलूस के आगे-आगे महिलाए थी। पुलिस-अधिकारियो ने जुलूस को थाने के सामने रोका, किन्तु जब लोग वरावर आगे वढते गये तो उन्होने लाठी एव गोलियो की वर्षा करनी शुरू कर दी। वहुत से स्त्री-पुरुष घायल हुए। कुछ नवयुवक स्त्रियो पर अमानुषिक ढग से मार पडते देखकर चुप न रह सके। उनका खून खौलने लगा तथा उनके हृदय मे प्रतिहिंसा की ज्वाला धधक उठी। वे आगे वढे और प्राणो की वाजी लगाकर पुलिस वालो पर टूट पडे। इस मुठभेड में पुलिस के ५ व्यक्ति, जिनमें एक रामनाथ मिश्र नामक सव इन्स्पेक्टर भी था, मारे गए। शेष पुलिस वाले भाग खडे हुए और थाने पर जनता का अधिकार हो गया। नवयुवको ने वडी शान से थाने पर राष्ट्रीय झडा फहराया। इस घटना में जनता के भी ६ व्यक्ति काम आए।

जव उच्च अधिकारियो को इस घटना की सूचना मिली तो उन्होने

आधी रात को सशस्त्र ब्रिटिश सैनिको को आष्टी भेजा। उन्होने आते ही लोगो को अधाधुन्ध मारा-पीटा। दिन मे उन्हे चिलचिलाती धूप मे खडा किया तथा बहुतो को वही गोली से उडा दिया। बेचारो को न तो खाने के लिए कुछ दिया गया और न पीने के लिए ही। इस प्रकार वे एक तरफ से तो धूप, प्यास एव भूख से परेशान रहे तथा दूसरी ओर गोलियो के शिकार हुए। सैनिको को इतने पर भी सन्तोष नही हुआ। उन्होने सब लोगो को इकट्ठा करके एक छोटी-सी कोठरी मे बन्द कर दिया, ठीक वैसे ही जैसे पशुओ को किसी बाडे मे बन्द किया जाता है। इस अवस्था मे बेचारो को एक माह तक रखा गया। लोगो की स्त्रियो एव बहनो व बेटियो के साथ बलात्कार भी किया गया। बाहरवालो को गाव वालो की मदद करने एव उनके साथ सहानुभूति दिखाने तक की इजाजत नही दी गई। बन्दियो पर मुकदमा चलाया गया और उनमे से ६ को फासी की सजा का हुक्म हुआ। इससे सम्पूर्ण देश मे तहलका मच गया और स्थान-स्थान से फासी की सजा के विरोध मे आवाज उठाई गई। लोगो के अनवरत परिश्रम का यह फल हुआ कि चार व्यक्तियो को फासी के स्थान पर आजीवन कारावास का दड दिया गया। अन्त मे दो व्यक्तियो को फासी पर लटका दिया गया।

वर्धा जिले मे १३७ व्यक्ति नजरबन्द और ४३४ दण्डित हुए। ३ जगह गोली चली, जिससे ७ व्यक्ति मरे और २० घायल हुए। ४०,००० रु० जुर्माना किया गया।

चांदा जिला—नेताओ पर किये गए प्रहार की खबर जब यहा वालो को मिली तो सम्पूर्ण जिले मे एक साथ विरोध-प्रदर्शन किया जाने लगा। स्थान-स्थान पर सभाए हुई तथा जुलूस निकाले गए जिनमे 'अग्रेजो, भारत छोडो' की माग की गई। लोगो मे एक अजीब जोश दिखाई पडता था। प्रदर्शन का कार्य प्राय कचहरी, थानो एव अन्य सरकारी इमारतो के सामने किया गया। अरमोहा, चिरौली, देवसरा, बरौरा, चिकनी, चादा आदि स्थानो पर सरकारी रेकार्ड जलाने का प्रयत्न किया गया। सरकार ने आन्दोलन की गति रोकने के लिए मुख्य-मुख्य व्यक्तियो को गिरफ्तार कर लिया, प्रदर्शन करने वालो को बुरी तरह से पीटा गया, गाव लूट लिये गए तथा जला दिये गए। और स्त्रियो की इज्जत लूटी गई।

चिमूर—चादा जिले का यह कस्बा सारे देश मे प्रसिद्ध हो चुका है। यहाँ की जन-सख्या केवल ६००० है। नेताओ की गिरफ्तारी की सूचना पाते ही यहा पर भी ११ अगस्त से शान्तिपूर्ण प्रदर्शन किये जाने लगे। १३ अगस्त को

नागपचमी के दिन नगर भर में प्रभात फेरी निकाली गई, जिसमें ४०० स्त्रिया एव १०० बच्चो ने भाग लिया। प्रभात-फेरी का कार्यक्रम पूर्ण रूप से नियन्त्रित एव अहिंसक था। फिर भी अधिकारियो ने नगर के सभी नाके बन्द कर दिये और प्रभात फेरी को रोक कर उस पर गोला चला दी। लोग सब-के-सब एक सच्चे अहिंसक सैनिक की भाति अपनी जान मोह छोडकर गोलियो की बौछार में वही बैठ गए। परन्तु गोली चलनी बन्द न हुई। कुछ औरतें तथा बच्चे वही मारे गए। यह देख जनता पागल हो गई और पुलिस पर टूट पडी। पुलिस के पाच व्यक्ति वही मर गए और शेष भाग गए। पुल आदि तोड दिए और पेड गिरा कर सडकें बन्द कर दी। फौज के पहुचने के पहले ही गाव के बहुत से आदमी गाव छोडकर चले गए।

१९ ता० को वरोरा के स्टेशन पर २०० सशस्त्र गोरे सिपाहियो तथा ५० हिन्दुस्तानी सिपाहियो की टुकडिया मोटरो सहित एक स्पेशल ट्रेन से उतरी। चिमूर वहा से तीस मील है। जिला मजिस्टेट जब चिमूर पहुँचा तब क्रोध से पागल हो रहा था। बेचारे गाँव वाले डरकर अपने-अपने घरो में छिप गए और दरवाजे बन्द कर लिए। सडके सूनी पडी थी। जिला मजिस्ट्रेट ने सशस्त्र फौज लेकर पहले गाव के बडे-बडे लोगो के घरो मे बलपूर्वक प्रवेश किया। उनको बाहर निकाला गया और पीटा गया। बुड्ढो और बच्चा को छोडकर सब गिरफ्तार कर लिये गए। कुल १२८ गिरफ्तारिया हुई। फिर गाँववालो से कहा गया कि वे अपने फौजी महमानो को खाना खिलाए। जो गिरफ्तार हो गए थे उनके गोदाम तोड लिये गए। फिर लूट शुरू हुई। तेल घी, चावल, आटा, बरतन आदि सभी चीजो पर हाथ साफ किया गया। सिल्क की साडिया जला दी गई। या हिन्दुस्तानी सिपाहियो को दे दी गई। गोरो ने लोगो के हारमोनियम से मनोरजन किया। बलात्कार भी हुए, परन्तु अधिकतर स्त्रियो ने एक जगह एकत्र होकर अपनी रक्षा की। गर्भवती तथा ऋतुमती स्त्रियो के साथ भी बलात्कार किये गए और उन्हे रक्त से लथपथ छोड दिया। गया। एक निर्धन की झोपडी मे अकेली स्त्री पर तो बलात्कार की हद ही कर दी गई। एक छोटी लडकी का गला घोट दिया गया। इन सब अत्याचारो की यदि विधि पूर्वक जाँच हो तो उन पर ठीक-ठीक प्रकाश पड सकता है।

यह स्थिति दो दिन तक रही। आखिर एक बडी स्त्री डाडीबाई बागदी राइफलो के बीच से होती हुई जिला मजिस्ट्रेट के पास पहुची और उसने गाव की स्त्रियो की करुण कहानी सुनाई। जिला मजिस्ट्रेट ने कहा कि यह आफत तो गाँव वालो ने स्वय बुलाई है। फिर उसने पुलिस और फौजियो को बुलाकर

स्त्रियो पर अत्याचार करने से मना किया, फिर भी अवस्था अधिक न सुधरी। इसी बीच सरकार ने गाव पर तथा आस-पास के लोगो पर एक लाख रुपया सामूहिक जुर्माना कर दिया। जुर्माने की वसूली बलपूर्वक किंतु आसानी से कर ली गई, क्योकि गाव मे केवल बेचारी स्त्रिया ही शेष रह गई थी। आदमी या तो भाग गए थे या बन्दी बना लिये गए थे।

सात हफ्तो तक चिमूर मे असभ्य तथा उद्दड सिपाहियो का राज्य रहा। इस अर्से मे उसका सम्बन्ध बाहरी दुनिया से बिलकुल कट गया था। पहले तो घटनाओ के समाचार ही बाहर नही आने दिये गए और बाद मे पुलिस और फौज के आतक के कारण किसी को वहाँ जाने की हिम्मत न होती थी।

डा० मुन्जे को १७ स्त्रियो ने स्वय आप बीती, बलात्कार तथा अत्याचारो की, कथा सुनाई। उनमे से १३ स्त्रियो के साथ तो एक से अधिक गोरे सिपाहियो ने बलात्कार किया तथा शेष चारो पर भी अत्याचार किये गए। ४००० मनुष्य गिरफ्तार किये गए। बहुत से दारोगा को घूस देने पर छूटे। करीब ७५ व्यक्तियो को सजाए दी गईं। दो जेल मे तथा सात जेल से बाहर मर गए। ३५ को आजन्म देश निकाले, १ को तेरह साल, ७ को सात साल, १८ को पाच साल तथा तीन को तीन साल कैद की सजाये दी गईं। दो दिन के अन्दर १००,००० रुपया सामूहिक जुर्माने के रूप मे बलपूर्वक वसूल किया गया। मोतीचन्द नानकचन्द पर १०,००० रुपया जुर्माना किया गया। उसने गवर्नर को तार दिया कि मेरी तो दूकान ही लूट ली गई है जिसमे १०,००० का सामान था। इस पर उसे उत्तर मिला कि जुर्माना तो वसूल किया ही जायगा। एक मनुष्य की ५०,००० रुपए तथा दूसरे की १,००० रुपये की कुल सम्पत्ति लूट ली गई। नूरा बोहरा पर २,००० रुपया तथा एक मुसलमान पर १,००० जुर्माना हुआ। ३ सितम्बर तक ८५,००० रुपया सामूहिक जुर्माना वसूल कर लिया गया। बाद मे गवर्नमेंट की नीति के अनुसार मुसलमानो का जुर्माना वापिस कर दिया गया।

चादा जिले मे ७८ व्यक्ति नजरबन्द और २४८ दडित हुए। एक जगह गोली चली, जिससे तीन मरे और १० घायल हुए।

महाकौशल

मध्यप्रान्त के ग्यारह हिन्दी भाषी जिलो को मिलाकर काग्रेस ने महाकौशल नाम का सूबा बना दिया है। वैसे तो काग्रेस-नेताओ की गिरफ्तारियो

पर ही यहाँ पर काफी उत्तेजना फैल गई थी तथा जुलूस आदि निकलने शुरु हो गए थे, परन्तु जबलपुर में गुलाबसिंह की मृत्यु के बाद जनता की रोषपूर्ण भावनाए चरम सीमा तक पहुँच गईं। इस प्रान्त के आन्दोलन का वर्णन जिलेवार नीचे दिया जाता है।

बैतूल—९ अगस्त को जिला काग्रेस के दफ्तर पर ताला पड जाने और श्री बालकृष्ण पटेल तथा बिहारीलाल पटेल की गिरफ्तारियो के बाद जनता और भी क्रुद्ध हो गई और उसने पुलिस पर पत्थर फेंके। उत्तर में पुलिस ने गोली चलाई, जिससे एक आदमी की मृत्यु हो गई। इसके बाद जनता ने पोस्ट आफिस तथा पटवारखाने के कागजात जला दिए। ऐसी ही घटनाएँ अमरावती, बघौरा तथा गन्गौना मे हुई।

१५ अगस्त को १००० मनुष्यो ने रानीपुर थाने पर आक्रमण करके सामान सहित बिलकुल जला दिया। १६ ता० को बाराखोह रेलवे स्टेशन को २५०० आदमियो ने मिल कर फूंक दिया। १७ ता० को प्राय इतने ही मनुष्य रेल की पटरियो को उखाडने घोराडोंगरी पहुँचे, जहाँ पर उनसे २००० मनुष्य और मिल गए। डिप्टी कमिश्नर भी फौजी सिपाहियो सहित वहाँ था। लोगो के लकडी की टाल में आग लगा देने पर उसने सिपाहियो को गोली चलाने की आज्ञा दी। गोली चलने पर एक मनुष्य की मृत्यु हो गई, ६ घायल हो गए तथा बहुत से पकड लिये गए।

२४ अगस्त को अमला मे रैवेन्यू इन्स्पेक्टर तथा पटवारखाने के कागजात जला दिये गए। नैया मे भी ऐसा ही किया गया। श्री बेला को जो एक प्रमुख काग्रेस-कार्यकर्त्ता थे, पीटा गया तथा उनके लडके को गोली से उडा दिया गया। किसी मनुष्य ने बैतूल शहर के एग्रिक्लचर कालेज मे आग लगा दी। अभियुक्त का पता न चलने पर २००० रुपया सामूहिक जुर्माना कर दिया गया।

धाराखोह और घोराडूंगरी के बीच इटारसी-नागपुर रेलवे लाइन की पटरियाँ उखाड दी गई। जगह-जगह पर तार काट दिये गए तथा रेल उलटने की कोशिशें की गई।

इस जिले मे ६४७ व्यक्ति गिरफ्तार और १९७ नजरबन्द किये गए। ४५२ पर मुकद्दमे चले, जिनमे १८ महीने से लेकर २० साल तक की सजाए दी गई। ३ जगह गोली-काण्ड हुए, जिनमे १२ मरे और ६ घायल हुए। ६ राजबन्दी जेल मे शहीद हुए, २४००) रु० सामूहिक जुर्माना किया गया।

होशगाबाद—९ अगस्त को जिले भर मे पूर्ण हडताल रही। जुलूस

निकाले गए तथा सभायें की गईं। ११ ता० को इटारसी के पुलिस-स्टेशन को जला डालने की कोशिश की गई। १४ ता० को लोगो ने मिलकर इटारसी के स्टेशन पर लकडी की टाल को जला डालना चाहा। यहाँ पर उनसे पुलिस की मुठभेड हुई। परिणामस्वरूप एक अग्रेज सारजेन्ट, एक सरकिल इन्पेक्टर तथा दो सिपाही घायल हुए। बाद में पुलिस ने लोगो के घरो मे जा-जाकर उन्हे पीटा। एक लडके को तो इतना पीटा गया कि वह अस्पताल मे ही मर गया।

होशंगाबाद—शहर मे पूर्ण हडताल रही और शान्ति-पूर्ण प्रदर्शन किये गए। कुछ दिन बाद लोगो ने तार काटने शुरू कर दिये। विद्यार्थियो पर तीन बार लाठी-चार्ज हुआ। ५००० रु० का सामूहिक जुर्माना किया गया।

छिकानी—नरसिंहपुर सब-डिवीजन का एक गाव है। २४ ता० को कुछ राजनैतिक कैदियो को किसी अनजान जगह ले जाये जाने की अफवाह उडने पर जनता ने एक सभा की। जनता के न हटने पर नायब तहसीलदार ने स्वय जनता पर गोली चलानी शुरू कर दी। श्री मन्साराम नामक एक व्यक्ति घटनास्थल पर ही मारा गया। दूसरे दिन इस गोली-काड के विरुद्ध फिर एक सभा की गई। सभा पर लाठी-चार्ज किया गया जिसमे दो आदमी बेहोश हो गए।

शोभापुर—शहर के एक भाग के तार काटे जाने पर ५००० रु० का सामूहिक जुर्माना किया गया। इस जिले में १४० नजरबन्द हुए ३६५ पर मुकद्दमे चले। ४ सरकारी इमारतो पर हमले किये गए। तीन जगह गोलिया चली। २ आदमी शहीद हुए। १५,००० रु० सामूहिक जुर्माना किया गया।

मडला—जिले के कॉंग्रेस नेताओ की गिरफ्तारियो पर सात दिन की आम हडताल घोषित की गई। १५ ता० की फतह दर्वाजे पर एक जन सभा मे भाषण देते हुए एक वक्ता को गिरफ्तार कर लिया गया। एक लडका जो कम्पाउड की दीवार पर खडा था, कोडो से पीटा गया। आम लाठी-चार्ज हुआ। जनता ने पुलिस पर पत्थर और ढेले फेकने शुरू कर दिए। इस पर मि० फौक्स, रिजर्व इन्स्पेक्टर ने गोली चलाने की आज्ञा दे दी। श्री उदयचन्द ने जनता को मार-पीट करने से रोकना चाहा। पुलिस ने उदयचन्द को वहा से हटने को कहा और उनके न हटने और सीना खोलकर खडे हो जाने पर पुलिस उन्हे गोली मार दी। ६ सिपाही उन्हे अस्पताल ले गए जहा वह मर गए। सम्बन्धियो की प्रार्थनाओ को ठुकराकर अधिकारियो ने श्री उदयचन्द के शव को भी उन्हे देने से मना कर दिया।

मडला शहर से प्राय तीन मील पर एक पुल तोड दिया गया। रेलवे के तार काट दिए, पटरिया उखाड दी गईं। वाभा में एक दूसरा पुल नष्ट कर दिया गया। दम्दोका में भी ऐसे ही कामो के फलस्वरूप ११ मनुष्य गिरफ्तार कर लिये गए। पिन्डोर्ग में डाक के वक्स नष्ट कर दिये गए। काजी हाऊस तोड दिया गया। शराव की दूकानो पर घरना दिया गया। व्राच पोस्ट ग्राफिस ग्रौर ग्राम-पचायत के दफ्तर फूक दिये गए। नायपुर में लाठी-चार्ज मे दो लडके घायल हो गए।

इस जिले में २५ नजरवन्द ग्रौर ५४ दण्डित हुए। ५ सरकारी इमारतो पर हमले हुए। ३ जगह गोली-काड हुए। एक व्यक्ति मरा ग्रौर ५ घायल हुए।

छिन्दवाडा—इस जिले में ८५ व्यक्ति नजरवन्द किये गए और २५ पर मुकदमे चले। लोधीखेरा, सौन्सार, ग्रौर पान्डूराना मे जन सभायें हुई तथा जुलूस निकाले गए। सरकार ने जिला कांग्रेस कमेटी का दफ्तर जला डाला।

बालाघाट—सारे जिले में पूर्ण हडताल रही। १० अगस्त की शाम को गान्वी चौक में एक विराट सभा हुई। वहुत से कार्यकर्त्ता वही गिरफ्तार कर लिये गए। शहर के हाई स्कूल की लाइब्रेरी तथा ग्रौर स्थानो के शीशे ग्रादि तोड़ डाले गए। इसके वाद वालाघाट ग्रौर पीपर झटी के वीच के तार काट दिये गए। कुल १२ गिरफ्तारियाँ हुईं। इस जिले मे १७५ नजरवन्द ग्रौर १७ दण्डित हुए। एक जगह गोली चली। एक ग्रादमी शहीद हुग्रा।

वारासिवनी—८ से २० ग्रगस्त तक शान्तिपूर्ण प्रदर्शन किये गए। १२ ग्रगस्त को शहर काग्रेस कमेटी के सभापति पकड लिये गए। इसके विरुद्ध एक विराट जन सभा हुई। २० ग्रगस्त को वारा सिवनी मे गोलीकाड हुग्रा, जिसमे एक मनुष्य मर गया तथा वहुत से घायल हुए। श्री रामलाल शर्मा की दूकान पर जनता में ग्रौर पुलिस मे मुठभेड हो गई। फलस्वरूप श्रीमती काशीवाई तथा कुछ ग्रौर काँग्रेस-कार्यकर्त्ता गिरफ्तार कर लिये गए। २० ग्रगस्त को काशीवाई कारघटोला ग्राम मे ले जाई गईं। वहा पर वह पीटी गईं। उनकी धोती फाड दी गई। १० सिपाहियो ने उनका सतीत्व नष्ट किया। उनके गुप्त ग्रगो को क्षत-विक्षत कर दिया ग्रौर ग्रन्त मे उनका सिर काट दिया। उनके २०७५ रु० के गहने पुलिस ने जब्त कर लिए। इसके उपरान्त काशीवाई के पिता को वहाँ वुलाकर उनको भी ग्रपमानित किया गया। उनकी गान्धी टोपी के टुकडे-टुकडे कर दिये गए। उसी शाम को जैन मन्दिर के पास एक शाँतिपूर्ण जुलूस पर बिना सूचना के गोली चलाई गई। एक मरा तथा १२ घायल हुए। २१ ता०

बहुत-सी गिरफ्तारिया हुईं। मजदूरो की दिन मे तीन बार हाजरी होनें लगी। स्त्रिया घर से निकलने पर थाने में बन्द कर दी गईं। कुल १२० गिरफ्तारियाँ हुईं। बारा सिवनी में १० सितम्बर तक पुलिस के सिपाहियो ने जनता पर घोर अत्याचार किये। ३००० रुपया सामूहिक जुर्माना वसूल किया गया।

दुर्ग—इस जिले मे २५० नजरबन्द और ५० दण्डित हुए। बेलोच, कुशुम और रोलट मे सरकार विरोधी प्रदर्शन किये गए। १० अगस्त को नेताओ को गिरफ्तारियो के विरोध मे बाजार मे हडताल की गई। भटग में शान्तिपूर्ण जुलूस पर पहले गोली चलाई गई और फिर लाठी-चार्ज हुआ। श्री घासीराम मडल चोटो से बेहोश होगए। इसी अवस्था मे वह बन्दी बना लिये गए। कुछ दिन बाद अस्पताल मे उनकी मृत्यु हो गई।

सागर—यह जिला काग्रेस का केन्द्र है। गढकोठा मे शान्तिपूर्ण जुलूस पर गोली चलाई गई। एक मरा तथा १५ पर इसी सम्बन्ध मे मुकदमे चले। धारा ३४ के मातहत बहुत से चालान हुए। इस जिले मे २०० नजरबन्द और ४०० दण्डित हुए।

जबलपुर—यहाँ अग्रेज विरोधी प्रदर्शन हुए। ९ अगस्त को स्थानीय नेता गिरफ्तार कर लिये गए। १० अगस्त से शहर के हाईस्कूल के लडको ने स्कूल जाना बन्द कर दिया। १४ अगस्त को विद्यार्थियो के जुलूस पर गोली चलाई गई। फलस्वरूप श्री गुलाबसिंह ने भारत के शहीदो मे नाम लिखवाया। एक पोस्ट आफिस तथा मदन महल रेलवे स्टेशन फूक दिये गए। बिजली के बल्ब फोड दिये गए। प्राय ५५० गिरफ्तारियाँ हुईं। १५० नजरबन्द रखे गये और ४०० को सजाये दी गईं।

महाकोशल के रायपुर और बिलासपुर जिलो से आन्दोलन के विषय मे विस्तार पूर्वक सूचना नही मिली। केवल इतना ज्ञात हुआ है रायपुर मे १०० व्यक्ति नजरबन्द और ७०० दण्डित हुए। दो सरकारी इमारतो पर हमले हुए। बिलासपुर जिले के नजरबन्दो की सख्या ८५ थी।

विदर्भ

विदभ प्रान्त अमरावती, बुलढाना, अकोला और यवतमाल मे विभाजित है।

अमरावती—जिले के अनेक स्थानो मे अग्रेज विरोधी प्रदर्शन किये गए। पोस्ट आफिस लूट लिये गए और रजिस्ट्रेशन कोर्ट जला दिये गए। जगह जगह तार काट दिये गए तथा थानो और शराब की दूकानो को नष्ट कर दिया गया। मौरसी मे तहसीलदार को जुलूस में सम्मिलित किया गया तथा

तहसील पर तिरगा झडा लगा दिया गया। वनौरा के थानें पर कुछ गाँवो के लोगो नें आक्रमण कर दिया। पुलिस ने गोली चलाई, जिससे पाँच मनुष्य मारे गये तथा २५ घायल हो गये। इस सम्बन्ध में तीन गाँवो पर सामूहिक जुर्माने किये गए। खानपुर में रेंजर का दफ्तर जला दिया गया। अमरावती शहर में जनता ने पोस्ट और तार के दफ्तर तथा इम्पीरियल बैंक पर अधिकार जमाना चाहा, परन्तु असफल रही। १५ दिन से विद्यार्थी हडताल पर थे। उन्होंने बिजली के बल्ब तोड दिए। पवाली मे तार काट दिये गए। वहाँ के लोगो पर सामूहिक जुर्माना किया गया। परन्तु जुर्माना वसूल करने के लिए जब वहा रेविन्यू इन्स्पेक्टर कुछ सिपाहियों को लेकर पहुचा तो लोगो ने जुर्माना देने मे इन्कार कर दिया। इस पर डिप्टी कमिश्नर स्वय पुलिस को लेकर वहाँ पहुचा, परन्तु असफल रहा। उसने राष्ट्रीय झडे को नीचे उतारना चाहा। पुलिस और जनता में मुठभेड हो गई। फलस्वरूप ५ मनुष्य वहो मर गए तथा २ बाद में मरे। कुछ मनुष्य घायल भी हुए। हाईकोर्ट में कुछ मनुष्यो पर मुकदमे चलाये गए। जज ने पुलिस का कार्यवाही की भर्त्सना की तथा जुर्माने को गैर कानूनी घोषित किया। चादपुर बाजार में एलिचपुर की ताल्लुका पुलिस ने एक जुलूस पर आक्रमण किया। जलूस के नेताओ पर पुलिस पर आक्रमण करने के अभियोग में मुकदमा चलाया गया। परन्तु निरपराध घोषित हुए इस पर पुलिस के ऊपर हर्जाने या दीवानी में मुकदमा चलाया गया। मुकदमे में जनता को जीत हुई।

अमरावतो जिले में ६०० व्यक्ति नजर बन्द और ७५० दण्डित हुए। ७ सरकारी इमारतो पर हमले हुए। ६ जगह गोली-काण्ड हुए। जिनमें १४ मरे और ४० घयल हुए।

अकोला—१९४१ में व्यक्तिगत सत्याग्रहियो के छूट जाने पर भी यहाँ भारत रक्षा कानून के मातहत युद्ध में बाधा डालने के नाम पर मुकदमे चलते रहे। अगस्त १९४२ से पहले चार प्रमुख काग्रेस-कार्यकर्त्ता जेल में ठूस दिये गए। गान्धीजी की गिरफ्तारी की सूचना पाकर लोगो ने हडतालें कर दी। सरकार ने कांग्रेस कमेटियो को गैर कानूनी घोषित कर दिया। गावो में तरह-तरह के अत्याचार हुए। यहा तक कि बच्चो और बूढो तक को रात के समय पहाडी रास्तो में घसीटा गया, लोगो को बुरी तरह पीटा गया, हाथ पैर ताड दिये गए तथा पाखाने के रास्ते पर तेज पाउडर घर दिया गया। कही-कहीं पीटनें की धमकी तथा रुपये का लालच देकर क्षमा मागनें को कहा गया। अकोला के नेशनल स्कूल, जिसको बाद में सरकार ने अपने कब्जे में ले लिया

और खामगाव की तिलकराष्ट्रीय शाला के विद्यार्थियो ने आन्दोलन में उल्लेख-नीय भाग लिया माता-पिताओ पर जोर दिया गया कि वे अपने लड़को को राजनीति से अलग रखें। अकोला की सावतराम मिल मे एक महीने तक हड़ताल रही।

२००० के लगभग गिरफ्तारिया हुई। १५० नजरबन्द और ३५० दण्डित किये गए।

मार्च तक सरस्वती मन्दिर और राष्ट्रीय स्कूल पुलिस के अधिकार में रहे। खिरपुरीके अम्बादास पटेल, श्री दौलतजी, श्रीराम राय पटेल आदि बहुत से काग्रेस-कार्यकर्त्ता बरगाव लाये गए और पीटे गए। एक महीने तक बरगाव मे फौजे पडी रहीं, जिन्होने बहुत अत्याचार किए। ५० से ऊपर आदमी गिर-फ्तार किये गए जिनमे ३० स्त्रिया भी थी। जेल मे कैदियो के साथ बहुत बुरा बर्ताव होता था। खाना बहुत खराब मिलता था। कई कैदी जेल से छुटने के बाद मर गए।

बुलढाना—इस जिले में १०० व्यक्ति नजरबन्द बनाये गए। विरोध में सजाये की गई और जुलूस निकाले गए। दो बच्चो को, जो रेलवे लाइन के पास फिर रहे थे, गोली मार दी गई। एक वही मर गया तथा एक घायल हो गया। ये बच्चे खानदेश के थे।

यवतमाल—इस जिले से भी लगभग १०० व्यक्ति नजरबन्द बनाये गए। लोगो ने शान्ति पूर्व तरीके से सभाओ और जुलूसो के द्वारा अपना विरोध प्रकट किया।

: १३ :

राजधानी में खून की होली

भारत का सदर मुकाम होने के कारण नेताओ की गिरफ्तारी की खबर दिल्ली की जनता को तुरन्त मिल गई और ९ अगस्त को सुबह १० बजे तक समूचे शहर में हडताल हो गई। दोपहर मे घटाघर के पास से एक विशाल जुलूस रवाना हुआ, जो सडको पर घूमता हुआ शाम को करीब ६ बजे गांधी मैदान मे पहुँचा और एक सभा के रूप में परिणत होगया। करीब ५० हजार नर नारियो ने इसमें भाग लिया। दूसरे दिन १० तारीख को सुबह से ही लोग घटाघर के पास इकट्ठे होने लगे। लोगो का विचार नई दिल्ली की ओर जाने का था। अधिकारियो ने अजमेरी गेट पर पुलिस और फौजी लारियाँ तैनात करके और काटेदार तार लगा कर अनेक रुकावटे खडी की, फिर भी लोग नई दिल्ली पहुँच ही गये। वहाँ की अधिकाश दुकानें पहले से ही वन्द हो चुकी थी। शेष दूकानें भी लोगो के पहुँचते ही वन्द हो गईं। शाम को पुरानी दिल्ली में एक विशाल सभा की गई जिसमें करीब एक लाख व्यक्तियो ने भाग लिया। ११ तारीख को पुन प्रात ८ बजे लोग इकट्ठे हुए। किन्तु अब पुलिसवालो ने एकत्र लोगो पर लाठी-चार्ज प्रारम्भ किया। लोग लाठी खाकर भी तितर-वितर न हुए और एक जुलूस के रूप में कोतवाली की ओर बढने लगे। प्रान्तीय काग्रेस कमेटी के सदस्य श्री हकीम खलीलुलरहमान, जो जुलूस के नेता थे, गिरफ्तार कर लिये गए। अपने प्रिय नेता की गिरफ्तारी से लोग क्षुब्ध हो उठे और आगे की पक्ति में खडे हुए एक नवयुवक ने सोडावाटर की एक बोतल फेक दी, जिससे डिप्टी कमिश्नर की आँख पर चोट आई। फिर क्या था ? पुलिस एव फौज वालो को खुलकर खेलने का मौका मिल गया और उन्होंने लोगो पर गोली चलाना प्रारम्भ कर दिया। फलस्वरूप एक व्यक्ति तुरन्त मर गया तथा अनेक घायल हुए।

इस घटना ने लोगो के क्रोध को प्रज्ज्वलित कर दिया। फलत उन्होंने टेलीग्राफ तथा टेलीफोन के तार काटना शुरू कर दिया। पुलिस वालो ने इस

सम्बन्ध में बहुत से व्यक्तियो को गिरफ्तार कर लिया, किन्तु फिर भी तोड़-फोड़ का काम बन्द नही हुआ। लोगो का एक जत्था म्युनिसिपल आफिस पहुँचा। उसने सेक्रेटरी को दफ्तर बन्द करने के लिए कहा। परन्तु उसने लोगो की बात को ठुकरा दिया। लोग उत्तेजित हो गए और उन्होने आफिस मे आग लगा दी। पुलिस घटनास्थल पर आई और गोली चलाने लगी। लोगो ने दो आग बुझाने के इंजिनो और एक आग बुझाने की मोटर-साइकिल को आग लगाकर नष्ट कर दिया।

फतेहपुरी के पास गोरे सैनिकों ने जनता पर गोली चलाई, जिससे दो व्यक्ति घटनास्थल पर मारे गए तथा बहुतो के गहरी चोटे आईं। फिर तो समूचे शहर में तोड़-फोड़ शुरू हो गई। पीली कोठी और क्वीन्स रोड पर उसका विशेष प्रकोप रहा पैट्रोल-पम्प जला दिये गए। शहर के सबसे बड़े रेलवे क्लीयरिंग अकाउन्ट्स आफिस पर भी हमला किया गया और उसे जलाकर नष्ट कर दिया गया। पुलिस इन्सपेक्टर ने एक व्यक्ति पर गोली चलाई। लोग इन्सपेक्टर पर टूट पड़े और उसे वही खत्म कर दिया। इन्कमटैक्स आफिस भी लोगो की क्रोधाग्नि का शिकार हुआ।

पहाड़गंज के पास अंग्रेजी फौज के बैरिक पर हमला किया गया। फौजियो ने भागकर अपनी जान बचाई। शाम को पाँच से सात बजे के बीच में करीब १२ सरकारी स्थानो को जला दिया गया। पुलिस एव फौज ने भी स्थान-स्थान पर लोगो पर गोली चलाई। रात को समूचे शहर में पूर्ण अंधकार रहा क्योंकि बिजली के तार काट दिये गए थे और बल्व फोड़ दिये गए थे। दूसरे दिन सारे शहर पर फौज और पुलिस का अधिकार हो गया। स्थान-स्थान पर फौजी एवं पुलिस के सिपाही तैनात कर दिये गए। फिर भी दोपहर में लोगों के एक जत्थे ने पहाड़गंज के पोस्ट आफिस को जला डाला। फौजियो ने उस इलाके में कई बार गोलियाँ चलाईं, जिससे काफी आदमी मारे गए और बहुत से घायल हुए। जनता की रिपोर्ट के अनुसार १३ अगस्त तक करीब १५० व्यक्ति मारे गए जब कि सरकार के कथनानुसार केवल ४४ व्यक्ति मारे गए। घायलो को इरविन अस्पताल में भर्ती किया गया, किन्तु वहाँ के अधिकारियो ने उनके साथ बड़ा व्यवहार किया। जिन घायलो को खून का इंजेक्शन देना अत्यन्त जरूरी समझा था उनको भी उससे वंचित रखा गया। विद्रोही उचित चिकित्सा के पात्र नही समझे गए।

९ अगस्त से ३० सितम्बर तक की घटनाओ की जो रिपोर्ट हमें मिली है, उसका सार हम यहाँ दे रहे है—

ए० जी० सी० आर० ऑफिस के १२५ क्लर्कों ने सरकारी नौकरी से स्तीफा दे दिया।

२० अगस्त को जनता ने सप्लाई डिपार्टमेन्ट के चेक विभाग को काफी अश तक जला डाला।

दिल्ली क्लाथ मिल के प्रधान कैमिस्ट श्री एम० एम० शाह ने स्तीफा दे दिया। उनके आदर्श को लेकर कुछ नीचे के कर्मचारियो ने भी अपनी नौकरी छोड दी।

दिल्ली क्लाथ मिल तथा बिड़ला मिल में पूर्णरूप से हडताल रही। अधिकारियो को मिलें बन्द करनी पडी।

स्कूल और कालेजो के छात्र-छात्राओ ने आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया। आन्दोलन सम्बन्धी काफी बुलेटिन प्रकाशित किये गए और जनता मे बाँटे गए। लडकियो ने वाइसराय की कौंसिल के सदस्यो के मकान पर पिकेटिंग की। उन्होने श्री अणे की सायकालीन पार्टी को विफल बनाया। अतिथियो को मकान के पीछे के दरवाजे से अपने घर लौट जाना पडा। सरकारी कर्मचारियो को आफिस जाने से रोका गया। उनके गुलामी के चिह्न टोप एव नकटाई उतरवा लिये गए।

कुछ विद्यार्थियो ने पुलिस को अच्छा चकमा दिया। उन्होने यह अफवाह फैला दी कि नई दिल्ली में एक सभा होगी जिसमें वाइसराय की कौंसिल के सदस्य अणे एव सरकार महोदय के भाषण होगे। अत पुलिस ने सभा मे लोगो को एकत्र होने से नही रोका। सभा मण्डप में एक विशाल जन-समूह इकट्ठा हो गया। जब सभामण्डप खचाखच भर गया तो एक उत्साही विद्यार्थी हाथ में एक घटी लिये हुए प्लेटफार्म पर पहुँचा। उसने अपनी जेब में से तिरगा झडा निकाल कर सभामण्डप में फहराया। राष्ट्रीय नारे लगाये तथा भाषण देना प्रारम्भ किया। इतने में पुलिस भी वहाँ आ पहुँची और सभा विसर्जित हो गई।

९ सितम्बर को धारा १४४ लगी हुई थी, किंतु फिर भी जनता ने एक जुलूस निकाला जो शहर की गलियो मे घूमा। शहर में पूर्ण हडताल रही। मुस्लिम भाइयो ने भी इसमें पूरा सहयोग दिया और चादनी चौक की सभी मुस्लिम दूकानें बन्द रही।

१४ सितम्बर को कुछ छात्राओ ने थोडे से मजदूरो को साथ लेकर असेम्बली भवन में पिकेटिंग किया। सबके हाथ मे राष्ट्रीय झडे थे। पुलिस ने उन पर लाठी-चार्ज किया, किंतु वे लाठी की मार खाकर भी डटे रहे। २०

व्यक्तियो को गिरफ्तार कर लिया गया। शेष को हटा दिया गया। आठ महिलाए लाठी की बौछार में वही बैठ गई और उन्होने पुलिसकी आज्ञा मानने से इन्कार कर दिया। शाम को असेम्बली के खत्म होने पर लडकियो एव स्त्रियो ने 'वेटिंग पुलिस' के सिपाहियो को घेर लिया। इसी दिन पुरानी दिल्ली में ११ गदहो का एक जुलूस निकाला गया। ११ गदहे वाइसराय की कौसिल के ११ भारतीय मेम्बरो के प्रतीक थे, जिनको अग्रेज गृह-सदस्य मि० मैक्सवेल हाक रहे थे। पुलिस ने इस जुलूस पर छापा मारा और प्रदर्शनकर्त्ताओ एव ११ गदहो को गिरफ्तार कर लिया। लोगो ने तोड-फोड शुरू की, जिस पर कुछ व्यक्ति और गिरफ्तार कर लिये गए।

इस प्रात के आन्दोलन की विशेषता यह थी कि उसमे स्त्रियो एव पढने वाली लडकियो ने अगुआ भाग लिया। पुलिस वालो की आखो मे धूल झोककर तथा प्रेस-कानून को तोडकर लगातार प्रेसो एव साइक्लोस्टाइल द्वारा बुलेटिन प्रकाशित होते रहे।

पिकेटिंग करते हुए २०० व्यक्ति गिरफ्तार कर लिये गए तथा अन्य तरीको से भी सैकडो गिरफ्तारिया की गई। जेल मे इन व्यक्तियो के साथ बडी सख्ती की गई। ३० सितम्बर को जेल के अन्दर राजनैतिक कैदियो पर सख्त लाठी-चार्ज किया गया। सब राजनैतिक कैदियो को, स्वास्थ्य सामाजिक स्थिति आदि का कुछ खयाल न रख कर, 'सी' क्लास में रखा गया। लाहौर-जेल मे स्त्री-वन्दियो तक के साथ दुर्व्यवहार किया गया। उन्हे घसीटा गया और अज्ञात स्थान मे वन्द कर दिया गया।

अखबारो पर कठोर सेंसर लगा दिया गया। हिन्दी के दैनिक पत्र 'वीर अर्जुन' तथा उसके प्रेस से ३ हजार रुपये की जमानत मागी गई। दिल्ली प्रातीय काग्रेस कमेटी की सयुक्त मत्री श्रीमती अरुणा आसफअली एव श्री जुगलकिशोर खन्ना तथा श्री सी० के० नायर को खास आर्डिनेन्स निकाल कर फ़रार घोषित किया गया और उनकी सब सम्पत्ति जब्त कर ली गई।

अक्तूबर और नवम्बर महीनो मे भी प्रभात फेरियो और जुलूसो का निकलना जारी रहा। कई विशेष दिवस मनाये गए। हडताले की गई। म्युनिसिपल टाउन हाल, रिजर्वबैंक और विभिन्न कालेजो पर पिकेटिंग की गई। पेपर करेन्सी वितरण की गई। इस प्रकार सरकारी पाबन्दियो को तोडकर आन्दोलन जारी रखा गया।

सरकार ने भी अपना दमन-चक्र जारी रखा। स्त्रियो के जुलूस पर लाठी-चार्ज किया गया, जिससे २ मर गई और बहुत-सी घायल हुई। पुलिस

ने अनेक घरो पर छापे मारे और उनकी तलाशिया ली। लगभग २०० गिरफ्तारिया हुईं, जिनमें स्त्रियो की सख्या भी काफी थी। प्रान्त के प्रसिद्ध काग्रेस कार्यकर्त्ता श्री नायर भी गिरफ्तार कर लिये गए। कइयो पर मुकदमे चले और विभिन्न सजाए दी गईं।

तोड-फोड—देहातो में भी तार काटे गए। बिजवासन और गुडगांव के बीच बी० बी० एण्ड० सी० आई० रेलवे की एक मालगाडी गिराई गई। चादनीचौक के सब-पोस्ट आफिस का कुछ हिस्सा तोड-फोड डाला गया। दिल्ली-करनाल लाइन पर एन० डब्ल्यू० रेलवे के बादली स्टेशन पर रात को धावा बोला गया तथा तमाम रेकार्ड जला दिये गए। चांदनी चौक में रेलवे बुकिंग आफिस के पास एक बम फटा। दिल्ली-रोहतक लाइन पर एन० डब्ल्यू० रेलवे के घेवरा स्टेशन पर हमला किया गया और तमाम रेकार्ड फूक दिये गए। बिडला मन्दिर में भी एक विस्फोट हुआ। नई दिल्ली में टेलीग्राफ एव टेलीफोन के काफी तार काट डाले गए, जिससे बहुत-से स्थानो मे टेलीग्राफ एव टेलीफोन का काम बन्द रहा।

: १४ :

अजमेर-मेरवाड़ा

भारत के अन्य प्रान्तो की भाँति अजमेर-मेरवाडा ने भी देश की आजादी के इस युद्ध में अपना योग दिया। १ अगस्त को अजमेर-मेरवाडा के काग्रेस-कार्यकर्त्ताओ ने एक सभा की तथा काग्रेस कार्य समिति द्वारा अपने वर्धा अधिवेशन में पास किये गए 'भारत छोडो' प्रस्ताव को दोहराया। अधिकारी पहले ही सतर्क थे। वे आदोलन को शुरू में ही कुचल डालना चाहते थे।

९ अगस्त को बम्बई में नेताओ की गिरफ्तारी होते ही उन्होने तुरन्त अजमेर, ब्यावर, केकडी आदि स्थानो के दर्जनो खास-खास कार्यकर्त्ताओ को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने ये गिरफ्तारियाँ करने मे वडी मनमानी की। चीफ कमिश्नर ने पुलिस को खाली वारण्ट दे दिये थे, जिनमें नाम भरकर गिरफ्तार करना पुलिस के हाथ में छोड दिया गया था। नेताओ पर प्रहार करने के बाद पुलिस की दृष्टि काग्रेस-कमेटियो एव खादी-भडारो की ओर गई। तमाम काग्रेस-कमेटियाँ गैर-कानूनी घोषित कर दी गईं और उनके कार्यालयो पर पुलिस का कब्जा हो गया। अजमेर और ब्यावर के खादी-भण्डारो, हरमाडा के खादी विद्यालय, औषधालय एव पुस्तकालय, अजमेर के ग्रामोद्योग-सघ, हटूंडी के गाधी आश्रम आदि सस्थाओ पर पुलिस ने छापा मार कर अपना अधिकार जमा लिया और उनकी करीब १५ हजार की सम्पत्ति नीलाम कर दी। इस प्रकार पुलिस आतक का साम्राज्य स्थापित करना चाहती थी, किन्तु स्कूलो एव कालेजो के विद्यार्थियो ने हडताल करवाई तथा जुलूस निकाले। कुछ विद्यार्थी गिरफ्तार कर लिये गए।

राजनैतिक वन्दियो के साथ जेल में तरह-तरह की सख्तिया की गईं। नजरवन्दो को छोटे-खराव बैरको में रखा गया। वन्दियो को न तो अच्छा एव पर्याप्त भोजन दिया गया, न पहनने-ओढ़ने के लिए पर्याप्त कपडे। सर्दी वेचारो को ठिठुर-ठिठुर कर वितानी पडी। उनका बाहरी जगत से एकदम सम्बन्ध-विच्छेद कर दिया गया। उन्हे न तो पढ़ने के लिए अखबार दिया गया

न अपने सम्बन्धियो से मिलने की इजाजत दी गई और न पत्र ही लिखने दिये गए। यही नही, जो व्यक्ति जेल की सख्तियो के कारण बीमार पड गए, उनकी ठीक देखभाल नही की गई और न उनका उचित रूप से इलाज ही करवाया गया। नाजुक स्थिति में भी बन्दियो को पैरोल पर नही छोडा गया।

महात्मा गाधी के उपवास की खबर बन्दियो को मिली तो वे क्षुब्ध हो उठे। उन्होने अपने प्रिय नेता के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करने के लिए अनशन किया। अधिकारी लोग इसे भी सहन नहीं कर सके। भोजन न करने के अपराध में उन पर मुकद्दमे चलाये गए और सख्त कैद की सजाये दी गई। जुलाई १९४३ में सरकार ने नजरबन्दो से अगूठे के निशान लेने का हुक्म निकाला। इन्कार करने पर कइयो को मुकद्दमे चलाकर सजाए दी गई। बाद में पुलिस वालो ने जबर्दस्ती अगूठे के निशान लिये। जेल सुपरिण्टेण्डेण्ट के अपमानजनक व्यवहार के विरोध में सुरक्षाबन्दी श्री रमेशचन्द्र व्यास ने तीन सप्ताह तक भूख हडताल की। सुपरिण्टेन्डेण्ट के खेद प्रकट करने पर हडताल खत्म हुई, किन्तु स्थानीय सरकार ने भूख हडताल करने के अभियोग मे श्री व्यास पर मुकद्दमा चलाया। इसके अलावा श्री मूलचन्द असावा तथा बालकृष्ण कौल को भी उपवास करने के अपराध में क्रमश १५ दिन एव दो मास कैद की सजाए दी गईं। उन्होने जेल अधिकारियो की मनमानी का विरोध किया था।

करीब एक वर्ष बाद १९४३ में सरकारने अपनी नीति कुछ बदली और बन्दियो को बिना शर्त छोडना आरम्भ कर दिया। हॉ, रिहाई के बाद प्रत्येक व्यक्ति पर कुछ-न-कुछ पाबन्दी अवश्य लगा दी जाती थी। कुछ व्यक्तियो को छूटने के बाद ४८ घटो के अन्दर-अन्दर अजमेर-मेरवाडा से बाहर चले जाने का हुक्म दिया गया। कुछ व्यक्तियो पर पाबन्दी लगाई गई कि वे मोटर इस्तेमाल न करे, रेडियो न रखें, आपस में न मिले तथा बिना पुलिस की इजाजत के अपने शहर से बाहर न जावे। इन पाबन्दियो के कारण छूटे हुए नजरबन्दो के लिए अपना साधारण काम-काज करना भी कठिन हो गया। कुछ व्यक्तियो ने उन पाबन्दियो की अवहेलना की जिससे उन पर पुन मुकद्दमे चलाये गए और उन्हे कडी सजाएँ दी गईं। श्री मूलचन्द असावा और श्री गोकुललाल असावा को अजमेर म्युनिसिपल क्षेत्र से बाहर न जाने का प्रतिबन्ध तोडने के अपराध में चार महीने की सख्त कैद तथा २००) रुपए जुर्माने की सजा दी गई।

: १५ :

सिन्ध प्रान्त

क्षेत्रफल	४८१३६ वर्गमील	जनसख्या	४५३५००८
गिरफ्तारिया	२४०० से अधिक	नजरबन्द	२००
सजायाफ्ता	१४००	बेंत की सजा	१००

सिन्ध एक छोटा-सा प्रान्त है जो सन् १९३६ में बम्बई प्रान्त से अलग हुआ है। इसमें लगभग ७० प्रतिशत मुस्लिम और ३० प्रतिशत हिंदू, ईसाई, सिख तथा अछूत रहते है। हिन्दू जनता अधिकतर बडे-बडे शहरो में बसी हुई है और मुस्लिम देहातो मे। सिन्ध के मुसलमान सैयद, बलोची, मीर इत्यादि फिरको में बटे हुए हैं और उनमें आपस मे काफी चलती रहती है। निस्सन्देह मुस्लिम लीग के बढते हुए प्रभाव ने इन्हें एक झडे के नीचे इकट्ठा होने मे काफी मदद का है। स्वभाव से यहा का मुसलमान काफी ब्रिटिश विरोधी है, पर मुस्लिम लीग के बढते हुए प्रभाव के कारण वह खुल कर किसी विरोधी आन्दोलन मे नही पडता। हूरो का उत्पात ब्रिटिश विरोधी भावना से ही उत्पन्न हुआ है।

सन् १९४० व ४१ के व्यक्तिगत सत्याग्रह मे काग्रेस हाई कमाड ने सिन्ध की विशेष स्थिति को ध्यान मे रखते हुए वहा के काग्रेसजनो को व्यक्तिगत सत्याग्रह करने से मुक्त कर दिया था, पर सन् १९४२ के खुले विद्रोह मे कोई ऐसी पाबन्दी असम्भव थी। सिन्ध के आन्दोलन में विद्यार्थियो का महत्त्वपूर्ण हिस्सा रहा। ९ अगस्त को काग्रेस-नेताओ की गिरफ्तारी के फलस्वरूप कराची तथा अन्य दूसरे शहरो मे हडतालें रही, जिनमे विद्यार्थियो ने और विशेष कर छात्राओ ने बहुत सक्रिय भाग लिया। वे बहुत बडी सख्या मे स्कूल-कालेजो से निकलकर विरोध प्रदर्शनो मे शामिल हुए। ब्रिटिश नौकरशाही न इसका उत्तर लाठियो के प्रहारो से दिया। पुलिस ने स्वराज भवन से काग्रेस का झडा उतार लिया और दफ्तर पर कब्जा कर लिया। शहर में कितने ही दिनो तक हडताल रही और सारे प्रमुख बाजार कराची माल मडी और रुई के बाज़ार सहित एक हफ्ते से अधिक दिनो तक बन्द रहे। शहर मे चारो ओर

रोजाना प्रभात फेरिया निकाली गईं और रामबाग और ईदगाह पर कई सामूहिक सभाए की गईं। पुलिस ने भयकर लाठी-चार्ज किया, लेकिन फिर भी काफी तादाद में लोग इकट्ठे हुए।

कराची—प्रारम्भ के कुछ हफ्तो तक कराची के प्राय सारे ही स्कूल और कालेज बन्द रहे। १०, ११, १२ अगस्त को विद्यार्थियो तथा जनता के बडे-बडे जुलूस निकले। पुलिस ने इन जुलूसो पर लाठी-चार्ज किये जिनके कारण कितने ही आदमी जख्मी हुए। अनेक निर्दोष व्यक्ति भी, जिनका जुलूस से सम्बन्ध न था, पुलिस के रोष के शिकार बने। पुलिस के सिपाहियो ने विश्रान्ति-गृहो, क्लबो वाचनालयो इत्यादि जगहो में घुस-घुस कर निर्दोष व्यक्तियो को मारा-पीटा और गिरफ्तार कर लिया। इस पर विद्यार्थियो का रोष और भी बढा। उन्होने उन स्कूलो पर पिकेटिंग किया जो इस समय भी खुले हुए थे। एन० जे० हाई स्कूल और चर्च कालेज पर पिकेटिंग हुआ। क्वीस एलेक्ज़ेंड्रिया कालेज में विद्यार्थियो को केवल इसलिए नही जाने दिया गया कि उन्होने 'भारत छोडो' के बिल्ले लगा रखे थे।

सरकारी-दमन तथा पुलिस के प्रहारो से बचने के लिए लोगो ने नवीन तरीके अपनाये। रात को १० बजे के बाद अपने घरो के ऊपर लाग खडे होकर काग्रेस-नारे लगाते थे। साइकिलो पर लोगो ने जुलूस निकाले जिससे पुलिस वालो को उन्हे पकडने के लिए काफी तेज भागना पडता था। साइकिलो पर चढे हुए यह आजादी के सैनिक राष्ट्रीय गीत गाते और राष्ट्रीय नारे लगाते विराध-प्रदर्शन करते थे। विदेशी कपडो की भी कई जगह होली जलाई गई। विद्यार्थी जाने वालो के हैट और टाई माग लेते थे और उन्हे किसी पब्लिक चौराहे पर जा कर जलाते थे। सरकारी अफसरो के पास सरकारी बन्द लिफाफो के जरिए काग्रेस बुलेटिन काफी मात्रा में भेजे गए। कितने ही दिनो तक रिजर्व बैंक पर भी पिकेटिंग किया गया। कराची के प्रमुख व्यापारियो ने अपनी सभाओ मे सरकारी नीति की कडी आलोचना की।

शहर की बसो और ट्रामो को कई रोज तक रोका गया। एक ट्राम-कार मे तो आग लगा दी गई। कितने ही लोगो ने बसो और ट्रामो पर बिना किराये के सफर किया। टेलीफोन के तारो तथा डाकखानो के लेटर बक्सो को भी कितनी बार क्षति पहुँचाई गई। रेलवे के डिब्बो को भी कितनी बार क्षति पहुचाई गई। रेलवे के डिब्बो को भी क्षति पहुंची और कराची से मतीर स्टेशन

को जाने वाली कई स्पेशल गाडिया, जिनमे फौजी सिपाही थे, रोकी गईं। कराची जिले मे लगभग ३ माह तक किसी-न-किसी रूप मे आन्दोलन चलता रहा।

हैदराबाद—प्रारम्भ मे शहर मे हडताल रही। विद्यार्थी स्कूल और कालेजो को छोड़ कर चले आये और मेडिकल कालेज के लगभग ३० विद्यार्थियो को काग्रेस-आन्दोलन मे भाग लेने के फलस्वरूप कालेज से निकाल दिया गया। आन्दोलन का प्रारम्भिक जोश धीमा पड जाने के बाद हर महीने दो चार विशेष दिवस मनाये जाते थे। ९ नवम्बर को कौमी झडे को सलामी देने का प्रयत्न किया गया। पुलिस ने शुरू से ही लोगो को पकडना शुरू कर दिया। फिर भी लोगो ने इधर-उधर प्रभात फेरिया निकाली। पुलिस इतनी बौखला गई कि सडको पर जो आदमी उसे खादी की टोपी और कुर्ता पहने हुए दिखता था वह उसे पकड़ लेती थी। कितने ही लोगो को सजाए दी गई, उन पर जुर्माने किये गए और कुछ को तो बेत भी लगाये गए।

हैदराबाद मे दूसरी बार कालेज खुले, तब भी विद्यार्थियो की तादाद बहुत कम थी, हालाकि सरकार ने विद्यार्थियो तथा उनके घर वालो को धमकाने के काफी प्रयत्न किये थे।

२१-११-४२ को आजाद पार्क मे लोगो ने एक बहुत बडा काग्रेस जलसा करने का प्रयत्न किया। पुलिस घटनास्थल पर पहुँची और उसने लोगो को तितर-बितर होने की चेतावनी दी। कई लोग पकड लिये गए और शेष बिखर गए। पर औरतो ने जाने से बिलकुल इन्कार कर दिया और बराबर काग्रेस के नारे लगाती रही। विद्यार्थियो ने यहा के मेडिकल कालेज पर पिकेटिंग किया। वहा के अध्यापको तथा चपरासियो ने विद्यार्थियो के साथ बुरा व्यवहार किया, जिससे उनमे जोश व रोष की मात्रा फैल गई। इस प्रकार दिसम्बर तक हैदराबाद मे किसी-न-किसी रूप मे आन्दोलन चलता ही रहा।

शिकारपुर—इस जिले मे हडताल और विरोध-प्रदर्शन के अतिरिक्त तोड-फोड के काम काफी अधिक हुए। शिकारपुर सिविलकोर्ट मे अग्नि-काण्ड हुआ और सक्खर ज़िले के गरियासीन डाकखाने मे आग लगाई गई। नवाजशाह मे मुख्तियारकार के दफ्तर मे आग लगाई गई। इस प्रकार की खबर लरकाना, दादू व जैकोबाबाद से भी आई।

दमन—अगस्त के पहले दो सप्ताहो मे हैदराबाद में लगभग ४०० कार्यकर्त्ता पकडे गए जिसमे आधे से अधिक औरतें थी। सिन्ध पुलिस ने स्त्रियो

के साथ बडा ही अमानुषिक व्यवहार किया। उन्हे पकड कर आधी रात के करीब बाहर दूर जगलो में छोड आया जाता था।

दादू शहर में स्कूल के विद्यार्थियो ने एक प्रभात फेरी निकाली। पुलिस ने प्रारम्भ मे १६ गिरफ्तारिया की। उनमें से १० को एक-एक साल की सजा दी गई। बाकी ६ लडको के बडी निर्दयता से कोडे लगाये गए। जब काफी खून बहने लगा और वे मूर्छित होकर गिर पडे, तब उनको छोडा गया।

नवाबशाह मे भी इस प्रकार की घटनाए हुई। तीन स्वयसेवक, जो शराब की दूकान पर पिकेटिंग कर रहे थे, पकड लिये गए और उनको कोडे मारने की सजा दी गई। एक हिन्दुस्तानी सिपाही जब उनको कोडे मार रहा था, तो उसी समय एक यूरोपियन फौजी अफसर अपने बगले से निकला और उस सिपाही को हल्के कोडे लगाने के कारण सजा दी। उसने सिपाही के हाथ से कोडा छीन कर स्वय मारना शुरू किया और बडी निर्दयता के साथ उन स्वयसेवको को पीटा।

सक्खर—प्रारम्भ मे हडताल हुई। गान्धी-जयन्ती के दिन लोगो ने एक जुलूस निकालने का प्रयत्न किया। पुलिस ने शुरू मे ही लगभग ३०० आदमी गिरफ्तार कर लिये, जिन्हे शाम को छोड दिया गया। उनमें से कितने ही नौजवानो को पीटने के बाद छोडा गया। इससे लोगो का रोष काफी बढ गया और कुछ लोगो ने टुकडियो में विभाजित होकर सक्खर-रोहरी रेलवे लाइन की पटरियाँ उखाड दी। पुलिस अधिकारियो ने इस घटना का पता लगाने के लिए लोगो को बडी निर्दयता से पीटा और एक को तो बर्फ के साथ बाधा। कितने ही लोगो को पुलिस ने हिरासत मे रखकर तरह तरह की यातनाए दी। पुलिस की इन ज्यादतियो के फलस्वरूप सक्खर मे तोड-फोड के कार्य हुए। दो सैकिन्ड क्लास के डिब्बो मे आग लगाई गई और मालगोदाम को जलाने का प्रयत्न किया गया। कुछ कपास की गाठे भी जलाई गई। सक्खर म्युनिसिपल बोर्ड के स्कूल मे भी आग लगा दी गई जिससे उसके सारे कागज जल गए।

शिकारपुर, सक्खर और जैकोबाबाद मे कई बार टेलीफोन के तार काटे गए। सक्कर स्टेशन पर अग्नि-काड के कारण एक लाख से अधिक फौजी सामान की क्षति पहुची। शिकारपुर मे दो-तीन माह तक कालेज बन्द रहे। और अन्य कालेजो पर पिकेटिंग होती रही। २८ नवम्बर को दो काग्रेस स्वयसेवक सिटी मजिस्ट्रेट की अदालत मे घुसे और उन्हे अपनी कुर्सी छोडने का आदेश दिया। पुलिस के आने से पहले ही स्वयसेवक बाहर हो गए। दो विद्यार्थियो को कालेज पर पिकेटिंग करने के फलस्वरूप एक साल की सजा हुई।

सिन्ध मे आन्दोलन के अधिक व्यापक और उग्र होने के उपयुक्त कारण मौजूद नही थे। बहुसख्यक मुसलमानो को आन्दोलन से किसी प्रकार की हम-दर्दी न थी। सिन्ध में किसी प्रकार का साम्प्रदायिक झगडा नही हुआ। यह इस बात का सुबूत है कि यहाँ के मुस्लिम ब्रिटिश विरोधी अवश्य है।

सिन्ध में इस आन्दोलन के सम्बन्ध में २४०० से अधिक गिरफ्तारिया हुईं और १४०० से अधिक को सजाए दी गईं। लगभग २०० नजरबन्द किये गए। १०० व्यक्तियो को बेतो की अमानुषिक सजा दी गई।

: १६ :

सीमा प्रान्त

सीमा प्रान्त का भारतीय राजनीति में एक निराला और महत्त्वपूर्ण स्थान है। ब्रिटिश साम्राज्यशाही, काग्रेस और मुस्लिम लीग तीनो ही के लिए इस प्रान्त की अपनी अहमियत है और इसी कारण तीनो की इस प्रान्त मे गहरी दिलचस्पी है। सीमाप्रान्त में ५० प्रतिशत पठान रहते है। इसके उत्तर-पश्चिम और उत्तर पूरब में भी पठानो की ही बस्ती है। इन इलाको का कबायली इलाको के नाम से पुकारा जाता है। कबायली जातियो में नौकरशाही की गहरी दिलचस्पी है। ब्रिटिश नौकरशाही उनमें काफी तोड-फोड करती रही है। इन इलाको को ब्रिटिश साम्राज्यशाहा ने अपने सैनिक खेल व ट्रेनिंग का अखाड़ा बनाकर रखा है। सीमा प्रान्त की सरकार को उनमे दखल देने का अधिकार नही है। अब तक उन पर सीमा प्रान्त के गवर्नर की सीधी देख-रेख थी। किन्तु केन्द्र मे अन्त कालीन सरकार बन जाने की स्थिति मे परिवर्तन हुआ है। भारत सरकार के जिस विभाग का इन इलाको से सम्बन्ध था, वह प० जवाहरलाल नेहरू के हाथ मे आ गया है। इसके फलस्वरूप ब्रिटिश साम्राज्यशाही ने कबायली लोगो और भारतीय राष्ट्रीयता के बीच जो दीवार खडी कर रखी थी, वह टूट गई है। प० जवाहरलाल नेहरू और सीमात गांधीजी ने अभी हाल ही मे इन इलाको का दौरा किया था। उनके खिलाफ भी प्रदर्शन हुए, किन्तु उनके पीछे वही साम्राज्यशाही का छिपा हाथ काम कर रहा था।

काग्रेस की सीमा प्रान्त मे गहरी दिलचस्पी है, क्योंकि सारे भारतवर्ष में केवल यही एक ऐसा प्रान्त है जहाँ पर लगभग ९५ प्रतिशत मुसलमान रहते है और जो काग्रेस द्वारा शुरू किये गए भारतीय आजादी के आन्दोलन में पूर्ण रूप से सम्मिलित हुए है। सन् १९३० व ३२ के राष्ट्रीय आन्दोलनो में सीमाप्रान्त ने एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया। सन् १९३० में पेशावर में गोली चली और पठानो ने बडी दिलेरी के साथ सीना खोलकर मशीनगनो की गोलियो का मुकाबला किया। अर्थात् पेशावर की भूमि इन देशभक्त पठानो

के खून से रंगी गई। स्वभाव से पठान सीधा और साफ दिल होता है। ज्यादा हेर-फेर की बात नही जानता। वह मित्र भी अच्छा होता है और शत्रु भी। सन् १९३० से सीमा प्रान्त के पठानो ने कांग्रेस-नेतृत्व को स्वीकार किया और तब से बराबर वे कांग्रेस नेतृत्व के अधीन आजादी की हर लडाई में शमिल रहे है। नौकरशाही ने इस प्रान्त मे कांग्रेस की बढती हुई शक्ति को नष्ट करने के अनेक प्रयत्न किये पर वह विफल रही। खान-बन्धुओ ने जीवन में एक नई स्फूर्ति, नया दृष्टिकोण और नई आकाक्षा पैदा कर दी है। दिलेर पठानो ने कांग्रेस का अहिंसा का पाठ अच्छी तरह सीख लिया है और उसकी आश्चर्यजनक शक्ति को स्वीकार करते है।

पिछले कुछ सालो से मुस्लिम लीग के नेतृत्व ने भी सीमा प्रान्त के मामले मे गहरी दिलचस्पी दिखाई, क्योकि अपने को मुसलमानो का नुमाइन्दा साबित करने के लिए यह आवश्यक होगया कि वह सीमा प्रान्त के पठानो मे अपना प्रभाव जमाये। सीमा प्रान्त पर कांग्रेस का प्रभाव होना उसके लिए असहनीय था, क्योकि इस अखड सत्य के होते हुए वह अपने दावे को मजबूती से पेश नही कर सकता। इस कार्य में ब्रिटिश नौकरशाही ने उसे काफी मदद भी दी। सन् १९४१ मे होने वाले व्यक्तिगत सत्याग्रह के प्रति ब्रिटिश नौकरशाही की अजीब नीति रही। हजारो पठानो ने व्यक्तिगत सत्याग्रह में भाग लिया। फिर भी सीमा प्रान्त की सरकार ने उन्हे गिरफ्तार नही किया, क्योकि यहाँ की सरकार को भय था कि दमन के कारण पठान और भी अधिक रुष्ट हो जायगे। सन् १९४२ में भी जब चारो ओर देश मे खून की होली खेली जा रही थी, दमन का साम्राज्य था, सीमा प्रान्त की सरकार ने यकायक दमन नीति को नही अपनाया। सीमा प्रान्त मे कांग्रेस के नेता प्रारम्भ मे नही पकडे गए। खान अब्दुल गफ्फार खा ने भी इस मौके का लाभ उठाया और लम्बी लडाई की तैयारियाँ करते रहे। इस प्रकार उन्होने अपने सगठन को सुव्यवस्थित कर अक्तूबर मास से इस आन्दोलन का प्रारम्भ किया।

सीमा प्रान्त में सबसे पहले जगह-जगह सभाए की गई और लोगो को अपने को स्वतन्त्र समझने का आदेश दिया गया और मुकम्मल आजादी का एलान किया गया। अनेक जगह इस प्रकार की सभाए हुई, पर नौकरशाही ने कोई दखल नही दिया। अक्तूबर मास से खान अब्दुल गफ्फार खा ने आन्दोलन मे नया जीवन डालने के लिए उसके रूप को बदल दिया और शराब की दूकानो पर पिकेटिंग प्रारम्भ किया। खुदाई खिदमतगारो के जत्थे जाते थे और इन दूकानो पर पिकेटिंग करते थे। इसके बाद रफ्ता-रफ्ता यह

जत्थे सरकारी इमारतों पर भी पिकेटिंग करने लगे। फौज की बैरकों में भी खुदाई खिदमतगार अपना पैगाम पहुंचाने का प्रयत्न करने लगे। आन्दोलन का यह रूप नौकरशाही के लिए असहनीय था और अब उसको अपनी पुरानी नीति छोडनी पडी। खुदाई खिदमतगार हर जगह जाकर बगावत की घोषणा करते थे। पेशावर तथा बन्नू में लगभग २-३ मास तक हफ्ते में दो-तीन बार जत्थे जाते थे और सरकारी इमारतों पर राष्ट्रीय झण्डा लगाने का प्रयत्न करते थे। उन पर नौकरशाही को मजबूर होकर लाठी प्रहार करना पडा। लाठी-चार्ज का यह सिलसिला एक अर्से तक जारी रहा। अन्त में ६ अक्तूबर को सरकार ने कांग्रेस नेताओं को गिरफ्तार कर लिया। विरोध-स्वरूप शहर में पूर्ण हडताल रही। हडतालियों पर आतंक जमाने के लिए सरकार ने दूकानों को तुडवा डाला। जनता के बढते हुए जोश को कुचलने के लिए सीमा-प्रान्त की नौकरशाही ने लाठी-प्रहारों का खुलकर काम लिया। उनकी विशेषता यह थी कि लोगों के सरों पर वार नहीं किया जाता था, बल्कि उनके पेट पर अधिक चोट पहुँचाई जाती थी। अभिप्राय यह था कि लोगों को अन्दरूनी चोट पहुँचाई जाय। १९, २०, २१ अक्तूबर को सीमा प्रान्त में जनता ने पुलिस-स्टेशनों आदि पर राष्ट्रीय झण्डे लगाने के अनेक प्रयत्न किये। पेशावर में हजारों आदमियों ने इन प्रदर्शनों में हिस्सा लिया। कई सौ आदमी पुलिस के लाठी-प्रहारों के कारण घायल हुए। पेशावर में अक्तूबर मास में लगभग २५ आदमी रोज पकडे गए और अक्तूबर, नवम्बर तथा दिसम्बर तक आन्दोलन का यही रूप रहा। पेशावर के अतिरिक्त बन्नू, कोहाट, मरदान आदि जगहों में भी आन्दोलन का रूप इसी प्रकार का रहा।

सीमा-प्रान्त में इस आन्दोलन के सम्बन्ध में २५५८ व्यक्ति गिरफ्तार किये गए और १८८० व्यक्तियों को विभिन्न सजायें दी गईं। इसके अलावा ७०८ व्यक्ति नजरबन्द रखे गए। एक जगह गोली भी चली, लाठी-प्रहारों के फलस्वरूप पाँच सौ से एक हजार तक व्यक्ति सख्त घायल हुए। कुछ छोटे बच्चों को कोडे भी लगाये गए। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि पहले की भांति सन् १९४२ के विद्रोह में भी सीमा-प्रान्त ने शानदार हिस्सा लिया। यहाँ का आन्दोलन अन्त तक अहिंसक रहा। इसका श्रेय बादशाह खान के नेतृत्व को है, जिनका सीमा-प्रान्त के पठानों पर अभूतपूर्व प्रभाव है।

: १७ :

पंजाब में आन्दोलन

पजाब नदियो का प्रदेश है। भारत की पाँच प्रसिद्ध नदियाँ—जेहलम, चेनाव, रावी, व्यास और सतलज इस प्रान्त की भूमि को उर्वरा बनाती हुई अरब सागर मे जाकर गिरती है। अतएव पाँच नदियो का प्रदेश होने के कारण इसका नाम 'पजाब' पडा है।

पजाव एक प्रकार से भारत की उत्तर-पश्चिमी सीमा बनाता है। केवल जम्मू-काश्मीर रियासत एव सीमान्त प्रदेश का सँकडा भाग बीच मे पडता है। अत सैनिक दृष्टि से इसका बहुत महत्त्व है।

पजाब विभिन्न धर्मों, जातियो एव दलो का घर है। देश के सभी नये-पुराने, कट्टर एव 'उदार' धर्म, हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई आदि जातियो तथा काग्रेस, लीग, हिन्दू महासभा वगैरा राजनैतिक दल यहाँ की भूमि में स्वतन्त्र रूप से फूले फले है। मुख्य धर्मो के अलावा उनके छोटे-छोटे फिरके अलग ही है। अत प्रान्त के धार्मिक जीवन मे सहनशीलता और मेल-मिलाप की भावना का अभाव है। 'आदर्शवादी' धार्मिक आन्दोलन पजाब की भूमि में काफी सफल हुए है, जिनसे समूचे प्रान्त और विशेषकर शहरी भागो के जीवन में तीव्र क्रान्ति उत्पन्न हो गई है।

धार्मिक जीवन की भाँति प्रान्त की राजनीति भी अव्यवस्थित रूप म है। सामाजिक एव राजनीतिक क्षेत्र मे आपसी मेल और सहन-शीलता का नितान्त अभाव रहा है। देहाती पजाव अभी तक स्वस्थ है और नागरिक पजाव के वैमनस्य से बचा हुआ है। नागरिक क्षेत्र मे धर्म का साम्प्रदायिक स्वार्थों के लिए एव राजनीति मे अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए दुरुपयोग किया जाता है। नागरिक एव देहाती परिस्थितियो को ध्यान में रखते हुए आर्थिक समस्याओ पर शुद्ध अर्थ-शास्त्र की दृष्टि से विचार नही किया जाता। एक साम्प्रदायिक गुट दूसरे साम्प्रदायिक गुट पर धर्म और जाति की ओट में प्रभाव ज़माने की चेष्टा करता रहता है। इस प्रकार की साम्प्रदायिकता-पूर्ण राजनीति

पजाव की राजनीतिक एव सामाजिक समस्याओ को सुलझाने में अब तक पूरी तरह असफल रही है।

पजावियो ने व्यापारिक क्षेत्र में अच्छी सफलता प्राप्त की है। पजावी किसान भी अन्य प्रान्तो के मुकावले खुशहाल है। यह कहा जा सकता है कि देश के अन्य भागो की तुलना में पजावियो की आर्थिक स्थिति अच्छी है। इसके अतिरिक्त, पिछले महायुद्ध से ही यह फौजी-भर्ती का खास अड्डा रहा है और इसी कारण वह अग्रेजी सरकार की "दाहिना-भुजा" कहलाता है। वास्तव में पजाव की फौजी परम्परा रही भी है। उसे अतीत में समय-समय पर विदेशी आक्रमणो का सामना करना पडा जिससे सैनिक-वृत्ति पजावियो के स्वभाव में दाखिल हो गई। अग्रेजो ने भारतवर्ष में हमेशा पजाव प्रान्त को अपने सबसे मजबूत किले के रूप में माना है। उन्होंने पजावियो को अधिक वेतन वाली नौकरियाँ देकर उनकी देश-प्रेम की भावना को नष्ट कर देने की कोशिश की है। इसी कारण पजाव देश की आजादी की लडाई में अधिक हिस्सा नही ले पाया।

पजाव की पिछडी हुई राजनीतिक अवस्था के कई कारण है। प्रान्त की आवादी में मुसलमानो का वहुमत है, जो मुस्लिम लीग अथवा यूनियनिस्ट पार्टी के प्रभाव में है। इन दोनो पार्टियो ने हमेशा अग्रेजो का साथ दिया है और ये ब्रिटिश सरक्षण मे ही पली है। पश्चिमी हिस्से के देहात, जहाँ मुसलमान वहुमत में है, अधिकतर या तो फौज में भरती रहे है अथवा उनमें मुस्लिम लीग द्वारा काग्रेस विरोधी भावना कूट-कूट कर भर दी गई है। हिन्दुओ ने, जिनका हिमालय प्रदेश में वहुमत है और जहाँ आजीविका के साधन प्राप्त नही है, अपने-आपको या तो व्यापार में लगाया है अथवा वे ब्रिटिश फौज में भरती हो गए है। सिख भिन्न-भिन्न राजनीतिक दलो में विभक्त है। देहाती जनता में जाट लोग अधिक है, जिन्होने अव से पहले तक हमेशा प्रतिक्रियावादी यूनियनिस्ट पार्टी का साथ दिया है।

प्रान्त में काग्रेस का सगठन भी उचित रूप से नही हुआ है। काग्रेस-नेतृत्व आपस की फूट के कारण हमेशा कमजोर रहा है। उसका कार्य ज्यादातर शहरो तक ही सीमित रहा। यही कारण है कि काग्रेस की जड देहातो की आम जनता के भीतर गहरी न पैठ सकी और देश की पुकार पर समूचे प्रान्त का वाछित सहयोग न मिल सका।

फिर भी वम्वई में हुई नेताओ की गिरफ्तारी का समाचार जव पजाव में पहुचा तो वातावरण में तीव्र क्षोभ उत्पन्न हो गया। जगह-जगह विरोध सभाएँ

हुई तथा व्यापक हडताले की गई। लाहौर और रावलपिंडी के समीप कई स्थानो में क्षुब्ध जनता ने डाक और टेलीफोन के तारो को काट डाला और यातायात को पगु बनाने की चेष्टाएँ की। उधर सरकार की ओर से भी तुरन्त दमन शुरू हो गया। बहुत से मुखिया आदमी गिरफ्तार कर लिये गए। काग्रेस के दफ्तरो पर मोहर चपडी लगादी गई। पजाब के भूतपूर्व प्रधान मत्री सर सिकदर हयातखाँ ने लोगो को बडे-बडे इनामो, ऊची नौकरियो, और जागीरो का प्रलोभन देकर उन्हे आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने से रोका। इन सब कारणो से इस प्रान्त में स्वतन्त्रता का यह आन्दोलन बहुत समय तक न चल सका और न व्यापक रूप ही धारण कर सका। वह बडे-बडे शहरो तक ही सीमित रहा, जहाँ कि हिन्दुओ की आबादी अधिक है।

पजाब में सन् १९४२ के आन्दोलन मे महिलाओ और छात्राओ न उल्लेखनीय हिस्सा लिया। उन्होने यह अच्छी तरह साबित कर दिया कि आजादी के सिपाहियो के रूप मे वे मर्दो से कही बढकर है।

श्री जयप्रकाश नारायण के जेल से बच निकलने के बाद पजाब के नवयुवको ने गुप्तरूप से काम करना शुरू किया और इस प्रकार सन्' ४२ के आन्दोलन मे अपना फर्ज अदा किया। किन्तु पजाब ने अब करवट बदली है। सारे देश ने सन्' ४२ मे और उसके बाद देश की आजादी के लिए जो कुर्बानी की है, उसका असर पजाब पर भी पडा है। काग्रेस, अधिकाधिक लोकप्रिय हो रही है। प्रान्तीय असेम्बली के पिछले चुनावो में काग्रेस को जो सफलता मिली यह उसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। यद्यपि पजाब मे मुस्लिम लीग की शक्ति बढी है, किन्तु आज कॉग्रेस अन्य दलो के सहयोग से प्रान्त के शासन का भार सम्हाले हुए है। ऐसे लक्षण दिखाई दे रहे है कि आने वाले दिनो मे पजाब आजादी की ओर कूच करने मे अन्य प्रान्तो से पीछे न रहेगा।

: १८ :

भारतीय रियासतों का भाग

ब्रिटिश साम्राज्यवाद की भारत में अपनी किलेबन्दी व सुदृढ रक्षा-पक्तिया है। हिन्दुस्तानी रियासते उसका एक मुख्य अग है। वास्तव में ये रियासते प्रतिक्रियावादी शक्तियो की अखोरी आशायें है। अत भारतीय राष्ट्रवाद के लिए यह परम आवश्यक है कि वह इन विभिन्न किलेबन्दियो को तोडे, क्योकि इनके टूटने से हा साम्राज्यशाहा का ढाँचा अस्त व्यस्त हो सकता है, वरना इसका अकुर किसी-न-किसी रूप में बना ही रहेगा। सन् १९१९ से सन् १९४२ तक काग्रेसी नेतृत्व ने साम्राज्यशाही के इस ढाँचे के विरुद्ध कई सामूहिक और व्यक्तिगत प्रहार किये और हर प्रहार मे उसके किसी-न-किसी मुख्य अग पर प्रबल वार कर उसकी शक्ति को क्षीण किया। पर रियासतो के सम्बन्ध मे काग्रेसी नेताओ की अब तक तटस्थ रहने की नीति ही रही। यद्यपि वे जानते थे कि रियासतो में ब्रिटिश भारत से भी अधिक अन्याय होता है, पुराने दकियानूसी कानूनो द्वारा जनता पर हुकूमत की जाती है और राज्य-व्यवस्था में जनता का कोई हाथ नही है, फिर भी काग्रेस हाई कमाण्ड ने यह उचित नही समझा कि वह रियासतो के अन्दर सामूहिक आन्दोलन करे। इन नीति के बरतने के अपने ही कारण थे। काग्रेस-हाई-कमाण्ड एक समय में एक ही मोर्चे पर लडना चाहता था। वह कई मोर्चो पर एक साथ लडकर भारतीय राष्ट्रवाद की शक्ति का अपव्यय करने के हक में न था। उसकी मान्यता थी कि एक बार अग्रेजो को सीधी राह पर ले आया गया तो राजा अपने आप सीधी राह पर आ जायगे।

पर इसका मतलब यह नही है कि काग्रेसी नेता रियासतो की जनता म राजनीतिक जागृति देखना नही चाहते थे। इसके विपरीत रियासती जनता के आन्दोलन के प्रति उनकी बराबर सहानुभूति रही। उन्होने कई बार घोषणा की कि प्रजातन्त्रवादी भारत और सामन्तशाही रियासतें दोनो एक साथ नहीं रह सकती। उन्होने रियासतो में होने वाले अन्यायो व अत्याचारो की निन्दा

की ओर वहाँ की जनता को अपना सगठन करने तथा अपने नागरिक व राजनीतिक अधिकार खुद प्राप्त करने की सलाह दी। देशीराज्य लोक परिषद् की स्थापना व प्रगति में काग्रेसी नेताओ का बडा हाथ है। प० नेहरू, डा० पट्टाभि-सीतारामैया जैसे प्रसिद्ध काग्रेसी नेताओ की छत्र-छाया मे यह सस्था फली-फूली है।

यूरोपीय तथा एशियाई महायुद्ध ने उन अस्थायी प्रतिवन्धो को तोड दिया। विचारो की बाढ के सामने कोई भौगोलिक अथवा शासन सम्बन्धी दीवारें खडी नही रह सकती। महायुद्ध ने समस्त भौगोलिक व साम्राज्यशाही सीमाओ को अस्त-व्यस्त कर दिया, और रियासतो तथा ब्रिटिश भारत की जनता एक ही प्रकार से सोचने लगी। युद्ध-जनित वातावरण ने लोगो पर एक ही-सा मनोवैज्ञानिक असर डाला। सारे भारत की जनता में एक ही प्रकार की भावनाए तथा आकाक्षाए पैदा कर दी। इस प्रकार महायुद्ध ने अप्रत्यक्ष रूप से रियासतो में बसी हुई जनता के विचारो में एक आश्चर्यजनक क्रान्ति पैदा कर दी और मार्ग-प्रदर्शन के लिए वह किसी ओर आँखे पसारकर देखने लगी। ९ अगस्त को काग्रेसी नेताओ तथा काग्रेस-सगठन पर ब्रिटिश प्रहार को रियासतो की जनता ने अपने पर प्रहार समझा और इस प्रकार सन् १९४२ के खुले विद्रोह की लपटे भारतीय रियासतो मे पूर्ण रूप से फैल गई। इस तूफान में विभिन्न रियासतो मे लाखो की तादाद मे आदमी आशा, उत्साह व आकाक्षाओ को लिये हुए उठे और सैकडो की तादाद मे नये नेता पैदा हो गए। रियासती नेताओ ने बडे धैर्य व शान्ति से आन्दोलन का नेतृत्व किया और अपनी कार्य-तत्परता, सलग्नता व सगठन-शक्ति का परिचय दिया। स्वभावत इस आन्दोलन को रियासतो मे बडी क्रूरता से दबाया गया। भारतीय नरेश कब इस बात को सहन कर सकते थे कि जो 'प्लेग' ब्रिटिश भारत में फैल चुका है था वह उनके यहाँ भी उग्र रूप में फैल जाय। अतः जनता के बढते हुए जोश को हर जगह गोलियो तथा लाठियो के प्रबल प्रहारो से कुचला गया। रियासतो में आन्दोलन का रूप ठीक वैसा ही था, जैसा ब्रिटिश भारत में। प्रारम्भ में हडतालें हुईं, विरोधी प्रदर्शन हुए, सभाये हुईं और कही-कही राजसत्ता को छीनने के भी प्रयत्न किये गए। ऐसे प्रयत्न उडीसा प्रान्त की रियासतो विशेषकर तालचर, नीलगिरी, नायागढ—में अधिक हुए। कोल्हापुर और इन्दौर में जल तोडने के प्रयत्न भी किये गए।

आन्दोलन की दृष्टि से रियासतो को हम ४ भागो मे बाट सकते है।

१ मध्य भारत की रियासतें।
२ राजपूताना की रियासतें ।
३ उडीसा की रियासतें।
४ वडौदा और काठियावाड की रियासतें।
५ दक्षिण भारत की रियासतें।

मध्यभारत की रियासतें

ग्वालियर—मध्यभारत में यह सबसे बडी रियासत है। नेताओ की की गिरफ्तारी के पश्चात् २३ अगस्त सन् १९४२ को ग्वालियर की प्रजा सस्था सार्वजनिक सभा की एक बैठक हुई और उसमें काग्रस के 'भारत छोडो' प्रस्ताव का समर्थन किया गया। सभा की ओर से महाराजा ग्वालियर को एक अल्टीमेटम दिया गया कि ३० अगस्त तक महाराज सरकार वरतानिया से अपना सम्बन्ध तोड दें और अपनी रियासत में उत्तरदायी सरकार की स्थापना करनें की घोषणा कर दें। ग्वालियर सरकार ने इस प्रस्ताव का उत्तर नेताओ की गिरफ्तारी व नजरवन्दी से दिया। ३० तारीख से पहले सारे प्रमुख नेता गिरफ्तार करके नजरवन्द कर दिये गए। सभा के इस फैसले से पहले ही रियासत भर में कारखानो के मजदूरो व विद्यार्थियो ने हडतालें करनी शुरू कर दी थी। १३ अगस्त को उज्जैन मे जब विद्यार्थी हडताल करके जुलूस निकाल रहे थे तो वहा के वोहरे मुसलमानो ने उन पर लाठियो से हमला कर दिया। कई छोटे-छोटे लडके जख्मी हुए और शहर में भारी वेचैनी फैल गई। शहर के कारोवार वन्द हो गए और वहुत वडे झगड की शक्ल पैदा हो गई और कुछ लोगो ने वोहरो की दूकानें लूटनी शुरू कर दी। हुकूमत ने दफा १४४ लगा दी और इस प्रकार विगडती हुई हालत को सम्भाला। वोहरो की इस तरह राजनीतिक तौर से मुखालफत करने की यह पहली घटना थी। जान पडता है कि उन्हे पहले से ही तैयार किया गया था। इस झगडे के कारण कई दिन तक दूकानें और कई माह तक स्कूल वन्द रहे।

१६ अगस्त को लश्कर मे, जो राज्य की राजधानी ह, विद्यार्थियो की हडताल हुई और जुलूस निकाले गये। रियासत की पुलिस तथा घुडसवारो ने वडी वेरहमी के साथ लाठी तथा घोडो की टापो से उन पर हमला किया। कितने ही लडके घायल हुए। विद्यार्थियो का यह आन्दोलन और भी उग्र रूप से फैलने लगा। ८ सितम्वर को उज्जैन में विद्यार्थी शान्तिपूर्वक एक सभा कर रहे थे कि पुलिस ने अपने पूर्व आश्वासन के विरुद्ध सभा को चारो ओर से घेर लिया और लाठियो व सगीनो से वैठे हुए लोगो पर प्रहार किया। औरतो और लड़कियो को घेरकर पीटा गया। कई औरतो और वच्चो को गहरी

चोटें आईं और कितने ही आदमी घायल होकर सडको पर गिर पडे। जख्मियो की मरहम-पट्टी के लिए जब आदमी उन्हे उठाने गये तो उन पर भी पुलिस ने लाठी प्रहार किया शहर मे १४४ दफा लगादी गई। शहर को चारो ओर से दो मील के दायरे में घेर लिया गया और सडको व गलियो मे चलने वालो को बिना उनकी अवस्था का खयाल किये मोटे-मोटे लट्ठो से जानवरो की तरह बाजारो मे खुले आम पीटा गया। सर्राफा बाजार मे, जो कि शहर का खास बाजार है, खुले आम लोगो के बन्द घरो मे पुलिस घुसती थी और अन्दर जाकर उन्हे पीटती थी। कितने ही आदमी इन काण्डो से जख्मी हुए।

९ अगस्त को एक स्थान पर, जहा पर एक आदमी सगीन से घायल हुआ था और जहा पर उसका खून गिरा था, लोगो ने फूल चढाये और कुछ लोगो ने भाषण देना शुरू कर किया। देखते-ही-देखते उस जगह को पुलिस ने आ घेरा और अन्य आने वालो को वहा जाने से रोक दिया। १ सितम्बर से ६ सितम्बर तक शहर मे मुकम्मिल हडताल रही। अदालत पर पिकेटिंग किया गया, जिससे अदालत भी बन्द हो गई। दो से तीन हज़ार तक की सख्या मे लोग अदालतो पर पिकेटिंग करने के लिए जाते थे। शुरू मे तो हुकूमत ने कोई हस्तक्षेप नही किया किन्तु बाद में उसका रुख बदल गया और पुलिस ने भयकर लाठी-चार्ज किया जिसके विरोध मे जनता ने फिर हडताल कर दी। ८ सितम्बर से शहर मे पुलिस व फौज का पुनः राज्य स्थापित हो गया। इस तरह रियासत मे सितम्बर के दूसरे सप्ताह तक तहरीक जोरो से चली। लगभग २५० आदमी गिरफ्तार करके जेलो मे रखे गये। अन्त मे रियासत और सार्वजनिक सभा के नेताओ में एक समझौता हुआ, जिसके फलस्वरूप मई १९४३ मे सब बन्दी रिहा कर दिये गए। ग्वालियर के कुछ कार्यकर्त्ता रियासत के बाहर भी तहरीक मे हिस्सा लेते रहे और इस प्रकार वह दूसरे जिलो मे गिरफ्तार हुए।[1]

भोपाल—यहा की प्रजा परिषद् ने बम्बई के प्रस्ताव के समर्थन मे १८ सितम्बर को एक प्रस्ताव पास किया। यह प्रस्ताव बाहर से छपवाकर मगवाया गया था, परन्तु वह स्टेशन पर पकडा गया। स्थान-स्थान पर तलाशिया हुईं। खास-खास कार्यकर्त्ताओ के घरो पर और परिषद् के दफ्तर पर पुलिस का पहरा बिठा दिया गया और उसकी कार्य-समिति के सदस्यो को पकडकर जेल मे बन्द कर दिया गया।

स्कूल के लडको को पकडकर पीटा गया। स्कूलो मे १५ दिन का छुट्टी कर दी गई। अहमदाबाद मुहल्ले के विद्यार्थियो को पार्टिया दी गईं और

उन्हे मैच खिलाये गए ताकि वह अन्य विद्यार्थियो के साथ मिलकर आन्दोलन में भाग न ले।

७ कार्यकर्त्ताओ को सजाए हुई। शेष कार्यकर्त्ता फरार हो गये। विद्यार्थियो के नेता श्री गोविन्दप्रसाद श्रीवास्तव को भी सजा हुई। उन पर डाकखाना जलाने और ऐसे ही अन्य इलजाम लगाये गए थे।

मि० इल्ताफ मजदानी, सम्पादक, 'जमहूर' मुकदमे के वीच ही वीमार पड गए। हालत नाजुक होने पर उन पर से मुकदमा उठा लिया गया, परन्तु वह वाहर आने के थोडे समय वाद ही मर गए। प्रजापरिषद् के नेता श्रीशाकिर-अली खाँ को २ साल कैद और १०० रुपया जुर्माना की सजा दी गई।

इन्दौर—सन् १९४२ के खुले विद्रोह में इन्दौर ने सवसे वढ-चढ कर भाग लिया। इन्दौर मध्य भारत की एक महत्त्वपूर्ण रियासत है। यहाँ अन्य रियासतो के मुकावले प्रजामण्डल सगठित रूप में काम कर रहा है और उसका जनता पर काफी प्रभाव है। फलस्वरूप वम्वई मे काग्रेसी नेताओ की गिरफ्तारी के पश्चात् शहर में हडताल हुई, विरोव-प्रदर्शन हुए और थोडे दिनो पश्चात् यह आन्दोलन कस्वो में भी फैल गया। लगभग ४०० व्यक्ति गिरफ्तार करके जेलो मे रखे गए। रियासत मे ६, ७ माह तक आन्दोलन चलता रहा। प्रजा-मडल के नेताओ को मण्डलेश्वर नामक स्थान में नजरवन्द रखा गया था। उन्होने जेल के पहरेदारो पर कावू पा लिया और जेल मे वाहर निकल गए। उन्होने कस्वे में जाकर भाषण दिये। अन्त में वे पुन वन्दी वना लिये गए, तोड-फोड के कार्य भी कई जगह हुए। अन्त मे महाराज व प्रजामडल के नताओ में समझौता हुआ और सव विना शर्त रिहा कर दिये गए।

मध्य भारत मे ग्वालियर, इन्दौर, भोपाल और धार इन चार रिया-सतो मे सगठित तरीके से आन्दोलन चलाने के प्रयत्न किये गए। सव जगह आन्दोलन का रूप अहिसात्मक था, पर दमन के कारण जव सामूहिक रूप खत्म हो गया तो तोड-फोड के कार्य प्रारम्भ हुए। इन्दौर में कुछ वम फटने की घटनाए हुई, पर उनके कारण किसी को नुकसान नही हुआ। पोलिटिकल डिपार्टमेण्ट ने भी इस आन्दोलन को दवाने में एक-सी नीति वरती।

राजपूताना की रियासतें

कोटा—वम्वई के प्रस्ताव के वाद नेताओ की गिरफ्तारी के हालात मालूम होते ही कोटा में हडताल हो गई। विद्यार्थियो ने भी हडताल कर दी। प्रजामडल के कार्यकर्त्ता गिरफ्तार कर लिये गए। किन्तु इन गिरफ्तारियो से

और भी जोश फैल गया। जनता ने शहर पनाह के दरवाजे बन्द करके चारो ओर के रास्ते बन्द कर दिए, जिससे विशेष पुलिस, फौज तथा अन्य लोगो का बाहर से आना रुक जाय। कोतवाली पर जनता ने झडा फहराया और वहा जो पुलिस मौजूद थी, उसे बैरिको में बन्द कर दिया। शहर पर पूरी तरह से जनता का कब्जा हो गया और यह हालत बराबर तीन दिन तक रही। इन तीन दिनो मे शहर मे पूरे तौर से शान्ति कायम रही। कोई गडबडी नही हुई। वहा के दीवान ने यह कोशिश की कि मिलिटरी शहर मे दरवाजा तोडकर दाखिल हो जाय और गोली चलाई जाय। किन्तु फौज और महाराज इसके लिए सहमत नही हुए। तीन दिन तक यह कशमकश चलती रही। पोलिटिकल एजेन्ट भी वहा आगए अन्त मे तीसरे दिन भूतपूर्व दीवान ने आगे आकर जनता को यकीन दिलाया कि वह दरवाजा खोल दे, पुलिस इत्यादि को अदर आने दे, रियासत की ओर से कोई जोर-जुल्म की बात नही होगी। इस आश्वासन पर जनता ने दरवाजे खोल दिए और तीसरे दिन बाकायदा सब फौज और पुलिस वालो से झडा सलामी कराकर और अधिकारियो से रसीद लेकर कोतवाली और शहर का चार्ज महाराज की पुलिस को सौपा गया। कुछ दिनो बाद अन्य नेता भी रिहा कर दिये गए। गिरफ्तारी के बीच ही एक डेपुटेशन महाराज से मिला और उन्होने जनता को यकीन दिलाया कि जिम्मेदार सरकार कायम करने के लिए वह शीघ्र ही कोई कदम उठायगे। दीवान को, जो पोलिटिकल डिपार्ट-मेंट का आदमी था और गोली चलाने मे नाकामयाब रहा था, महाराज ने नौकरी से अलग कर दिया। उसके जाने के अवसर पर भी जनता ने प्रदर्शन किया।

मेवाड़— मेवाड राजपूताना की अत्यन्त प्राचीन और प्रमुख रियासत है। इस रियासत के निवासियो ने अपनी स्वतन्त्रता को कायम रखने के लिए भूतकाल में अभूतपूर्व त्याग और बलिदान किया है। अपनी परम्परा के अनुसार वह सन् १९४२ के स्वातन्त्र्य-सग्राम मे भी पीछे नही रहे। 'भारत छोडो' प्रस्ताव पास होने के बाद जब देश की आजादी की लडाई छिड गई तो मेवाड की जनता की आकाक्षाओ का प्रतिनिधित्व करनेवाली सस्था प्रजामण्डल ने इस लडाई में कूद पडने का निश्चय किया। उसकी ओर से मेवाड के महाराणा साहब को एक पत्र भेजकर अनुरोध किया गया कि वह अपने को ब्रिटिश शत्ता से अविलम्ब स्वतत्र घोषित कर दे और जनता को हुकू-मत मे साझीदार बना कर उसकी शुभनिष्ठा प्राप्त करे। यह पत्र २१ अगस्त १९४२ को भेजा गया और उसी दिन मेवाड की राजधानी उदयपुर मे एक

विशाल सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया। सभा तो निर्विघ्न रूप से हो गई, किन्तु उसके बाद राज्य भर में प्रजामण्डल के नेता तथा कार्यकर्त्ता गिरफ्तार कर लिये गए। कुछ विद्यार्थी भी पकडे गए। गिरफ्तारियो के विरोध में उदयपुर में एक विशाल जुलूस 'अंग्रेजो भारत छोडो' के नारे लगाता हुआ निकला। २३ अगस्त से जुलूसो, सभाओ आदि पर पाबन्दी लगा दी गई। कालेज में हडताल हो गई और बाजार भी बन्द हो गए चारो ओर भारत छोडो' की आवाज गूजने लगी। विद्यार्थियो में अपूर्व जोश था। सरकार ने भी विद्यार्थियो को अन्धाधुन्ध गिरफ्तार करना शुरू कर दिया। एक अंग्रेज फौजी अफसर ने राष्ट्रीय झण्डे को पाँवो तले कुचल दिया और एक विद्यार्थी को सीने पर पिस्तौल रखकर धमकाया, किन्तु नौजवान जरा भी भयभीत न हुए आन्दोलन केवल उदयपुर तक ही सीमित नही रहा। वह राज्य के मुख्य-मुख्य कस्बो मे भी फैल गया और अनेक व्यक्तियो ने आन्दोलन में हिस्सा लिया। अक्तूबर के प्रथम सप्ताह तक गिरफ्तारियाँ होती रही। कुल मिलाकर ५०० गिरफ्तारियाँ हुईं, जिनमे ७ महिलायें भी थी। कालेज करीब १५ दिन बन्द रहा। प्रजामण्डल के नेताओ को एक पहाडी स्थान में नजरबन्द रखा गया। उनके पास एक राष्ट्रीय झण्डा था, जिसे वह नित्य प्रति सलामी देते थे। जेल और पुलिस वालो ने उसे छीनने की कोशिश की, किन्तु नजरबन्दो ने सत्याग्रह कर दिया और राष्ट्रीय झण्डा आखिर तक उनके ही अधिकार मे रहा। जो बन्दी उदयपुर जेल मे रखे गये, उनके साथ कठोर व्यवहार किया गया उन्हे काल कोठरियो मे बन्द कर दिया गया। कुछ लोगो ने दुर्व्यवहार के प्रति विरोध प्रकट किया तो उन्हे बेंतो से पीटा गया। सरकार ने धीरे-धीरे बन्दियो को छोडने की नीति अपनाई। अखीरी जत्था डेढ वर्ष बाद फरवरी सन् १९४४ मे छोडा गया। किन्तु इसके बाद भी प्रजामण्डल पर काफी समय तक प्रतिबन्ध लगा रहा।

अन्य रियासतें—राजपूताना की अन्य रियासतो में भी किसी-न किसी रूप में आन्दोलन हुए। जोधपुर रियासत मे तो अगस्त आन्दोलन शुरू होने के पहले ही पकड-धकड शुरू हो गई थी। लोक परिषद् ने जागीरदारी जुल्मो के विरुद्ध आन्दोलन शुरू कर दिया था। अत मारवाड के प्रमुख नेता और कार्यकर्त्ता लम्बे अर्से तक जेलो में बन्द रहे। जोधपुर में कुछ बम-विस्फोट की घटनाए भी हुई। शाहपुरा रियासत के प्रजामडल ने भी राजाधिराज को ब्रिटिश सरकार से सम्बन्ध विच्छेद करने का अल्टीमेटम दिया था। इस पर प्रजामडल के तीन प्रमुख नेता गिफ्तार कर लिये गए और उन्हें अजमेर जेल में नजरबन्द रखा गया। डूंगरपुर मे भी प्रदर्शन किये गए। राज्य ने वहाँ पकड-धकड़

तो नही की, किन्तु अप्रत्यक्ष रूप से रचनात्मक प्रवृत्तियो का गला घोटने का कोशिश की। जयपुर रियासत मे प्रजामण्डल आन्दोलन से अलग रहा, किन्तु कुछ कार्यकर्त्ताओ ने आजाद मोर्चा कायम किया और रियासतो मे युद्ध-प्रयत्न के विरुद्ध प्रचार किया। कुछ व्यक्ति नजरबन्द कर लिये गए। इस प्रकार स्पष्ट है कि राजपूताना की अनेक रियासतो मे किसी-न-किसी रूप मे आजादी की लडाई मे योग देने की चेष्टाये की गईं और कुछ रियासतो का हिस्सा काफी उज्ज्वल रहा।

उड़ीसा की रियासतें

उडीसा प्रान्त मे कितनी ही छोटी-छोटी रियासते हैं। सन् १९३७ मे जब उडीसा मे काँग्रेस मन्त्रिमण्डल स्थापित हुआ तो इन रियासतो मे एक व्यापक जागृति फैली। इन रियासतो मे बसने वाले लोगो ने अपने कष्ट दूर कराने और राजनीतिक अधिकार प्राप्त करने के लिए जबरदस्त आन्दोलन किया। उडीसा प्रान्त के काग्रेसी कार्यकर्त्ताओ ने उसे प्रोत्साहन दिया और कही कही उसका नेतृत्व भी किया। रियासतो की सरकारो के लिए उस समय कठिन स्थिति पैदा हो गई थी। सन् १९४२ मे यद्यपि आन्दोलन सन् १९३८ व ३९ जितना उग्र और व्यापक न था, फिर भी जो राजनीतिक जागृति हो चुकी थी और जनता को अपने अधिकारो का भान हो गया था, उसके फल-स्वरूप सन् १९४२ मे इन रियासतो मे कई जगह जनता सामूहिक रूप से उठी और कितनी ही जगह राज्य-सत्ता प्राप्त करने के सफल और असफल प्रयत्न हुए। रियासती अधिकारियो ने निहत्थी जनता के आन्दोलन का दमन करने मे अत्यन्त कठोर तरीके अपनाए।

नीलगिरी—प्रजामण्डल के नेता पहले ही गिरफ्तार कर लिये गए। उन पर यह आरोप लगाया गया कि वह एक सामूहिक आन्दोलन की तैयारी कर रहे थे। इन गिरफ्तारियो की यह प्रतिक्रिया हुई कि नीलगिरी की जनता ने सरकारी मुलाज़िमो का सामाजिक बहिष्कार कर दिया और आशिक हडताल भी की। साथ ही हफ्ते मे दो बार बाजार बन्द रखने का निश्चय किया। लोगो ने दरबार को विश्वास दिलाया कि यदि उनके नेता छोड दिये जाय तो वह सरकारी कर्मचारियो का बहिष्कार बन्द कर देगे। अत ११ नेता जेल से छोडे गए जिनमें से कुछ ने रियासत मे ही रहकर आन्दोलन को पुन सचा-लित करने के लिए जनता में कार्य करना शुरू कर दिया और कुछ रियासत से बाहर चले गए।

२९।८।४२ को एक हजार आदमियो के समूह ने बरहमपुर थाने पर आक्रमण किया और अपने नेता श्री चिन्तामणि को मुक्त करा लिया । २१ सितम्बर को पुलिस ने पुन श्री चिन्तामणि को काठपल्ला ग्राम मे पकडने की चेष्टा की, पर लगभग ४ हजार आदमी तीर-कमान व लाठियो से सुसज्जित होकर इकट्ठे हो गए और उन्हे गिरफ्तार न करने दिया ।

नीलगिरी दरबार ने सौ गावो पर ७५२०४ रुपया जुर्माना किया और पोलिटिकल एजेन्ट ने एक सगठित पुलिस फोर्स के साथ स्वय जाकर इसे वसूल किया । बहरामपुर मे २॥ हजार से अधिक लोगो के समूह ने, जो तीर-कमान व बर्छो से सुसज्जित था, इसका विरोध किया । चार पाँच पुलिस के सिपाहियो पर आक्रमण भी किया । इसके फलस्वरूप वहाँ गोली चली ।

तालचर—तालचर एक छोटी-सी रियासत है । इसका क्षेत्रफल ४०० वर्गमील, आबादी ८५,००० और आमदनी २,५०,००० रु० है । पर औद्योगिक दृष्टि से उसका अपना महत्त्व है । यहा पर तीन बडी-बडी कोयले की खाने है और एक दियासलाई बनाने की फैक्टरी तथा कई अन्य छोटी-छोटी फैक्टरियाँ है । यह राजनीतिक दृष्टि से बहुत जाग्रत है । सन् १९३८ के लगभग ६५ हजार आदमियो ने राजा के विरुद्ध हिजरत की थी और ब्रिटिश इलाके के अगुल सब डिवीजन मे आकर बस गए थे । इन लोगो को दबाने के अनेक प्रयत्न किये गए और मामला इतना बढ गया कि महात्मा गाधी तथा वायसराय तक को दिलचस्पी लेनी पडी । अन्त मे राजा को हार माननी पडी और वह अपने यहाँ कुछ सुधारो की घोषणा करने के लिए मजबूर हुए । इस प्रकार जनता काग्रेसी झडे को लिये हुए गर्व के साथ स्टेट में वापस आई ।

सन् १९४२ के खुले विद्रोह की प्रचण्ड लपटें तालचर में भी पहुँची । प्रारम्भ मे आन्दोलन का कोई सगठित रूप न था पर सितम्बर के पहले पख-वाडे तक उसने उग्र और सामूहिक रूप धारण कर लिया । रियासत मे यह खबर फैल गई कि प्रजामण्डल के प्रधान और रियासत के लोकप्रिय नेता पवित्र बाबू कत्ल कर दिये गए । बस फिर क्या था, आग भडक उठी, जो किसी-न-किसी प्रकार सन् १९४३ के मई माह तक सुलगती रही ।

लोगो ने रियासत के कानूनो को मानने से इन्कार कर दिया । उन्होने अपनी एक केन्द्रीय सरकार कायम की और हर गाव, तहसील, परगना और सब डिवीजन में उसकी शाखायें खोली गई । यह सरकार गाँव पचायतो के आधार पर खडी की गई थी और उसे मजदूर राज्य के नाम से पुकारा जाता था । गाव के मुखियो, चौकीदारो, स्कूल-मास्टरो, जिला-अफसरो

परगना-हाकिमो, पुलिस-अफसरो तथा लगान के महकमे के अफसरो ने स्वय अपनी-अपनी बन्दूको, पोशाको, बिल्लो, कागजो, रिकार्डो, यहा तक कि सरकारी नकदी को भी नई बनी हुई पचायतो को सौंप दिया और इनके प्रति वफादार रहने की शपथ खाई। सबसे उल्लेखनीय बात यह हुई कि इन सरकारी कर्मचारियो ने पोशाको, बिल्लो और कागजातो का अपने हाथो जलाया। आमदोरफ्त के सारे रास्तो, जैसे सडके, पुल, घाट, फेरी बोट, टेलीफोन इत्यादि, पर मजदूर सरकार का कब्जा हो गया। टेलीग्राफ तारो को काट दिया गया और कटक-तालचर रेलवे को कई मील तक अस्त-व्यस्त कर दिया गया, ताकि बाहर से सैनिक शक्ति न बुलाई जा सके। तीन पुलिस-स्टेशनो ने नई सरकार के सामने आत्म-समर्पण कर दिया और कनिया सब डिवीजन का हैडक्वार्टर स्वय अधिकारियो ने छोड दिया। इस प्रकार सारी रियासत के ४७ वर्ग मील के घेरे मे एक गज जगह भी ऐसी बाकी न रही थी जहा पर मजदूर राज्य का आधिपत्य कायम न हो गया हो। केवल तालचर नगर ही बाकी बच गया था।

जनता के इस रूप को देखकर रियासत के कुछ वफादार कर्मचारियो ने ब्रिटिश पैदल सेना और हवाई बेडे की बस्तियो मे जाकर पनाह ली। गोला बारूद की मैगजीन, डाइनामाइट का स्टोर और काफी बन्दूके जनता के हाथ लगी।

नई सरकार ने अपनी फौज भी बना ली थी। उसकी शाखाये हर गाव मे स्थापित हो गई थी। इस तरह पूर्ण सगठन करके जनता का इरादा था कि तालचर शहर पर भी आक्रमण किया जाय, ताकि वहा पर भी अग्रेजी राज्य-सत्ता का कोई चिन्ह बाकी न बचे और तालचर दरबार से इस बात की प्रार्थना की जाय कि वह अंग्रेजी राज्य से अपना सम्बन्ध तोड ले और किसान-मजदूर-राज के वैधानिक प्रमुख बनकर रहे। इसके बाद वह आस-पास की अन्य छोटी-छोटी रियासतो और ब्रिटिश इलाके को भी मुक्त करवाना चाहती थी।

६ सितम्बर सन् १९४२ को जनता की फौज के सैनिक हर गाव से झंडा लिये हुए तालचर की ओर बढे। उनके पास पुराने जमाने के सारे हथियार थे। पुरानी बन्दूके, तलवारें, ढाल, भाले, तीर-कमान, कुल्हाडे, बरछे, हथौडे इत्यादि हथियार यह लोग अपने साथ लिये थे। इस सब सामान से सुसज्जित होकर उनका इरादा बाकायदा मोर्चा बनाकर आक्रमण करने का था।

जब से पवित्र बाबू के कत्ल की खबर रियासत में फैली तब से 'अग्रेजो निकल जाओ' का नारा चारो ओर गूजने लगा सारी रियासत की जनता में घोर बेचैनी व रोष फैल रहा था। दरबार और उनके पुत्र दोनो ने पोलिटिकल

डिपार्टमेंट से मदद की भीख मागी और तालचर-स्थित अंग्रेजी हवाई वेडे तथा रायल मिलिटरी की इन्पेसक्टरी की हिफाजत के खयाल से ब्रिटिश एजेन्ट ने मदद देने का वादा किया। सारी तालचर रियासत पर हवाई जहाज घूमने शुरू हो गए। पर्चे गिराये गए और अश्रु-गैस भी छोडी गई। किन्तु जनता भयभीत नही हुई। उसने अपने मोर्चे को जारी रखने का दृढ सकल्प कर लिया। आगे-आगे ढोल वज रहे थे और पीछे-पीछे जन-समूह 'करो या मरो' 'भारत छोडो' 'हरी वोल' इत्यादि के नारे लगाता हुआ आगे वढ रहा था। अब केवल तीन फर्लांग का फासला ब्रिटिश हवाई अड्डे और इन्फेंट्री के बीच वाकी रह गया था और इस तरह दोनो सेनाए एक दूसरे के समीप आ पहुची थी।

जन-सेना के नेताओ ने राजा से अंग्रेजी सेना तथा हवाई अड्डे को हटाने के लिए कहा। पर राजा पहले ही से अपनी एक निश्चित योजना बना चुका था। जनता के नेता, जो राजा से मिलने गए थे, पकड लिये गए और उन्हें अपमानित किया गया चारो ओर से ब्रिटिश फौज ने नाकाबन्दी कर ली थी। आगे-पीछे सब तरफ तोपें लग चुकी थी। अब केवल 'करो व मरो' का नारा सुनाई पडता था।

अंग्रेजी पैदल सेना ने हमला शुरू कर दिया। हवाई जहाजो ने धुआ फेंककर पीछे लौटने के मार्ग बन्द कर दिये। सामने से फायरिंग शुरू थी। कितने ही आदमी वही पर मर गए और सौ से अधिक जख्मी हुए। ७ दिसम्बर को भी सहार जारी रहा। बहुत थोडी ऊचाई से उड-उड कर हवाई जहाज ऊपर से अश्रु-गैस, बम व मशीनगन द्वारा गोलिया चला रहे थे और जमीन पर खडी हुई फौज दाए वाए गोलिया चला रही थी। लोग गिर-पड-कर इधर-उधर भागने लगे और जब कुछ लोग बचकर आस-पास के गावो में जाते थे तो सैनिको की टुकडिया उनका वहा पर भी पीछा करती थी। ३०० से अधिक लोग इन गावो से पकडे गए।

यह सब करने के बाद सैनिको ने देहातो में प्रवेश किया। ऊपर हवाई जहाज चलते थे और जमीन पर सैनिको की टुकडिया। वे गाँवो को लूटती थी, तबाह करती थी और बाद मे आग लगा देती थी। लूट-मार का चौतरफा साम्राज्य था। गाव-के-गाव वीरान हो गये। खाने का सामान, जेवर, वर्तन, कपडा, गाय-बैल सभी कुछ लूट लिया गया। लोगो के जानवर बहुत थोडे दामो में वेच दिये गए। लगभग १० लाख रुपये से अधिक की सम्पत्ति इसी प्रकार लूटी गई। यही नही, बाद में सामूहिक जुर्माना भी किया गया, जिसे बडी निर्दयता के साथ वसूल किया गया।

तालचर मे हुए दमन के कुछ आकडे इस प्रकार है —

गिरफ्तारियाँ	३५०	नजरबन्द	११
सजाए	३००	मृत्यु-सख्या	८
घायल	१५०	फांसी की सजा	१
फरार	३०		

नायागढ—तालचर तथा नीलगिरी रियासतो मे होने वाले आन्दोलन का प्रत्यक्ष रूप से नायागढ रियासत पर भी प्रभाव पडा। १६ अगस्त को नायागढ के कुछ गावो मे नेताओ की गिरफ्तारी के विरोध में दरवार के हुक्मो के खिलाफ लोगो ने सभाये की। रियासत के कर्मचारियो के वहुत कोशिश करने पर यह विरोध-प्रदर्शन न रुके। अन्त मे रियासत को ब्रिटिश पुलिस की मदद लेनी पडी। ७२ आदमियो को गिरफ्तार किया गया और १९ गावो पर ८ हजार रुपया सामूहिक जुर्माना किया गया।

९ सितम्बर सन् १९४२ को हरिपुरा गाँव के पास टेलीफोन के तार काटे गए। आन्दोलन प्रजामण्डल के कुछ कार्यकर्त्ताओ को गिरफ्तार करने के कारण और भी उग्र हो गया। १८ सितम्बर को कनाबक मे ग्रामीणो का एक जलसा हुआ जिसमें तीन सौ से अधिक गौड इकट्ठे हुए। इसमें लोगो ने तय किया कि रियासत की इमारतो पर कब्जा किया जाय और पुलिस अफसरो को नौकरी छोडने के लिए कहा जाय। साथ ही राजधानी पर जाकर अपने नेताओ को जेल से मुक्त किया जाय। रियासत के कर्मचारियो ने इस खबर के पाते ही फौरन तैयारी कर ली। कुछ नेता पकड लिये गए और सैनिक पुलिस की टुकडियाँ बरखोला मे इकट्ठी कर दी गई। अब रियासत मे तोड-फोड के कार्य शुरू होगए और कुदाली बन्दा, नन्दीघर और निकोली स्थानो के टेलीफोन के तार काट दिये गए। १० अक्तूबर की रात को कोन्धा के लोग बरखोला की ओर बढे और वहा के डाकबगले और स्कूल की इमारत मे आग लगा दी और बिहरफोला चौकी पहुचे, जहा पहले से ६ पुलिस के सिपाही तैनात थे। लोगो ने पुलिस की बन्दूकें छीन ली।

उन्मादित जनता का यह समूह नौगाँव थाने की ओर बढा और जगलात के बगले और स्कूल मे आग लगा दी। रास्ते मे पडने वाले गावो के लोग जुलूस मे शरीक होते जाते थे। इस प्रकोर जब यह जुलूस नौगाँव पहुचा तो इसकी सख्या तीन हजार से भी अधिक हो गई थी। थाने पर सगठित व सफल हमला करने के लिए इन लोगो ने अपने को तीन हिस्सो मे बाट लिया। थानेदार ने जनता को आगे न बढने की धमकी दी और

जब जनता बढती ही गई तो पुलिस ने गोलिया चलाई। ५ फायर किये गए जिससे पाच-सात आदमी फौरन वही मर गए। जनता ने अपने मरे हुए आदमियो को उठा लिया और उन्हे जुलूस के साथ ले गई। ठीक इसी दिन ११ अक्तूबर को बरखोला की ओर से एक जुलूस सरकारी डाक बगलो, स्कूल की इमारतो जगलात महकमे के दफ्तरो इत्यादि को जलाते हुए और चौकीदारो सिपाहियो तथा तथा जगलात के कर्मचारियो की वर्दियो को लेता हुआ नौगाव थान की ओर बढा। महीपुर से यह लोग दो टुकडियो में बट गए और थाने पर पहुचकर इन लोगो ने अपने नेताओ को मुक्त करने की मांग पेश की। पुलिस ने गोलिया चलाकर लोगो को तितर-बितर कर दिया।

धेनकनाल—आस-पास की रियासतो की भाति धेनकनाल में भी आन्दोलन चला। २६ अगस्त को नेताओ की गिरफ्तारी के विरोध मे हडताल व प्रदर्शन हुए। २ सितम्बर को विष्णुचरन पट्टनायक के नेतृत्व में जनता के एक समूह ने चादपुर थाने और स्कूल पर आक्रमण किया। पुलिस के थाने से चार बन्दूकें और ७५ कारतूस छीनी गई। ४ सितम्बर को जनता के दूसरे समूह ने परजन थाने पर आक्रमण किया। एक दूसरा दस्ता श्री दिवाकर विश्वास के नेतृत्व में आक्रमण में भाग लेने आ रहा था। पुलिस का पहले से बहुत काफी इन्तजाम था। अत उसने जन-समूह को आते देखकर गोलिया बरसानी शुरू कर दी, जिसके कारण काफी लोग मरे।

काठियावाड़ की रियासतें

काठियावाड हर राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ रहा है। यह एक छोटा-सा प्रान्त है और बहुत-सी छोटी-छोटी रियासतो में बटा हुआ है। कुछ रियासतो का क्षेत्रफल दस-बीस वर्ग मील और आमदनी दो-चार सौ रुपये से अधिक नही है। शासनाधिकार की दृष्टि से ये रियासतें अनेक श्रेणियो मे विभाजित हैं। महात्मा गाधी का जन्म भी काठियावाड की रियासत पोरबन्दर मे हुआ है। इस नाते उनकी काठियावाड की रियासतो में विशेष दिलचस्पी रही है। राजकोट मे जनता ने अधिकार-प्राप्ति के लिए सरदार पटेल के नेतृत्व मे जोरदार आन्दोलन किया और इस सम्बन्ध मे महात्मा गाधी को अनशन भी करना पडा था। सन् १९४२ का आन्दोलन भावनगर, राजकोट, पोरबन्दर, जामनगर आदि रियासतो में विशेष रूप से हुआ।

भावनगर रियासत में ३६१ व्यक्ति गिरफ्तार किये गए और ३००

दण्डित किये गए। ६१ व्यक्तियो को नजरबन्द किया गया। इनके अतिरिक्त ५०० अन्य लोग भी पकडे गए जो बाद में छोड दिये गए। भावनगर युद्ध-सामग्री बनाने का केन्द्र था। ज्यो ही सन् १९४२ का आन्दोलन प्रारम्भ हुआ, जनता ने यहा पर हडताले की और जुलूस निकाले। विद्यार्थियो ने हडतालो मे प्रमुख भाग लिया। कितने ही सामूहिक प्रदर्शन हुए और कुछ विशेष दिनो पर जुलूस व जलसे आदि होते रहे। विद्यार्थियो का एक जुलूस प्रदर्शन करता हुआ रेलवे वर्कशाप व अन्य मिलो मे पहुचा और उनसे काम रोकने की प्रार्थना की। जनता ने भी प्रदर्शनकारियो के साथ सहयोग दिया। नेताओ को गिरफ्तार किया गया और उन्हे नजरबन्द कर लिया गया। इन प्रदर्शन पर कितने ही लाठी-चार्ज हुए। लोगो पर सामूहिक जुर्माना हुआ जो मजदूरो व मध्यमश्रेणी के लोगो से जबरदस्ती वसूल किया गया।

जनता ने अपना विरोध प्रदर्शन करने के लिए राजकोट में कई सभाये की व जुलूस निकाले। पोरबन्दर मे जनता के शान्तिमय समूह ने अधिकारियो से इस बात की माग की कि उनके यहा से माल बाहर न जाय। पर रियासत ने नेताओ को पकड लिया। इससे खरवार लोग (समुद्री नाविक) उत्तेजित हो उठे और जब उन्हे सामान बाहर लेजाने पर विवश किया गया तो उन्होने शक्कर के बोरे समुद्र में फेक दिए। राज्य कर्मचारियो ने नेताओ को छोड दिया और उनसे शान्ति स्थापित करने की प्रार्थना की और जब यह कार्य खत्म हो गया तो उन्हे फिर जेल भेज दिया। जनता का एक विशाल समूह महाराज के पास गया और जब उसके नेताओ के साथ बात हो रही थी तो राज-कर्मचारियो ने बहुत-से अहीर लोगो को बुला लिया और जन-समूह पर भयकर लाठी-चार्ज किया गया। शहर इस प्रकार गुडो के हाथ मे सौंप दिया गया, जिन्होने खूब मनमानी की।

काठियावाड की इन रियासतो मे आन्दोलन का रूप यद्यपि व्यापक था, परन्तु वह लम्बे अर्से तक न चल सका। कितनी ही जगह लाठी-चार्ज हुए और दमन करने मे विभिन्न रियासतो मे प्रतिस्पर्धा रही भावनगर मे जनता अपना डेपुटेशन महारानी के पास अपनी करुण कहानी सुनाने के लिए ले गई, लेकिन कहानी सुनने की कौन कहे, उस पर भी लाठी-चार्ज किया गया। चार-पाच जगह गोलिया चलाई गईं जिससे सैकडो आदमी घायल हुए। इस पर सरकारी इमारतो को क्षति पहुचाई गई और तोड-फोड के कार्य भी काफी मात्रा में किये गए। तार काटे गए, डाक के थैले छीने गए और पुलो को भी तोडने के प्रयत्न किये गए।

पोरबन्दर में सबसे अधिक सामूहिक जुर्माना हुआ और उसे विचित्र तरीके से वसूल किया गया। महाराजा ने कुछ प्रतिष्ठित नागरिको को बुलाया और उन पर तगडा जुर्माना लगा दिया जो एक लाख २० हजार से अधिक था। इन लोगो से पिस्तौलो की नोक पर यह जुर्माना वसूल किया गया। भावनगर में १७ हजार रुपए का सामूहिक जुर्माना किया गया और अमरोली रियासत में १४ हजार रुपया वसूल किया गया।

वडौदा

काग्रेसी नेताओ की गिरफ्तारी के पश्चात् विरोध प्रदर्शन करने के लिए वडोदा में हडताल और सभायें हुई। विद्यार्थियों ने जुलूस निकाले। बाद में आन्दोलन शहर के बाद गावो में भी फैल गया। इस रियासत के कोरदा ग्राम में हुई घटना का १९४२ के खुले विद्रोह के इतिहास में खास स्थान है। काग्रेसी नेताओ की गिरफ्तारी के पश्चात् इस गाव में अम्बालाल गान्धी ने नेतृत्व में जुलूस निकाले गए और सभाए हुई। लोगो में प्रजामडल के नेताओ की गिरफ्तारी तथा दो नौजवानो की मृत्यु की खबर फैलते ही काफी उत्तेजना फैल गई। अम्बालाल गान्धी अपने कुछ अन्य साथियो सहित कोरदा से कुराली पहुचे। उन्हे पता चला कि फौज की एक टुकडी रेल द्वारा कोरदा की ओर बढ रही है। इस अभिप्राय से कि यह टुकडी कोरदा न पहुच सके जनता ने लगभग २॥ मील तक रेल की पटरी बिलकुल उखाड दी। अम्बालाल गाधी ने इसका नेतृत्व किया था।

स्पेशल ट्रेन आई और फौजी सिपाहियो ने उतरकर देखा कि लाइन की पटरी उखाड दी गई है। उन्होने अम्बालाल गान्धी को पकड लिया और उन्हें बडी निर्दयता से मारा। अम्बालाल गान्धी के नौकर को भी गिरफ्तार कर लिया। गाव में सिपाहियो ने घोर आतक फैलाया। एक खास तरीके से नाकाबन्दी करदी, अत कोई भी आदमी घर से बाहर नही जा सकता था। ४५००० रुपया सामूहिक जुर्माना गावो पर किया गया। यह बडी निर्दयता से वसूल किया गया। १०० आदमियो से अधिक गिरफ्तार किये गए और बिना किसी सबूत के कितने ही लोगो को घोर यातनाए दी गईं। गिरफ्तार लोगो को एक सप्ताह तक बराबर एक जगह बन्द रखा गया और सिर्फ दो-तीन बार खाना दिया गया।

मैसूर रियासत

दक्षिणी भारत मे कितनी ही बडी-बडी रियासतें मैसूर, हैदराबाद, कोल्हापुर, ट्रावनकोर इत्यादि है। इसके अतिरिक्त छोटी-छोटी रियासतें हैं।

इनमें से आन्दोलन का अधिक जोर मैसूर रियासत में रहा, क्योंकि यहाँ पर जनता में पहले से काफी राजनीतिक जागृति थी। मैसूर स्टेट काग्रेस के कार्यकर्त्ताओ का जनता के साथ गहरा सम्पर्क था।

अगस्त-क्रान्ति की चिनगारी मैसूर राज्य मे सुलगी, मैसूर स्टेट काग्रेस की शाखाए रियासत के कोने-कोने मे फैली हुई थी। यहा की काग्रेस का मजदूरो पर पूरा असर है। मजदूर यूनियन के पदाधिकारी आम तौर पर काग्रेस के लोग ही है। अत विरोध-प्रदर्शनो में मजदूरो ने प्रमुख भाग लिया। हिंदुस्तान एयर क्रैफ्ट एसोसिएशन ने दो रोज तक जुलूस का नेतृत्व किया। इन प्रदर्शनो मे स्त्रिया, बच्चे, विद्यार्थी, मजदूर, सरकारी नौकर आदि सभी श्रेणियो के लोग शामिल थे। पुलिस के लाख रोकने पर भी जुलूस निकलते हो रहे। जनता सडको पर बैठ जाती थी। इन दिनो जनता के स्वयसेवक भीड का सचालन करते थे। सरकार ने आखिर दमन का आसरा लिया। वह मजदूरो व विद्यार्थी नेताओ की गिरफ्तारिया करने लगी। जुलूसो और सभाओ की मनाई कर दी गई। किन्तु जनता बराबर जुलूस निकालती रही। दिन मे सभी सगह सडको पर जनता की भीड लगी रहती थी। सरकार अपनी शान रखने के लिए जनता का खून बहाने लगी। अन्धाधुन्ध गोलिया चलाई जाने लगी। १९ ता० को १०० आदमी मारे गए और अधिक सख्या में घायल हुए। दूसरे दिन १०० व्यक्ति और गोलियो के शिकार हुए। पुलिस ने बगलौर, दावानगर, मैसूर, तुमकुर और हसन मे गोलिया चलाई। बगलौर मे १५० व्यक्ति और देवनगर में ६ व्यक्ति मरे। बगलौर मे १६ और १७ अगस्त को घटो जमकर लडाई हुई। मरे हुए व्यक्तियो को पुलिस आनन-फानन मे गायब कर देती थी। मरे हुए व्यक्तियो के सम्बन्धियो को भी सूचित नही किया जाता था। किंतु जनता गोलियो से दबने वाली न थी। उसने पोस्ट बॉक्स, बिजली के खम्भे और जो भी सरकारी माल हाथ लगा बरबाद कर दिया। गोलिया चलती रहती थी, लेकिन बिजली के तार काट दिये जाते थे और बिजली के खम्भे सडको पर काटकर बिछा दिये जाते थे। शहर में पोस्ट आफिसो पर धावा बोलकर उन्हे जला दिया गया। घुडसवार पुलिस और अश्रु-गैस छोडने वाली रेजिमेन्ट का भीड को तितर-बितर करने के लिए उपयोग किया गया। टैंक और सशस्त्र मोटरे भी काम मे लाई गई। विद्यार्थी अपनी हडताल जारी रखे हुए थे। सभाए और जुलूस पूर्ववत् निकलते रहे। विश्वविद्यालय की ओर से यह सूचना निकाली गई कि जो २८ सितम्बर की परीक्षा मे बैठेगे उनके विरुद्ध कार्रवाई नही की जायगी। सारे मैसूर राज्य मे २८ ता० को लम्बे-चौडे जुलूस निकाले गये।

बंगलोर के हड़ताली मजदूरों ने विश्वविद्यालय में पिकेटिंग शुरू कर दिया। यद्यपि विद्यार्थियों को लाने के लिए मोटरों का इन्तजाम किया गया, लेकिन १० फीसदी विद्यार्थियों से ज्यादा परीक्षा में न बैठे।

"भारत छोडो दिवस" मनाने का आयोजन हुआ। जुलूस को शहर के चौक पर रोक लिया गया, किंतु जनता ९ बजे सुबह से ७ बजे शाम तक वहीं बैठी रही। दो सप्ताह के भीतर ६०० विद्यार्थी गिरफ्तार हुए। ९ अगस्त से लेकर आधे अक्तूबर तक मजदूर बीच-बीच में हड़ताल करते रहे।

१७ विभिन्न कारखानों के ३२८०० मजदूर दो सप्ताह हड़ताल पर रहे। भद्रवती आइरन वर्क्स के ४५०० मजदूरों में से ३००० मजदूरों और मैसूर पेपर मिल के ११०० मजदूरों में से ४०० मजदूर एक महीने की हड़ताल पर रहे। जिलों में तारों का काटना जारी रहा। मैसूर-बगलोर रेलवे की ओर जनता की पूरी निगाह रही। श्रीरंगपट्टम में एक मालगाडी पटरी से गिरा दी गई, जिससे काफी नुकसान हुआ। बंगलोर-हुबली, बंगलोर-मैसूर और बंगलोर-गुंटकल लाइनों की पटरियां हटा दी गईं। १५ दिन तक गुंटकल लाइन पर रात को रेलों का आना-जाना बन्द रहा। उपरोक्त अन्य दो लाइनों पर एक महीने तक रेलगाडी ठप रही। देवानगर-बनाकर, होतालकर, होसदुर्ग, आजूर और मातापुर रेलवे स्टेशन जला दिये गए। १५ दिन तक मजदूर और विद्यार्थी बिना टिकट सफर करते रहे। खतरे की जंजीर खींचकर ट्रेन रोक ली जाती थी। एक हफ्ते तक फौज को दूध और तरकारियां नहीं मिल सकीं। इसके बाद इन गाडियों के साथ सैनिक चलने लगे।

जनता की भीड, जिसमें अधिकांश विद्यार्थी होते थे, रेलों को रोक कर उनपर अधिकार कर लेती थी। रेलवे कर्मचारियों को खादी की टोपियां दी जाती थीं जिसे वे लोग पहनते थे। विद्यार्थी खुद गार्ड बन जाते थे। इन गाडियों पर झंडे फहराते थे। पांचवें दिन पुलिस इस ट्रेन पर चढ गई और विद्यार्थियों को बुरी तरह पीटा और उनके पास जो कुछ था, छीन लिया और उनको नंगा करके अगले स्टेशन पर उतार दिया। विद्यार्थियों ने इसका उत्तर बनासवर स्टेशन को जला कर दिया। चार डिब्बे और बुकिंग आफिस जला दिये गए। तार काट दिये गए। पुलिस ने गोलियां चलाईं जिसके फलस्वरूप चार मरे और बहुत से घायल हुए। सभाएं करने की मनाई कर दी गई, किंतु जनता ने इसको न माना और शहीदों को इज्जत के साथ उठाकर ले गई। मयाकोंदा गांव की जनता ने एक पुलिस स्टेशन पर कब्जा कर लिया। पुलिस वालों को खद्दर पहनाया। गांव उतनी देर तक स्वतन्त्र रहा जब तक कि बाहर

से मदद नही आई। बाहर की पुलिस ने आकर जनता को बुरी तरह कुचला।

एक मील तक रेलवे की पटरी उखाड दी गई और रेलवे का पुल तोड़ दिया गया, टेलीफोन और टेलीग्राफ के तार काट दिये गए। हुलेलकर, अज्जामपुर और हुसदुर्गापुर की रेले एक सप्ताह तक बन्द रही। बगलोर और हरिहर, चित्तल दुर्ग व जगलू के बीच के तार कई फर्लांग की दूरी तक काट दिये गए। चित्तल दुर्ग, तातुलकान्से, तुरवानर पुलिस स्टेशन पर राष्ट्रीय झडा महीनो तक फहराता रहा। कई गिरफ्तारियो के बाद जब झडा हटा भी तो विद्यार्थियो ने इकट्ठे होकर अपने इलाको और गाव के अस्पताल पर झडा फहराया। गवर्नमेट इमारतो पर झडे फहराये गए। जुलूस और सभाए की गईं। सडको पर और दिवारो पर नारे लिख दिये गए।

मैसूर सब-जेल मे अर्ध रात्रि के समय राजनैतिक बन्दियो पर लाठीचार्ज किया गया। ८०० के करीब बन्दी घायल हुए। एक विद्यार्थी उसी स्थान पर मर गया। मधुगिरी में ताड के पेट काट दिये गए और ताडी की दूकाने जला दी गई। बोशदपुर एक स्वतत्र गाव घोषित कर दिया गया। वहा पटेल का लडका नेता चुना गया। सरकारी अधिकारी उस गाव की ओर बढे, पर पटेल के लडके ने उन्हें गाव मे घुसने नही दिया। वे लौट गये और दूसरी रिजर्व ताकत लेकर आये। पटेल का लडका पुलिस अधिकारियो के हाथ न लगा।

तिपतुर एक रेलवे स्टेशन व व्यापारिक केन्द्र है। वहा की जनता ने गोदामो मे आग लगा दी जिससे एक लाख से अधिक का नुकसान हुआ। रिजर्व पुलिस ने गोली चलाई, जिससे तीन व्यक्ति मरे और बहुत से लोग घायल हुए। १५ आदमी गिरफ्तार हुए। तुमजुर मे सरकारी आज्ञाओ का उल्लघन कर जुलूस निकाले गए और सभाए की गईं। गोरीबिन्दुनीर मे ताड़ के पेड काटे गए और ताडी की दूकाने जला दी गईं। टेलीग्राफ के तार काट दिये गए। १५ दिन बाद १५ व्यक्ति गिरफ्तार किये गए, किन्तु पुलिस को उन्हे ले जाने का साधन न मिला, क्योकि जनता ने अपनी बैलगाडिया देने से इन्कार कर दिया। चिका मगलुर तारी केन मे चन्दन के गोदाम में आग लगा दी गई। ३० गिरफ्तारिया की गईं।

मिलो में हडताले जारी थी ही, कोलार की सोने की खानो में मजदूरो ने महगाई की माग को लेकर हडताल कर दी। बगलोर के चार कपडे की मीलो के १३००० मजदूरो ने हडताल जारी रक्खी। थोडी-बहुत हडताले और जगह भी चलती रही। सब मिल कर १५००० विद्यार्थियो और ४००० मजदूरो ने

इन हड़तालों में भाग लिया।

हसन तथा पड़ोस के जिलो की जनता ने करबन्दी आन्दोलन शुरू कर दिया। शैन्डी अथवा हफ्तेवार बाजार लगते है, इनमें लोगो ने चुगी तथा टोल देने से इन्कार कर दिया।

इस करबन्दी आन्दोलन की मुख्य बातें निम्नलिखित थी —

१ दूकानदारो तथा ग्राहको ने कर देने से इन्कार कर दिया।

२ ठेकेदारो ने अपने ठेके बन्द कर दिये और गवर्नमेंट से अपनी जमानतो की माग की।

३ जहा के ठेकेदारो ने सहयोग करने से इन्कार किया, जनता ने या ता उस बाजार पर पिकेटिंग किया या उन स्थानो पर इकट्ठा हो गए जहा ठेकेदार को कर लेने का कोई अधिकार न था।

४ पुलिस ने कही-कही जनता को जबरदस्ती शैन्डी की जगहो पर ले जाना चाहा और गिरफ्तारिया भी की, किंतु जनता इन बन्दियो को जाने नही देती थी और छुडा लेती थी।

५ एक जगह पर तो जबरदस्ती बाजार लगवाने के लिए फौज आई पर गाववालो ने फौज के रहते हुए बाजार लगाने से इन्कार कर दिया।

यह सत्याग्रह कई जिलो में अनेक स्थानो पर चला और हजारो आदमियो ने इसमें हिस्सा लिया।

आमतौर पर अर्धरात्रि में बहुत-से घरो तथा छापेखानो की तलाशी ली गई। स्थानीय दैनिक पत्रो के सम्पादको पर भारत-रक्षा-कानून की धाराए लगाई गई।

हसन जिले में तो किराये के गुन्डे गाववालो के घरो में घुस गये, माल लूट लिया, स्त्रियो तथा मर्दों को मारा–पीटा तथा अन्धाधुन्ध तरीके से गिरफ्तारिया की गई।

मैसूर आइरन वर्क्स के ४८ तथा मैसूर पेपर मिल के २४ मजदूरो को निकाल दिया गया। इनमें के कुछ तो अभी जेल में ही थे। राज्य में कुल २००० गिरफ्तारिया की गई। १६० व्यक्ति गोलियो के शिकार हुए तथा सैकडो ही घायल हुए।१० रेडियो तथा चार टेलीफोन जब्त कर लिये गए। गवर्नमेंट की ओर से भी कई व्यक्ति घायल हुए। १६ अगस्त को एक सवार मारा गया। शिमोगा जिले के इसुर नामक स्थान पर २५ सितम्बर को एक मामलतदार तथा एक दारोगा मार डाले गए। ११ अगस्त को बगलोर शहर के डी० एस० पी० तथा पुलिस और फौज ले ३० व्यक्ति घायल हुए।

बगलोर जिले के दो गाँवो और शिमोगा जिले के दो गावो पर पाच-पाच सौ अर्थात् कुल दो हजार रुपया सामूहिक जुर्माना किया गया।

मैसूर मे बन्दियो को अदालत से बाहर निकाला गया। इन बन्दियो को खाना नही दिया गया था। इस कारण इन लोगो ने माग की कि जब तक खाना नही दिया जायेगा, तब तक जेल मे नही घुसेंगे। रिजर्व पुलिस को बुलवाकर जबरदस्ती इन्हे जेल के भीतर दाखिल किया गया। रात के १२ बजे रिजर्व पुलिस जेल में आई और बन्दियो को बुरी तरह पीटा गया। कोई दवा का प्रबन्ध नही था। दूसरे दिन २२ व्यक्ति अस्पताल में भरती किये गए। कैलूर शकरप्पा नामक एक हाई स्कूल के विद्यार्थी के मुह से खून निकल आया और वह दो दिन बाद मर गया। डाक्टर ने कहा कि उसको निमोनिया हो गया था, पर वास्तविकता यह थी कि उसकी पसली की हड्डी टूटगई थी। गैर-सरकारी- जेल निरीक्षको को जेल मे जाने की इजाजत न थी।

चिकमगलोर मे बहुत-सी तकलीफो के कारण बन्दियो ने अपनी-अपनी कोठरियो में जाने से इन्कार कर दिया। रिजर्व पुलिस आई और उसनें लाठी-चार्ज किया। बहुत से बन्दी सख्त घायल हुए।

प्रभुदेव नामक मजदूर नेता जो हिरासत मे थे, निकल भागे। इनकी गिरफ्तारी के लिए सरकार ने इनाम का एलान किया। मैसूर की हिरासत से रामराव तथा हुसन से बोराइया फरार हो गए।

अदामा नामक ३० वर्ष की स्त्री को यशवन्तपुर रेलवे क्रासिग के पास तीन हिन्दुस्तानी सिपाही उठा ले गये और उसके साथ घृणित व्यवहार किया। वह विक्टोरिया अस्पताल मे तासरे दिन मर गई। दो अग्रेज अफसर एक बाग मे एक युवती को अपमानित करने की गरज से घुस आये। बरप्पा गोडा नाम की वृद्धा स्त्री ने इसका विरोध किया, अत उसे मारा गया और वह ५ नवम्बर, ४२ को मर गई।

हिन्दुस्तानी अफसरो के लिए रिजर्व सीटो पर यूरोपियन अफसर आकर बैठ गए, जिसके कारण आपस में झगडा हो गया। एक हिन्दुस्तानी सिपाही ने रिवाल्वर निकाल कर एक यूरोपियन अफसर को मार डाला और कुछ घायल हुए। बाकी यूरोपियन अफसर भाग निकले।

हुसन जिले के वारिगुर गाव की जनता नजदीक के एक जगल में एक हजार दो सौ जानवरो को लेकर चराने गई। जगलात विभाग की ओर से लगाये गए हाल के पौधो को नुकसान पहुचाया गया। रिजर्व पुलिस आई और उसने लोगो को तितर-बितर किया।

लडाई के लिए फंड इकट्ठा करने को जो तमाशे हो रहे थे, उनपर ७ नवम्बर १९४२ को नीचे लिखे स्थानो पर बम फेंके गए —

१ मैसूर रायल शो। २ मैनिलेकार निपाल। ३ मिलिटरी-कैन्टिन, बंगलोर कन्टोनमेंट।

श्री केशवन तथा श्री कुसुम नामक दो कालेज के प्रोफेसरो ने स्तीफा दे दिया। श्री एम० एच० शाह इक्जीक्यूटिव आफिसर तथा हिन्दुस्तान एयर क्रैफ्ट कम्पनी के इंजीनियर श्री मोदी, शिमोगा जिले के १० पटेलो, असेम्बली के कई मेम्बरो, ए० आर० पी० और राष्ट्रीय युद्ध मोर्चे के कई सदस्यो ने भी स्तीफे दिये।

श्री एच० आर० गुरुवर्दी, श्री ए० जी० रामचन्द्र राव, श्री के० सुबा-राव आदि व्यक्तियो ने अपनी सनदें वापस कर दी और अदालत में जाना बन्द कर दिया।

अन्य रियासतें

भारत मे ६०० से ऊपर रियासतें हैं। इनमें से यदि हम छोटी-छोटी रिया-सतो को छोड भी दें तो भी ४०–५० रियासतें ऐसी बच जायगी, जिनका राजनीतिक दृष्टि से काफी महत्त्व है। इतनी रियासतो में से केवल १०–५ का ही वर्णन देखकर शायद पाठको के मन मे यह प्रश्न पैदा होने लगा होगा कि क्या भारत की बाकी रियासतो ने देश की आजादी की इस लडाई मे कुछ भाग नही लिया। इसके समाधान के लिए हमारा यह निवेदन है कि जिन रियासतो का वर्णन ऊपर नही हुआ है, वहाँ की जनता ने भी आन्दोलन मे काफी त्याग एव शौर्य का परिचय दिया है, किन्तु बहुत चेष्टा करने पर भी हमें उन स्थानो की मुकम्मिल रिपोर्ट प्राप्त नही हो सकी। अतएव इच्छा होते हुए भी हम उनका वर्णन इस पुस्तक में नही दे सके हैं। सामग्री-सग्रह का प्रयत्न अभी जारी है। आशा है, अगले सस्करण में इस कमी की पूर्ति की जा सकेगी।

: १६ :

युद्ध और मुख्य राजनीतिक दल

कांग्रेस—युद्ध प्रारम्भ होने से पहले ही कांग्रेस ने फासिस्ट-विरोधी नीति अपना रखी थी। इटली द्वारा अबीसीनिया पर आक्रमण तथा हिटलर द्वारा आस्ट्रिया को हथियाने आदि कांडो का कांग्रेस ने निन्दा की थी और ब्रिटिश साम्राज्यशाही को पहले से चेतावनी दे रखी थी कि भारत के लोग किसी साम्राज्यशाही युद्ध मे साथ न देगे। जब ब्रिटिश राजनीतिज्ञ हिटलर और मुसोलिनी के इर्द-गिर्द मडरा रहे थे और इन फासिस्ट तानाशाहो की चापलूसी कर रहे थे, कांग्रेसी नेतृत्व उस समय भी उतना ही फासिस्ट विरोधी था जितना कि युद्ध काल मे। जब यूरोपीय युद्ध प्रारम्भ हुआ, तो कांग्रेस के सामने तीन रास्ते थे।

१. युद्ध मे बिना किसी अगर मगर के ब्रिटिश सरकार का साथ देना। ऐसा करना कांग्रेस की पूर्व घोषणाओ और नीति के विरुद्ध होता।

२ यदि सम्भव हो तो फासिस्ट देशो को सैनिक सहायता प्राप्त करने की चेष्टा करना और इस प्रकार अंग्रेजो के दुश्मनो से सहायता प्राप्त करने की नीति बरतना।

ऐसा करना आत्म-हत्या के समान और अपने सारे पुराने आदर्शो को तिलांजलि देना होता।

३ युद्ध के असली रूप को जानने का प्रयत्न करना और उस समय तक युद्ध की गतिविधि को देखते रहना जब तक कि उसका असली रूप मालूम न हो जाय। युद्ध का भारतीय आकांक्षाओ की प्राप्ति के लिए उपयोग करना, साथ ही दुनिया भर के दबे-पिसे लोगो का साम्राज्यशाही के विरुद्ध संगठित मोर्चा बनाना और इस तरह सफलतापूर्वक इस युद्ध को भारतीय आजादी के युद्ध मे बदलना।

कांग्रेस ने तीसरे रास्ते को अपनाया। प्रारम्भ मे उसने ब्रिटिश सरकार से उसके युद्ध-ध्येय को मालूम किया और ठीक उत्तर न मिलने पर कुछ करने

की नीति को अपनाया। प्रारम्भ म गान्धीजी ने नागरिक स्वतन्त्रता अर्थात् अपने विचारो को स्वतत्र रूप से प्रकट करने के हक की माग की और इस प्रकार दुनिया के सामने युद्ध के असली रूप को रखने का प्रयत्न किया। व्यक्तिगत सत्याग्रह के रास्ते को अपनाया और उसके द्वारा देश में चेतना, युद्ध के प्रति अपनी वास्तविक स्थिति जानने की उत्सुकता और हर नागरिक में अपने हक का प्राप्त करने की इच्छा पैदा की। काग्रेस हाई कमाड का प्रारम्भ से ही यह विश्वास रहा कि युद्ध लम्बा चलने वाला है। अत उसके लिए आवश्यक था कि वह इस लम्बे काल मे एक-सी नीति वरते जिससे एक ओर देश की शक्ति भी क्षीण न हो तथा दूसरी ओर देश में नई स्फूर्ति, जीवन व उत्साह पैदा हो। व्यक्तिगत सत्याग्रह का प्रारम्भ में कितने ही लोगो ने मखौल उडाई, पर किसी भी बडे व शक्तिशाली आन्दोलन के लिए यह आधार-शिला थी।

जापान की बढती हुई विजय तथा अग्रेजी शस्त्रो की हार और आये दिन बढती हुई कठिनाइयो के कारण हिन्दुस्तानी कुछ करने के लिए व्याकुल हो उठे। और समय आया जब काग्रेस नेतृत्व के सामने दो ही रास्ते थे। एक तो यह कि निष्क्रिय होकर देश का युद्ध की लपटो में झुलसते हुए देखना और अग्रेज विरोधी भावना के कारण भारतीयो को जापानियो के सामने अप्रत्यक्ष रूप से आत्म-समर्पण करने देना और इस तरह फासिस्ट ताकतो की विजय कराना। दूसरा रास्ता यह था कि देश के अन्दर फैली हुई बेचैनी, परेशानी व नफरत की शक्ति को क्रियात्मक व रचनात्मक ढग से सगठित कर साम्राज्य-शाही और फासिस्टशाही दोनो के विरुद्ध जुटा देना और इस प्रकार दुनिया के करोडो लोगो की तरह अपने देश के लोगो में भी अपनी आजादी के लिए मर-मिटने, बलिदान करने की व्यापक शक्ति पैदा करना और अपने देश को युद्ध की तबाही से बचाने के लिए ऐसी नीति बरतना, जिसके कारण एक ओर जापानी देश पर हमला न कर सकें और दूसरी ओर इस हमले का मुकाबला करने के लिए हिन्दुस्तानियो में वास्तविक शक्ति पैदा हो जाय। इस प्रकार काग्रेस ने दूसरे मार्ग को अपनाकर अग्रेजो से भारतीयो को वास्तविक शक्ति सौपने अर्थात् केंद्र में राष्ट्रीय सरकार कायम करने की माग की और उन्हे बताया कि बिना वास्तविक सत्ता के उनके प्रति भारतीयों के क्रोध, नफरत व उत्तेजना को हमदर्दी, मुहब्बत और सहानुभूति मे नही बदला जा सकता। लडाई में मदद करने के लिए जनता में गहरा मेल और सगठन होना चाहिए और उसे पता होना चाहिए कि वह किस चीज के लिए लड रही है,

किस आदर्श के लिए सब कठिनाइया भुगत रहा है। ब्रिटिश नौकरशाही को, जिसे अपनी सैनिक शक्ति पर पूर्ण विश्वास था और जा वास्तव मे साम्राज्यशाही आदर्शो के मुताबिक जापानियो के अधिक नजदीक थी, यह कभी भी स्वीकार न था कि वह स्वय अपने हाथो भारतीय आकाक्षाओ की पूर्ति करे। इसके विपरीत उसे यह मजूर था कि भले ही दूसरी शक्ति उससे सत्ता छीन ले। अत उसने काग्रेस की माग व बातो को गलत समझा और अपनी निश्चित योजनानुसार सैनिक-बल द्वारा किसी भी आन्दोलन का दवाने की नीति को अपनाया। ऐसी स्थिति मे सघर्ष अवश्यम्भावी था और वह हुआ भी।

मुस्लिम लीग—भारतीय राजनीति मे आज मिस्टर जिन्ना और उनकी मुस्लिम लीग एक पहेली और न सुलझने वाले प्रश्न बन गए है। उनकी नीति व व्यूह-रचना के विरुद्ध अनेक प्रकार की तीक्ष्ण समालोचनाए होती है। शिक्षित मुसलमानो का एक बहुत बड़ा समुदाय मिस्टर जिन्ना की राजनीतिक सफलता पर, जो उन्होने इस युद्ध-काल में प्राप्त की है, बडा गर्व करता है और उन्हे एक बड़ा दूरदर्शी कुशलराजनीतिज्ञ और मुस्लिम हितकारी नेता मानता है। मुसलमानो का विश्वास है कि मुस्लिम लीग ने जो शक्ति व सम्मान पाया है और भारतीय राजनीति मे उसे जो महत्वपूर्ण स्थिति मिली है उस सबका श्रेय मिस्टर जिन्ना की नीति-निपुणता को ही है। उनके विचार से मि० जिन्ना एक धुरन्धर राजनीतिज्ञ है जिन्होने मुस्लिम जाति को बिना किसी कुर्बानी व त्याग के एक शक्तिशाली जमात के रूप मे सगठित कर दिया है और उन्हे एक नया नारा देकर उच्च ध्येय की ओर जुटा दिया है। इन लोगो के विश्वास के मुताबिक मि० जिन्ना ने काग्रेस और ब्रिटिश राजनीतिज्ञो दोनो ही को काफी मात दी है। ठीक इसके विरुद्ध ऐसे लोग भी है जो मिस्टर जिन्ना को देशद्रोही तक कहने से नही हिचकते। उनका विश्वास है कि मि० जिन्ना की नीति के कारण भारतीय आजादी का प्रश्न खटाई में पडा है। मि० जिन्ना की नीति एव कार्यो से मुस्लिम जाति की अपेक्षा ब्रिटिश साम्राज्यशाही को कही अधिक लाभ पहुचा है, अत यह लोग रोष में आकर उन्हे ब्रिटिश एजेन्ट तक कह बैठते है। इस प्रकार की दो विरोधी आलोचनाओ के बीच हम वास्तविकता को तभी समझ सकते है जब मि० जिन्ना की नीति, व्यूह-रचना तथा विचार-धारा को जानने का प्रयत्न करें। तभी हमारे लिए यह आसान हो जायगा कि भारतीय राजनीति में आमतौर पर और युद्ध-काल में खास तौर पर मि० जिन्ना ने किस प्रकार की नीति को बरता है, उनका क्या ध्येय है और उसे प्राप्त करने के उनके कौन-से साधन है। इसमे कोई दो

राय नही है कि मिस्टर जिन्ना शक्ति-सतुलन की कला के प्रकाड पडित और दूरदर्शी राजनीतिक नेता है, जिनका नेतृत्व बडी तेजी से फला-फूला है। मिस्टर जिन्ना मेरे निकट कोई विशेष व्यक्ति नही है, बल्कि विशष स्थितियो के परिणाम है। जिस प्रकार यूरोप में हिटलर और मुसोलिनी पैदा हुए उसी प्रकार भारतीय रगमच पर मि० जिन्ना पैदा हुए है। यूरोप में ब्रिटिश, फ्रासीसी व रूसी सघर्ष के कारण हिटलर ने शक्ति पाई। उसने इस सघर्ष का फायदा उठाया और एक नई युद्ध-कला का आविष्कार किया। जर्मन जनता ने हिटलर को देवता के समान समझा और उसका स्वागत किया। हिटलर ने विना युद्ध और वलिदान के एक विशाल जर्मन साम्राज्य बनाने की वात जर्मनो को वताई, उन्हे जाति-द्वेष का नारा दिया और अपने विरोधियो के प्रति नई नीति वरती। उसका कहना था कि अपने विरोधियो को यह कभी मत वताओ कि तुम क्या चाहते हो। उनके मस्तिष्क पर प्रचार व शक्ति-प्रदर्शन द्वारा वरावर वार करते रहो। उनके आपसी झगडो से पूरा फायदा उठाओ और जब कभी वह तुम्हारे पास समझौते के लिए आय तो उनको दोषी ठहराते हुए उनसे कहो कि तुम यह भी नही जानते कि हम क्या चाहते है। जब वह तुम्हारी थोडी-सी वात मानने को तैयार हो तो तिरस्कार से उनकी सुलह-कारी नीति को ठुकराते हुए अपनी माग वढाते जाओ। एक ओर सुलह का दरवाजा खोले रखो, पर जब वह दरवाजे के नजदीक आय तो दरवाजा वन्द कर उनकी मानसिक शक्ति को क्षीण करते रहो और जनता में अपनी शक्ति वढाते रहो। इस प्रकार हर छोटी-मोटी जीत को एक विशाल रूप देकर अपने अनुयायियो पर अपने नेतृत्व का सिक्का जमाते रहो। इसी नीति को वडी सफलता के साथ भारतीय राजनीति में मिस्टर जिन्ना ने वरता और उनके नेतृत्व का जन्म और विकास उसी प्रकार हुआ है जिस प्रकार कि यूरोपीय रगमच पर हिटलर का हुआ। एक दूरदर्शी नेता की तरह मि० जिन्ना ने समझ लिया कि ब्रिटिश साम्राज्यशाही कभी भी राजी-खुशी भारतीयो को शक्ति न देगी। उमडता हुआ राष्ट्रीयवाद, जो काग्रेस के नेतृत्व में सगठित है, आजादी पाने के लिए वेकरार हो रहा है। अत इन दोनो के सघर्ष से फायदा उठाकर अपनी शक्ति का विकास किया जा सकेगा। उन्होने सोचा कि एक शक्ति को दूसरी शक्ति का कमजोर करने के लिए नई शक्ति पर निर्भर रहना होगा। इस विश्वास व विचार-धारा से प्रेरित होकर मि० जिन्ना ने भारतीय मुसलमानो के प्रश्न को आन्दोलन का रूप दिया और जाति-द्वेष का इजेक्शन लगाकर मुस्लिम जनता को नफरत, घृणा व द्वेष के आधार पर हिन्दुओ के

विरुद्ध सगठित किया। उन्होने मुस्लिम जनता को एक नया ध्येय व नारा दिया और समझाया कि इस ध्येय की प्राप्ति के रास्ते में हिन्दू बाधक है और यही हिन्दू काग्रेस मे शामिल है। अत. काग्रेस हिन्दुओ की जमात है और ऐसी जमात मुस्लिम-आकाक्षाओ की दुश्मन है।

इस प्रकार ब्रिटिश साम्राज्यशाही और हिन्दू काग्रेस हमे दोनो ही से लड़ना है। यह तो उन्होने कहा मुस्लिम जनता से, पर वास्तव मे उनका स्थिति-विश्लेषण यह था कि काग्रेस और नौकरशाही के बीच होने वाले सघर्ष के कारण वह अपना ध्येय बिना किसी बलिदान, त्याग तथा सघर्ष के ही प्राप्त कर सकेगे। अग्रेजो से उन्होने कहा कि 'काग्रेस केवल इसलिए सफल नही हो सकती कि मुसलमान उसमें शामिल नही है, और यदि मुस्लिम-आकाक्षाओ की पूर्ति न की गई और उनकी पाकिस्तान की माग को न माना गया तो वह भी विरोध मे शामिल हो सकते है। इसलिए अग्रेजो के फायदे मे यही है कि वह पाकिस्तान की माग को मान ले।' काग्रेस से उन्होने कहा कि 'भारत को आजादी तभी मिल सकती है जब काग्रेस और लीग मिल जाय और मिलकर अग्रेजो पर जोर डाले और लीग काग्रेस से तभी मिल सकती है जब कि काग्रेस उनके पाकिस्तान के ध्येय को मान ले।' इस प्रकार दोनो ही के सामने उन्होने अपनी पाकिस्तान की माग को रखा। ब्रिटिश नौकरशाही ने काग्रेस की माग और शक्ति का प्रतिकार करने के लिए उनकी चापलूसी करने और उनकी शक्ति को बढाने की नीति बरती। काग्रेस ने अपने को सच्ची राष्ट्रवादी सस्था साबित करने तथा ब्रिटिश साम्राज्यशाही की पुरानी 'आपस मे लडाने और हुकूमत करने' की नीति का प्रतिकार करने के लिए मुस्लिम लीग के प्रति दोस्ती और मेल-मिलाप की नीति अपनाई। दुर्भाग्य से मि० जिन्ना ने इन नीतियो को, जिनका ब्रिटिश साम्राज्यशाही और काग्रेस हाई कमाड ने अपने-अपने हित में अनुसरण किया था, दोनो की कमजोरी समझा और अपने को शक्तिशाली समझा। किन्तु यह उनकी बडी भारी भूल थी।

किसी भी जाति के सगठन एव शक्ति का पता इस बात से चलता है कि उसके नेता ने अपने अनुयायियो के अन्दर कितनी त्याग और बलिदान की शक्ति पैदा की है और अपने सगठन को आक्रमण और बचाव दोनो ही प्रकार की लड़ाई के लिए सुदृढ बना लिया है। युद्ध-काल मे मुस्लिम लीग को जो कूट-नीतिक सफलताए हुई उसके कारण मुस्लिम जनता चौंधिया गई और उसने इसे अपने नेता की व्यूह-रचना तथा नीति-निपुणता का परिणाम समझा। इस प्रकार नेता का भावी तारतम्य बिगड गया। यह निश्चित है कि मुस्लिम लीग

को भविष्य में काफी कडुवे अनुभव होंगे और असफलताओं का सामना करना पडेगा। युद्ध-काल में मिस्टर जिन्ना ने दोहरी नीति बरती। मुस्लिम जनता के ब्रिटिश-विरोधी और युद्ध-विरोधी भावों को ध्यान में रखते हुए उन्होंने एक ओर कांग्रेस के पीछे चलने की नीति को अपनाया और दूसरी ओर ब्रिटिश साम्राज्यशाही से छोटे-मोटे लाभ पाने का प्रयत्न किया। एक ओर उन्होंने कांग्रेस की भांति तय किया कि मुस्लिम लीग युद्ध-प्रयास में मदद न देगी। दूसरी ओर आसाम, सीमाप्रान्त, बंगाल, आदि मुस्लिम प्रान्तों में ब्रिटिश नौकरशाही की सहायता से अपने मंत्रिमंडल कायम कराये और इस प्रकार ब्रिटिश-साम्राज्यशाही को युद्ध में मदद दी। साथ ही उन्होंने इस काल में कांग्रेस की शक्ति को क्षीण करने तथा मुसलमानों में हिन्दुओं के प्रति विरुद्ध भाव जाग्रत करने की नीति अपनाई। कांग्रेस ने सन् १९४२ में जब खुले विद्रोह की चर्चा की तो ब्रिटिश नौकरशाही पर अपना प्रभाव डालने के लिए मि० जिन्ना ने गृह-युद्ध के खतरे की धमकी देकर अपनी जमात और जाति के लिए अंग्रेज अधिकारियों से सुविधाजनक स्थिति प्राप्त करने की चेष्टा की। उन्होंने यह संकेत भी किया कि केवल उनकी नीति के कारण ही कांग्रेस खुले विद्रोह में सफल नहीं हो सकेगी, इसलिए अंग्रेजों को चाहिए कि वह उनके साथ समझौता कर लें और भारतीय राज्य-सत्ता उनके हाथ में सौंप दें। युद्ध-काल में मिस्टर जिन्ना की नीति यही रही कि वे कांग्रेस और ब्रिटिश साम्राज्यशाही के बढ़ते हुए संघर्ष से अधिक-से-अधिक लाभ उठाएं। इस नीति में वह सफल भी हुए, पर युद्ध के पश्चात् समय पलटा, दुनिया की राजनीति बदली और पुराने विचार व तरीके निकम्मे दीख पडे। ब्रिटिश नौकरशाही स्वयं अपने परस्पर विरोधी कारणों से टूटने लगी और उसका आर्थिक और सामाजिक ढांचा अस्त-व्यस्त होने लगा। ब्रिटेन की जनता में स्वयं साम्राज्यवाद विरोधी विचार जोर पकड़ने लगे और एक नई नीति व नए समाज की कल्पना की जाने लगी। लेबर गवर्नमेन्ट शक्ति में आई और मिस्टर जिन्ना के अंग्रेज मित्र मिस्टर एमरी और मिस्टर चर्चिल पस्त हुए। पर मिस्टर जिन्ना ने इन सब घटनाओं से कुछ न सीखा। उन्हें अपने पुराने साथियों और विश्वासों पर गर्व था और बदलती हुई हालत में भी वह अपने उन्हीं पुराने पासों से खेलना चाहते थे। समय आया कि ब्रिटिश-सरकार ने अपने आर्थिक व राजनीतिक हित में भारतीय आकांक्षाओं के साथ सुलह और समझौते की नीति बरतना प्रारम्भ किया और कांग्रेस नेतृत्व से समझौता करने के लिए हाथ बढ़ाया। मिस्टर जिन्ना के लिए यह सब असहनीय था। उन्हें कभी भी ऐसी आशा न थी कि ऐसा भी हो

सकता है। इस बदलती हुई स्थिति के लिए उन्होने अपने मस्तिष्क मे कोई गुजाइश नही छोड रखी थी। ब्रिटिश केबिनेट मिशन वहाँ आया। मिस्टर जिन्ना ने अपनी पुरानी नीति के मुताबिक पुराने ही तरीके अपनाये और पुराने ही पाँसे खेले। वे नही समझ सके कि अब ब्रिटिश साम्राज्यशाही के हित मे यह नही है कि वह भारतीय राष्ट्रवाद से सघर्ष करे। उनकी आधार-शिला टूट चुकी थी। अब उस पर कायम रहना मूर्खता थी। दिल्ली और शिमला मे ये राजनीतिक दाव-पेच होते रहे और अन्त मे १०० वर्ष के ब्रिटिश शासन के बाद मिस्टर जिन्ना को पता चला कि अग्रेज लोग झूठ भी बोल सकते है। अपनी पूर्व ट्रेनिंग के अनुसार उन्होने गुर्राने तथा धमकी देने आदि की नीति बरती, पर जमीन उनके नीचे से निकल चुकी थी। ब्रिटिश सरकार को उनकी शक्ति का ज्ञान था। काग्रेस भी उनकी बावत काफी जान चुकी थी। क्षोभ व क्रोध से उत्तेजित मिस्टर जिन्ना ने 'गृह-युद्ध' और 'सीधे सघर्ष' इत्यादि के नारे बुलन्द किए। पर जर्मनी और जापान को हराने वाली ब्रिटिश-साम्राज्यशाही तथा काँग्रेस पर इन धमकियो का क्या असर हो सकता था? इन दोनो ने एक दूसरे को पहचाना और दोनो ने मिलकर मिस्टर जिन्ना को पहचाना। इन मिस्टर जिन्ना न कई घोषणाए की जो एक दूसरे से बिलकुल उलटी थी। द्वेष और घृणा की गर्जना करने वाले मिस्टर जिन्ना शाति, सुलह व अहिंसात्मक आन्दोलन की चर्चा करने लगे। अस्थायी सरकार मे जाने के प्रस्ताव को तिरस्कार पूर्वक ठुकराने वाले और हिन्दू मुस्लिम समान प्रतिनिधित्व पर एक इच भी न झुकने वाले मिस्टर जिन्ना आज बिना किसी शर्त के केवल वाइसराय की शुभ प्रेरणा के आधार पर अस्थायी सरकार मे शरीक हो गए। यह युग अब मिस्टर जिन्ना के जवाल का युग है जब कि उन्हे यह अनुभव करना होगा कि बलिदान, त्याग, खून, और आँसू के दौर मे न गुजरने वाली जमात को कठोर वास्तविकता के सामने इसी प्रकार झुकना होता है।

काग्रेस समाजवादी पार्टी—सन् १९३४ मे काग्रेस के अन्दर इस पार्टी का जन्म हुआ। यह एक उग्र, प्रगतिशील वामपक्षी काग्रेस-जनो की पार्टी है। उनका विश्वास है कि समाज की रचना समाजवादी उसूलो के आधार पर होनी चाहिए और राष्ट्रीय आन्दोलन की गति-विधि को उग्र बनाने के लिए आवश्यकता पडने पर गुप्त, गुरिल्ला युद्ध और सगठित हिंसा को भी अपनाया जा सकता है। यह लोग एक ओर राष्ट्रीय एकता के हितार्थ काग्रेस हाई कमाड के नेतृत्व मे विश्वास करते है, पर साथ ही इनका गान्धीजी की अहिंसा की नीति एव साधनो मे पूर्णतः विश्वास नही है। समय पडने पर जो शस्त्र उपयोगी

हो, यह उसी का प्रयोग करने में विश्वास करते हैं। इन १२ सालों में इस पार्टी की शक्ति व सम्मान में काफी वृद्धि हुई है। जब यूरोपीय युद्ध प्रारम्भ हुआ तो इस पार्टी का भी यही कहना था कि सामूहिक आन्दोलन किया जाय। वह गान्धीजी द्वारा शुरू किये गए व्यक्तिगत सत्याग्रह से अधिक सन्तुष्ट न थी। सन् १९४२ में जब कांग्रेस ने वर्धा-प्रस्ताव पास किया तो इन लोगों ने उसका बडा स्वागत किया और गांधीजी द्वारा प्रयुक्त 'अंग्रेजो भारत छोडो' व 'खुला विद्रोह' आदि शब्दों को इन लोगों ने क्रान्तिकारी रूप में जनता के सामने पेश किया। सन् १९४२ में जब ब्रिटिश नौकरशाही ने कांग्रेस पर प्रहार किया और कांग्रेसी नेता चारो ओर पकडे जाने लगे तो कांग्रेस समाजवादी पार्टी के नेताओ ने खुले विद्रोह के सिलसिले में अपनी नवीन नीति को अपनाया और नये साधनों का प्रयोग किया। इन्होंने गान्धी जी के पुराने वक्तव्यों तथा समय-समय पर दिये गए भाषणों को अपने दृष्टिकोण से पेश करके जनता को यह बताने की चेष्टा की कि गान्धीजी वास्तव में 'खुला विद्रोह' चाहते थे, अत मौजूदा हालत में हमारे लिए आवश्यक है कि इस आन्दोलन की चिनगारी को किसी-न-किसी रूप में जिन्दा रखें। गान्धीजी ने हर आदमी को आजाद कर दिया है और वह जिस तरह भी हो वह अपने प्रतिरोध की भावना का प्रदर्शन कर सकता है। अत इन्होंने इस काल में गुप्त संगठन प्रारम्भ किया और 'आजाद हिंद दस्ते' बनाने के प्रयत्न किए। जहाँ सम्भव था वहा जनता का मोर्चा भी स्थापित किया गया। गुरिल्ला लडाई के सिद्धान्तो पर भी अमल करने के प्रयत्न किए, इस प्रकार सन् १९४२ के आन्दोलन मे सबसे पहले हमने देखा कि गांधीजी की सामूहिक व प्रत्यक्ष आन्दोलन की कला के विरुद्ध समाजवादी नेताओं ने अपने ही तरीको का प्रयोग किया और इस प्रकार भारतीय राजनीति में एक नये नेतृत्व का प्रत्यक्ष रूप हमारे सामने आया। जितने समाजवादी नेता अपने को पकड धकड से बचा सकते थे, उन्होंने अपने को बचाया और गुप्त तरीको से काम लिया। श्री जयप्रकाशनारायण जी के जेल से बाहर आजाने पर इस गुप्त आन्दोलन में नई स्फूर्ति, शक्ति व जीवन आ गया। इस पार्टी के प्रमुख नेता श्रीजयप्रकाश-नारायण, श्री राममनोहर लोहिया, अच्युत पटवर्धन, वी० एस० डाडेकर और श्री मोहनलाल गौतम हैं। इनमें से अधिकतर अन्त समय तक अपने-अपने तरीको से अपने-अपने सूबो में कार्य करते रहे। इनका प्रोग्राम नवयुवकों को विशेषकर आकर्षित करता है। इस तरह कांग्रेस समाजवादी पार्टी ने सन् १९-४२ के आन्दोलन में काफी शक्ति प्राप्त की और अपने को एक नए नेतृत्व के रूप में संगठित कर लिया। इस विषय में हम अन्यत्र काफी प्रकाश डाल चुके हैं।

कम्युनिस्ट पार्टी—भारतीय राजनीति मे कम्युनिस्ट पार्टी ने अपने लिए एक विशेष आकर्षण पैदा कर लिया है। कुछ अपनी नीति के कारण और कुछ एक निश्चित विचार-धारा के आधार पर सगठित होने के कारण यह एक बडी सुसगठित पार्टी है जिसमे बडे जोशीले, उत्साही, फिलासफी-उन्मादित तथा पढे-लिखे नवयुवक शामिल है। भारत मे होने वाले राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रति इस पार्टी की सदा ही एक निराली नीति रही है और इस युद्ध के प्रति भी उसने जिस नीति को बरता है, उसके कारण इस पार्टी के प्रति सब दलो मे भारी शकाए पैदा हो चली है और राष्ट्रीय सैनिको और उसके बीच एक गहरी खाई भी पैदा हो गई है जिसे अब किसी मन्तव्य द्वारा पाटा नही जा सकता। कम्युनिस्ट पार्टी की नीति को हम तब तक ठीक नही समझ सकते जब तक कि हम यह न जान लें कि आखिर उसकी नीति की आधार-शिला क्या है। इस मौलिक बात का न जानने के कारण आज देश मे इसके प्रति काफी रोष फैला हुआ है और स्वय कम्युनिस्ट लोगो ने भी इस मौलिक बात को छिपाने का प्रयत्न किया है। बढते हुए राष्ट्रवाद के प्रभाव को देखकर इन्होने अपने-आपको भारतीय राष्ट्रीयता का एक अनिवार्य अग बनाने का प्रयत्न किया और इसी दृष्टि से वह काग्रेस मे घुसे और उसके भीतर तमाम उग्र तथा उन्नतिशील शक्तियो का नेतृत्व ग्रहण करना चाहा, पर जो नीति इन्होने युद्ध-काल मे बरती उससे पता चलता है कि इनकी नीति-सचालन का राष्ट्रीय आकाक्षाओ व भारत मे होने वाली घटनाओ से कोई सम्बन्ध नही है, बल्कि उसका आधार सोवियत् रूस की वैदेशिक नीति ही है। यदि कम्युनिस्ट प्रारम्भ से इस सत्य को बताकर चलते और साफ तौर पर यह कहते कि उनके विश्वास के मुताबिक रूस उन्नतिशील विचारो का केन्द्र है और उस केन्द्र की हिफाजत करना तथा उसके आधार पर अपनी नीति का निर्माण करना हमारा परम कर्त्तव्य है तो ऐसी हालत मे कम्युनिस्टो के प्रति कोई गलतफहमी न होती, पर इस नग्न सत्य को उन्होने भारतीय जनता से छिपाना चाहा और अपने को भारतीय राजनीति का एक अग बताकर सारी राष्ट्रीय राजनीति तथा आन्दोलन की प्रगति को अपने ही आधार पर चलाने का प्रयत्न करना चाहा। इस दोहरी नीति का भडा-फोड़ आवश्यक था।

सन् १९३९ में जब युद्ध प्रारम्भ हुआ और हिटलर ने दोनो मोर्चों पर न लडने के खयाल से सोवियत् रूस से फैसला कर लिया, तो हमारे इन कम्युनिस्ट साथियो ने सारी दुनिया में इस युद्ध को साम्राज्यवादी युद्ध करार दिया और ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध शीघ्र ही एक सामूहिक आदोलन करने की

सलाह दी। उस समय यह लोग कांग्रेस हाई कमांड का केवल इसलिए विरोध कर रहे थे कि वह साम्राज्यशाही से युद्ध न करके कुछ छोटा-मोटा फैसला करने की बात कर रहा था। इनके मुताबिक इस नीति का अनुसरण करना देश के साथ विश्वासघात करना था। यही नहीं, फ्रांस के कम्युनिस्ट नेता मिस्टर थोरे उस समय जर्मन रेडियो से निरन्तर इस बात का प्रचार कर रहे थे कि फ्रेंच जनता को इस साम्राज्यवादी युद्ध में अपनी सरकार का साथ नहीं देना चाहिए और इस प्रकार वह जर्मनी की इस लड़ाई के जीतने में अप्रत्यक्ष रूप से मदद दे रहे थे।

यकायक सन् १९४१ में जर्मनी ने जब रूस पर आक्रमण कर दिया तो सारी दुनिया के कम्युनिस्टों की नीति बदल गई और उनके विश्वास के मुताबिक इस युद्ध का रूप भी बदल गया। अब यह युद्ध उनके लिए एक साम्राज्यवादी युद्ध नहीं था, बल्कि जनता की आकांक्षाओं के केन्द्र सोवियत् रूस पर होने वाला यह आक्रमण सारी जनता के ऊपर प्रहार था। अत इन्होंने उस युद्ध को अब जनता के युद्ध का रूप दिया। इस नीति के अनुसार भारतीय कम्युनिस्टों ने भी अपनी नीति बदली और इन्होंने अब कांग्रेस हाई कमांड तथा कांग्रेस संगठन को भी इस नीति को अपनाने की सलाह दी। इन दिनों भारत में बाह्य घटनाएं इस नीति के बिलकुल प्रतिकूल थीं। ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध यहां गहरा असन्तोष फैल रहा था और उसके प्रति विद्वेष इतना बढ़ गया था कि भारतीय जनता कम्युनिस्टों के कथन को केवल साम्राज्यवादी युद्ध का प्रचार समझती थी। कम्युनिस्टों का जन युद्ध का नारा जनता की आकांक्षाओं, इच्छाओं व मनोवृत्तियों के बिलकुल विपरीत था और इसलिए जब कोई इस युद्ध को जनता का युद्ध बताने की चेष्टा करता था तो साधारण जनता में भी चिढ़ और झुंझलाहट पैदा होती थी। ठीक इसी समय कम्युनिस्टों ने लोगों के गले से यह कड़ुवी बात उतारनी चाही। स्वभावत उसका परिणाम यही हुआ कि इनका सम्बन्ध जनता से टूट गया।

सन् १९४२ में कांग्रेस ने 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पास किया तो कम्युनिस्टों ने इसका विरोध किया। उन्होंने अपने को आन्दोलन से अलग रखकर जहां तक सम्भव हुआ इसका विरोध किया। उस समय कम्युनिस्टों का विद्यार्थियों तथा मजदूरों पर काफी प्रभाव था। पर इन दोनों वर्गों ने इनके नारों व तराकों की अवहेलना करके आन्दोलन में पूरा सहयोग दिया। कम्युनिस्टों की इस नीति ने सब लोगों को यह बात बता दी कि उनकी नीति का आधार भारतीय आकांक्षाएं तथा भारत में होने वाली घटनाएं नहीं हैं। राष्ट्रवाद का

नारा उनके लिए केवल एक साधन है, ध्येय नही और इस प्रकार भारतीय जनता उनके नेतृत्व पर कभी भी भारतीय आकाक्षाओ की पूर्ति के लिए विश्वास नही कर सकती।

कम्युनिस्टो का अपना ही एक तर्क है। यह उसी के द्वारा अपनी नीति निर्धारित करते है और उसे अकाट्य समझते है। यदि कोई इससे सहमत नहीं हो पाता तो यह मान बैठते है कि उसमे उस तर्क को समझने की शक्ति नही है। कभी-कभी उनकी मान्यता रोष का रूप भी धारण कर लेती है। सन १९४२ मे जब इन्होने जनता के युद्ध का नारा लगाया तो साथ ही भारतीय राष्ट्रवाद के सामने एक नया नारा रखा; जो वास्तव में अग्रेजो की नीति से अधिक मेल खाता था। इन्होने हमें बताया कि भारत मे राष्ट्रीय सरकार की स्थापना होनी चाहिए। राष्ट्रीय सरकार की स्थापना तब तक नही हो सकती जब तक काग्रेस और मुस्लिम लीग मे समझौता न हो। अत कम्युनिस्टो ने कहा कि हम दोनो मे समझौता कराने की कोशिश करेगे। यह ठीक उसी प्रकार का तर्क है जो ब्रिटिश नौकरशाही हमें १०० वर्षो से बता रही है। इस तर्क का समर्थन करते हुए हमारे इन कम्युनिस्ट साथियो ने इस बात को स्वीकार कर लिया कि अभी तक भारतीय समाज पुरानें दकियानूसी धार्मिक आधार पर ही सगठित है, किन्तु वास्तव में उसे मानना मार्क्सवाद के नियमो की अव-हेलना करना है। काग्रेस हाई कमाड और विशेष कर महात्मा गाधी जब हिन्दू-मुस्लिम एकता की बात करते थे तो कम्युनिस्ट उनके दृष्टिकोण को दकिया-नूसी कहकर मखौल उडाते थे। सन् १९४२ मे हिन्दुस्तान के कम्युनिस्ट वही सब बाते कह रहे थे जिनकी अब तक वह कडी समालाचना करते थे। अब उनमें और नरमदल के लोगो के दृष्टिकोण मे कोई फर्क न था। वह केवल राष्ट्रीय सरकार की स्थापना की चर्चा करते थे और जब काग्रेस उसके लिए लडाई का बिगुल बजाना चाहती थी तो वह उस लडाई से स्वय बचना चाहते थे और जनता को भी उससे अलग रखना चाहते थे। बात वास्तव में यह थी कि चूकि उस समय इग्लैंण्ड और रूस मे समझौता था, इसलिए वह रूस की वैदेशिक नीति के अनुसार ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध किसी प्रकार का आन्दो-लन करना रूस के युद्ध-प्रयास के लिए घातक समझते थे। अत उन्होने जनता को प्रभावित करने तथा अच्छा तर्क ढूंढने के लिए जन-युद्ध का नारा उठाया जनता की उमडती हुई राष्ट्रीय भावनाओ को सन्तुष्ट करने के लिए राष्ट्रीय सरकार की स्थापना का नारा भी लगाया। पर इसके लिए इन्होने जिस साधन को बरता, उसका ध्येय की प्राप्ति से कोई लगाव न था।

हिन्दू महासभा—भारतीय राजनीति में हिन्दू महासभा का कोई विशेष स्थान नही है। उसके अपने ही कारण है। फिर भी हिन्दू महासभा का सगठन कायम है। युद्ध-काल में इस पार्टी के नेताओ ने मुस्लिम लीग की तरह अवसरवादी नीति का ही अनुसरण किया। इन्होने यद्यपि खुले रूप में युद्ध मे अग्रेजो का साथ देने की नीति को नही बरता, पर सरकारी नौकरियों मे मुसलमानो की बढती हुई सख्या का मुकाबला करने के लिए ब्रिटिश साम्राज्य-मे अपना नाता बनाए रखने का प्रयत्न किया। एक ओर इसने काग्रेस को हिन्दू-हित-विरोधी सस्था बताकर हिन्दू-जनता से सहानुभूति हासिल करने की नीति बरती और इस प्रकार प्राप्त की हुई शक्ति के आधार पर ब्रिटिश सरकार पर जोर डालकर सरकारी शासन मे हिस्सा पाने की कोशिश की। उनका अभिप्राय था कि ब्रिटिश-सरकार के हाथ में राज्य सत्ता है और काग्रेस, जिसमें मुख्यत हिन्दू है, ब्रिटिश-सरकार से लड ही रही है अत काग्रेस की शक्ति का प्रतिकार करने के लिए ब्रिटिश-सरकार यह सिद्ध करना चाहेगी कि सारे हिन्दू काग्रेस साथ नही है और इसे सिद्ध करने के लिए उसे किसी हिंदू सस्था की अवश्य आवश्यकता होगी। ऐसी स्थिति मे हम ब्रिटिश-सरकार से हिन्दुओ के नाम पर शासन से कुछ हिस्सा पा सकेंगे। अत इनका कहना था कि वह अग्रेजो को युद्ध-प्रयास में मदद देने को तैयार है, बशर्ते कि हुकूमत उन्हे शासन मे साझीदार बनाए। ब्रिटिश हुकूमत के लिए जहा एक ओर मुस्लिम-लीग की शक्ति को काग्रेस के विरुद्ध प्रोत्साहित करना जरूरी था, वहाँ दूसरी ओर बढती हुई मुस्लिम शक्ति का प्रतिकार करने के लिए यह भी आवश्यक था कि वह हिन्दू महासभा की शक्ति को बिलकुल नजर अन्दाज न करे। युद्ध-काल में मुस्लिम-लीग और हिन्दू महासभा दोनो ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से एक दूसरे का प्रतिकार करने के लिए ब्रिटिश सरकार को मदद दी और ब्रिटिश सरकार ने इस दोनो ही सस्थाओ का यथासमय अच्छा लाभ उठाया।

परिशिष्ट

८ अगस्त १९४२ को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी द्वारा पास किया प्रस्ताव

"अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी ने कार्यसमिति के १४ जुलाई १९४२ के प्रस्ताव के विषयो पर, जो कार्य समिति द्वारा प्रस्तुत किये गए थे, और बाद की घटनाओ पर, जिनमें युद्ध की घटनावली, ब्रिटिश सरकार के जिम्मेदार वक्ताओ के भाषण और भारत तथा विदेशो मे की गई आलोचनाए सम्मिलित है, अत्यत सावधानी के साथ विचार किया है। अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी उस प्रस्ताव को स्वीकार करते हुए उसका समर्थन करती है और उसकी राय है कि बाद की घटनाओ ने इसे और भी औचित्य प्रदान कर दिया है और इस बात को स्पष्ट कर दिखाया है कि भारत मे ब्रिटिश शासन का तात्कालिक अत भारत के लिए और मित्रराष्ट्रो के आदर्श की पूर्ति के लिए अत्यन्त आवश्यक है। इस शासन का स्थायित्व भारत की प्रतिष्ठा को घटाता और उसे दुर्बल बनाता है और अपनी रक्षा करने तथा विश्व-स्वातत्र्य के आदर्श की पूर्ति में सहयोग देने की उसकी शक्ति में क्रमिक ह्रास उत्पन्न करता है।

"अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी ने रूसी और चीनी मोर्चो पर स्थिति के बिगडने को निराशा के साथ देखा है और वह रूसियो और चीनियो की उस वीरता की भूरि-भूरि प्रशसा करती है जो उन्होने अपनी स्वतत्रता की रक्षा करने में प्रदर्शित की है। जो लोग स्वतत्रता के लिए प्रयत्न कर रहे है और आक्रमण के शिकार हुए व्यक्तियो से सहानुभूति रखते है उन सबको नित्य बढता जाने वाला खतरा उस नीति की परीक्षा करने के लिए बाध्य करता है जिसका मित्र-राष्ट्रो ने अभी तक अवलम्बन किया है और जिसके कारण बारम्बार भीषण असफलताए हुई है। ऐसे उद्देश्यो और प्रणालियो पर आरूढ बने रहने से असफलता सफलता मे परिणत नहीं की जा सकती, क्योकि पिछले अनुभव से प्रकट हो चुका है कि असफलता इन नीतियो में निहित है। ये नीतिया स्वतत्रता पर

इतनी आधारित नही की गई है, जितना कि अधीन और औपनिवेशिक देशो पर आधिपत्य बनाए रखने और साम्राज्यवादी परम्पराओ तथा प्रणालियो को अक्षुण्ण बनाए रखने के प्रयत्नो पर। साम्राज्य को अधिकार मे रखना शासन-सत्ता की शक्ति बढाने के बजाय एक भार और शाप बन गया है। आधुनिक साम्राज्यवाद की सर्वोत्कृष्ट क्रीडा-भूमि भारत इस प्रश्न की कसौटी बन गया है, क्योंकि भारत की स्वतत्रता से ही ब्रिटेन और मित्रराष्ट्रो की परीक्षा होगी और एशिया तथा अफ्रीका की जातियो मे आशा और उत्साह भर जायगा।

"इस प्रकार इस देश मे ब्रिटिश शासन के अत होने की अतीव और तत्काल ही आवश्यकता है। इसी के ऊपर युद्ध का भविष्य और स्वतत्रता तथा प्रजातत्र की सफलता निर्भर है। स्वतत्र भारत अपने समस्त विशाल साधनो को स्वतत्रता के पक्ष मे और नाज़ीवाद, फासिस्टवाद और साम्राज्यवाद के विरुद्ध लगाकर इस सफलता को सुनिश्चित कर देगा। इससे केवल युद्ध की स्थिति पर ही प्रबल प्रभाव नही पडेगा वरन् समस्त पराधीन और पीडित मानव-समाज भी मित्रराष्ट्रो के पक्ष में हो जायगा और भारत जिन राष्ट्रो का मित्र होगा उनके हाथ मे विश्व की नैतिक और आत्मिक नेतृत्व भी आ जायगा। बधनो मे जकडा हुआ भारत ब्रिटिश साम्राज्यवाद का मूर्तिमान स्वरूप बना रहेगा और उस साम्राज्यवाद का कलक समस्त मित्रराष्ट्रो के सौभाग्य को दूषित करता रहेगा।

"इसलिए आज के खतरे को देखते हुए भारत को स्वतत्र कर देने और ब्रिटिश आधिपत्य को समाप्त कर देने की आवश्यकता है। भविष्य के लिए किसी भी प्रकार की प्रतिज्ञाओ और गारटियो से वर्त्तमान परिस्थिति मे सुधार नही हो सकता और न उसका मुकाबला किया जा सकता है। इनसे जन-समुदाय के मस्तिष्क पर वह मनोवैज्ञानिक प्रभाव नही पड सकता जिसकी आज आवश्यकता है। केवल स्वतत्रता की दीप्ति से ही करोडो व्यक्तियो का वह बल और उत्साह प्राप्त किया जा सकता है जो तत्काल ही युद्ध के रूप को बदल देगा।

"इसलिए अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी पूरे आग्रह के साथ भारत से ब्रिटिश शासन को हटा लेने की माग को दुहराती है। भारत की स्वतत्रता की घोषणा हो जाने पर एक अस्थायी सरकार स्थापित कर दी जायगी और स्वतत्र भारत मित्रराष्ट्रो का मित्र बन जायगा और स्वातत्र्य-सग्राम के सम्मिलित प्रयत्न की परीक्षाओ और दुख-सुख मे हाथ बटायेगा। अस्थायी सरकार देश के मुख्य दलो और वर्गों के सहयोग से ही बनाई जा सकती है। इस प्रकार यह एक मिली-जुली सरकार होगी जिसमें भारतीयो के समस्त महत्त्वपूर्ण वर्गों का प्रतिनिधित्व

होगा। उसका प्रथम कर्त्तव्य अपनी समस्त सशस्त्र तथा अहिंसात्मक शक्तियो द्वारा मित्रराष्ट्रो से मिलकर भारत की रक्षा करना, आक्रमण का विरोध करना, और खेतो, कारखानो तथा अन्य स्थानो के काम करने वाले उन श्रमजीवियो का कल्याण और उन्नति करना होगा जो निश्चय ही समस्त शक्ति और अधिकार के वास्तविक पात्र है। अस्थायी सरकार एक विधान-निर्मात् परिषद् की योजना बनायेगी और यह परिषद् भारत सरकार के लिए एक ऐसा विधान तैयार करेगी जो जनता के समस्त वर्गो को स्वीकार होगा। काग्रेस के मत से यह विधान सघ विषयक होना चाहिए जिसके अन्तर्गत सघ मे सम्मिलित होने वाले प्रातो को शासन के अधिकतर अधिकार प्राप्त होगे। अवशिष्ट अधिकार भी इन प्रातो को प्राप्त होगे। भारत और मित्रराष्ट्रो के भावी सम्बन्ध इन समस्त स्वतत्र देशो के प्रतिनिधियो द्वारा निश्चित कर दिये जाएगे जो अपने पारस्परिक लाभ तथा आक्रमण का प्रतिरोध करने के सामान्य कार्य में सहयोग देने के लिए परस्पर वार्तालाप करेगे। स्वतत्रता भारत को अपनी जनता की सम्मिलित इच्छा और शक्ति के बल पर आक्रमण का कारगर ढग से विरोध करने मे समर्थ बना देगी।

"भारत की स्वतत्रता विदेशी आधिपत्य से अन्य एशियाई राष्ट्रो की मुक्ति का प्रतीक और प्रारभ होगी। बर्मा, मलाया, हिन्द-चीन, डच द्वीप समूह, ईरान, और ईराक को भी पूर्ण स्वतत्रता मिलनी चाहिए। यह स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए कि इस समय जापानी नियत्रण में जो देश है उन्हे बाद को किसी औपनिवेशिक सत्ता के अधीन नही रखा जायगा।

"इस सकट काल में यद्यपि अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी को प्रधानत भारत की स्वाधीनता और रक्षा से सम्बन्ध रखना चाहिए तथापि कमेटी का मत है कि ससार की भावी शान्ति, सुरक्षा, और व्यवस्थित उन्नति के लिए स्वतत्र राष्ट्रो का एक विश्वसघ बनाने की आवश्यकता है। अन्य किसी आधार को आधार बनाकर आधुनिक ससार की समस्याए नही सुलझाई जा सकती। इस प्रकार के विश्व-सघ से उसमें सम्मिलित होने वाले राष्ट्रो की स्वतन्त्रता एक राष्ट्र द्वारा दूसरे राष्ट्र पर आक्रमण और शोषण को रोकना, राष्ट्रीय अल्पसख्यको का सरक्षण, पिछडे हुए समस्त क्षेत्रो और लोगो की उन्नति और सबके सामान्य हित के लिए विश्व-साधनो का एकत्रीकरण किया जाना निश्चित हो जायगा। इस प्रकार का विश्व-सघ स्थापित हो जाने पर समस्त देशो मे नि शस्त्रीकरण हो सकेगा, राष्ट्रीय सेनाओ, नौसेनाओ और वायु-सेनाओ की कोई आवश्यकता नही रहेगी और विश्व-सघ-रक्षक सेना विश्व में शाति रखेगी

और आक्रमण को रोकेगी।

"स्वतन्त्र भारत ऐसे विश्व-सघ मे प्रसन्नता पूर्वक सम्मिलित होगा और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याए सुलझाने मे अन्य देशो के साथ समान अधिकार पर सहयोग देगा।

"ऐसे सघ का द्वार उसके आधारभूत सिद्धातो का पालन करने वाले समस्त राष्ट्रो के लिए खुला रहना चाहिए। युद्ध के कारण यह सघ आरम्भ मे केवल मित्र राष्ट्रो तक ही सीमित रहेगा। यदि यह कार्य अभी प्रारम्भ कर दिया जाय तो युद्ध पर, धुरी राष्ट्रो की जनता पर और आगामी शाति पर इसका बहुत जोरदार प्रभाव पडेगा।

"परतु कमेटी खेदपूर्वक अनुभव करती है कि युद्ध की दु खद और व्याकुल कर देने वाली शिक्षाए प्राप्त कर लेने के पश्चात् और विश्व पर सकट के बादलो के घिरे होने पर भी कुछ ही देशो की सरकारे विश्व-मघ बनाने की ओर कदम उठाने को तैयार है। ब्रिटिश सरकार की प्रतिक्रिया और विदेशी पत्रो की भ्रमपूर्ण आलोचनाओ से स्पष्ट हो गया है कि भारतीय स्वतत्रता की स्पष्ट माग का भी विरोध किया जा रहा है, यद्यपि यह वर्तमान खतरे का सामना करने और अपनी रक्षा तथा इस आवश्यक घडी मे चीन और रूस की सहायता कर सकने के लिए की गई है। चीन और रूस स्वतत्रता की बडी मूल्यवान् निधि है और उसकी रक्षा होनी चाहिए, इसलिए कमेटी इस बात के लिए बड़ी उत्सुक है कि उसमे किसी प्रकार की बाधा न पडे और मित्रराष्ट्रो की रक्षा करने की शक्ति मे कोई विघ्न न होने पावे। परन्तु भारत और इन राष्ट्रो के लिए खतरा नित्य बढता ही जा रहा है। और इस समय विदेशी शासन-प्रणाली के आगे सिर झुकाने से भारत का पतन होता जा रहा है और स्वय आत्म-रक्षा करने तथा आक्रमण का विरोध करने की उसकी शक्ति घटती जा रही है। इस दशा मे न तो नित्य बढते जाने वाले खतरे का कोई प्रतिकार ही किया जा सकता है और न मित्रराष्ट्रो की जनता की कोई सेवा ही की जा सकती है। कार्य समिति ने ब्रिटेन और मित्रराष्ट्रो से जो सच्ची अपील की थी उसका अभी तक कोई उत्तर नही मिला है। बहुत से विदेशी क्षेत्रो मे की गई आलोचनाओ से प्रकट होगया है कि भारत और विश्व की आवश्यकताओ के विषय मे अज्ञानता फैली हुई है। कभी-कभी तो आधिपत्य बनाये रखने की भावना और जातिगत ऊच-नीच का प्रतीक वह विरोध भी दिखाया गया है जिसे अपनी शक्ति और अपने उद्देश्य के औचित्य का ज्ञान रखने वाली कोई भी अभिमानी जाति सहन नही कर सकती।

"इस अन्तिम क्षण में विश्व-स्वातन्त्र्य का ध्यान रखते हुए अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी फिर ब्रिटेन और मित्रराष्ट्रों से अपील करना चाहती है। परन्तु वह यह भी अनुभव करती है कि उसे अब राष्ट्र को एक ऐसी साम्राज्यवादी और शासन-प्रिय सरकार के विरुद्ध अपनी इच्छा प्रदर्शित करने से रोकने का कोई अधिकार नही है जो उस पर आधिपत्य जमाती है और जो उसे अपने तथा मानव-समाज के हित का ध्यान रखते हुए काम करने से रोकती है। इसलिए कमेटी भारत के स्वतन्त्रता और स्वाधीनता के अविच्छेद अधिकार का समर्थन करने के उद्देश्य से अहिंसात्मक प्रणाली से और अधिक-से-अधिक विस्तृत परिणाम पर एक विशाल संग्राम चालू करने की स्वीकृति देने का निश्चय करती है, जिसमे देश गत २२ वर्षों के शांतिपूर्ण संग्राम में संचित की गई समस्त अहिंसात्मक शक्ति का प्रयोग कर सके। यह संग्राम निश्चय ही गांधीजी के नेतृत्व में होगा और कमेटी उनसे नेतृत्व करने और प्रस्तावित कार्यवाहियो मे राष्ट्र का पथ प्रदर्शन करने का निवेदन करती है।

"कमेटी भारतीयो से उन खतरो और कठिनाइयों का, जो उन पर आयगे, साहस और दृढतापूर्वक सामना करने तथा गांधीजी के नेतृत्व मे एक बने रहकर भारतीय स्वतन्त्रता के अनुशासित सैनिको के समान उनके निर्देशो का पालन करने की अपील करती है। उन्हे यह अवश्य याद रखना चाहिए कि अहिंसा इस आन्दोलन का आधार है। ऐसा समय आ सकता है जब निर्देश देना अथवा निर्देशो का हमारी जनता तक पहुचना सम्भव न होगा और जब कांग्रेस समितियां काम नही कर सकेंगी। ऐसा होने पर इस आन्दोलन में भाग लेने वाले प्रत्येक नर-नारी को सामान्य निर्देशो की सीमा म रहते हुए अपने आप काम करना चाहिए। स्वतन्त्रता की कामना और उसके लिए प्रयत्न करने वाले प्रत्येक भारतीय को स्वयं अपना पथ प्रदर्शक बनकर उस कठिन मार्ग पर अग्रसर होते जाना चाहिए जहा विश्राम का कोई स्थान नही है और जो अंत मे भारत की स्वतन्त्रता और मुक्ति पर जाकर समाप्त होता है।

"अंत में यह बताना है कि यद्यपि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने स्वतन्त्र भारत की भावी सरकार के विषय में अपना विचार प्रकट कर दिया है, तथापि कमेटी समस्त सम्बद्ध लोगो के लिए यह बिलकुल स्पष्ट कर देना चाहती है कि विशाल संग्राम आरम्भ करके वह कांग्रेस के लिए कोई सत्ता प्राप्त करने की इच्छुक नही है। सत्ता जब मिलेगी तो उस पर समस्त भारतीयो का अधिकार होगा।"

निर्देशिका

इससे आगे उन प्रान्तो के नक्शे दिये जा रहे है, जिनमे अगस्त-विद्रोह जोरदार रूप में रहा। हमारा इरादा तो यह था कि नक्शे पुस्तक के अदर हर प्रात का विवरण शुरू होने से पहले दिये जाते। पर कोशिश करने पर भी यह समय पर तैयार नही हो पाये। इस कारण इनको यहा देना पड रहा है।

इनका क्रम वही रखा गया है जो पुस्तक में प्रातो का है। नक्शो में

निशान वाले वह स्थान है जहा आदोलन तीव्रता से हुआ है। और

निशान वाले वह स्थान है जहा आदोलन साधारण अवस्था में रहा। पजाब प्रात मे आदोलन बिलकुल नही हुआ इस कारण वहा अग्रेजी झडा लगा दिया गया है।

BENGAL
बंगाल
BHUTAN
भूटान
TIBET
तिब्बत
TIPERA
तिपरा
CHERAPUNJ
चेरापूंजी
SHILONG
शीलांग
ASSAM
आसाम
MONIPUR STATE
मणीपुर रियासत
BRAHAMPUTRA RIVER
ब्रह्मपुत्र नदी
BURMA
बर्मा

NEPAL
नेपाल
PUNJAB
पंजाब
RAJPUTANA
राजपूताना
CHHAPRA
GARHWAL
GANGES RIVER
BIHAR
संयुक्त प्रान्त

BIHAR
विहार
ASSAM
आसाम
B E N G A L
ब गा ल
मिदनापुर
MEDN PUR
STATE
BURMA
बर्मा
ORISA
उडीसा
BAY OF BENGAL
वगाल की खाडी

BIHAR बिहार
BENGAL बंगाल
PROVINCES
CENTRAL
ORISSA NATIVE STATES
KALA HANDI
BALASHARE
MADRAS
BAY OF BENGAL

RIWA RAJ
रीवा राज
INDOR STATE
BOMBAY
CENTRAL STATE
ORISA
CENTRAL PROVINCE
MAHAKAUSHAL
BALAGHAT
WARDHA
NIZAM'S STATE
CENTRAL STATE
GODAKARI RIVER

पंजाब
PUNJAB
SHIKAPPUP
SUKKER
HURS
BULUCHISTAN
बलूचिस्तान
FARKANA
INDUS RIVER
S I N D
सिंध
HYDEPABAD
THARPARKAF
KAPACHI
RAJPUTANA
राजपूताना
ARABIAN SEA
अरब सागर

काशमीर रियासत
KASHMIR STATE
ABBOTABAD
AFGHANISTAN
अफगानिस्तान
PESHAWAR
KOHAT
NORTH WAZIRISTAN
PUNJAB
पंजाब
BANNU
SOUTH WAZIRISTAN
D I KHAN
BALOCHISTAN

KASHMIR
N W F P
सीमांत प्रांत
लाहौर
LAHORE
P U N J A B
पंजाब
STATES
BALOCHISTAN
PATIALA
RAJPUTANA
UNITED PROVINCES
SIND
सिंध

शाहवाद, आरा, दरभगा, चम्पारन, मुजफ्फरपुर, भागलपुर, मुगेर, पुर्णिया आदि जिलो में लगभग ८० प्रतिशत देहातो में स्थित थाने अपने सदर मुकामो पर आ गये थे और कितनी ही जगह ये जिले के सदर मुकाम भी घबराहट की स्थिति मे कार्य कर रहे थे। जिले की कचहरियाँ वन्द हो गई थी और इन जिलो के देहातो मे अग्रेजी राज्य के अधिकाश चिह्न गायब होने लगे थे। यह स्थिति कुछ इलाको में अगस्त मास तक और कुछ जिलो मे एक डेढ मास वाद तक ही टिक सकी।

मजदूरों का सहयोग

बिहार प्रान्त मे टाटानगर तथा डालमिया नगर दो ही प्रधान औद्योगिक केन्द्र है। राष्ट्र-नेताओ की गिरफ्तारी का समाचार सुनते ही टाटानगर के मजदूर भी क्रोधित एव अधीर हो उठे। उन्होने विरोध स्वरूप हडताल करने का निर्णय किया। इसी बीच १५ अगस्त की रात को उनके पाच नेता श्री एम० जोहन, एम० के घोष, टी० पी० सिन्हा, एन० सी० मुकर्जी तथा त्रेतासिह उनसे छीनकर जेलो के अन्दर ठूँस दिये गये। त्रेतासिह २८ वर्ष के वह नौजवान सिक्ख थे जिन्हे जेल की सख्तियो के विरुद्ध दो बार भूख हडताल करनी पडी। दूसरी भूख हडताल समाप्त होने के बाद ही वह वीर पटना के सरकारी अस्पताल मे अपना यह नश्वर शरीर देश की वेदी पर उत्सर्ग कर सदा के लिए शान्त होगया। मजदूर लोगो का क्रोध चरम सीमा पर पहुँच चुका था, अब वे उसे दबाए रखने मे असमर्थ थे। परिणामस्वरूप २० अगस्त से ३०,००० मजदूरो की हडताल आरम्भ हुई। क्या बूढे, क्या जवान, क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, क्या स्त्री, क्या पुरुष सभी श्रेणी के मजदूरो ने हडताल में भाग लिया और इस तरह यह दिखा दिया कि देश के नेताओ के प्रति उनकी कितनी हमदर्दी है तथा देश की स्वतन्त्रता को वे अपने व्यक्तिगत सुख एव आराम से कितना अधिक महत्त्व देते है। मजदूरो की यह हडताल लगातार १३ दिन तक चलती रही। उसकी यह विशेषता थी कि वह पूर्ण अहिंसात्मक रही। जन तथा धन किसी की भी कुछ हानि न की गई। श्री टी० एम० शाह के शब्दो में, "हडताल इतनी स्वाभाविक तथा शान्तिपूर्ण थी कि अमेरिकन और अन्य विदेशी सैनिको को भी इसकी भूरि-भूरि प्रशसा करनी पडी और यह कहना पडा कि इस तरीके की हडताल की हम अपने देश के मजदूरों से भी ...गा नही कर सकते।" अधिकारी वर्ग ने मजदूरो मे फूट डालने तथा नये मजदूर भरती करने के लिए तरह-तरह से लालच दिये, धमकाया, डराया,

बहकाया पर एक भी मजदूर हडताल तोडने के लिए तैयार नही हुआ। हर एक को इस बात का गर्व था कि वह अपने लिए नही, अपने परिवार के लिए नहीं, बल्कि अपने देश की स्वतन्त्रता के लिए लड रहा है। बहुतो ने अपनी जान जोखिम मे डाली, फैक्टरी के दरवाजो पर पिकेटिंग की, जेल गये तथा अन्य बहुत-सी मुसीबतो को झेला। इस प्रकार का प्रदर्शन अन्य स्थानो के मजदूरो ने भी किया और अपने बलिदान तथा त्याग द्वारा देश की स्वतन्त्रता की लड़ाई को आगे बढाया।

बिहार प्रान्त में सरकारी दमन का इतिहास हृदय-विदारक, खून खौला देने वाली लज्जाजनक घटनाओ व काडो से भरा पडा है। इसका हरेक पृष्ठ निहत्थे किन्तु उत्तेजित लोगो के खून से रगा हुआ है। नौकरशाही ने जिस क्रूरता से लोगो की भावनाओ को कुचलना चाहा वैसा सम्भवत ससार में अन्यत्र शायद ही किया गया हो। बिहार के हरे-भरे सम्पन्न गाव किस प्रकार श्मशान में परिवर्तित कर दिए गये, इसकी अपनी ही रोमाञ्चकारी कहानी है, जिसको सुनकर दिल दहलने लगता है, आखो में खून उतर आता है और शरीर का एक-एक अग विद्रोह करने लगता है।

टॉमी, गुरखा, पठान, जाट, आदि सैनिक मनमाना अत्याचार करने के के लिए प्रान्त के प्राय सभी जिलो में छोड दिये गए। प्रारम्भ में गोरे सिपाही भी भेजे गये क्योकि नौकरशाही काले सिपाहियो पर पूर्णतया विश्वास नही कर सकती थी। इन गोरे सिपाहियो ने नशे में चूर होकर अधाधुध लोगो का गोलियो का शिकार बनाया। बहुत जगह इन मनचले सिपाहियो ने दिलबहलाव के लिए भी गोली के वार किये। गावो को लूटा गया, जलाया गया तथा इस प्रकार आतक जमाकर पुन ब्रिटिश राज-सत्ता के चिह्न पुनर्जीवित किये गए। जिलो मे थाने पुन वापिस गये। जो सिपाही तथा थानेदार जनता के डर से भाग गये थे वे अब फौज की सहायता से फिर अपनी-अपनी जगह बुला लिये गए। फौजी लोग तथा पुलिस के कर्मचारियो ने स्त्रियो के साथ भाति-भाति के अत्याचार किये। उन्हे नगा कर-पीटा गया, घसीटा गया, उनके साथ बलात्कार किया गया। कितने ही ग्रामीण लोगो को बुरी तरह पीटा गया, कितनो को पकडने की धमकी देकर उनसे रुपया ऐंठा गया। खाते-पीते लोगो को केवल अपनी सम्पत्ति के कारण और भी अधिक तकलीफो का सामना करना पडा। पुलिस व फौज के सिपाहियो की इन पर खास दृष्टि रही और यही लोग थे जिन्होने युद्ध-प्रयासो में काफी पैसा दिया था।

चर्खा-संघ पर हमला

विहार प्रान्त में चर्खा-सघ की सस्थाए भी पुलिस के दमन से अछूती न रही। पहले-पहल पुलिस ने मधुवनी केन्द्र पर, जो जिले का प्रधान केन्द्र है, हमला किया और उसकी तमाम सम्पत्ति पर मोहर चपडी लगा दी। बाद मे तो सकोरा, लहेरिया, सराय, मुजफ्फरपुर, मामजद, पाजनगर, वरसिंघयार, हाजीपुर, भगन, विगडा, नवादा, शिवनार, चाववाला, राँची आदि स्थानो के खादी आश्रमो पर भी सरकार ने कब्जा कर लिया और उन पर मोहर चपडी लगा दी गई। शकरपुर, हहदपुर, खर्जोली, ऊमगाँव, हयखा, भैरावा, डीघवाडा, सीतामढी तथा विथौली के खादी भडारो में आग लगा दी गई और तमाम सामान जलाकर राख कर दिया गया। महदपुर, मधुपुर, भानीगची, विक्रम एव बेदुल मे तो पुलिस तथा फौजियो ने खादी भडारो को बुरी तरह लूटा और इस प्रकार कमीनेपन का परिचय दिया। बिहार चर्खा-सघ के ६० से अधिक मुख्य कार्यकर्ता जेल के सीखचो मे बन्द कर दिये गए। सघ से जिसका थोडा वहुत भी प्रत्यक्ष एव अप्रत्यक्ष सम्बन्ध था पुलिस वालो ने उसे भी अछूता न छोडा। संघ के कपडे धोने वाले वेचारे धोवियो के घर भी लूट लिये गए।

इनके अतिरिक्त पुलिस तथा फौजियो के अन्य जघन्य एव अमानुषिक कृत्यो का विवरण जिलो के विवरण मे आगे दिया जायगा।

१. पटना जिला

पटना सम्पूर्ण बिहार प्रान्त का सदर मुकाम है, अतएव आन्दोलन का श्रीगणेश भी यही से हुआ। बम्बई में नेताओ की गिरफ्तारी के साथ पटना में राजेन्द्र बाबू के पकडे जाने से जनता क्षुब्ध हो उठी। पटना तथा अन्य शहरो मे हडताल प्रारम्भ होगई। पटना के सब स्कूल तथा कालेज बन्द हो गये। उत्तेजित जनता ने रेल, तार, डाक आदि प्राय सभी सरकारी सस्थाओ पर अपना अधिकार जमा लिया और पूर्ण रूप से सरकारी शासन को पगु वना दिया। पुलिस चौकियो तथा सरकारी कचहरियो पर भी जनता का अधिकार हो गया। वडे-वडे सरकारी अफसरो को या तो अन्य स्थानो पर भाग जाना पडा या जनता को आत्म-समर्पण कर अपनी जान बचानी पडी। यातायात के सभी साधन नष्ट कर दिये गए, जिससे वहाँ की कोई खवर वाहरी दुनिया को न मिल सकी। इस प्रकार कुछ दिनो के लिए पटना दुनियो के दूसरे हिस्सो से एक प्रकार अलग-सा हो गया।

सोमवार १० अगस्त का दिन पटना के इतिहास में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण दिन था। इस दिन जिस उत्साह एव जोश के साथ दो-चार नहीं, दस-बीस नहीं, सैकडो-हजारो की सख्या में स्कूलो तथा कालेज के लडके राष्ट्रीय झडे हाथ में लिये शहर की सडको पर घूम रहे थे, उसका स्मरण कर मुर्दा दिलो मे भी जोश आये बिना नही रह सकता। यह वह दृश्य था, जिसने नौजवानो को हँसते-हँसते देश की आजादी के लिए अपने प्राणो के कुर्बान होने का सबक सिखाया था, यह वह अपूर्व पर्व था जिसने स्त्रियो को अपने भाइयो तथा पतियो के साथ स्वतत्रता के इस पवित्र युद्ध में कन्धे से-कन्धा भिडाकर लडने को तैयार किया था, राष्ट्रीय सैनिको की यह वह परेड थी, जिसने छोटे-छोटे बच्चो को अपनी जाने न्यौछावर करने को तैयार किया था।

स्वतन्त्रता के ये नौजवान सिपाही, काग्रेस के अहिंसा के सिद्धान्त का पूरी तरह से पालन करते हुए जगह-जगह लोगो को बलिदान करने के लिए तैयार करते हुए घूमने लगे। सरकारी अधिकारियो ने पुलिस की सहायता से उन्हे तितर-बितर करना चाहा। पर नौजवानो के त्याग ने सिपाहियो का दिल दहला दिया और उन्होने लाठी चार्ज करने से साफ इन्कार कर दिया। ११ अगस्त को सवेरे से प्रभात फेरियाँ शुरू हुईं। स्कूलो तथा कालेजो मे पिकेटिंग प्रारम्भ हुआ। पिकेटिंग करने वालो पर लाठी चार्ज किया गया। कई पकडे गये, बहुतो को चोटे आईं। सारा शहर इन नारो से गूज रहा था। "बम्बई से आई आवाज़, इन्कलाब ज़िन्दाबाद" "जेल की कडियाँ करें पुकार, इनकलाब ज़िन्दाबाद" ऐसा प्रतीत होता था मानो शहर का एक-एक कण 'इन्कलाब ज़िन्दाबाद' की ध्वनि कर रहा है। विद्यार्थी गण बडी उमग के साथ आगे बढ रहे थे। पुलिस लाइन के पास कलक्टर आर्चर कुछ घुडसवारो तथा लाठी धारी सिपाहियो के साथ जुलूस को रोकने के लिए खडा था। मौलवी बशीर ने बढती हुई जनता पर लाठी प्रहार करने का हुक्म दिया, किन्तु मि० आर्चर के रोक दिये जाने पर जनता उसी गति से आगे बढती गई। गर्ल्स हाई स्कूल के पास जुलूस पहुँच गया। अचानक जनता पर बेंतो की वर्षा होने लगी, घोडे दौडाये जाने लगे, लाठी का प्रहार होने लगा। बलूची घुडसवारो ने बडी बर्बरता का परिचय दिया। जनता तितर-बितर हो गई। सैकडो देशभक्त लाठी के शिकार हुए। किसी का हाथ टूटा, किसी की टाग टूटी, किसी का सिर फट गया, किसी के छाती पर चोट आई तो किसी के दात टूट गये। जनता मे प्रतिहिंसा की आग जल उठी। बिखरे हुए लोग इकठ्ठे हो गए और अत्याचारियो पर ईंटो से प्रहार करने लगे। पर जनमत हिंसावृत्ति के पक्ष मे न था। अतएव लोगोने अपना

मोर्चा बदल दिया और वे सेक्रेटेरियट पर झडा गाडने के लिए लपक पडे।

जुलूस आजादी के नशे मे चूर सेक्रेटेरियट पहुँचा। सभी लोग अपनी जान हथेली पर लिये हुए थे। अतएव आजादी के इन दीवानो को कौन रोकने वाला था? जहाँ देखो वही अजाव मस्ती थी। उधर मि० आर्चर गुरखा सिपाहियो के साथ सेक्रेटेरियट के सामने डटा खडा था। फौजी लोग अपनी-अपनी भयावनी राइफले लिये तैयार खडे थे।

मि० आर्चर ने गरजते हुए लोगो से पूछा, "तुम क्या चाहते हो?" "झडा फहराना" एक छोटे से छात्र ने आवेश के साथ उत्तर दिया।

आर्चर ने झल्लाकर कहा, "कौन झडा फहराना चाहता है, वह जरा आगे आ जावे।"

देखते-ही-देखते ग्यारह छात्र जुलूस को चीरते हुए आगे आकर कतार म खडे हो गए। उनका सीना गर्व के साथ आगे निकला हुआ था, तथा आखे क्रोध के मारे लाल हो रही थी। आर्चर ने एक छोटे से छात्र की ओर सकेत करते हुए कडककर कहा, "झडा फहराना चाहता है, झडा। झडा फहराने से पहले अपना सीना खोल ले।"

आर्चर का यह कहना था कि छात्र ने दोनो हाथो से अपना कुर्ता फाडा और सीना खोलकर सामने कर दिया। वह कतार में से एक कदम आगे निकल आया।

आर्चर उस लडके के साहस की कदर न कर सका। उसने तुरन्त हुक्म दिया—"गोली चलाओ" और उसी क्षण देखते-देखते वे ग्यारहो वीर गोली के शिकार हो गए। फिर क्या था? गोलियो की बौछार होने लगी। जनता घायल हुई, पर डटी रही। इतने मे जय-घोष हुआ 'वन्देमातरम्' 'अग्रेजो भारत छोडो'। लागो की आखे सेक्रेटेरियट के गुम्वद की ओर गई। देखा—एक दुवला-पतला नोजवान हाथ मे तिरगा झडा लिये मुसकरा रहा है। अपार जनसमूह समुद्र की भाँति उमड पडा। उसका वलिदान सफल हुआ। कमीन फौजी इस समय तक वहाँ से हट चुके थे। सेक्रेटेरियट के गुम्वद पर लहराता हुआ तिरगा झडा ऐसा प्रतीत होता था मानो वह आजादी के इन अमर शहीदो की विमल कीर्ति को हवा के झोको के साथ भू-मडल के इस कोने से उस कोने तक पहुचा रहा हो।

छ विद्यार्थियो की मृत्यु वही हो चुकी थी। वाकी चार अस्पताल ले जाए गए। तीन अस्पताल मे पहुचते ही शात हो गये। एक को आपरेशन के लिए टेवुल पर लिटाया गया। कुछ देर के वाद उसकी मूर्च्छा टूटी। झट

वालक ने आतुर भाव से डाक्टर से प्रश्न किया—"मेरे गोली कहा लगी है पीठ पर या सीने में ?" डाक्टर लडके के भाव को समझ गया। उसने गोली के घाव की ओर इशारा करते हुए कहा, "गोली सीने के बीच में लगी है।" लडका कुछ मुसकराया और बडे गर्व के साथ धीमे स्वर में बोला, "अच्छा, लोग यह तो न कहेगे कि भागते हुए के गोली लगी थी।" बस, अन्तिम शब्द के साथ उसके प्राण पखेरू इस नश्वर शरीर को त्याग कर उड गए। वह वालक तो आज दुनिया में नही है, किन्तु उनका वलिदान भारत के स्वतन्त्रता के युद्ध में अमर हो गया है।

घायलों के शरीर से जो गोलियाँ निकाली गई थी, उनकी जाच करने म पता चला है कि वे दमदम गोलिया थी, जिनका व्यवहार अन्तर्राष्ट्रीय विधान के मुताविक युद्ध-काल में भी मना है।

सरकार का दमन चरम सीमा को पहुच गया था। उसकी प्रतिक्रिया भी होनी थी। लोग अपने भावो को अधिक न रोक सके। उन्होने हिसा का जवाव हिसा से देने की ठान ली। फलस्वरूप पटनासिटी स्टेशन गोदाम, शहर के सब लेटर बक्स, पटना-जकशन, पोस्ट आफिस आदि अनेक सरकारी स्थान जनता के क्रोध के शिकार बने। बहुत से इजन तोड डाले गये, बिजली के तार कट गये, खम्भे तथा रेल की पटरियाँ उखाडी गईं। शहीदो की चिताओ से उठी हुई यह हिसा की प्रवल ज्वाला पटना शहर तक ही सीमित न रह सकी। वह सम्पूर्ण पटना जिले तथा सारे बिहार प्रान्त में फैल गई।

दो तीन दिन तक जनता का राज्य रहा। १४ अगस्त को १० हजार टॉमी फौज शहर मे जा पहुची। गोरे फौजी लारियो में भर-भर कर नगर में गश्त लगाने लगे और लोगो पर भाति-भाति के अत्याचार करने लगे। वडे-वडे प्रोफेसर, डाक्टर तथा अन्य अफसर भी गोरो के इन अत्याचारो से न वच सके, फिर साधारण जनता का तो कहना ही क्या ? समस्त शहर मे सैनिक राज्य स्थापित हो गया। दो दिन वाद और पलटन आ गई और टोलिया वनाकर इन लोगो ने सारे पटना जिले पर अपना अधिकार जमा लिया।

पटना के अतिरिक्त विक्रमपुर, वाढ, वख्तियारपुर, गिरियकुस्थावा, सिलान, हिल्सा, चडी व एकागसराय थानो मे आन्दोलन का जोर अधिक रहा। गिरियकुसिलान, स्थावा, हिल्सा, चडी व एकागसराय के थानो पर से तो पुलिस वापिस वुला ली गई थी और काफी अर्से तक वहा ब्रिटिश सरकार की सत्ता गायव रहा। विहटा, गुलजारवाग, सपिसोपुर, नेपस, हरदासडीघा, करौता, अथमल, गोला, अगार, पटना सिटी, वकाघाट, फतुआ, खुसरापुर, मोकामाघाट

आदि कई अन्य स्टेशनो पर भी जनता ने आक्रमण किये और आग लगाई तथा फर्नीचर वगैरा को नष्ट किया। हिल्सा और बिहार शरीफ की कचहरियो पर भी झडे फहराए गए तथा उन्हे जबरदस्ती बन्द करा दिया गया। फतुहा म दो कनाडियन अफसर उत्तेजित जनता द्वारा जला दिए गए। मुकासा और बिहटा की प्रसिद्ध लूटें हुई जहाँ हजारो गट्ठर कपडा लूटा गया।

फुलवारी मे गोली चार्ज मे १७ आदमी मरे। बाढ मे ८ आदमी घायल हुए तथा एक की मृत्यु हुई। बिक्रम में दो मरे तथा ४० घायल हुए। नौबतपुर में भी एक आदमी मारा गया। इसी प्रकार अन्य जगहो पर भी बलिदान हुए है, पर उनके आकडे प्राप्त नही हो सके है।

पटना जिले में सरकार का दमन बडे अमानुषिक ढग पर हुआ। कहा जाता है कि बिहार शरीफ की जेल में कैदियो का पानी की जगह पेशाब तक पिलाया गया था। कई दूसरी जगह प्रतिष्ठित व्यक्तियो को पकड कर उनसे गन्दी नालियो को साफ कराया गया।

२. मुंगेर जिला

मुगेर जिले में काग्रेस का प्रचार खूब हुआ है। अगस्त १९४२ मे ता श्रीकृष्णसिह तथा जगलाल चौधरी, भूतपूर्व मन्त्री बिहार सरकार, ने काफी तूफानी दौरे किये थे और समय पर मुस्तैदी के साथ आन्दोलन में जूझ पड़ने के लिए वहा की जनता का आह्वान किया था। ९ अगस्त से यो तो अहिंसात्मक रूप से हडताल, जुलूस, पिकेटिंग आदि आरम्भ होगए थे, किन्तु १४ तारीख को अचानक तोड-फोड प्रारम्भ हो गई। समस्त जिले मे एक भयकर तूफान खडा होगया। लडकियो ने भी आन्दोलन में भाग लिया। कचहरी पर तिरगा झण्डा फहराया गया, पिकेटिंग किया गया और वकीलो को वकालत स्थगित करने के लिए लाचार कर दिया गया। जिले के २० थानो मे से १७ थाने आन्दोलन के शिकार हुए। बलिया, खडगपुर तथा तारापुर के थानो मे ताले डाल दिये गए और व्यवस्थाओ का भार जनता ने अपने ऊपर ले लिया। तारापुर में तो शासन-प्रबन्ध-समिति बनी, न्यायाधीश नियुक्त हुए तथा स्वयसेवको का दल सगठित किया गया। जिले भर के समस्त प्रमुख-प्रमुख स्टेशन जला दिये गए। गिद्धौर, झाझा, बादलपुरा, बखरी, परिहारा, खडगपुरा, असरगज, गोगरी, बख्तियारपुर, क्यूल तथा शेखपुरा के डाकखाने एव खगडिया व क्यूल तथा कई अन्य स्थानो के शराबघर भी आक्रमण के शिकार हुए। जमई, बेगुसराय, खगडिया और मुगेर की कचहरियो पर झडे फहराये गए और उनमे ताला लगाया गया। खडगपुर, गोगरी क्यूल और शेखपुरा के रजिस्ट्री ऑफिस के

कागजात गलियो में फेंक दिये गए। बरियारपुर तथा तारापुर के पुल तोड़े गये। खगडिया बैंक और मिस्टर एविन्स की कोठी पर भी धावा हुआ। बरौनी का कोयला-डिपो व जमुई तथा खडगपुर के हाई स्कूलो के फर्नीचर और लाइब्रेरी की पुस्तकें बर्बाद कर दी गई। समस्तीपुर से खडगपुर जाने वाली रेलगाडा पर कब्जा कर लिया गया और उसे आजादी का सन्देश ले जाने वाले स्वयसेवको के लिए प्रयोग किया गया।

मुगेर में विद्यार्थियो का जुलूस बडे वेग के साथ राष्ट्रीय नारे लगाता हुआ आग बढ रहा था। पुलिस ने उसकी गति का रोकना चाहा और वह अचानक लोगो पर लाठी-प्रहार करने लगी। किसी का कपाल फटा तो किसी का हाथ टूटा, कोई अपने नाक कान सम्भाल रहा था तो किसी की छाती में चोट लगी दिखाई देती थी। नगर के प्रसिद्ध वकील श्री निरापद मुखर्जी पुलिस की इस बर्बरता को देख रहे थे। उनका खून खौल उठा, आखें क्रोध मे लाल हो गई। वे उत्तेजित होकर आगे बढे तथा गरजकर अग्रेज सार्जेण्ट को ललकारा "इन मासूम बच्चे-बच्चियो को क्या मारते हो, मेरी छाती पर मारो। मै देखना चाहता हू कि तुम्हारी बन्दूको मे कितनी गोलियाँ हैं, तुम्हारी लाठियो में कितनी शक्ति है।"

तारापुर मे जनता ने थाने पर अधिकार करके नये दारोगा तथा जमादार नियुक्त किये। चौकीदारो को नई हुकूमत की आज्ञा-पालन करने का हुक्म हुआ। गावो मे अमन तथा शान्ति स्थापित करने के लिए स्वयसेवको का एक दल सगठित किया गया और गाव-गाव में पचायतें बनाई गई एव उनके ऊपर पाच न्यायाधीश मुकर्रर किये गये। शासन-प्रबन्ध अत्यन्त सुन्दर रहा और जनता के जान-माल की चोरो तथा बदमाशो से रक्षा की गई। अन्य स्थानो पर जब पुलिस अधाधुन्ध लूट-खसोट कर रही थी तो सग्रामपुर के एक धनी ग्वाले ने सोचा कि अपने धान के ढेर पुलिस की भेट करने के बजाय गरीब भाइयो में बाट दिये। सेबोर में सरकारी कृषि फार्म पर जनता को बडी मुसीबतें सहनी पडी। फौज ने चारो ओर से गाव को घेर लिया और धान के गोदाम लूट लिये। फौजियो ने एक हिन्दू तथा एक मुसलमान के घर पर भी हमला किया और ४०—५० तोले सोना लूट लिया। कलापुर मे क्रोधित जनता ने स्टेशन पर हमला किया और उसमें आग लगा दी। तारापुर में अमरीकन फौजी बलाये गए, पर न जाने क्यो उस दिन उन्होने गोली चलाने से इन्कार कर दिया। उत्तेजित जनता स्टेशन पर टूट पडी और उसे जलाकर राख कर दिया। स्टेशन मास्टर जैसे-तैसे अपनी जान बचाकर भागा।

इस जिले में जनता कितने उत्साह, जोश एव आवेग के साथ विद्रोह कर रही थी इसका पता इसी से लग सकता है कि जब सरकार को लाठी तथा गोली से कुछ सफलता न मिल सकी तो उसने आम जनता पर निर्दयता पूर्वक हवाई जहाज से गोलियो की बौछार की। जनता के लिए इस प्रकार का आक्रमण बिलकुल नया था। अतएव ४० व्यक्ति शहीद हुए और ३५ बुरी तरह घायल हुए। मामूली तरीके से घायल होने वालो की सख्या तो अनगिनत थी। इसके अलावा बेगुमराय, बरिआरपुर, खडगपुर, नौगाछी, खगडिया, मानसी, गोगरी, महेशखूट, मदारपुर, रोहियार, सूर्यगढा, तेघडा आदि १६ अन्य स्थानो में भी गोली चली जिससे ४० आदमी मारे गए और बहुत से घायल हुए। बरियारपुर में समूह के एक-एक व्यक्ति को गोली का शिकार बनाया गया तथा ९० गैर सैनिको ने जनता को बुरी तरह पीटा और कइयो को घायल कर दिया। कोचाही मे राह चलते आदमियो पर गोली चलाई गई।

३. चम्पारन जिला

चम्पारन भारत के इतिहास मे महात्मा गान्धी के नेतृत्व मे हुए प्रथम सत्याग्रह के रूप में बहुत प्रसिद्ध होचुका है। इसको काफी समय तक महात्मा गान्धी एव राजेन्द्र बाबू के निवास-स्थान होने का सौभाग्य भी प्राप्त हो चुका है और इन दोनो महान् नेताओ के सम्पर्क के कारण यहा की आम जनता और विशेषकर काग्रेस कार्य कर्ताओ मे अहिंसा की भावना काफी घर कर चुकी है। अतएव इस जिले में आन्दोलन का नेतृत्व प्राय काग्रेस-कार्यकर्ताओ के हाथ मे रहा, जिससे जनता की ओर से किसी भी सरकारी आदमी की जान लेने की कोशिश नही की गई। हाँ, सरकारा सस्थाओ को लूटने-फूँकने का प्रयत्न अवश्य किया गया पर वह भी अहिंसा समझकर या पुलिस के अत्याचारो से तग आकर।

१० तारीख को आम हडताल के रूप मे आन्दोलन का श्रीगणेश हुआ। ११ तारीख को बहुत बडा जुलूस निकाला गया जिस पर पुलिस द्वारा लाठी-चार्ज किया गया और पाच आदमी घायल हुए। १२ अगस्त को लाइन, तार आदि तोडने का काम रक्सौल से शुरू हुआ और सगौली, मोतीहारी, मेहसी आदि स्टेशनो का बहुत नुकसान किया गया। उत्तेजित जनता ने मोतीहारी के इन्कम-टैक्स ऑफिस को जला दिया, रिक्रूटिंग ऑफिस पर आक्रमण किया तथा पुल, तार इत्यादि नष्ट कर दिये। गोविन्दगढ, रक्सौल, सगौली, ढाका, घोडासाहन, पिपरा, कैसरया, मधुबन आदापुर के थानो, ढाका, रामगढवा आदेरा,

मखुआ, घोडासाहन के डाकखानो एव ढाका के नहर-दफ्तर पर धावे किये गए और उनको लूटने-फूँकने की भी चेष्टा की गई।

बेतिया डिवीजन के अन्तर्गत सब थानो पर तिरगे झडे लगाये गए। अधिकाश थानो की पुलिस सब डिवीजन के हेडक्वार्टर पर आगई। करीब-करीब सब पोस्ट आफिसो पर जनता का कब्जा हो गया।

आन्दोलन प्रारम्भ होते ही सरकार ने मोतीहारी के हिन्दू कलेक्टर से सब अधिकार छीनकर दो यूरोपियनो को, जिनमे से एक सर्किल मैनेजर था तथा दूसरा मधुबन स्टेट का मैनेजर, सौंप दी। यूरोपियनो ने टॉमियो की सहायता से जनता पर बडे अमानुषिक अत्याचार किये। बेतिया, घोडासाहन, फुबाटा, पच पोखरिया और मेहसी स्थानो पर गोली चलाई गई। मेहसी मे रामावतार शाह को प्लेटफार्म पर बुलाकर गोली से उडा दिया गया। आदापुर काग्रेस आश्रम जला दिया गया। सगौली फुलवारिया, मेहसी, दरकागाँव, नरकटियागज आदि ५० स्थानो पर फौज द्वारा लूट की गई। जेल में भी काफी बर्बरता का परिचय दिया गया। उदाहरण के लिए ३ आदमियो को एक कम्बल और १० को पानी पीने के लिए एक गिलास दिया गया। ४० आदमियो के स्थान में १२० आदमियो को ठूस दिया गया इत्यादि-इत्यादि। बेतिया डिवीजन में फौजियो ने बहुत अत्याचार किया। वे अपनी जरूरत की चीजें दूकानो से उठा ले जाते, रात को गाँवो पर हमले करते और लोगो को बुरी तरह लूटते तथा उनकी स्त्रियो के साथ बलात्कार करते। जो कोई भी गान्धी टोपी पहने दिखाई देता था उसकी मिट्टी पलीत की जाती थी। यहा पर लोगो को ४० साल तक की सजाएँ हुई थी।

४. शाहाबाद जिला

शाहबाद को लोग आजादी की प्रथम लडाई के नेता श्री कुवरसिह की जन्मभूमि के रूप मे जानते है। इस जिले मे १० अगस्त मे आन्दोलन का श्री-गणेश हुआ। शाहाबाद में कार्यकर्ताओ ने विद्यार्थियो की सहायता से शहर भर मे बडा भारी प्रदर्शन किया। शाम के समय रमना मैदान में एक विशाल सभा हुई। लोग बडे उत्साह, उमग एव धैर्य के साथ अपने नेता श्री प्रद्युम्न मिश्र का व्याख्यान सुन रहे थे, जो उन्हे काग्रेस की स्थिति तथा नौकरशाही की बर्बरता बता रहे थे। पुलिस के कर्मचारी मिश्रजी को गिरफ्तार कर आन्दोलन की गति को रोकना चाहते थे। अतएव वे भीड को चीरते हुए उन्हे पकडने के लिए आगे बढे। जनता उनके इस निन्दनीय कार्य को सहन न कर सकी।

उसका पारा चढ गया और वह बड़े वेग से पुलिस पर टूट पडी। पुलिस का धैर्य छूट गया, वह भाग खडी हुई। वेचारे सब डिवीजनल अफसर को अपने हैट तक को सम्हालने का होश न रहा। वे जैसे-तैसे अपनी जान बचाकर भागे।

इतने मे ही पुलिस के अन्य अफसर भी सशस्त्र पुलिस के साथ घटना-स्थल पर जा पहुचे। उन्होने सिपाहियो को जनता पर लाठी-चार्ज करने का हुक्म दिया। परन्तु जनता इससे घबराई नही। वह ज्यो-की-त्यो बैठी भाषण सुनती रही। आजादी के इन दीवानो के साहस ने सिपाहियो के हृदय दहला दिये, उन्होने अपने देश भाइयो पर गोली चलाने के जघन्य कार्य से मुह मोड लिया। बस, लोगो के दिलो से सरकारी रौब उठ गया। सभा की समाप्ति पर सभी सरकारी दफ्तरो पर झडे फहराये गए। जिले के अन्य १७ थानो पर भी जनता ने बिना खून-खराबी के अधिकार कर लिया। पर यह स्थिति कुछ ही दिन तक कायम रही। बाद मे गोरे सैनिक जिले भर में फैल गये और उन्होने जनता के खून से जिले भर को रँग दिया। आरा, कोबनरा, भभीरा, जुकहटी, शाहपुर, लगडी, बलीगज, सहसराम, सँझौबा, मोठगिनी, भभुआ, कुमराव, नया-नगर, बलोहा, कटैरया, एमरी और शाहाबाद मे जनता पर गोली चलाई गई।

बड़सरा, पीरो, सन्देश, जगदीशपुर, रोहतास, चेनारी, किनार, नोखा, नासरीगज, रामगढ़, चाद, अछौरा, चैनपुर, कुदरा, डुमराव, नवाबनगर, ब्रह्म-पुर आदि के थाने जनता के आक्रमण के शिकार हुए। बडहरा, शाहपुरा, रोहतास, दिलार, नोखा, विक्रमगज, रामगढ, चाद, अछौरा, तथा चैनपुरा थानो मे जनता ने ताला डाल दिया और पुलिस को आत्म-समर्पण करने के लिए बाध्य किया।। सहसराम थाना लगभग डेढ मास तक जनता के अधिकार में रहा। चैनपुर, भभुआ और रामगढ थानो में जनता ने अपनी शासन-प्रबन्ध-समितिया बनाई। सेमगाव, गढौती, परपौखुरी, बनौती, पियरी, नुवार, हसन-बाजार, कुम्हऊ, करवन्दिया, डीहरी, विक्रमगज, कुदरा तथा डुमराव के स्टेशन जला दिये गए। पीरो मे विद्यार्थियो ने रेलवे ट्रेन पर कब्जा कर लिया और उसका उपयोग स्वयसेवको को इधर-उधर लाने लेजाने मे किया। इसके अति-रिक्त सहसराम, डालमियानगर, नोखा, विक्रमगज, भभुआ, रामगढ तथा डुम-राव के डाकखाने लूटे व जलाये गए। नगर आफिसो और शराब की भट्टियो पर भी आक्रमण हुए। कस्तर पुस्ता सड़क के पुल तोड डाले गये। आन्दोलन की यह विशेषता रही कि थानो पर जनता का अधिकार होने से यद्यपि पुलिस भाग खडी हुई थी, फिर भी कहीं भी चोरी डकैती नही होने पाई। थानो की पुन. स्थापना होने के बाद ही इनका जोर रहा।

इस जिले के इतिहास में डुमराव का नाम सदा अमर रहेगा। १६ अगस्त की शाम को ५००० व्यक्ति थाने पर झडा फहराने के लिए पहुचे कपिलमुनि नामक २१ वर्षीय नौजवान के हाथ मे राष्ट्रीय झडा था। वह आगे बढा। थानेदार ने गरजकर कहा—"खबरदार, आगे पैर रखा तो गोली से उडा दूंगा।" कपिलमुनि पुलिस की ऐसी धमकियो से डरने वाला थोडे ही था। वह तो देश की आजादी के लिए अपनी चिता में खुद आग लगाने को तैयार था। वह आजादी का दीवाना बडे गर्व के साथ राष्ट्रीय झडा लिये थानेदार के सामने जा खडा हुआ। निर्दयी थानेदार ने चट अपना रिवाल्वर दबाया और देखते-देखते धाय-धाय करती हुई गोली युवक के सीने के पार हो गई। युवक का बलिदान पूरा हुआ। वह पृथ्वी पर गिर पडा पर झडा अब भी उसके हाथ में था। थानेदार झुण्ड की ओर लपका और उसे अपने पैरो के तले कुचल दिया।

राष्ट्रीय झडे का यह अपमान पास में खडे हुए रामदास लुहार नामक युवक को सहन न हुआ। उसका खून खौल उठा और वह झडे को उठाने के लिए उसकी ओर लपका। पर वह झडा उठाने भी न पाया था कि थानेदार के रिवाल्वर की गोली उसके सीने में से निकल गई। वह वही गिर पडा। युवक के इस बलिदान ने अबकी बार एक साठ वर्ष के बूढे को तैयार किया। उसके बाल सफेद हो चले थे, पर उसके खून में अब भी गरमी थी। वह अपना सीना निकाले हुए आगे बढा। भला, थानेदार इसे कब सहन करता। उसने तत्काल उसे भी अपनी गोली का शिकार बनाया। पर भीड वीरो से खाली न थी। देखते-ही-देखते १६ वर्ष का बालक गोपालराम भीड को चीरता हुआ झडे के पास आ पहुँचा। निर्दयी थानेदार की गोली उसकी कमर में लगी। वह घायल होकर जमीन पर गिर पडा और चार घटे बाद अस्पताल में अपने देश की आजादी के लिए शहीद हो गया। १६ अगस्त का वह दिन चला गया, पर इन वीरो के बलिदान सदा के लिए अमर होगये। देश की आजादी के इतिहास में मृत्यु से खेलने वाले इन वीरो का नाम सदा स्वर्ण अक्षरो में लिखा जायगा।

दमन भी खूब हुआ। १८ स्थानो पर गोली चली। सहसराम मे मशीनगन का प्रयोग किया गया और जुलूस पर गोलियाँ बरसाई गईं। गगा के तटवर्ती गावो को घेर लिया गया और वहा के घरो को लूटा तथा बर्बाद किया गया। लोगो के घरो मे आग लगा दी गई और इस प्रकार गावो को श्मशान के रूप मे बदल दिया गया। धनडीहा, कसाय, जितौरा, सभौली, बलीगाँव आदि अनेक गाँवो में जनता को बुरी तरह पीटा गया और मारते-मारते उन्हे धरती

पर लिटा दिया गया। वलीगांव के नौजवान छात्र श्री नन्दगोपालसिंह को इतनी बुरी तरह पाटा गया कि आज भी उसके शरीर पर लाठी के निशान बने हैं।

कांग्रेस-कार्यकर्त्ताओ को अत्यन्त कडी सजाए दी गई। मामूली अपराधो पर बीस-बीस वर्ष का कठोर कारावास दिया गया। पाच आदमियों को तो फासी की सज़ा हुई। सगराव के कांग्रेस कार्यकर्ता जमीर खा को पकडने के लिए उनके भाई को कैद कर लिया गया, हालाकि उनका आन्दोलन में कोई हाथ न था। इससे पता चलसकता है कि पुलिस दमन पर कितनी तुली हुई थी।

इस जिले में पुरुषो के साथ स्त्रियो और बच्चो पर भी गोलिया चलाई गईं और उनको तरह-तरह से दमन-चक्र मे पीसा गया।। घनसोई में स्त्रियो से बलात्कार भी किया गया।

५. गया जिला

गया पटना-राची सडक पर आबाद होने के कारण फौजी केन्द्र है और काफी फौज यहाँ रहती है। अगस्त सन् १९४२ मे यद्यपि जिले भर मे काफी असन्तोष की भावना फैली हुई थी, किन्तु फौजियो के बडी सख्या मे वहा मौजूद होने के कारण लोग कुछ भयभीत से थे। यही कारण है कि ९ अगस्त को नेताओ की गिरफ्तारी से जहा समस्त विहार में आग भभक उठी, वहा गया में भय और सन्देह का ही वातावरण बना रहा। पर बहुत जल्दी यह डर का भूत लोगो के हृदय से हट गया और वे अपनी जान हथेली पर रख कर पूर्ण उत्साह के साथ आन्दोलन मे सक्रिय भाग लेने लगे। इस प्रकार वहा १३ अगस्त से आन्दोलन का श्रीगणेश हुआ। जिले भर मे अराजकता फैल गई। लगभग डेढ मास तक जिले भर मे यातायात बन्द-सा रहा।

जनता ने वज़ीरगज, बेलागज, कुर्था, घोसी, अरबाल, नवीनगर, कुटुम्बा, दादनगर के थानो पर आक्रमण किये। १४ थानो को प्रबन्ध न कर सकने के कारण सब डिवीजनो मे बुला लेना पडा। दादगज, बेलनगज, तथा वज़ीरगज के रेलवे स्टेशन जला दिये गए। शराब की भट्टियो और १६ डाकखानो पर भी जनता ने तोड-फोड की। अरबाल, नवीनगर, दादनगर, घोसी, कुर्था के पोस्ट आफिस लूटे तथा जलाये गए। कुछ नहर के आफिस भी जनता के क्रोध के शिकार हुए।

गया जिले में गोली चली, जिसमें ३ व्यक्ति मरे तथा ११ घायल हुए। २ लाठी व भाले मे मारे गये। १८ अगस्त को जब जनता कुर्था थाने पर झडा फहराने पहुँची तो उस पर बर्छी और भालो से आक्रमण किया गया और श्री श्यामबिहारीलाल, मत्री थाना कांग्रेस कमेटी को भाले से मार डाला गया।

अरवाल थाने में प्राइमरी स्कूल के अध्यापक श्री दुमाध्यसिंह को पीटते पीटते मृत्यु के घाट उतार दिया गया। उसका अपराध केवल यह था कि वह पहले दिन जुलूस में शामिल हुआ था। इसी प्रकार सामूहिक जुर्माना वसूल करने में भी काफी सख्ती से काम लिया गया।

इस जिले के आन्दोलन की यह विशेषता थी कि यहा के मुसलमानो ने भी देश की आज़ादी की इस लडाई में खुले दिल से भाग लिया और अन्त तक कई मुसलमान कार्यकर्ता आन्दोलन का सचालन करते रहे।

६. हजारीबाग जिला

हजारी बाग में आन्दोलन का श्रीगणेश ११ अगस्त से हुआ। श्रीमती सरस्वती देवी एम० एल० ए० ने एक जुलूस सगठित किया, जिसका उद्देश्य नेताओ की गिरफ्तारी के विरोध में शान्तिपूर्ण प्रदर्शन करना था। दो-एक दिन तक इसी प्रकार जुलूस निकलते रहे। परन्तु जब सरकारी अधिकारियो ने कुछ छेड-छाड की तो उत्तेजित जनता ने पोस्ट ऑफिस, यूरोपियन क्लब, लाल कम्पनी तथा डिप्टी कमिश्नर की अदालत में साधारण-सी तोड-फोड की।

इस जिले में सबसे अधिक राजनैतिक चेतना अबरक की खानो तथा गिरिडीह के आस-पास कोयले की खानो मे काम करने वाले मजदूरो में है। ये लोग नेताओ की गिरफ्तारी की खबर सुनते ही अधीर हो उठे। उन्होने झुमरी तलैया मे जुलूस निकाला। पोस्ट आफिस, रेलवे स्टेशन और शराब की भट्टी पर साधारण तोड फोड करके जुलूस तितर-बितर हो गया।

डोमचाच में जनता ने एक जुलूस निकाला। यद्यपि जुलूस शान्ति से निकल रहा था, पर अधिकारी इसे भी सहन न कर सके। उन्होने जुलूस पर लाठी-चार्ज किया, हन्टर चलाये तथा गोली भी चलाई, जिससे २ व्यक्ति मारे गय और २२ के लगभग घायल हुए। जन-समूह विशाल था। वह निर्भीकता के साथ डटा रहा। स्थानीय काग्रेसी नेता लोगो को बराबर अहिंसक बने रहने का आदेश देते रहे और उन्होने आश्चर्यजनक रूप से लहू की घूट पीकर उनकी इस कठोर आज्ञा का पालन किया।

सरकार का दमन-चक्र इस जिले में बडी भयकरता से चला। कोडरमा थाने में गिरफ्तार व्यक्तियो पर हन्टर से इतनी बुरी तरह मार पडी कि उसे सुनकर बडे-बडे साहसी पुरुषो का भी दिल दहल जायगा। पुलिस ने अपनी राक्षसी प्रकृति का परिचय देते हुए लोगो को चौराहो पर नगा करके हटरो से पीटा और जब तक उनका शरीर लहू-लुहान न होगया और वे अधमरे न

होगए तब तक उन पर बराबर मार पडती रही । असह्य पीड़ा के कारण बेहोश हो जाने पर भी मार बन्द न हुई और बाद में वे जेलखानो की काल-कोठरियो के अन्दर ठूस दिये गए । एक-दा ने तो जेल के फाटक पर पहुचते-पहुचते ही दम तोड दिया।

बडी-बडी कम्पनियो के मालिको को अपमानित किया गया और उनकी सम्पत्ति को नुकसान पहुचाया गया ।

बाबू जयप्रकाशनारायण का साहसपूर्ण कार्य

एलिजाबेथ काल के एक अग्रेज कवि ने कहा है "लोहे के सीखचो से जेल नहीं बनती " (Iron bars do not prison make) । यह तो मनुष्य का मन ही है जो जेल का निर्माण करता है । बिलकुल खुले मैदान मे रहने वाला व्यक्ति यदि अपने को बन्दी समझता है तो वह पूरे माने में बन्दी है, और यदि जेल के अन्दर बैठा हुआ अपने को मुक्त मानता है तो वह मुक्त है। क्योकि 'भावना के अनुसार क्रिया होती है' इस सिद्धान्त के अनुसार वह लौकिक अर्थ में अपने आपको मुक्त करने के लिए स्थूल प्रतिबन्धो को तोडने का कोई साधन निकाल ही लेता है । अपने अपूर्व साहस, विलक्षण बुद्धि-चातुर्य आदि गुणो के आधार पर बाबू जयप्रकाशनारायण ने इस विषय में हमारे सामने एक अद्भुत आदर्श रखा है । जिसकी सनसनीपूर्ण कहानी सुनकर कोई भी व्यक्ति मुग्ध हुए बिना नही रह सकता ।

नेताओ की गिरफ्तारी के साथ देश में एक उग्र आन्दोलन की आग भडक उठी । पर जयप्रकाश बाबू हजारी बाग की सेन्ट्रल जेल में नजरबन्द थे। "स्वतत्रता की कीमत चुकाने के लिए दीवाने देशभक्त आगे बढ रहे थे । और जयप्रकाश जेल के सीखचो के भीतर यह सब बेबस होकर देखते रहे । उनकी वीर आत्मा भला यह कैसे सहन कर सकती थी ।"

११ नवम्बर सन् १९४२ का महत्त्वपूर्ण दिन आया और उसके साथ भारतीयो का प्रसिद्ध त्योहार दिवाली भी । देश भर मे अपूर्व उत्साह के साथ लोग उत्सव में भाग लेने लगे । बन्दियो ने भी जेल में रास-रग मचाने का निश्चय किया । बिहार के प्रधान मत्री श्रीकृष्णसिंह आदि सब बडे-बडे व्यक्ति इसम शरीक थे । अतएव अधिकारियो को उसमें अडचन डालने का मौका न मिला । रात्रि के समारोह के समय राजबन्दी बैरको के बाहर रखे गये । बडी धूम-धाम के साथ उत्सव प्रारम्भ हुआ । उधर अधिकारियो की आखो मे धूल झोककर जेल की दीवार फादने की योजना बन चुकी थी । आगे उत्सव हो रहा था पीछे, जयप्रकाश बाबू तथा उनके पाच साथी श्री रामनन्दन मिश्र,

योगेन्द्र शुक्ल, सूर्यनारायणसिंह, गुलाबचन्द्र गुप्त और शालिग्रामसिंह अपने पूर्व निश्चित कार्यक्रम के अनुसार जेल की ऊची-ऊची दीवारें लाघकर बाहर निकल गये। अन्य साथी तो अच्छी तरह निकल गये किन्तु जयप्रकाश बाबू के गहरी चोट आई। एक साथी ने उन्हे अपने कधे पर ले लिया और आगे बढने लगे। इस प्रकार वे थोडी देर में खतरे से बाहर निकल गये। वहा दो सशस्त्र रक्षको के साथ एक मोटरकार उनकी प्रतीक्षा में खडी थी। राची तक वे इसी मोटर मे गये। आगे बीहड वन था। मोटर का जाना उसमे सम्भव नही था। अतएव उसे उन्होने वही अग्नि की भेंट चढा दिया और सबने गया की ओर पैदल यात्रा प्रारम्भ कर दी।

ऊबड-खाबड जगली रास्ता, बस्ती का बचाव तथा पैदल यात्रा, बडी भयकर समस्या थी। पैदल चलते-चलते काटो और झाडियो के कारण पैर लहू-लुहान होगये। छाले पड-पडकर फूट रहे थे, जिनसे पीडा और भी असह्य हो रही थी। एक-एक करके चार दिन बीत गये, पर भोजन से भेंट नहीं हुई। भाग्य से पाचवे दिन एक जगल मे कुछ जगली फल मिले, जिनको खाकर बेचारो ने कुछ क्षुधा शान्त की। सारा जिस्म थककर चूर हो गया था। शरीर का एक-एक अग आगे बढने से विद्रोह कर रहा था। परन्तु फिर भी चलना था इसलिए वे चलते गये।

धीरे-धीरे गया पहुचे। जयप्रकाश बाबू के पास सौ रुपये का एक नोट था। उसको खर्च करके कपडे खरीदे और जैसे-तैसे एक मित्र के यहा शरण का प्रबन्ध हुआ। अब समस्या काम करने की आई। देश मे घूमकर आन्दोलन की आग को फिर से भडकाने का प्रोग्राम बनाया गया। अतएव जयप्रकाश बाबू बनारस आये और वहा के छात्रो एव कार्यकर्ताओ को आन्दोलन के विषय मे आदेश देकर उन्होने रीवा की ओर प्रस्थान किया। बीच-बीच मे मुख्य-मुख्य स्थानो पर इसी प्रकार लोगो को फिर से आन्दोलन के लिए तैयार करते हुए वे बम्बई पहुचे और अच्युतपटवर्धन से भेंट की। पटवर्धन महोदय पहले से ही पश्चिमी भारत को एक नये साचे में ढालने का प्रयत्न कर रहे थे। उधर अरुणा आसफअली और डा० राममनोहर लोहिया कलकत्ते में ऐसी ही तैयारी में लगे हुए थे। इस प्रकार सबने आपस मे विचार-विमर्श कर कार्य प्रारम्भ कर दिया। किन्तु इसकी सफलता के लिए समय-समय पर कार्यकर्ताओ का आपस में मिलना और उसके लिए ट्रेनिंग देना आवश्यक था। समूचे ब्रिटिश भारत मे गुप्तचरो का सुदृढ जाल बिछा हुआ था, एक अगुल भूमि भी खतरे से खाली नही थी। अतएव नैपाल की भूमि इस कार्य के लिए उपयुक्त समझी

गई और सन् १९४३ के अप्रैल मास मे एक जगल के अन्दर कार्यकर्त्ताओ का प्रथम सम्मेलन हुआ जिसमे 'आजाद हिन्द' दस्ते का निर्माण किया गया।

इस दस्ते का प्रतीक तीन बाण माने गये जो स्वतत्रता, रोटी और एक राष्ट्र के द्योतक थे। इसकी शिक्षा बिलकुल फौजी ढग की थी और इसके सदस्यो को चादमारी, छापामार लडाई आदि सभी युद्ध के कौशल सिखाये जाते थे। धीरे-धीरे इस दस्ते की कार्यवाही बहुत तीव्र होगई और उससे अग्रेजी सरकार की भाति नैपाल सरकार भी भय खाने लगा। निदान २४ मई सन् १९४३ को श्री जयप्रकाश, डा० लोहिया तथा उनके तीन अन्य साथी गिरफ्तार करके हनुमाननगर मे बन्द कर दिये गये। उधर से अग्रेजी फौज जयप्रकाश जी आदि के हथियाने के लिए नैपाल की सीमा पर आ पहुची। जब दस्ते के अन्य कार्यकर्त्ताओ को इस षड्यन्त्र की सूचना मिली तो उन्होने जेल के अधिकारियो को ऊचे-नीचे सभी तरीको से अपने अनुकूल करने की भरसक चेष्टा की, किन्तु उनको सफलता न मिली।

समय निकलता गया और अग्रेजी फौज नज़दीक आती गई। कार्यकर्त्ताओ को गुप्त रूप से खबर मिली कि नैपाल सरकार जयप्रकाश बाबू आदि को कल ही अग्रेजी सरकार के हवाले करने जा रही है, क्योकि "बर्बर और युगो से गुलामी की वृत्ति रखने वाली स्वतत्र भारतीय रियासतो का ठिकाना ही क्या और उसकी दृष्टि मे इन जानो का मूल्य ही क्या ?" अतएव वे भावी परिणाम की आशका से अधीर हो उठे और सबने एकत्र होकर यह निश्चय किया कि जेल पर छापा मारकर नेताओ को छुडा लिया जाय। चार पाच नवयुवक कार्यकर्त्ता गुप्तचर के रूप में बन्दियो के कैम्प पर पहुँचे। उन्होने भाँति-भाँति के प्रलोभन देकर वहा के प्राय सभी रक्षको को अपनी ओर मिला लिया। उधर कार्यकर्त्ताओ ने कई दल बनाकर नगर में प्रवेश किया। एक दल ने जाते ही जेल की दाहिनी ओर के एक मकान मे आग लगा दी और चारो ओर से 'दौडो-दौडो' 'आग बुझाओ' 'जान बचाओ', आदि की आवाज़े आने लगी। लोगो को इस प्रकार बुरी तरह से चिल्लाते देख जेल के सन्तरी आग बुझाने के लिए घटनास्थल की ओर दौड पडे। जेल पर बहुत ही कम सन्तरी रहे। कार्यकर्त्ताओ का दूसरा दल समय की प्रतीक्षा में था ही। अतएव उसने इसी बीच में जेल पर हमला कर दिया और तत्काल जेल के सन्तरी को मौत के घाट उतार दिया। बन्दूक की आवाज़ सुनकर हवलदार ने ऊपर से गोली चलाना प्रारम्भ किया, किन्तु लोगो ने उसे गिरा दिया। इतने मे आग लगाने वाला दल भी आ पहुँचा। लगभग १०-१२ हज़ार व्यक्ति इकट्ठे होगये। 'मारो, पकड़ो', का

जवरदस्त शोर होने लगा। हल्ला सुनकर अधिकारी लोग दौडकर वहा पहुँचे किन्तु लोगो के उत्साह के सामने उनकी हिम्मत कुछ करने की नही हुई।

भीड ने जेल का फाटक तोड दिया और रोशनी बुझा दी। चारो ओर अधेरा छा गया। जयप्रकाश वावू के लिए मार्ग खुला था। अतएव वे अपने साथियो के साथ विना किसी विशेष कठिनाई के भाग निकले।

जेल से निकलने के पश्चात् जयप्रकाश वावू ने वगाल, विहार, युक्त-प्रान्त, पजाव आदि प्रान्तो मे भ्रमण किया तथा आन्दोलन को जारी रखने के लिए लोगो को उत्साह दिलाया। इस दौड धूप में उन्होने एक दिन का भी विश्राम नही लिया। फलत उनका स्वास्थ्य वहुत गिर गया जिससे उनको वाध्य होकर काश्मीर की ओर जाने का निश्चय करना पडा। पर वे काश्मीर नही पहुच पाये और वीच मे ही अमृतसर मे गिरफ्तार करके लाहौर के शाही किले में नजरवन्द कर दिये गये।

इस प्रकार इस वीर पुरुष ने भारत की भावी सतान के लिए त्याग, साहस एव वुद्धि-चातुर्य का आदर्श हमारे सामने उपस्थित कर दिया।

७. भागलपुर जिला

यह जिला सदा से देश की आजादी के लिए सग्राम में विहार के और जिलो की अपेक्षा आगे रहा है। इसी जिले के वहिपुर स्थान में सन् १९३० में देशरत्न वावू राजेन्द्रप्रसाद पर लाठियो की मार पडी थी। तव से इस जिले में ऐसी जागृति पैदा हुई कि यह कागेस के काम में सवसे आगे वढ गया। जहा इस जिले में डा० राजेन्द्रप्रसाद के प्रभाव के कारण गाधीवादी कार्यकर्त्ताओ की काफी सख्या है, वहा प्रसिद्ध समाजवादी नेता वावू जयप्रकाशनारायण का मुख्य क्षेत्र होने के कारण उग्रवादियो की भी कमी नहीं है। अतएव शुरू-शुरू के एक दो दिनो को छोडकर वाकी सारे आन्दोलन में यहा की जनता मे हिंसक प्रवृत्ति अधिक मात्रा में पाई गई। हाँ, सुपोल में जनता ने अन्त तक अहिंसा-नीति पालन किया।

इस जिले में भागलपुर, वाका, मधेपुर तथा सुपोल ये चार सव डिवीजन है, जिनमें सुपोल को छोडकर अन्य तीनो सव-डिवीजनो में आन्दोलन का वहुत जोर रहा। भागलपुर में १० अगस्त को जनता एव विद्यार्थियो के अलग-अलग जुलूस निकले। दोनो जुलूस शहर में घूमकर कचहरी पर जा पहुचे। विद्यार्थियो ने क्लक्टर आफिस तथा हेड पोस्ट आफिस पर धावा वोल दिया और दोनो पर राष्ट्रीय झडा फहरा दिया। १९ तारीख को जनता ने काग्रेस-भवन

पर, जो ९ अगस्त से पुलिस के अधिकार मे था, हमला किया और उसे पुलिस के हाथो से छीन लिया। इसके बाद तो शहर के कालेज के रेकार्ड, इस्पेक्टर आफ स्कूल का आफिस और इन्कम-टैक्स आफिस मे आग लगा दी गई। भागलपुर के रेलवे-गोदाम को लूटा गया तथा थाने के दफ्तर, पोस्ट आफिस तथा रजिस्ट्री आफिस जलाकर खाक कर दिये गये। जनता ने मालगोदाम पर हमला कर सैकडो बोरे चीनी लूट ली। खगरिया से कटिहार तक १०० मील रेल की पटरी उखाड दी गई। पसराहा और नारायनपुर के बीच की लाइन बिलकुल नष्ट कर दी गई, जिससे छ माह तक गाडी बन्द रही।

१३ तारीख को सहफाबाद के चर्खा-शिक्षण-शिविर से पुलिस ने चर्खे, धुनके इत्यादि सब सामान उठा लिया और उसे थाने में बन्द कर दिया। पुलिस के इस निन्दनीय कार्य को जनता सहन न कर सकी। वह उत्तेजित हो उठी और थाने पर टूट पडी। थाने की सब वस्तुए तोड-फोड कर नष्ट-भ्रष्ट कर दी गई और चर्खा-सघ का सब सामान वापिस ले लिया गया। पच्छगछिया, सहरसा तथा सोनसा, कचहरी इन तीनों स्टेशनो के माल-गोदामो को लूट लिया गया, जिनमे १०,००० स्लीपर तथा बहुत-सा दीगर फर्नीचर था। तीन इजन ईंट-पत्थरो से मार-मार कर तोड डाले गये।

बनगाँव थाने के अन्तर्गत १२ जमीदारो के पास लाइसेस की बन्दूके थी। काग्रेस के स्वयसेवको की तरफ से उन्हे नोटिस दिया गया कि वे अपनी-अपनी बन्दूकें काग्रेस-कैम्प मे जमा करा दें। जमीदार घबडा उठे और २४ घटे के अन्दर ७ बन्दूकें काग्रेस-कैम्प मे जमा हो गई। सहरसा मिशन की बन्दूक और बडियाही कोठी की क्रिश्चियन मेम मिस एच० ई० के पास से एक मोटरकार, एक रेडियो सैट, एक बन्दूक, १२ कारतूस, १ डाइनेमो तथा ५० टीन पेट्रोल काग्रेस स्वयसेवको ने अपने अधिकार में कर लिया। इस प्रकार पूरी शक्ति सचित कर स्वयसेवको ने सहरसा, पच्छगछिया आदि ५ विभिन्न स्थानो में अपने कैम्प स्थापित किये और गाँव-गाँव मे काग्रेस-प्रचार करने लगे। मोटरो द्वारा स्वयसेवक एक स्थान से दूसरे स्थान पर डाक ले जाते थे तथा प्रचार का काम करते थे।

सुपोल में अन्य डिवीजनो की भाति हिंसा से काम नही लिया गया। जनता ने किसी भी सरकारी सम्पत्ति को नुकसान नही पहुचाया यद्यपि अधिकार सब थानो पर कर लिया गया था। पुलिस के हथियार भी छीनकर ताले मे बन्द कर दिये गए। सरकारी कर्मचारियो के साथ मित्रतापूर्ण बर्ताव किया गया। एक महीने तक इसी तरह दफ्तर बन्द रहे और उन पर स्वयसेवको का

पहरा रहा। वर्षा के दिन होने के कारण इस डिवीजन के चारो तरफ बीसो मील तक पानी-ही-पानी भरा पडा था। अतएव दमन करने के लिए बाहर से फौज न आ सकी। पर बाद में जैसे-तैसे नावो से फौज यहा पहुचाई गई। उसने आते ही भाँति-भाँति के अत्याचार शुरू कर दिये और जनता को खूब लूटा-खसोटा। जिन सरकारी कर्मचारियो के साथ अब तक भाई-चारे का व्यवहार किया गया था वे भी अब सैनिक-सहायता पाकर जनता के लिए मौत का परवाना बन गये। अहिंसक और निहत्थे लोगो को नगा करके पीटा जाता था और गोरे सैनिक उनकी छाती पर बैठ जाते थे।

भागलपुर और बाका सब डिवीजन में जब फौज के अत्याचारो से आन्दोलन की गति बहुत ही मन्द पड गई तो वहा के बचे-खुचे कांग्रेस कार्यकर्त्ताओ ने परशुराम बाबू की अध्यक्षता में 'परशुराम दल' के नाम से एक दल तैयार किया, जिसका काम सरकारी स्थानो पर हमला करना था। पर पुलिस ने इस दल पर हमला किया और परशुराम बाबू को गिरफ्तार कर लिया। इसके बाद सियाराम बाबू ने इसका नेतृत्व किया जिससे इसका नाम 'सियाराम दल' हो गया। सियाराम बाबू की अध्यक्षता मे इसकी हलचल कुछ तीव्र रही। कितने ही स्थानो पर इस दल ने पुलिस वालो पर हमले किये और उनके हथियार छीन लिये। कही-कही इस दल के आदमी भी पुलिस की गोली के शिकार बने। इस दल के कार्यकर्त्ताओ द्वारा सैकडो ऐसे आदमियो के नाक-कान या हाथ की उंगलिया काट डाली गई जिन्होने इस दल की खोज करने में पुलिस को गुप्त या प्रत्यक्ष रूप से सहायता दी थी। इधर सरकार ने बाका तथा भागलपुर जेल से लगभग ८० डकैत सजा पूरी होने से पहले ही छोड दिये। वे महेन्द्र गोप के साथ सियाराम दल में शामिल होगये। इससे दल की शक्ति बहुत बढ गई और उसने सरकारी सस्थाओ पर हमले किये तथा उन्हे बुरी तरह नुकसान पहुचाया। कुछ दिनो बाद महेन्द्र गोप कैद कर लिये गये और उन पर कई केस लगाकर उन्हे फासी दे दी गई। परन्तु कितनी ही बार पुलिस और फौज द्वारा घेरा डालने पर भी सियाराम बाबू गिरफ्तार न किये जा सके। हो सकता है, बहुत से लोग इस दल की राज-नीति से सहमत न हो, परन्तु इनके साहस, त्याग, बहादुरी, सेवा एव देशभक्ति की तारीफ किये बिना नही रहा जा सकता।

दमन भी इस जिले मे बडे जोरो से चला, जिसकी कहानी सुनकर रोगटे खडे हो जाते है। भागलपुर में कुछ कैदियो ने अपना विरोध-प्रदर्शन किया और बगावत का झडा उठाया, जिससे उन पर अधाधुन्ध गोलियो की

बौछार की गई और १२५ कैदी पिंजडो मे ही भून दिये गये। एक अफसर भी मारा गया। सुखवार घाट, त्रिमुहा घाट आदि घाटो पर फौजी अड्डे कायम किये गये जो दोनो ओर के राहगीरो की मरम्मत करते और उनका सामान लूट लेते थे। वहिपुर थाने में, जो सियाराम दल का अड्डा घोषित किया गया था, प्रत्येक तीन-चार गाव पीछे प्रमुख चौराहो पर फौजी कैम्प स्थापित किये गये। इसमे रहने वाले सैनिक अपनी आवश्यकता की कोई भी चीज मोल न लेते थे, वल्कि जनता से लूट लाते थे। रास्ते चलती एव घरो मे बैठी स्त्रियो को घसीट लाया जाता था और उनके साथ बलात्कार किया जाता था।

सरकार दमन पर कितनी तुली हुई थी, इसका पता इसी बात से लग जाता है कि फरार लोगो का पता लगाने के लिए उनके सम्बन्धियो को चाहे वे किसी भी अवस्था के हो, गिरफ्तार कर लिया जाता था। ७० वर्ष के बूढे से लेकर डेढ वर्ष के दुधमुहे बच्चे तक जेल मे ठूंस दिये गये थे। भागलपुर मे पुलिस ने एक १८ महीने के बच्चे को जिसके पिता फरार थे, कैद कर लिया और उसे ४ दिन तक अपनी मा से अलग रखा। परन्तु बाद मे जेल अधिकारियो ने उसकी जिम्मेवरी लेने से इन्कार कर दिया और वह छोड़ दिया गया। इसी प्रकार भागलपुर के ७० वर्ष के बूढे मदन झा को भी जेल के सीखचो में बन्द कर दिया गया था।

बिहार के अन्य जिलो की अपेक्षा इस जिले मे सबसे अधिक स्थानो पर गोली चली तथा सबसे अधिक मनुष्य गोली के शिकार हुए। गावो को फूक देने का राक्षसी कार्य भी यही जारो से हुआ।

यहा के खादी-भडार भी दमन की लपटो से अछूते न बच सके। सैफाबाद का चर्खा-शिक्षण-शिविर जलाकर खाक कर दिया गया तथा सुपोल का स्वराज्य-भवन और खद्दर-भडार नष्ट-भ्रष्ट कर दिये गये।

८. मुजफ्फरपुर जिला

यह जिला बिहार प्रान्त मे महात्माजी के रचनात्मक कार्यक्रम का मुख्य केन्द्र है और यहाँ के अधिकाश कार्यकर्त्ता अहिंसा द्वारा ही स्वराज्य प्राप्ति के सिद्धान्त मे विश्वास रखते है। अतएव यहा पर आन्दोलन का श्रीगणेश अहिंसक रूप से हुआ। जनता का मुख्य उद्देश्य जुलूसो तथा हडतालो द्वारा प्रदर्शन करना एव थानो आदि सरकारी सस्थाओ पर कब्जा करके सरकारी मशीन का चलना बन्द कर देना था। परन्तु पुलिस अधिकारियो ने झूठी अफवाहे फैलाकर लोगो में हिंसा की भावनाओ को उकसाया।

आन्दोलन प्रारम्भ होते ही जनता ने शान्तिपूर्ण तरीके से जिले के प्राय सभी थानो, रजिस्ट्री और पोस्ट आफिसो तथा स्टेशनो पर तिरगे झडे लगा दिये। पुलिस कर्मचारी या तो हैडक्वार्टर पर भाग गये या उन्होने जनता की अधीनता स्वीकार कर ली। पुपरी थाने का थानेदार अर्जुनसिह भयभीत होकर अपने साथियो के साथ सीतामढी भाग गया। वहा जाकर उसने अपन गुप्तचरो द्वारा जनता मे यह बात फैलाई कि २४ तारीख को अर्जुनसिह २० लारी फौज लेकर पुपरी थाने की ओर आरहा है और विद्रोहियो को ठीक कर देगा। इस पर २४ तारीख की सुबह ही गाव के लोग वाजपट्टी मे आकर हजारो की सख्या मे इकट्ठे होगये। अर्जुनसिह तो नही आया, पर दुर्भाग्यवश मधुवनी बाजार से एक मोटर वहाँ आ पहुची। जोश तथा आवेग में भरी जनता ने समझा कि अर्जुनसिह आया है और विना सोचे समझे उस वह पर टूट पडी, जिससे सब डिवीजनल अफसर हरदीपसिह, एक पुलिस इसपेक्टर, एक अर्दली और एक हवलदार जनता की क्रोधाग्नि में भून गये। इस घटना की सूचना जब जिला अधिकारियो को मिली तो २५ अगस्त को ११ लारी फौज के साथ कलक्टर, इन्स्पेक्टर जनरल पुलिस तथा अर्जुनसिह पुपरी पहुचे। उसी दिन उन्होने वहा की प्रसिद्ध फर्म लालचन्द मदनगोपाल पर हमला किया और ३० हजार की सम्पत्ति लूट ली। सेठ साहब के दो लडके निरजनप्रसाद एव गोपालप्रसाद गिरफ्तार कर लिये गए और उन्हे वन्दूको के कुन्दो से अपमानित किया गया। तीसरे लडके देवकीप्रसाद को मौत के घाट उतार दिया गया सबसे बडे लडके निरजनप्रसाद की नव-वधू की इज्जत लेने की कोशिश की गई। पर उस वीर महिला ने छुरा लेकर उनका सामना किया, जिससे वह कोशिश विफल रही। २६ तारीख को अर्जुनसिह पुनः ९ लारी फौज लेकर पुपरी आया और उसने लोगो पर अन्धा-धुन्ध गोलियो की वर्षा की जिससे ३ मरे और १२ घायल हुए। ३ सितम्बर को वह पुन १० लारी फौज लेकर पुपरी जा धमका और वहा की प्रसिद्ध दुकान, गौरीशकर की दूकान तथा सीताराम स्टोर को लूटा और इस प्रकार ६० हजार रुपये हथियाये। इन घटनाओ से समूचे थाने मे आतक छा गया। वन्दगाव की जनता घबराकर नैपाल की तराई मे भाग गई। पीछे से फौजियो ने वन्दगाव मे आग लगा दी जिससे ३०० घर जलकर खाक हो गए।

अत्याचार का फल अवश्य मिलता है। अर्जुनसिह के अत्याचारो का घडा भर चुका था। सरकार भी उसके काले कृत्यो से दहल उठी। परिणाम स्वरूप उस पर डकैती का अभियोग लगाया गया और उसे ८॥ साल के लिए

अपने दुष्कर्मों का फल भोगने को जेल भेज दिया गया।

पारू, लालगज, मीनापुर, कटरा आदि स्थानो मे भी जनता ने शान्ति-पूर्ण तरीके से थाने, पोस्ट आफ़िस वगैरा पर राष्ट्रीय झडे फहराये। १५ तारीख को मीनापुर के थाने पर जनता ने धावा बोला पुलिस की ओर से गोली चलाई गई जिससे एक मरा तथा १० घायल हुए। इस पर जनता आपे से बाहर हो गई। उसने ईटो-पत्थरो से थाने के दारोगा पर प्रहार किया जिससे वह जख्मी होकर गिर पडा। जनता ने थाने के फर्नीचर एव कागजात के ढेर के साथ वही उसका दाह-सस्कार कर दिया। इ,सी दिन हाजीपुर सब-जेल भी तोडी गई और काग्रेस-कार्यकर्त्ता जेल से बाहर निकाल,लिये गए।

सीतामढो मे ११ तारीख को जनता और विद्यार्थियो के एक जुलूस ने स्टेशन पर हमला किया और रेलगाडी पर कब्जा कर लिया। लोग बिना टिकट सफर करने लगे। पर जब जनता ने देखा कि इससे सरकार के काम मे कोई बाधा नही पड़ती है तो उसने १४ तारीख का रात को दरभंगा से रक्सौल तक जाने वाली रेल की पटरी को उखाडकर फेंक दिया और यातायात के मार्ग बन्द कर दिये। सीतापुर-मुजफ्फरपुर रोड,भी तोड दी गई और पुल उखाड़ दिये गये।

नौकरशाही के दमन की कहानी अन्य स्थानो के अत्याचारो से बहुत कुछ मिलती-जुलती है। भगवानपुर, रतनपुरा, बिठौली, बन्दगाव, पुपरी, शिवहर आदि अनेक गाव जला दिये गए। काग्रेस-जत्तो के घर लूट लिये गए। सीतामढी मे ठा० रामनन्दनसिंह एम० एल० ए० का बगला लूटा गया और जला दिया गया, जिससे करीब ५० हजार की हानि हुई। शिवहर में नवाब हाईस्कूल व लाइब्रेरी का सामान लूट लिया गया और उसमें आग लगा दी गई। यहा तक कि बोर्डिंग हाउस के लडको का सामान भी नही छोडा गया। पुपरी, बिठौला, सीतामढ़ी, बिछौवा, सिहांन तथा हाजीपुर के खादी भडार या तो लूट लिये गये या जला दिये गये जिससे १२, १२१ रु० ८ आ० ६ पा० की हानि हुई। बन्दगाव कत्ल-केस मे रामफल धानु को फासी की सजा हुई तथा श्री प्रदीपसिंह, तिलेश्वरसिंह एव हरनन्दन गोप को आजीवन कारावास की सजा हुई। बाजपट्टी-केस में जहा बहुत से बेगुनाह लोग फसाये गये वहाँ कुछ ऐसे आदमियो को भी मुलजिम बनाया गया जो उक्त घटना के समय जेल में थे। जैसे श्रीरामहृदय शर्मा, २० अगस्त से ही गोरखपुर जेल में बन्द थे, और बाबा नरसिंहदास, जो उस समय बेलखड थाने में थे, उक्त केस मे मुलजिम बनाये गए, किन्तु वे बरी होगए। इससे पुलिस की धाधली का कुछ अनुमान लगाया जा सकता है।

६. पुर्णिया जिला

यह जिला बिहार प्रान्त की पूर्वी सीमा पर होने के कारण बगाल से बिलकुल मिला हुआ है। अतएव सुभाष बाबू के अग्रगामी दल का यहा के किसानो और मजदूरो पर खास असर पडा। यही कारण है कि इस जिले मे आन्दोलन का जोर अधिक रहा।

इस जिले में आन्दोलन बहुत सगठित रूप से चलाया गया। अन्य जिलो की भाति यहा भी प्रारम्भ मे आन्दोलन का रूप अहिंसात्मक रहा। जनता ने शान्तिपूर्ण तरीको से जुलूस निकाले, आम हडताल की तथा सरकारी स्थानो पर अधिकार किया और झडे फहराये। १३ तारीख को कटिहार थाने पर जनता के एक बडे झुड ने हमला बोल दिया। सब डिवीजनल अफसर ने गोली चलाने का हुक्म दिया और सिपाहियो ने लोगो पर अन्धाधुन्ध गोलियो की बौछार शुरू कर दी। आठ आदमी मारे गये, जिनमे एक १३ वर्ष का बालक ध्रुव, (शान्तिनिकेतन का छात्र) भी था। ध्रुव की दाहिनी जाघ मे गोली लगी और वह वही गिर गया। बाद मे अस्पताल म बालक ध्रुव ने सदा के लिए आखे मूंद लीं। १३ अगस्त का वह दिन चला गया पर बालक ध्रुव का बलिदान ध्रुव की तरह सदा चमकता रहेगा। ध्रुव का यह बलिदान युग-युग तक देश के बालको मे अपनी मातृ-भूमि के सम्मान के लिए इसी प्रकार प्राण निछावर करने की भावना जागृत करता रहेगा। ध्रुव के पिता डा० कुण्डू, जो इस प्रात के प्रमुख कार्यकर्ता है, पुत्र का दाह सस्कार करके घर के लिए रवाना हुए। गेतारा स्टेशन पर गाडी रोक ली गई तथा पुत्र-शोक से विह्वल डा० साहब बन्दी बना लिये गये। बेचारे मृतक पुत्र का श्राद्ध भी न कर पाये। "कितना करुणापूर्ण रहा होगा उस समय का वह दृश्य जब पुत्र-शोक को हृदय में दबाए कुन्डू शान्ति भाव से जेल की ओर जा रहे थे।

इस घटना ने जनता को उत्तेजित कर दिया। वह मचल उठी और उसने रुपौली, धमदाहा, धरहरा, बरारी, रानीगज, फारबिसगज आदि १३ थानो पर हमले किये, जिससे एक थानेदार और ३ सिपाही मारे गये। दर्जनो डाकखाने और रेलवे स्टेशन लूटे तथा फूंके गये।

पुलिस ने कटिहार, बनमखी, रसीगज, रुपौली, धनदाहा, देवीपुर, खजाची, हाटी, पुर्णिया, कदनी तथा कन्हरिया में गोली चलाई जिससे ४५ मरे और ६० से अधिक घायल हुए। टीका पट्टी तथा बनमखी के खादी-भण्डार जला दिये गये। ७० गाव भी सरकार के दमन के शिकार हुए और ५०० परिवारो के घर लूटे तथा जला दिये गये।

इस जिले मे बिहार के अन्य जिलो की अपेक्षा मुसलमान अधिक सख्या मे रहते है। यहा के मुसलमान भाइयो ने भी खुले दिल से देश की आजादी की इस लडाई मे भाग लिया।

१०. सारन जिला

नेताओ की गिरफ्तारी के साथ ही जिले भर मे सरकार-विरोधी अहिंसात्मक प्रदर्शन शुरू होगये। बाजारो और स्कूल-कालेजो मे हडताले हो गईं। १३ अगस्त को सेवान मे सभा हो रही थी कि पुलिस जनता पर टूट पडी और उसने गोली चलाना शुरू कर दिया, जिससे ३ मरे तथा ९ घायल हुए। पुलिस द्वारा किए इस अमानुषिक अत्याचार के कारण जनता उत्तेजित होगई और उसने ककड का जवाब पत्थर से देने का निश्चय किया। लोग सरकारी सम्पत्ति तथा यातायात के साधनो को नष्ट कर शासन-सूत्र का चलना असम्भव कर देने पर उतारू हो गए। १४ अगस्त को लगभग २० हजार आदमियो ने छपरा स्टेशन को घेर लिया और उसमे आग लगा दी। बाद मे कचहरी और लोको इजिन-शेड को भी फूक दिया गया। महाराजगज थाने को आक्र-मणकारियो ने अपने अधिकार में कर लिया और उस पर तिरगा झडा फहरा दिया।

एक बडी भीड द्वारा सोनपुर जकशन पर धावा किया गया और रजिस्ट्री ऑफिस जला दिया गया। कुछ लोगो ने इजिन-शेड मे खडे तीन इजिन चला करके छोड दिए, जो जाकर नदी मे गिर गए। १५ और १६ अगस्त को जनता ने भडाबडा के थाने और रजिस्ट्री ऑफिस पर धावा करके उन पर ताला लगा दिया और स्टेशन अग्नि देवता की भेट चढा दिया। १८ अगस्त को भडावडा में एक सभा हो रही थी। उसी समय ५ गोरे और ऐंग्लो इडियन टॉमी बन्दूके तथा रिवाल्वर लेकर सभा-स्थल पर आ धमके और अधा-धुन्ध गोली चलाने लगे। भीड ने हडबडा कर उन पर धावा बोल दिया और उनके हथियार छीन लिए तथा उन्हे मौत के घाट उतार दिया। जनता के भी २ आदमी मरे। सारे आन्दोलन मे इस जिले से केवल यही ६ सरकारी व्यक्ति मारे गए थे।

सेवान मे थाने पर झडा लगाने के लिए जनता उमडी। उधर से पुलिस ने गोलियो की बौछार प्रारम्भ कर दी। बा० फुलैनाप्रसाद तथा अन्य तीन व्यक्ति शहीद हुए। आक्रमण के समय बाबू फुलैनाप्रसाद की धर्म-पत्नी श्रीमती तारावती अपने पति के साथ थी। जब फुलैनाप्रसाद के गोली लगी

तो इस वीर महिला ने अपनी साडी फाडकर अपन पति के पट्टी वाव दी और फिर झडा लेकर थाने की ओर वढी। जव वह थाने पर झडा फहराकर वापिस लौटी तो उसके पति और गोलियाँ लग जाने के कारण वीर गति का प्राप्त हो चुके थे।

अमर शहीद श्री फुलेनाप्रसाद का वलिदान भूला नही जा मकना। प० वनारसीदास चतुर्वेदी के शब्दो में एक ओर थी उस अटलव्रती की खुली हुई छाती, दूसरी ओर दानवी शक्तियो का जमघट उधर से आवाज हुई धाँय और इधर गोली लगी ... नम्वर एक। फिर आवाज हुई धाँय... और गोली लगी नम्वर दो . . इस प्रकार एक के वाद एक गोली चली और आ गोलिया शरीर को वेध गई। नवी गोली से सिर के टुकडे-टुकडे होगये और निर्जीव शरीर धराशयी हो गया। अथवा यो कहिए कि रण-प्रागण मे वह सिह सदा के लिए सो गया। भारतीय सत्याग्रह के इतिहास में यद्यपि अनेक सिपाहियो ने वीर गति पाई है, परन्तु सारन के श्री फुलेनाप्रसाद के प्रयाण पर ससार के किसी भी अहिंसक योद्धा को ईर्ष्या हो सकती है।"

सोनपुर में वच्चो पर गोली चलते देखकर एक मुसलमान अपनी छाती खोलकर फौजियो के सामने आ खडा हुआ और उन्हे जोर से ललकारा। झट से उसकी छाती पर गोली लगी और वह शहोद हो गया।

पुलिस एव फौज द्वारा घर जलाने लाठी चार्ज करने, वलात्कार करने आदि की घटनाये तो हर जिले की भाँति यहाँ भी वहुत हुई, परन्तु कुछ नवीन घटनाए भी हुईं जिनमे पुलिस की वर्वरता एव अमानुषिकता पराकाष्ठा को पहुची हुई दिखाई दती है। नाखा वाजार मे विहार के भूतपूर्व मिनिस्टर श्री जगलाल चौवरी के दो वर्ष के अवोध वालक का इन अत्याचारियो ने मृत्यु की भेट चढा दिया। गोरो की एक टुकडी ने छपरा से सेवान जाते समय रास्ते मे खेत मे काम करते हुए १३ और १८ वर्ष के दो लडको की गोली द्वारा हत्या कर डाली। मलखाचक गाव में वा० रामविनोदसिह के मकान को डायनामाइट से उडा दिया गया। ३ सितम्वर सन् १९४२ को जव छपरा शहर मे गोरी पलटन का जुलूस शहर की सडको मे से होता हुआ जेल के पास से गुजरा तो वन्दियो ने राष्ट्रीय नारे लगाये। इस पर उक्त पल्टन का कैप्टिन चिढ गया और उसने जेल में जाकर १६ प्रमुख वन्दियो के अपने सामने ३० ३० वेत लगवाये।

सारन जिले मे लगभग छ. लाख नर-नारियो ने इस आन्दोलन मे सक्रिय भाग लिया।

११. रांची जिला

यह पहाडी जिला है तथा यहाँ के निवासी अधिकतर अशिक्षित, भोले-भाले एव मूल निवासियो की सन्तान है। फौजियो का यह बहुत बडा केन्द्र था। अतएव फौजियो की हलचल तथा देश की अन्य परिस्थितियो के कारण यहाँ के निवासी भी एक बडी तीव्र बेचैनी का अनुभव कर रहे थे। इसलिए अगस्त-आन्दोलन में उनका विद्रोह के लिए उठ खडा होना स्वाभाविक था। किन्तु वर्षा का मौसम होने तथा आवागमन की असुविधा के कारण अगस्त भर आन्दोलन राँची तथा उसके आस-पास के स्थानो तक ही सीमित रहा। सारे जिले में आन्दोलन की आग भडकने मे काफी समय लग गया। परन्तु आन्दोलन देर से प्रारम्भ होने के कारण वहाँ अक्टूबर तक इसका काफी जोर रहा।

विद्यार्थियो ने स्कूल कालेज छोडकर अहिंसात्मक तथा शान्तिपूर्ण प्रदर्शन प्रारम्भ किये यहाँ के पुलिस अधिकारियो ने बडी होशियारी एव बुद्धिमानी से काम लिया। उन्होने प्रदर्शन तथा सरकारी इमारतो पर झड फहराने के काम मे किसी भी प्रकार का दखल नही दिया। परिणाम यह हुआ कि भोली-भाली जनता झडे फहराकर वापिस लौट गई। सरकारी इमारतो पर थोडी बहुत जगह जो ताले लगाये गये थे वे पुलिस अधिकारियो की प्रार्थना तथा इस आश्वासन पर कि वे आजाद सरकार की आज्ञानुसार कार्य करने को तैयार है, खोल दिये गये।

माडर, कुडूं चैनपुर, बेरी तथा बिशनपुर के थानो पर झडे फहराए गये और कुडू को छोडकर बाकी सबमे ताले डाल दिये गये। अरगोडा रेलवे स्टेशन जलाया गया। राँची और लोहरदगा के बीच की रेलवे लाइन उखाडी गई तथा हिनू के हवाई अड्डे लोहरदगा के फौजी कैम्प, राँची के पोस्ट-ऑफिस एव ग्रीष्म कालीन सेक्रेटेरियट, पर भी तोड-फोड की गई। तार काटने का काम कोकर गाव के हल्के मे विशेष रूप से हुआ।

जेल के सामने एक जुलूस पहुँचने पर अन्दर से विद्यार्थियो ने जेल तोडकर बाहर निकलने की चेष्टा की, किन्तु बाहर से पूरी सहायता न मिलने तथा अन्य कैदियो के बाधा उपस्थित करने से एक फाटक पार करने पर उन्हे रोक दिया गया। बाद मे जेल मे लाठी-चार्ज किया गया, जिससे शहर के सबसे धनी परिवार के लडके आत्माराम बुधिया के गहरी चोट आई।

१२. दरभंगा जिला

दरभगा प्राचीन मिथिला की राजधानी है। यहा की जनता आज भी

आजादी की भावना मे ओत-प्रोत है। यहा के लोग इस बात को अच्छी तरह जानते है कि स्वतत्रता कितनी कीमती वस्तु है । यही कारण है कि अगस्त-आन्दोलन में यहा की जनता गोली चलने पर भी पीछे न हटी, उसका उत्साह वैसा-का-वैसा बना रहा।

इस जिले मे काग्रेस का नेतृत्व प्रारम्भ से ही गान्धीवादियो के हाथ मे रहा है। अत यहा विधानवादियो की कमी नही है। नेताओ की गिरफ्तारी के साथ ही यहा पर बडे पैमाने पर अहिंसात्मक प्रदर्शन किये गए। यहां के काग्रेस-कार्यकर्त्ताओ ने इस बात का विशेष ध्यान रखा कि कही हिंसक प्रवृत्तियो द्वारा आन्दोलन की पवित्रता खण्डित न हो जाय। लोगो ने भी अपने नेताओ की आज्ञाओ का पूरा पालन किया और गोली तथा लाठी की मार खाकर भी उत्तेजित न हुए। तार काटना, पुल तोडना, सडकें उखाडना आदि उनके विचार में हिंसा की श्रेणी मे नही आते थे। इसीलिए उन्होने इन्हे अपनाया। इस प्रकार आन्दोलन बहुत अशो तक अहिंसक रहा, किन्तु धमदामा गांव में एक पुलिस सब इन्सपेक्टर जनता की क्रोधाग्नि का शिकार हो गया।

दरभगा में १० अगस्त से आन्दोलन का हडतालो से श्रीगणेश हुआ। विद्यार्थियो के नेतृत्व में १६ तारीख तक रोजाना जुलूस निकलते रहे। जिनमें १० हजार तक लोग भाग लेते थे। दो-चार बार जुलूसो पर पुलिस की ओर से लाठी-चार्ज भी हुआ जिसमें काफी विद्यार्थियो के चोटें आई । रेल की पटरिया उखाड दी गई, तार काटे गए, ट्रेनो पर अधिकार कर लिया गया, थाने पर कब्जा करके वहा के सब कागजात जला दिये गए और सरकारी इमारतो पर तिरगा झडा फहरा दिया गया। १७ तारीख को एक बहुत बडा जुलूस देहातो से एकत्रित होकर आया। जब वह स्टेशन पर पहुचा तो उस पर गोली चलाई गई। एक आदमी मरा और १० घायल हुए । जानकी मिश्र को बूट की ठोकरो से पीट-पीट कर मृत्यु के घाट उतार दिया गया।

बेहरा में १० तारीख को पुलिस ने काग्रेस दफ्तर पर छापा मारा और सब कागजात उठाकर ले गई। इसी दिन थाना काग्रेस कमेटी के मत्री को किसी अज्ञात स्थान से एक कार्यक्रम मिला, जिसमें १६ बातें थी । इसके आधार पर थाने आदि पर अधिकार करने की योजना बनाई गई और १३ तारीख को एक बडे जुलूस द्वारा अहिंसात्मक रूप से थाने पर झडा लगाया गया। गावो मे भी इस कार्यक्रम का खूब प्रचार किया गया। परिणामस्वरूप १९ तारीख को ५० हजार की भीड आस-पास के गावो से एकत्रित होकर श्रीमती जानकी देवी की अध्यक्षता मे बेहरा आ पहुची और थाने पर धावा करके

कुछ कागजात और फर्नीचर की होली जला दी । थाने के कर्मचारी अपनी जान बचाकर भाग गये । फिर जनता ने रजिस्ट्री तथा पोस्ट ऑफिस पर ताला लगा दिया और ४५ स्वयसेवको का पहरा बैठा दिया । एक सार्वजनिक सभा करके आवागमन के साधनो को नष्ट करने का निश्चय किया गया और सडक-तार आदि नष्ट किये गए एव मनगाछी और सरकारी स्टेशनो की लाइनें उखाड दी गई । २२ तारीख तक थाने पर जनता का अधिकार रहा । २२ को दर-भगा से गोरा पल्टन आ गई और दमन शुरू हो गया ।

मधुवनी मे १२ तारीख को विद्यार्थियो एव जनता का एक सम्मिलित जुलूस जब कचहरी पर पहुचा तो पुलिस ने लाठी जार्ज के द्वारा उसे तितर-बितर करने की चेष्टा की और श्री विन्देश्वरीसिंह तथा श्री विश्वनाथ लालकर्ण को गिरफ्तार करके उनके हन्टर लगाये । पर जनता के उत्साह पर इसका कुछ भी प्रभाव न पडा । वह वही डटी रही । पुलिस-अधिकारियो पर जनता के इस साहस का इतना प्रभाव पडा कि उन्होने तत्काल गिरफ्तार व्यक्तियो को छोड दिया एव कचहरी पर राष्ट्रीय झडा लगाने की छुट्टी दे दी । दूसरे दिन हजारो की तादाद मे गाँवो से जनता आई और उसने तार काटना व पटरी उखाडना शुरू कर दिया । १५ अगस्त को गणेशचन्द्र झा की अध्यक्षता मे छ हजार आदमियो का जुलूस निकला । थाने पर पहुचते ही जुलूस पर पुलिस द्वारा लाठी-चार्ज किया गया, पर जनता इस अमानुषिक प्रहारो को सहकर भी डटी रही । पुलिस ने गोली चला दी । एक आदमी घटना-स्थल पर मर गया, दूसरे के सख्त चाट आई । पुलिस उसे पैर पकडकर घसीटती हुई थाने मे ले गई । बेचारा थाने मे पहुचते ही मर गया ।

१४ तारीख को खजौली थाने के कुलआही गाँव में लोगो ने सब डिवीजनल अफसर की मोटर तोड़ डाली और कान्स्टेबलो से साइकिलें छीन ली । फसारोड की फ्लैक्स कम्पनी (Flex company) पर जनता ने हमला किया और उसे जलाकर नष्ट कर दिया, जिससे दो लाख का नुकसान हुआ ।

सरकारी दमन भी जोरो से चला । सिंघिया थाने में पुलिस और टॉमियो ने अमानुषिक अत्याचार किये । १८ परिवारो के घर जला दिये, लोगो को मार-मार कर बेहोश कर दिया तथा एक प्रतिष्ठित वृद्ध कांग्रेसी को अधमरा करके उसके मुह मे डोम से पेशाब डलवा दिया । राइफल और सगीन के बल कितने ही घरो मे घुसकर स्त्रियो पर बलात्कार किया । इतना ही नही, खत मे घास छीलती हुई लडकियाँ भी इनकी कामान्धता का शिकार बनी ।

समस्तीपुर डिवीजन में फौजियो ने कांग्रेस-कार्यकर्त्ताओं के घरो में घुसकर उन्हें बुरी तरह पीटा तथा घर में लगी हुई गान्धीजी एव जवाहरलालजी की तस्वीरो को पैरो मे कुचल दिया। बागमती मे जनता ने जटमल नामक पुल नष्ट कर दिया था। जब फौज वहा पहुची तो उसने राजबन्दियो को कपडे उतरवाकर और पुल दिखा-दिखा कर इतनी बुरी तरह से पीटा कि बहुतेरे बेहोश हो गये और कई हफ्ते मे ठीक हुए। पीडितो में समस्तीपुर सब-डिवीजन की कांग्रेस कमेटी के प्रधान डाक्टर डा एन झा भी थे। मदेपुर, तरवारा, लहेरियासराय, उमगाँव, बाजीदपुर, राजनगर आदि ५४ जगहो के खादी-भण्डार या तो लूट लिये गए या जलाकर नष्ट कर दिये गए, जिससे ३०–३१ हजार की हानि हुई। दीप नामक गाव मे दो सौ मकान जला दिये गए। मधुबनी के पुलिस इन्स्पेक्टर और सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिस दमन की साक्षात् मूर्ति बने हुए थे। आन्दोलन के पहले इनके पास कोई खास सम्पत्ति न थी। परन्तु आन्दोलन के दिनो मे इन्होने कोठी और बगले खरीद लिए और बहुत-सी जमीदारी ले ली।

१३. मानभूमि

मानभूमि के वीरो ने भी अपनी मातृ-भूमि के मान के लिए अपने लहू को बहाया है, दमनकारियो की लाठियो के प्रहार सहे है तथा अपने सामने अपनी सम्पत्ति की बरबादी देखी है।

मानभूमि जिले के कांग्रेसी नेता श्री अतुलचन्द्र घोष है। आपकी उत्कट लगन और निस्वार्थ सेवा ने जिले में और मुख्यकर पुरुलिया सब डिवीजन में बहुत से सक्रिय कार्यकर्त्ता उत्पन्न किये है। इन्होने जिले भर को अपनी सेवाओ से मुग्ध कर लिया है। जनता कांग्रेस से प्रेम करती है और सदैव उसकी आज्ञाओ को मानने के लिए तैयार रहता है। अगस्त-क्रान्ति का दिव्य-घोष होते ही जिला-का-जिला अपना रोष प्रकट करने के लिए तैयार हो गया। सथाल तथा महतो जाति के लोग, जिनकी सख्या जिले में सबसे अधिक है, तीर-भालो से सुसज्जित होकर युद्ध के लिए आ खडे हुए। परन्तु अतुलबाबू की आज्ञा से उन्होने हिंसा का इरादा छोड दिया और अहिंसक एव शान्तिपूर्ण तरीको से सरकार का विरोध करना प्रारम्भ कर दिया। झडे लगाना, हडताल करना आदि जो आन्दोलन का सामान्य रूप था, अगस्त भर चलता रहा, और पुरुलिया, बाँदवान एव बडा बाजार के थानो पर तथा रघुनाथपुर की कचहरी और धनबाद (झरिया) के स्कूलो पर तिरगे झडे फहराये गए। ७६ आदमी पिकेटिंग करते हुए पकडे गये।

इसी बीच जनता को अन्य प्रान्तो में होने वाले पुलिस के अत्याचारो तथा उनकी प्रतिक्रिया मे होने वाले हिंसात्मक कार्यों का पता चला और तोड-फोड का प्रोग्राम भी प्राप्त हुआ। जनता मे प्रतिहिंसा जाग उठी अत थानो पर हमले किये गए। बाँदवान और बडा बाजार के थाने जलाये गए। बडा बाजार के पोस्ट ऑफिस के तमाम कागजात एव घनवाद पोस्ट ऑफिस की इमारत तक फूककर राख कर दी गई। मान बाजार से पुरुलिया आने वाला सडक पर पुल भी तोडे गये। लालपुर तथा लघुरमा के मिलिटरी कैम्प में आग लगाने की चेष्टा की गई। सारे जिले मे तार काटना व शराब की भट्टियो को नष्ट करना भी कई दिनो तक जारी रहा।

यहा जो दमन हुआ उसकी कहानी अन्य स्थानो का कहानी से बहुत-कुछ मिलती-जुलती ह। जिन स्थानो पर गोलिया चलाई गईं, उनमे से जरगाव, मानवामार और कबरासगढ ये तीन स्थान प्रसिद्ध हैं।

१४. सिंहभूमि जिला

इस जिले मे 'मिल एरिया' में रहने वाले मजदूरो ने ही खास तौर से सरकार विरोधी प्रदर्शनो मे भाग लिया। जमशेदपुर की टाटा स्टील कम्पनी के ३०,००० तथा अन्य कम्पनियो के ५,००० मजदूरो ने नेताओ की गिरफ्तारी के विरोध में ९ अगस्त से हडताल शुरू की। उन पर कांग्रेस वालो का अधिक प्रभाव था। अतएव उनके सब प्रदर्शन पूर्ण रूप से अहिंसक रहे। उन्होने किसी भी अफसर की जान लेने का प्रयत्न नही किया। पूरे १३ दिन तक बडे शान्ति पूर्ण ढग से हडताल को चलाया। मजदूरो के त्याग ने कुछ सिपाहियो को भी प्रभावित किया और २८ सिपाहियो ने शान्तिपूर्वक 'हथियार रख दिये और सरकारी नौकरी मे स्तीफे दे दिये।

यहा पर मजदूरो तथा विद्यार्थियो का पूरा सहयोग रहा। स्कूलो मे हडताल हुई और जुलूस भी निकले। जमशेदपुर मे ब्लूम ब्रिज को तोडने की चेष्टा की गई। राची के आसपास तार भी काटे गए।

६ सितम्बर को जमशेदपुर मे १५ हजार से अधिक लोगो का जुलूस निकला, जिसमे हरिजनो की सख्या अधिक थी। ये लाग राष्ट्रीय नारे लगाते हुए जेल के फाटक पर जा पहुचे और वहाँ के अधिकारियो से कहा—'हम अपने नेताओ के दर्शन करना चाहते हैं, उन्हे, बाहर निकालिए।' जनता को यह शक था कि उसके नेताओ पर जेल मे सख्ती की जाती है। जेल अधि-कारी जनता की माँग को ठुकरा न सके। वे डर के मारे काँप रहे थे। उन्होने जनता की आज्ञा का पालन करने मे ही अपना भला समझा। तुरन्त नेता

लोग बाहर लाए गए । जनता उन्हें ठीक स्थिति में देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुई। उसने खूब जोर से जयघोष किया और अपने नेताओं को फूलों की मालाओ से लाद दिया तथा मानपत्र भेंट कर वापस लौट गई। यहा की जनता कितनी शान्त रही यह घटना इस बात का सुन्दर उदाहरण है।

१५. पलामू

पलामू प्रान्त के दक्षिण पश्चिम में स्थित है। प्राय समस्त जिला जगल एव पहाडियो से आच्छादित है। इसकी जनसख्या ८ लाख १८ हजार है और यहाँ के निवासी अधिकाश कोल तथा सथाल है। जिले में यातायात के साधन बहुत कम है तथा शिक्षा का भी कम प्रचार हुआ है। स्कूल शहरो तक ही सीमित है। अतएव जब देश भर में क्रान्ति की ज्वाला धधक रही थी तो यहाँ के देहातो मे प्राय शान्ति दिखाई पडती थी। पर शहर आन्दोलन की लपटो से न बच सके। वहाँ के विद्यार्थियो तथा वकीलो ने आगे बढकर जनता का नेतृत्व किया। हडताल और जुलूस विशेष कार्यक्रम थे। डाल्टनगज, गढवा, हुसैनाबाद, लैसलीगज और लातिहार के थानो पर जनता ने झडे फहराने की चेष्टा की तथा गढवा को छोडकर शेष थानो पर झडे फहराये भी गए। डाल्टनगज थाने की पुलिस को आत्म-समर्पण के लिए बाध्य किया गया और जेल पर आक्रमण करके जनता ने अपने नेता ठा० रामकिशोर एम० एल० ए० को जेल से बाहर निकाल लिया। डाल्टनगज, गढवा और हरिहरगज के डाकखाने भी जनता के आक्रमण के शिकार हुए। डाल्टनगज के थाने को तो लोगो ने जलाकर खाक कर दिया। इसके अतिरिक्त स्थान-स्थान पर शराब की भट्टियो को भी बर्बाद किया गया।

इस जिले में सरकार द्वारा जो दमन हुआ वह अन्य स्थानो से मिलता-जुलता था। हाँ, एक बात खास थी। यहा के जमीदारो ने दमन करने में पुलिस का साथ दिया और किसानो को पिटवाया, गिरफ्तार करवाया और इस प्रकार 'देश-द्रोही' का कलकपूर्ण खिताब प्राप्त किया।

१६. संथाल परगना

सथाल परगना भी अगस्त आन्दोलन की लपटो से अछूता न रहा। यद्यपि यहा आन्दोलन का रूप अन्य जिलो जैसा न रहा, परन्तु फिर भी यहा ६०० व्यक्ति गिरफ्तार किये गये,जिनमें २०० तो यहा के मूल निवासी थे। इस जिले में ६ आदमी गोली के शिकार हुए एव २० जेलो में मर गये। यहाँ पर कई लोगो को ३५ साल तक की सजायें हुई।

: ६ :

आसाम में आन्दोलन

एक नज़र में

जिला	नजरबन्द	गिरफ्तारियाँ	सजायें	सामूहिक जुर्माना
लखीमपुर	१९	३११	२१४	१०,००० रु०
सिवसागर	२३६	३४७	२८७	१,४०,००० ,,
नौ गाँव	६०	१६००	१७००	८७,००० ,,
दाराग	८	४३०	१४२	४५,७००० ,,
कामरूप	४३	९५५	९१४	६६,०११ ,,
ग्वालपाडा		७	६	३८,००० ,,
	३६६	३६५०	२७६३	३,८६,७११ रु०

नोट—लगभग २,७२,००० रु० सामूहिक जुर्माना वसूल किया गया।

कितनी जगह गोली चली	६
कितने घायल हुए	लगभग १०००
कितने मरे	७०–८०
साधारण लाठी-चार्ज	१५
सख्त लाठी-चार्ज	१७
कितनी जगह तोड-फोड हुई	२१
कितनी जगह विस्फोट हुए	६
कितनी जगह गाडिया गिराई गईं	६

नोट—प्रान्त की लगभग ९२ लाख जन-सख्या में से करीब २० लाख आदमियो ने आन्दोलन मे सक्रिय भाग लिया।

आसाम प्रान्त भारत की पूर्वी सीमा बनाता है। सीमा-प्रान्त का अपना महत्त्व होता है और वही इसका भी है। इसका क्षेत्रफल ६७,३३४ वर्ग मील है, पर यहा आबादी अपेक्षाकृत बहुत कम है, क्योकि यहा पहाडी

प्रदेश अधिक है। प्राकृतिक दृष्टि से आसाम तीन भागो में बटा हुआ है– ब्रह्मपुत्र या आसाम घाटी, सूरमा घाटी तथा पहाडी भाग। सूरमा घाटी के सिलहट एव कछार जिले सबसे अधिक बसे हुए है। बाहर के लोग यहा काफी आकर बस गये है। जैसे बिहारी ग्वाले, बगाली, मारवाडी आदि। मेमनसिंह आदि स्थानो से बहुत से मुसलमान भी यहाँ आये है। मारवाडी लोगो के हाथो में यहा का अधिकाश व्यापार है तथा बगाली लोग सरकारी नौकरियाँ करते है। इन दोनो वर्गों के लोग यहाँ की राजनीतिक हलचल में बहुत कम भाग लेते है। यही कारण है कि सन् १९४२ के आन्दोलन में अधिकाश भाग स्थानीय लोगो ने ही लिया।

शायद कुछ लोग यह सोचते हो कि देश के एक कोने पर स्थित होने के कारण ९ अगस्त को नेताओ की गिरफ्तारी के साथ बम्बई मे जो क्रान्ति की भयकर लपट ब्रिटिश साम्राज्यशाही को भस्म करने के लिए उठी, उसका आसाम की जनता पर खास असर न पडा होगा। पर बात ऐसी नही है। आसाम देश के उन भागो मे से है जहा आन्दोलन का रूप अत्यत उग्र रहा। यहा के लोगो ने सन् १९४२ के खुले विद्रोह में अपूर्व त्याग, बलिदान, उत्साह एव जोश का परिचय दिया।

नेताओ का गिरफ्तारी से आसामवासियो के हृदय पर वज्र टूट पडा। इस अमानुषिक प्रहार को उन्होने अपनी आशाओ और उमगो पर प्रहार समझा। वे उत्तेजित हो उठे और ऐसी अविवेकपूर्ण सरकार को, जो महात्मा गाधी और जवाहरलाल नेहरू जैसी महान् आत्माओ को जेल के सीखचो में ठूंस देने के जघन्य कार्य से जरा भी न हिचकी, अस्त-व्यस्त कर अपनी समानान्तर सरकार स्थापित करने के लिए उन्होने अपने प्राणो की बाजी लगा दी। सरकार भला यह कब सहन करने लगी ? उसने उन पर भाति-भाति के अमानुषिक प्रहार किये, पर आसामवासियो ने देश की आजादी के लिए उन सबका अपने अहिंसा शस्त्र से सामना किया एव कई महीनो तक सरकारी शासन को पगु बना दिया।

आसामवासियो के हृदय में आजादी के लिए जलती हुई ज्वाला को देश ने अगस्त-क्राति में ही देखा। क्या ग्रामीण, क्या नागरिक, क्या बूढे, क्या जवान, क्या स्त्री, क्या पुरुष, क्या धनी, क्या निर्धन, क्या शिक्षित, क्या अशिक्षित, क्या हिन्दू, क्या मुसलमान प्राय सभी वर्गों तथा श्रेणियो के लोगो ने प्राणो की बाजी लगाकर देश की आजादी के इस आन्दोलन को आगे बढाया। वे भी अजीब दिन थे जब जिसे देखिये उसी के हृदय में उत्तेजना उबाल खा रही थी। थोडे

से पहाडी भाग को छोडकर सारा-का-सारा आसाम क्रान्ति की गोद मे खेल रहा था।

ऐसा होना स्वाभाविक था? क्योकि क्रान्ति के लिए सभी आवश्यक कारण अन्य स्थानो की अपेक्षा यहा अधिक मात्रा मे विद्यमान थे। सामने से जापान बढता हुआ आ रहा था तथा बर्मा एव मलाया की हार से लोगो का अग्रेजो की शक्ति पर से विश्वास उठ चला था। फौजियो के लाखो की सख्या में वहा आजाने के कारण लूट-खसोट, व्यभिचार, वस्तुओ की कमी आदि बातो का जोर बढ रहा था। फौजियो के रहने तथा हवाई अड्डे आदि बनाने के लिए बिना कुछ दिये और अन्य इतजाम किये लोगो से जबरन गाव-के-गाव खाली कराये जा रहे थे। इन सभी कारणो से जनता का असन्तोष चरम सीमा पर पहुच चुका था। बारूद तैयार थी, केवल चिनगारी की आवश्यकता थी। नेताओ के पकडे जाने के साथ ही वह सुलग उठी।

आसाम के लोग सीधे, सरल और धार्मिक प्रकृति के है। प्राकृतिक कठिनाइयो के कारण यातायात के साधन वहा अधिक विकसित नही हो पाये है। अतएव स्वाभाविक रूप से ही यहा के लोगो का झुकाव गाधीजी के सिद्धातो की ओर है। वे रचनात्मक कामो को विशेष रूप से पसन्द करते है। ब्रह्मपुत्र की घाटी में रहने वाले अधिकाश लोग काग्रेसवादी है। मुसलमानो पर जमीयतुल-उलमा का अधिक प्रभाव था। सिलहट के ४०० मुसलमान आन्दोलन में जेल गये। वहा पर काग्रेस के अधिकाश लोग मध्यम श्रेणी के शिक्षित नौजवान व्यक्ति है, पर उच्च वर्ग के लोगो का भी किसी-न-किसी रूप में सहयोग अवश्य है।

विद्रोह का श्रीगणेश हडतालो एव शान्तिपूर्ण प्रदर्शनो से हुआ। हडताल इतने जोरो पर चली कि तमाम स्कूल, कालेज बन्द हो गये। देहात के मजदूरो ने भी अपना काम बन्द कर दिया। राष्ट्रीय नारो के साथ बडे-बडे जुलूस निकाले जाने लगे। प्रायः ऐसा होता था कि स्त्री-पुरुष, लडके-लडकिया मीलो दूर से जुलूस बनाकर आते थे। उनके हाथो मे राष्ट्रीय झडे रहते थ जिनको वे थानो, स्टेशनो, पोस्ट ऑफिसो आदि सरकारी सस्थाओ पर फहराने का प्रयत्न करते थे। हिसाब लगाने से पता चलता है कि प्रान्त के करीब दो-तिहाई लोगो ने इन प्रदर्शनो मे भाग लिया। सरकारी सस्थाओ पर किए गए आक्रमण प्राय अहिंसक और शान्तिपूर्ण होते थे, किन्तु कानून का दम भरने वाले किराये के टट्टुओ ने इनका जवाब किर्चो और गोलियो से दिया जिसके कारण भारतमाता के कितने ही अमूल्य लाल छिन गए।

ज्यो-ज्यो दमन बढ़ता गया त्यो-त्यो लोगो ने और भी अधिक उत्साह दिखाया। सरकारी दमन ने लोगों के जोश को कुचलने की अपेक्षा उसे पुष्ट किया। करीब चार महीने तक सरकारी शासन एकदम पगु बना दिया गया। बहुत से स्थानो पर जनता ने अपनी पचायतें स्थापित कर ली, पुलिस का काम गाव के लोग ही करते थे। कई स्थानो पर तो पचायतो ने अपनी जेलें भी बना ली थी।

आन्दोलन के दो रूप थे। एक रचनात्मक और दूसरा अवरोधात्मक। रचनात्मक दृष्टि से देहातो को स्वत पूर्ण इकाई बनाने का प्रोग्राम था, जिससे एक निश्चित समय के भीतर उन्हे स्वतत्र घोषित किया जा सके। अवरोधात्मक प्रोग्राम के अनुसार फौज के ठेकेदारो को गाँवो मे मिलने वाली चीजो पर रोक लगा दी गई थी। धान, पशु, तरकारी आदि वस्तुओ को विरोधी लोग लुक-छिपकर न ले जा सके इसकी रक्षा के लिए यातायात के सभी साधन, यहा तक कि सरकारी सडके भी नष्ट कर दी गई थी।

आन्दोलन के कुछ दिन पूर्व से ही गाँव वालो ने अपनी रक्षा के लिए शान्ति-सेना बना ली थी, जिसमें गरीब २०,००० स्वय सेवक थे। इन लोगों ने गाव-गाव में अपने तम्बू गाड रखे थे और रात को बारी-बारी से गाव के प्रत्येक नाको पर पहरा देते थे। इन लोगो का काम था गाव की निगरानी रखना और किसी खतरे का सन्देह होते ही तुरही बजाकर गाव वालो को सावधान कर देना। सेवक अपने कर्त्तव्य को बडी तत्परता से पूरा करते थे। कई वीरो नें गोली खाकर भी तुरही बजाई और गाव वालो को खतरे से बचने के लिए सावधान किया।

आन्दोलन के प्रथम १८ दिन बडे शान्तिपूर्ण रहे। सारे आसाम में कही भी रेलवे की सडक नही उखाडी गई। केवल एक मामूली घटना हुई। उसके लिए अधिकाश मे जगली हाथी को उत्तरदायी बताया जाता है। परन्तु नवम्बर मास से सडकें तोडना, गाडियो को उलटना, मालगोदामो, स्टेशनो, जगलात के बगलो, फौजी गोदामो एव भिन्न-भिन्न प्रकार के स्कूलो को लूटने तथा जलाने का काम प्रारम्भ हो गया। ६ स्थानो पर गाडी गिराई गई, जिनमें मे दो जगह भारी जन-धन की हानि हुई। २६ नवम्बर को गोहाटी रेलवे स्टेशन से १४ मील दूर पर एक फौजी गाडी गिराई गई जिसमे करीब १५० व्यक्तियो की जाने गई। इसके अतिरिक्त देशी बम भी बनाये गए, जो कालेजो के कमरो, तार-घरो एव रेलवे प्लेटफार्मो पर फटते थे। क्रान्ति की यह आग नौगाव जिले मे महात्मा गान्धी के उपवास तक धधकती रही। आसाम की कांग्रेस

सरकार के प्रधान मत्री श्री गोपीनाथ बारदोलाई के शब्दो मे, 'इस प्रकार के हिंसापूर्ण कार्य बहुत अशो मे आपसी ईर्ष्या व्यक्तिगत शत्रुता, युद्ध के ठेकेदारो की बिना काम किये ही बिल पास कराने की नीच मनोवृत्ति तथा गबन करने वाले अफसरो द्वारा ऑफिस रेकार्ड नष्ट कर अपनी चोरी छिपाने के लज्जा-जनक प्रयत्नों के कारण ही हुए-हैं' आन्दोलनकारियो का वास्तव मे उनमें बहुत कम हाथ रहा है।

जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि आन्दोलन बहुत अशो तक अहिंसात्मक रहा। तेजपुर सब-डिवीजन मे ऐसे साहसपूर्ण अहिंसक कार्यों का प्रदर्शन हुआ है जिनकी समता ससार के किसी भी देश के इतिहास मे मिलनी कठिन है। एक-दम निहत्थे और शान्त स्त्री-पुरुषो ने दराग जिले के ढेकिया-जुली, बेहाला, गोहपुर आदि स्थानो पर गोलियो का छाती खोलकर सामना किया। गोहाटी से १६ मील दूर मुक्तापुर गाँव मे काग्रेस के प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता श्री महेन्द्रनाथ डेका के सभापतित्व मे ५००० आदमियो की एक सभा हो रही थी। दारोगा पुलिस को लेकर वहा पहुँचा और उसने सभा विसर्जित करने एव श्री डेकाजी को बन्दी बनाने की आज्ञा दी। जनता इस धमकी से न डरी। वह सभा-स्थल पर डटी रही। साथ ही उसने अधिकारियो से साफ-साफ कह दिया कि श्री डेकाजी इस समय हमारे अधिपति है। हम ब्रिटिश हुकूमत को नही मानते। दारोगा ऐसा मुह-तोड उत्तर पाकर जल-भुन गया और उसने गोली चलाने का हुक्म दे दिया। पर इससे पहले कि सिपाही गोली चलाये, सब लोगो ने उनको घेर लिया और उनकी बन्दूकें छीन ली। उन्होने किसी को जरा भी चोट न पहुचाई। श्री डेकाजी आगे बढे और एक अहिंसक सिपाही की भाति अपने-आपको पुलिस अधिकारियो को सौपने के लिए तयार हो गये। जनता ने आवाज उठाई "नही, नही ऐसा नही हो सकता। आज प्रजा का दिन है। यदि अधि-कारी लोग आपको गिरफ्तार करना चाहते है तो कल आय।" इतना कह वह अपने नेता को घर लिवा ले गई और उधर दारोगा भी अपने साथियो के साथ अपने घर चला गया। दूसरे दिन डेकाजी ने अपने वादे के अनुसार १५-२० प्रधान कार्यकर्त्ताओ के साथ अपने-आपको पुलिस अधिकारियो को सौंप दिया। श्री डेकाजी को एक साल की सजा हुई। इसी प्रकार कामरूप मे भी हजारो लोगो की एक भीड ने पुलिस अधिकारियो को घेर लिया, परन्तु उन्हे किसी प्रकार की हानि नही पहुचाई। केवल अपने साथ जुलूस मे शामिल कर लिया। आसाम के लोगो ने इस प्रकार अहिंसक अनुशासन का परिचय दिया।

आसाम के आन्दोलन मे स्त्रियो ने खूब हिस्सा लिया और वह भी पूर्ण

अहिंसात्मक रूप में। जहाँ भी गोलिया चली, लाठी-चार्ज हुए, स्त्रियाँ पुरुषो के साथ मौजूद थीं। इतना ही नही, गोली खाने या गिरफ्तार होने के लिए सब से आगे स्त्रिया ही बढी। देश की आजादी के लिए हसते-हसते प्राण न्योछावर कर देने वाली वीर कन्या कनकलता, तुलेश्वरी आदि पर कोई भी राष्ट्र गर्व किये बिना नही रह सकता। ऊपरी आसाम में फौज के अत्याचारों से जनता के जान-माल की रक्षा करने में श्रीमती अन्नप्रिया एव सुधालता की अध्यक्षता में स्त्रियो के एक बडे जत्थे ने बडी तत्परता एव साहस का परिचय दिया। पुलिस के अत्याचारो से पीडित प्रदेशों मे अपनी जान खतरे में डालकर भी जनता की रक्षा का काम आसाम की स्त्रियो ने ही किया। राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास मे आसाम की स्त्रियो का चमकता हुआ स्थान रहेगा।

कुछ अपूर्व बलिदान

(१) कमला मीरी का नाम भारतीय इतिहास में अमिट रहेगा। यह वीर अपनी साहसपूर्ण दृढता द्वारा हमे मेवाड के महाराणा प्रताप की याद दिला देता है। उसने अपनी आन की रक्षा के लिए तिल-तिल कर अपने प्राण गवा दिए, पर मुह से उफ तक नही की।

कमला मीरी गोलाघाट जिला काग्रेस कमेटी का एक सदस्य था। सदा से ही यह काग्रेस-कार्यों मे प्रधान भाग लेता था। अतएव अधिकारियो की उस पर नज़र थी। आन्दोलन प्रारम्भ होने पर अधिकारियो ने कमला मीरी को गिरफ्तार कर लिया। मजिस्ट्रेट ने कमला मीरी से कहा—

'हम तुम्हे छोड सकते हैं, पर एक बात का आश्वासन चाहते हैं।'

'वह क्या ?' कमला मीरी ने पूछा।

'तुम काग्रेस के काम में सहयोग देना छोड दो।'

कमला मीरी को ये वचन विष में बुझे हुए बाण के सदृश लगे। वह आवेश में आ गया और गरज कर बोला, 'बस रहने दीजिए, साहब ! मै ऐसे अपमानजनक वचन सुनना नही चाहता। आप मुझसे कभी भी ऐसी आशा न कीजिएगा। मैंने काग्रेस का जो काम सम्भाला है वह किसी लालच में आकर नही। मेरा सम्पूर्ण जीवन काग्रेस के लिए है। मैं काग्रेस के लिए ही जीता हू और काग्रेस के लिए ही प्राण दूगा। आप कृपया ऐसे लज्जाजनक शब्द मेरे सामने न कहिये।'

मजिस्ट्रेट ऐसा कठोर एव खरा उत्तर सुनकर चुप हो गया और तत्काल कमला मीरी को ८ महीने की कडी कैद का हुक्म सुना दिया।

कमला मीरी जोरहाट भेज दिया गया। जेल के गन्दे वातावरण एव

खराब भोजन ने उनके स्वास्थ्य पर गहरा असर डाला और वह बीमार हो गया। दवा आदि का प्रबन्ध ठीक न होने के कारण हालत गिरने लगी। कुछ दिन बाद ऐसा होने लगा मानो कमला मीरी का जीवन-दीप बुझने वाला है। उसे स्वयं इस बात का भान होने लगा। अधिकारियो ने जीवन एव मृत्यु के बीच पडे इस युवक को अपनी आन से गिराने की एक और कोशिश की, वे उसके पास गये और कहने लगे, 'अच्छा हम तुम्हे सदा के लिए काग्रेस का त्याग करने को नही कहते। हमें सिर्फ इतना आश्वासन दे दो कि पैरोल की अवधि मे तुम आन्दोलन में भाग नही लोगे।'

कमला मीरी को अधिकारीवर्ग के ये वचन वज्र के समान लगे। वह इस अपमान को सहन नही कर सका। उसने शैया पर पड-पडे ही उत्तर दिया, 'मैं कायरो की भाति छूटने की अपेक्षा वीरतापूर्वक मृत्यु का आलिगन करना अधिक श्रेयस्कर समझता हू। मुझे जान की अपेक्षा मान अधिक प्यारा है। आन की रक्षा के लिए यदि मुझे प्राण भी त्यागने पडेंगे तो यह मेरे लिए अत्यन्त गौरव की बात होगी।'

अधिकारियो पर युवक के इन निर्भीकतापूर्ण वचनो का बडा प्रभाव पडा। वे वहा से चुपचाप चले गए। पर युवक को फुसलाने का प्रयत्न उन्होने जारी रखा। कमला मीरी भी उनके वचन सुन लेता, पर कुछ उत्तर नही देता था। धीरे-धीरे उसकी हालत बहुत गिर गई। मृत्यु के एक या दो दिन पहले जेलर स्वय उसके पास आया और आश्वासन की बात कहने लगा। युवक से अब रहा न गया। उसने कडककर उत्तर दिया—

'यह यत्रणा मै किसी स्वार्थ के लिए नही, बल्कि तुम्हारे और अपने, सबके लिए, सह रहा हू। फिर तुम मुझे आश्वासन देने के लिए क्यो कह रहे हो।

इस प्रकार यह वीर घुल-घुलकर मर गया, पर अपनी आन पर उसने तनिक भी धब्बा नही आने दिया। लोगो ने देखा, अन्त समय तक उसके चेहरे पर सन्तोष की एक दिव्य आभा चमक रही थी।

कमला मीरी आज इस दुनिया मे नही है पर उसका यह बलिदान सदियो तक देश के बच्चो मे अपनी मातृभूमि की आजादी के लिए हसते-हसते प्राण न्योछावर करने की पवित्र भावना जागृत करता रहेगा।

(२) श्री कौशल कुअर का नाम भारत की आजादी की लडाई के इतिहास में स्वर्णाक्षरो में लिखा जायगा। इस वीर का जन्म आसाम की प्रसिद्ध जाति अमोह में हुआ था। यह जाति सदा से ही अपनी वीरता एव

सच्चाई के लिये विख्यात है। अंग्रेजों से पहले आसाम पर इसी जाति के लोगो का राज्य था। अतएव कौशल कुंअर में भी अपने पूर्वजों की भाति सचाई के लिए विशेष अनुराग था। यह वीर सरूपथार इलाके में रहता था। काग्रेस के नाम पर जो प्रोग्राम उसे मिलता गया वह वैसे-का-वैसा लोगो को बताता रहा। अचानक सरूपथार की रेल दुर्घटना हो गई। अधिकारियो ने झट कौशल कुअर को इस केस में फसा लिया। कौशल कुअर घटना-स्थल पर उपस्थित नही था। किन्तु पुलिस वालो ने उस पर यह अभियोग लगाया कि उसने जनता के सामने यह घोषणा की है कि गाडी उलटना तथा यातायात के साधन नष्ट करना काग्रेस के प्रोग्राम में हैं। डिप्टी कमिश्नर के सामने केस चला और उसे मार्च १९४३ मे फासी का हुक्म सुना दिया गया। गवर्नर के सामने अपील की गई, पर कुछ फल नही निकला और १५ जून १९४३ को कौशल कुअर देश की आजादी के लिए हसते-हसते फासी के तख्ते पर झूल गया।

कौशल कुअर का अपने सम्बन्धियो के अलावा अन्य किसी व्यक्ति से नहीं मिलने दिया गया। हा, १४ जून की दोपहर को श्री गोपीनाथ जी बारदोलोई आदि कुछ बन्दियों को अपने व्यक्तिगत प्रभाव के कारण कौशल कुअर से भेंट करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। बारदोलोईजी पर इस भेंट का इतना गहरा प्रभाव पडा कि उन्होने इसका पूरा वर्णन अपनी डायरी में नोट कर रखा है। हम पाठको की जानकारी के लिए बारदोलोईजी के शब्दो का भावार्थ यहा देते है—

"हमारी इच्छा थी कि हम कौशल कुअर को उसके अन्तिम समय में कुछ सात्वना दें। अतएव हम उससे मिलने के लिये गये। परन्तु उसको सात्वना देना तो दूर रहा, उल्टे हमने ही उससे सात्वना प्राप्त की। हम वहा से ऐसी पवित्र उत्तेजना लेकर आये जो हम चाहते है कि जीवन भर बनी रहे। हमें ऐसा मालूम पडा कि मुक्ति प्राप्त करने के लिए जो साधना कौशल कुअर कर रहा था उसे उसने आज पूरा कर लिया है। उसने स्थितप्रज्ञ की स्थिति, प्राप्त कर ली थी। मृत्यु के कुछ क्षण पूर्व एक अजीब प्रकार की खुशी उसके चेहरे पर फूटी पडती थी। उसके वचनो से उसका ईश्वर पर दृढ विश्वास और उसके हृदय की शान्ति एव स्थिरता टपक रही थी। इन बातो ने मुझ पर जादू का-सा असर किया। लेखनी के द्वारा कौशल कुअर के शब्दो एव भावो को व्यक्त करने में मै अपने-आपको बिलकुल असमर्थ पाता हू। फिर भी उसने जो कुछ कहा, उसका सार इस प्रकार था,

"मैं निर्दोष हू। मुझे व्यर्थ मे अपराधी बनाकर फासी दी जा रही है। यह मेरे साथ ज्यादती है। मैं महात्मा गाधी एव उनकी अहिंसा-नीति पर श्रद्धा रखता हू। मैं जीवन-भर फलाहारी रहा हू और पिछले ९ महीनो से तो मैंने नमक भी छोड दिया है। ऐसी सूरत में मै गाडी उलटने जैसी बात सोच ही नहीं सकता, उसमें सक्रिय भाग लेना तो दूर रहा। गाड़ी उलटने में तो अनेक नर-नारियो की हत्या होती है, जो मुझे अत्यन्त प्यारे हैं। हाँ, यह बात सत्य है कि सच्चा काग्रेस-कार्यकर्ता होने के नाते, जो भी साहित्य काग्रेस के नाम पर मुझे मिलता गया, मैंने उसे वैसा-का-वैसा जनता को बता दिया। इसके अतिरिक्त मै लोगो के साथ नाम-कीर्तन तथा धर्म-चर्चा भी किया करता था। फासी की सज़ा से मुझे तनिक भी दु:ख एव चिन्ता नही है। जब देश के लिए कैद चार-पाच सो बन्दियो मे से मुझे ही यह सज़ा मिली है तो मेरा यह विश्वास हो गया कि ईश्वर मुझे बहुत प्यार करता है और इसीलिए उसने मुझे इस काम के लिए चुना है। मैं तो यह मानता हू कि इसी दैवी प्रेरणा के कारण आप लोगो का तथा दूसरे प्रेमियो का प्रयत्न मुझे बचाने में सफल न हो सका। मैंने अपनी स्त्री एव बच्चो को, जो दु:ख से अधीर हो रहे थे, अच्छी तरह समझा दिया है कि यदि मानवी शक्ति के द्वारा मेरी जान बचाई जानी सम्भव होती तो मैं बच जाता। मुझे अकाट्य कर्म-फल को सहर्ष स्वीकार करना चाहिए। इसमें चिन्ता एव सताप करने की क्या बात ? जीवन है तो मृत्यु, और मृत्यु है तो जीवन। जब मैं जनमा था तो मुझे डेढ घटे तक बेहद पीड़ा झेलनी पडी थी। किन्तु अब तो १५ मिनट भी नही लगेगे। मेरा आत्मा स्वतत्र है, उसका कोई कुछ नही कर सकता। ईश्वर ने मुझे यह प्रदान की और वही अब इसे वापिस ले लेगा।"

इतना कहकर कौशल कुअर चुप हो गया। काग्रेस स्वयसेवको ने, जो वहा उपस्थित थे, इस महान् आत्मा के सामने सिर झुका दिया। मेरे मुख से केवल इतने ही शब्द निकल सके, "ईश्वर आनदस्वरूप है और उसे मैं तुममें देख रहा हूं।"

कौशल कुअर की अवस्था इस समय ३८ वर्ष की थी, किन्तु उसने अभी तक किसी गुरु से दीक्षा नही ली थी। अतएव कुछ क्षण ठहरकर उसने गोस्वामी श्री डेका सत्राधिकार से, जो उस समय जोरहाट जेल मे नजरबन्द थे, दीक्षा लेने की इच्छा प्रकट की। गोस्वामीजी ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और उसे उसी समय दीक्षा दे दी थी।

कालकोठरी मे रहते हुए भी पिछले तीन महीनो मे कौशल कुंअर का वजन घटने की अपेक्षा वढा ही था। वह निरन्तर गीता का अध्ययन एव मनन करता रहता था। पहरा देने वाले चौकीदार उसे प्रेम एव आदर की दृष्टि से देखने लगे थे। फासी के दिन खूब जोर का वर्षा हो रही थी। जब सुबह साढे चार वजे प्रधान चौकीदार सशस्त्र पुलिस के साथ उसकी कोठरी में गया तो वह शातभाव मे सो रहा था। उसने उसे जगाया और वह तुरन्त खडा हो गया। चौकीदार एव जेलर, जो वहा उपस्थित थे, के कथनानुसार उसकी आवाज एव व्यवहार में किसी प्रकार की अशान्ति एव घबराहट नहीं थी। उसने ५ मिनट तक भगवान् से करुण प्रार्थना की इतने ही में सुपरिन्टेन्डेन्ट ने उसे हुक्म सुनाया और जल्दी से तैयार होने के लिए कहा। कौशल कुंअर उठा और झट उनके साथ फासी-घर की ओर चल दिया। रास्ते में वह गोस्वामीजी के वताये हुए मत्र को मस्ती से गा रहा था। तख्ते पर खडे होकर उसने सवसे प्रार्थना की कि यदि मैंने आप लोगो को कुछ हानि पहुचाई हो या अपशब्द कहे हो तो आप मुझे क्षमा करे। जव फासी का फदा उसके गले में डाला जा रहा था तो उस समय भी वह गोस्वामीजी के दिए हुए मत्र को जप रहा था। देखते-ही-देखते तख्ता खीच लिया गया और कौशल कुंअर सदा के लिए ससार से विदा हो गया।"

एक दूसरे प्रत्यक्षदर्शी ने इस घटना के विषय मे लिखा है।

"लडकपन में मैं इतिहास पढा करता था कि देश-प्रेम के लिए लोग हसते-हसते फासी पर चढ गये। तब मुझे यह वात कुछ वनाई हुई-सी मालूम पडती थी। लेकिन, जब फासी की कोठरी में, १४ जून १९४३ को फासी होने के एक दिन पहले, मैंने कौशल कुंअर को देखा तो मेरा मस्तक श्रद्धा से उसके चरणो में झुक गया। प्रसन्न मुख, होठो पर थिरकती मुसकान और आखो में एक दिव्य ज्योति। इतिहास मेरी आखो के सामने सजीव हो उठा। उसके अन्तिम शब्द अब भी रह-रह कर मेरे कानो में गूज उठते है।

जिसने जन्म लिया है, वह एक दिन अवश्य मरेगा ही मुझे खुशी है कि इतने लोगो मे ईश्वर ने मुझे ही चुना। ईश्वर मुझे प्यार करता है।

स्वतत्रता की वलिवेदी पर न्योछावर होने के लिए उसने हसते-हसते फासी का फदा अपने गले मे डाल लिया। फदा खीचा गया मुह से अस्फुट स्वर निकला 'पार करो दीनानाथ ससार सागर' और वह महान् आत्मा गुलामी के बन्धन से मुक्त हो गई।

निर्दोष व्यक्तियो के वलिदान, उनके आंसू कभी व्यर्थ नही जाते।

अतएव देश की आजादी के लिए हँसते-हँसते अपने प्राण न्योछावर करने वाले आसाम प्रान्त के नर-नारियो के ये वलिदान हमे अपने पवित्र आदर्श को आगे वढाने में आत्म-वल प्रदान करेगे।

अन्य प्रान्तो की भाति यहा पर भी आन्दोलन का श्रीगणेश विद्यार्थियो की हडताल से हुआ और वाद में भी उसकी वागडोर काफी हद तक विद्यार्थियो के हाथो में रही। यहा के विद्यार्थियो ने न केवल शिक्षण-सस्थाओ का ही वहिष्कार किया, प्रत्युत उन्होने नौजवानो के साथ मिलकर "मृत्यु दल" (Death Brigade) का सगठन भी किया जिसका उद्देश्य उसके नाम से ही प्रकट है। सितम्बर १९४२ से दिसम्बर ४३ तक आन्दोलन को चालू रखने के लिए वहुत-सा साहित्य प्रकाशित हुआ था। उसमें यह कार्यक्रम दिया गया था,—

१ सरकारी आवागमन के साधनो का विध्वस।

२ रेलवे लाइन को उखाडना।

३ सरकारी इमारतो, पुलिस, ऑफिसो आदि का तोडना-फोडना।

४ समानान्तर सरकार की स्थापना आदि।

इस कार्य-प्रणाली को स्थिर करने वाले तथा उसके अनुसार आन्दोलन का सचालन करने वाले अधिकतर विद्यार्थी ही थे।

आसाम में जैसा अमानुषिक और वीभत्स दमन हुआ वह साम्राज्यवाद की समूची यातनाओ का निचोड था, पर फिर भी क्रान्ति दबी नही। आसाम म पुलिस एवं फौज ने अहिंसक एव शान्तिपूर्ण प्रदर्शन करने वाली जनता के खून से होली खेली। लोगो पर अन्धा-धुन्ध गोलियों की बौछार कर देना, लाठियो का प्रहार करना, उनकी वहन-वेटियो के साथ वलात्कार करना, उनके घर जला देना तथा उनके छोटे-छोटे मासूम बच्चो को मौत के घाट उतार देना सरकारा कर्मचारियो के लिए साधारण-सी वात थी। सचमुच कुछ दिन के लिए आसाम में पुलिस और फौज का राज कायम हो गया था। चन्दा वसूल करने वाले स्त्रियो के जेवर, बैल, गाय, यहा तक कि बर्तन एव पहनने के कपडे भी नोच-खसोट कर ले जाते थे। कई स्थानो पर तो लोगो को किर्चे भोंक-भोंक कर मार डाला गया, ठीक उसी प्रकार जैसे कि जगली सूअर को शिकार मे मारा जाता है। पुलिस और फौज ने इन कामो में बहुत-से वाहरी गुण्डो से भी मदद ली थी।

जेल में भी वडा अत्याचार किया गया। कैदियों को न तो पूरा भोजन दिया जाता था न पूरे कपडे। सर्दियाँ लोगों को ठिठुर-ठिठुर कर बितानी

पडी। २४ फरवरी १६४३ को जोरहाट जेल में निर्दोष राजनैतिक बन्दियो पर किये गये अत्याचारो की कहानी बडी लोमहर्षक है। बन्दियो का अपराध सिर्फ इतना ही था कि वे अपने नेता महात्मा गाधी के उपवास पर अपनी सहानुभूति दिखाने के लिए सामूहिक प्रार्थना एव नाम-कीर्तन कर रहे थे।

उत्तरी आसाम

आन्दोलन की गति तीव्र होने के पहले ही यहाँ के सब नेता गिरफ्तार कर लिए गए थे, पर फिर भी जोरहाट और सिवसागर में सरकारी अदालतो के सामने बडे-बडे शान्तिपूर्ण प्रदर्शन हुए। लोगो को अदालत में जाने से रोकने के लिए पिकेटिंग की गई। शहरो एव गावो में सभाए की गई, जिनमें स्त्री-पुरुष सभी ने बडे उत्साह से भाग लिया। भाग्य से उस समय यहाँ डिप्टी-कमिश्नर एक हिन्दुस्तानी था जो बडा नरम एव सहनशील था। अतएव सशस्त्र पुलिस के लगातार गश्त लगाने पर भी जनता पर लाठियो या गोलियो की वर्षा नही होने पाई। परन्तु बाद में यूरोपियन अफसर के आ जाने पर सभी प्रकार के अत्याचार हुए।

२० सितम्बर को सिवसागर में एक सभा होने वाली थी। पुलिस ने सूचना पाते ही चारो ओर शहर के सभी नाको पर फौज तैनात कर दी। परन्तु लोगो का उत्साह इससे कम न हो सका और करीब ८-१० हजार स्त्री-पुरुष शहर मे घुस आये और शहर भर मे राष्ट्रीय नारे लगाते हुए घूमने लगे। पोलिटेकनिकल इन्स्टीट्यूट और सिवसागर के पास सशस्त्र पुलिस और कुछ लोगो की भिडन्त हो गई, जिसमें १६ आदमी बुरी तरह घायल हुए। शान्ति-सेना के कैम्प मे उनकी मरहम-पट्टी की गई। बाद में झगडा और बढता, किंतु हिन्दुस्तानी डिप्टी कमिश्नर ने बीच बचाव करके रक्त-पात न होने दिया। नौकर-शाही की दृष्टि मे डिप्टी कमिश्नर का यह अपराध था जिसके फलस्वरूप बेचारे को वहा से दूसरी जगह जाना पडा।

इस जिले में आन्दोलन रचनात्मक और अवरोधात्मक दोनो रूपो मे चला। रचनात्मक प्रोग्राम के अनुसार स्वत पूर्ण गावो का निर्माण किया गया तथा पचायतें स्थापित की गई। इन पचायतो में गाव के सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व रहता था। चरीगाव, हटीगढ, टेमोक आदि स्थानो पर स्वाधीन सरकार भी कायम की गई। अवरोधात्मक प्रोग्राम के अनुसार फौज एव फौज के ठेकेदारों को गावो से मिलने वाली सभी सहायताओ पर रोक लगा दी गई थी। इस प्रकार धान, पशु तरकारी आदि का गाव से जाना एकदम बन्द हो गया था। जो लोग इस नियम की अवहेलना करते थे उनको उचित दण्ड दिया जाता था।

इस असहयोग के कारण अधिकारी लोग बडे क्रोधित हुए और उन्होने लोगों को गिरफ्तार करना तथा उन पर किर्चों एव लाठियो से प्रहार करना शुरू कर दियो। जोरहाट में पुलिस के इन प्रहारों के कारण ५० कार्यकर्त्ताओ को स्थाया चोटें पहुची और वहुत से घायल हुए।

जोरहाट सब-डिवीजन मे टेओक काग्रेस का एक प्रधान केन्द्र है। यहा पर असहयोग का सबसे अधिक जोर रहा और फौज के लिए मदद प्राप्त करने में वडी कठिनाई होने लगी। अतएव अधिकारी लोग जल भुन गए थे और वे किसी अवसर की प्रतीक्षा कर रहे थे। अचानक एक दिन ३००० ग्रामीण काग्रेस दफ्तर के सामने जमा हुए, जो थाने के बिलकुल ही पास था। बस, दारोगा की मनचाही हो गई। उसने झट जोरहाट से काफी तादाद में फौज बुला ली और पुलिस तथा फौज की सहायता से एकत्रित भीड पर हमला कर दिया। किर्चों एव लाठियो से निरपराध स्त्री, पुरुष तथा वच्चो पर बुरी तरह प्रहार किया गया। कुछ स्त्रिया राष्ट्रीय झडे लिए हुए थी। दमनकारियो ने उनके हाथ से झडे छीनने की कोशिश की, लेकिन वीर महिलाओ ने अपने प्राणों की वाजी लगाकर भी राष्ट्रीय झडे का अपमान न होने दिया। दो स्त्रियो के साघातिक चोटें लगी तथा १८ अन्य स्त्री पुरुष घायल हुए। प्रधान-प्रधान काग्रेस कार्यकर्ता, गिरफ्तार करके जेलो में डाल दिये गये और बाद में दो महीने पीछे उन पर केस चलाया गया और १३ व्यक्तियो को २१ महीने से लेकर दो साल तक के कठिन कारावास की सजाए हुईं।

सरकारी विज्ञप्ति के अनुसार एक और दो नवम्बर को टीटावार के मैनेजर का वगला, अमगुरी का अग्रेजी मिडिल स्कूल और प्राइवेट गर्ल्स स्कूल, डिमोउ का ब्राच पोस्ट ऑफिस तथा टीटाबार जला दिये गये। तीन नवम्बर से लेकर १२ नवम्बर तक कई स्थानो पर स्कूल तथा पोस्ट ऑफिस आदि जलाये गये तथा तार काटे गये। फरवरी १९४३ में लकवा रेलवे स्टेशन के पास एक सवारी गाडी गिराई गई जिसके कारण बहुत से व्यक्ति घायल हुए और कुछ मारे गए।

उत्तरी आसाम के सिवसागर एव लखीमपुर जिलो में गोली न चली, इसका यह अर्थ नही कि यहा सरकारी दमन-चक्र की गति कुछ धीमी रही। यहाँ जेल के वन्दियो को भी अत्याचारो का शिकार वनाया गया, जोरहाट जिले में राजनैतिक कैदियो को न तो पूरा भोजन दिया जाता था, न पूरे वर्तन और न पूरे कपडे। वेचारे बूढे एव जवान स्त्री-पुरुषो को सर्दी की राते ठिठुर-ठिठुर कर बितानी पडती थी। अपनी शिकायतें दूर करने के लिए वन्दियो ने एक-

इस असहयोग के कारण अधिकारी लोग बडे क्रोधित हुए और उन्होने लोगो को गिरफ्तार करना तथा उन पर किर्चों एव लाठियो से प्रहार करना शुरू कर दियो। जोरहाट में पुलिस के इन प्रहारों के कारण ५० कार्यकर्त्ताओं को स्थाया चोटें पहुची और बहुत से घायल हुए।

जोरहाट सब-डिवीजन मे टेओक काग्रेस का एक प्रधान केन्द्र है। यहा पर असहयोग का सबसे अधिक जोर रहा और फौज के लिए मदद प्राप्त करने में वडी कठिनाई होने लगी। अतएव अधिकारी लोग जल भुन गए थे और वे किसी अवसर की प्रतीक्षा कर रहे थे। अचानक एक दिन २००० ग्रामीण काग्रेस दफ्तर के सामने जमा हुए, जो थाने के बिलकुल ही पास था। बस, दारोगा की मनचाही हो गई। उसने झट जोरहाट से काफी तादाद में फौज बुला ली और पुलिस तथा फौज की सहायता से एकत्रित भीड पर हमला कर दिया। किर्चों एव लाठियों से निरपराध स्त्री, पुरुष तथा बच्चो पर बुरी तरह प्रहार किया गया। कुछ स्त्रिया राष्ट्रीय झडे लिए हुए थी। दमनकारियो ने उनके हाथ से झडे छीनने की कोशिश की, लेकिन वीर महिलाओ ने अपने प्राणो की बाजी लगाकर भी राष्ट्रीय झडे का अपमान न होने दिया। दो स्त्रियो के साघातिक चोटें लगी तथा १८ अन्य स्त्री-पुरुष घायल हुए। प्रधान-प्रधान काग्रेस कार्यकर्ता, गिरफ्तार करके जेलो में डाल दिये गये और बाद में दो महीने पीछे उन पर केस चलाया गया और १३ व्यक्तियो को २१ महीने से लेकर दो साल तक के कठिन कारावास की सजाए हुई।

सरकारी विज्ञप्ति के अनुसार एक और दो नवम्बर को टीटाबार के मैनेजर का बगला, अमगुरी का अग्रेजी मिडिल स्कूल और प्राइवेट गर्ल्स स्कूल, डिमोउ का ब्राच पोस्ट ऑफिस तथा टीटाबार जला दिये गये। तीन नवम्बर से लेकर १२ नवम्बर तक कई स्थानो पर स्कूल तथा पोस्ट ऑफिस आदि जलाये गये तथा तार काटे गये। फरवरी १९४३ में लकवा रेलवे स्टेशन के पास एक सवारी गाडी गिराई गई जिसके कारण बहुत से व्यक्ति घायल हुए और कुछ मारे गए।

उत्तरी आसाम के सिवसागर एव लखीमपुर जिलो में गोली न चली, इसका यह अर्थ नही कि यहा सरकारी दमन-चक्र की गति कुछ धीमी रही। यहाँ जेल के बन्दियो को भी अत्याचारो का शिकार बनाया गया, जोरहाट जिले में राजनैतिक कैदियो को न तो पूरा भोजन दिया जाता था, न पूरे बर्तन और न पूरे कपडे। बेचारे बूढे एव जवान स्त्री-पुरुषो को सर्दी की रातें ठिठुर-ठिठुर कर बितानी पड़ती थी। अपनी शिकायतें दूर करने के लिए बन्दियो ने एक-